वृन्दावललाल वर्मा के कथा साहित्य में नारी स्वतन्त्रता एवं प्रगतिशोलता

बुम्देर्लखण्ड विश्वविद्यालय की पी-एच. ही. को उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

सन् 1997 ई॰

पर्ववेशकः मनुजी श्रीवास्तव एम॰ए॰,पो-एच॰वो॰ अध्यक्ष, दिन्दी विभाग कृषेसक्षक्ष कांसिज, ब्रोसी

योधकर्षी । रेलू मिसल एम०ए० It is cortified :-

- 1:- That the Thesis embodies the work of the candidate herself.
- 2:- That the candidate worked under me for the period required under ordinance 7 and
- 3:- That she has put in the required attendance in my department during the period.

M.A., ph.D.

Supervisor.

Head of Hindi Department Bundelkhand College, JHANSI,

वृन्दावनलाल वर्मा के कथा साहित्य में नारी स्वतन्त्रता एवं प्रगतिशोलता

लु बदेल खण्ड विश्वविद्यालय की पी-एच. ही. की उपाधि हेतु पस्तुत

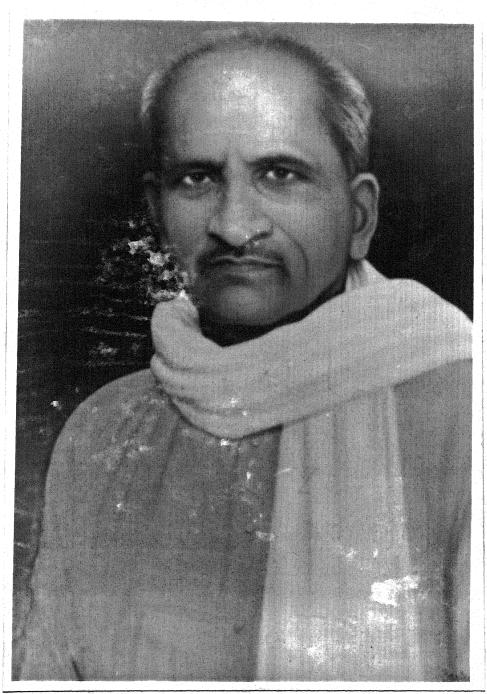
शोध-प्रबन्ध

सन् 1997 ई॰



पर्यंवेक्ष कः

मनु जी श्रीवास्तव एम॰ए॰,पी-एच॰डो॰ अध्यक्ष, हिन्दी विभाग बुन्देललण्ड कॉलिज, झाँसी शोधकत्री । **रेलू मित्तल** एम०ए•



डा॰ वृत्यावन लाल वर्मा

वृन्दावनलाल वर्मा के कथा साहित्य में नारी स्वतन्त्रता एवं प्रगतिशीलता

बुम्देलखण्ड विश्वविद्यालय की पी-एच. ही. की उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

सन् 1997 ई॰

पर्यवेक्षकः

अनु जी श्रीवास्तव

एम॰ए॰,पी-एच॰डो॰

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग

बुन्देलखण्ड कॉलिज, सांसी

शोधकत्री । **रेजू मित्तल** एम०ए•

	are,	ort.		\$4 1	वार्गीह स्व	ħ	171	AS - 251	VC.	्रणात्का सह	*
34244	(())		章 建基	(海海鄉)		数本 :	TERES #1	ed men en:	30 AM 101 .		L media

		** **		!~ \$
नारी सार्वना एउँ प्रणालकीत			**	
3 gran saaran			*	
	**		**	6
2-477777787			**	•
हा सरीत हावारवारी			#*	
	•	•	**	
3-3	**	•	**	
		• •		
5-MARTINE TRANS			••	
6-377 24 174		•	**	
	**		•*	
त्त्र जीवन तत्रवन्ती प्रवधारण			**	11-21
्दः अभूषिक साहित्य है पूर्व और पुणीकीयका का व				22-21

ितीय अध्याप

वृन्दाच्य नाम को है क्या-नाहित्य व शिव्य परिवय विकास

2	1 / 34	-41			• *		**	
			1-3000		••	••	••	20-31
			2-17-77	ी रागी	seed or	» «		32-39
			3-00-07		••		**	40-41

that if that			
5 - 20 - 12			42-43
Artist Control of the	**	**	
	**	***	47-48
	• •	• •	49-51
e-distant			52-55
9-00			54-57
10-विस्तार को पहलेखी		**	50
II-dharts ar			59-60
रिन्दे पर अंद अवस्था		• •	61-62
13-वेदार की मुस्तुरम	**	••	63-64
14-रावपु ी रानी	• •	**	69-67
15-बारानी हुगांवती	•	**	60-69
	* *	**	
	**	••	71-72
3 - 1 11			75
4-महाराज्य			
5-10707	••	••	76
6-816B		•	77-70
7-4-18	••	••	75-00
	• *	•	81
9-रीया वेदा होते			82-03
10-व्यी व व्यी	•	••	84
11-तोती अप	•	**	85
12-उद्या और विस्प		•	
13-बारत वह है	••		67-68

	gas dear
e-vineriae seffur	%)~ 92
e-marke setter	•
	93 - 95
२- ब हर्षा वर स्थाह	%-97
	96-99
	100-103
	• 104-105
	• 106 -109
7-31 1/10	•
े दर्भा की है उपन्यानों से नारी है पिटिश र	
	•
२-वा भिन्न	115-117
3-2010	• 18-120
4-frankla	121
५-उच्चवर्गीय	••
and active	
ैयमाँ भी के क्या साहित्य में व्यतेश स प्रणीत नारी की विकेत्सारी कार्य क्षेत्र, स्टबाट परी	
1-रोप स्व 2-स्वाफिक्षीच्स	•• 123-129 •• 130-131

.....*

	A			šila.
	**	•		
	***	••		134-138
	**	# *		13 9-140
	•		14 +	141-146
				147-141
		**	van	34.9
				150
0-367 (41)	**	**		151
1-01		**		151
e-arfa offa di sina		**		151
3=रोहरों के Ma Alec		••		151-152
4-साही प्रधा जा विस्ती				152
	••			

* दार्थ को है क्या लाहिस्य में सारी-सा द प्रणीखी गरा है प्रतीत्र स्तरी-पात्र व्यवस्थान

i mit is a remegne i

।-व्य प्रवार -सरर, देवाली, वाच्यती	153-150
2-निसारा ही प्रदक्षिणी -सुद्ध, गोवली	159-162
उन्तराध्य प्र-प्रकारी सामी, सुन्त	163-166
५-व्यक्ति की रागी-व्यक्ति की रागी व्यक्तिकारी जुन्दर, व्यक्तिवर्ष, व्यक्ति व्यक्ते, वृक्षी, 5-व्यक्तर-व्यक्तर, व्यक्ति, वन्ना	167-191 192-199
६-इटे वरि - मुखाई, रोनी	200-209
7 -बुक्करवनी -वृक्करवनी ,वाखी	210-216
0-मूद्रम-रिवृता- गोरी विद्याची	217-222

9-अंतरणावा ई-अंतिरशावा है, तिस्तुरी,			**	223-229
10-साध्य वी सिन्धित -प्रना देखा			•	230-231
		••	**	232-234
	••	**	• *	235-237
15-रेग ही कि-तर यही, जीववारी	••	****		230-245
भ-वन्त्रति स्व-त्रतानुत्ता,	• •			
			**	
16 -तेवल केटर वर्षाइन्ते	•	• •		751-753
।।-तेना-वा,तेना	••			
	••		**	25.7-259
	••	••	••	260-262
20 - देशक में इस्तान-स्विति	•	***	• •	<i>7</i> 6.2**63
शासीकारित्य -बलाटता, क्यारित		•••		264-266
27-41164-647	••	•	••	267-260
23 - शासनी हमायती - समृत्यती	••		••	269-276
२५-रामण्ड ही सनी-छान्सी हार्ग	**	**	**	277-200
25 स होती अपन-रोग्नेषु, शतका	• •	**	•	26 1-4 02
२६ - इंग्लामल - नोपाली , जारानी			**	200
21-उदाय और विस्म -विस्म			•	267-260

प्रति अध्याच

स्वारोश और प्रमोशनीयन को द्वित ने दर्भ पा है पुन्न आहे। बार के या अन्य अन्यातनारों ने पारों पा में ते तम्मा दर्भ अन्यात क-पुन्दायन बाल दर्भ और प्रमोद प्रमाद • • • 209-29• ब-पुन्दायन बाल दर्भ और प्रमोद प्रमाद • • • 295-298

						TES ANT
	NTO SEE		MM			299-303
ध न् स्वास्त			R.J.		. •	3(****).10
		STT 1		**	• *	309-310
			हाटी दिस्स ह			311
0-2-CT		-		**	**	312-317
						318-320
						321-322
•						
.नारः। या	ों और प्र					323-320
					**	

Anna Na Carrie Many

ात जा है कि अध्य बीचन है किए. है, बारतीय स्थिति को प्रापः मान्य है कि लग बीवन के निष्य है। अन्यात में बीवन का नामां न पांच रेप म रहता है, अब यह हो कि अपन्यात दीवन हा तायव रिजा है तथा यह और कि अपन्यात बीटन वा तक्या कि म है तो अश्वी त न होगी। उपन्तान की अनेव प्रवार है कि बाते हैं। पेरिस्तानिक इस माधारिक उपन्यान ar or ve take and a transfer area it was therefore and ा उदाबादन एता है। तमा वह अंगेत की ओकातों वो हमरे कर उपान करते है। उसी इती व वा ववार्ष पित होता है तह बोहन है। जरवा हाति होती है। फिन बारते में पेटिशत है जनका है द्वानि है हिपरिवास है उनको रोजिए किन अपनातानार समय है तामुख असे समाय में फालर हरियान की संभी भारत प्रस्तुत बरता है। ताहि या तमाच ना तांच है। उपन्यात है जन्मना है दूर है जारन रोपल्डा बढ बाजी है। ब्रीस्थान नीवन और कुन्छ रोत है जो अन्यत है हरना है किया है तरक स्वाप्त के शिक्ष है। अपन्यात के बार पद ते हम तथे ही स्टान ही तथा रखें में तहने हो है । सामाधिक उपन्याची को तकक रहते में यहाँ हम समाय है विकृत का हो साक्षे रकते हैं औरतनाय के प्रस्ताय की हत्या है उसी हुआर लगे हैं किए हुआत इर्गर क्रेस्सा हेते हैं । जावाधिक अञ्चलों में जावाधिक वस्तु रिम्पीत वा fereda una el aura el acera uncar afactalea una el un पुलार सामाधिक उपन्यास की बीवन वा चिनांच करते हैं। प्रनदावन साम वर्ज ने रेरिक्सीयन और साधाधिक उपन्यामी की रचना वर पर्का उत्तीत की पूजा अनुप्रति व्यापी है। दशी समय है या लियह सामा वा कामा विवा है। अहे उपन्यासी में अभेतिकता है हुन्येत्रक्षण वा विकास है, हुन्येत्रक्षण की प्रभूति वा अवस विकार है, वहाँ की वेबहुबा के दर्भन होते हैं, हुन्तेशकात के स्वेरत से बहाने और उत्तरों विक्रण में स्थान देने का केव हुन्दानन ताल वर्धा को ही है।

हुन्दालन तान धर्मा है पीएन, ही तस्य और ज्यान्यानी पर अनेक धार्य एप है। पिनने अन्ता कृतिस्य उनागर हुआ है। उन्हें साहित्य को गोरप के पद पर प्रीकरण के में महापता किया है। इन्साल बात कार्य करते हता ता हिला है नहीं। बारोब्द को वर्ष नेता कर में का वर मही क कोई बोर्च कर्न की हुआ था। बारत की नातर को ने पूल्य के उत्सान समाप तथा, देवा की अपने-सा तथा तथाप निवर्ण परीक्षण है पहल योग्यान दिया है। वे देश की अर्थ-वर्ष के किए पुर वर अवती है। प्राप न्योगान्त वर तकती है। परिचार कि की प्रेरण देख दीवा उर्जा और पोरुर पर तथी है। उसी वो साम और शरिकार की माहना विकाह देती है। वह अन्यत्र नहीं है। पुरुष समाव है उनको आदर और उच्चान ी माला ने देखता आया है। प्रमाद की नारी आधीमा नारी की इती व है। एक्सी कर के आर जी व वर्ष को खान करते हैं जिस को पड़न जर नकती है। युद्ध के किस प्रश्नोद्धा जर नकती है। और द्वारा औ भी को उस्में के निवर पुरस्ता है जड़ती है। तो वर्जा की जीनगरिया कर है प्राप्ता की अवस्था के किए विक्रोणोंने ने एक तकते हैं। केन को को करिया की देवों पर दुवसा सबसी है। मीदिर जावि धार्तिक सानी जा विकास कर इन्ट फिल्ह रिला को प्रश्न की और उन्हाब कर मन्त्री है। प्रत्या के अरेर बाल है के फिली पुलार की मुख्य के बीचे नहीं है। के पुलाबी की n gruf tift ? ure bu cit fiction? it carete for beur et पुती हु है। हक्षा भी ने अपने उपन्याती में एवं प्रवार के नारे जी ही। चरित बाबा बाई है, अनेह उपन्यातों हे नाम नारियों हे नाम पर ही रहे मांग है। बारियों से पहाँ करा है प्रतिकृत है। विशेष और उस है किए अविषेष हे वही ताहत, हीरता, क्षेत्रायम्बा, क्लेडापिना, और देश को अपनेन देशने की भाषता है। य अपने कर्तवारी के प्रति बारास्त्र है। उनमें अक्षण साहत है बीचन जो वर्तना है किए उनमें उन्ने ही धाउना है। हा भेरिय प्रथम्य में कार्य की है एवा काहिए। में बारी स्वातंत्र एवं प्रणीतकीलता पर प्रवस्थ जाना नवा है ।

श्रीती की राजी वहनीवाई विकास विक्रमार है। उन्होंने उपन्यान में किह किया है कि वह देश है कि हही । कुल्याकी में क्रेस और

हम साँच प्राच्या है प्राच्या से नारों। सारते से प्राचित के स्वास्था स्थानिक के स्वास्था से प्राच्या से स्थानिक के स्वास्था से प्राच्या से स्थानिक के स्वास्था से प्राच्या की वार्त के स्वास्थ्य के स्थानिक के स्वास्थ्य के स्थानिक के स्वास्थ्य के स्थानिक के स्वास्थ्य के स्थानिक स्थानिक स्थानिक स्थानिक के स्थानिक स्थानि

ार्थियों में विद्युत क्या ताविका की प्रकार की है। उन्होंने अनेक वे किल्लिक और तामाधिक अन्यान विके हैं, तन वेरिकारिका,सामाधिक ्या रेडिनाकिक मान्यिक और विकार से स्वीधिक वर्गानमा विमाधिक क्षण में के विमाधिक अवस्था में वर्ग की के उपन्यानी और बन्धिमें का मीजन्य परिच्या दिया जाता है जिससे उनके माहित्य पर प्रमुख प्रस्ता

्राति अध्याप है बारों है जिन्हें स्वतान पर प्रशास काना का है। नारों हे रेन्सिनिक नाहा कि आहें हैं है जन्मतीन निज्यानीन की उपकरीन स्थाप का प्रशास काना का है।

व्यक्त अध्याप में स्वतंत्रम को प्रमाणकोत्तर वं द्वीक्ट ने स्वतं को वे प्रकृत नारी पानों को अन्य उपन्यासकारों के मारी पानों से दूसना की कही है। इसमें को के नारी पानों का बोकन किरकान है समा वे अपने की को के स्वतंत्रक के लिए उसमें कर देती है। के प्रमाणकार को प्रतेष है। वे प्रमाणकील प्रकृति की है। पुरुषों से किसी की बालत में पी है नहीं है। तान्तक् अध्याय में वर्णा की है अन्तानों है नारी पानी परी परी प्राप्त भीतन ही द्वीदन ने धर्मा की ही विन्दी ताहिन में देन पर दूसन जाना भग है।

is an entries and property of the annual contract of the annual cont

क्षण क्षीय कृषण्या के देखा है और हारिया की मार्ग है उसके शिव है सामा समाधी बारडे के के कांग्रव्य के उसके हुए अपने की केवदा करेगी क

dy frien.

GUH HEUTU

नारों अध्यक्ष एवं प्रमीतनीस्त तसनी उत्पादनी ।-

वरतीय-रिकार है वर बीवर का और हरी और ा किया होता है। याँ व्यक्ति की त्यह समय मा की किया कर है। ते जार काय का विकास करने जाता है उसे और उजने काया है। कारतीय ते कार के बारिकों के कार्यांचा बावी बता अपने पाँच को पर्यक्रकर करते. of encour med E. seach ofte or and fourt or Steam. chem य, मन्द्रा, देवा आहे. अने अञ्चल है। तासी वे प्रतिपारिकत पर्व का feets are again in the sid vite in pur move are vites को भारतीय वारो क्षेत्री बार करती है **पारत**ों है प्राचीन बान्यता थी कि वर्श सरिकों की पूजा होती है वहाँ देवता विकास करते है। देन जी ती car bit on the stop state man, and, area, with arts देशियों से इया स्थान पारवर्त है होती है। हे सारियों प्रतिवस्ताती, तेवती ,कील्यान, प्रकारन, प्रवास्त्रकील और आसीन है। प्राचीन नारी छन्टी हमों ने अपनुत करें। है। इह बारिसूनी हो बालकर्त **और क**ें ही अध्या भी रही है। यह बाह्नीय के स्था धान्यतीय की सारक और लाई स of gard tal de san the sal was tar de after gura de

ते लिया व ल ते आन हो तन ते लियान हे सा है प्रतिष्ठ
हैं। यो 1936 में लिया मार्ग । उसी की हुने, हुनों हे रायने कि

अर्थिक और तामानिक अधिकारों का यकेंग है। विन्हें मुस्त अधिकार
माना है । हो को हुन्यों के तमान बाम कितना का दिया नारिकों
हैं तम्मान देने के लिए मार्ग हो मानना का तम्मान कि तमाना । कि

नारी के दल बयो होते ने उसे मार्ग क्योन को उपाधि हो जाती है।
उनका अभिनत का कि मार्ग को मालना मुख्यान है। माँ को वार्ग
हरने का अवतर प्रदान हो सके। इसिक निर्म किया हिंदी है माँ को वार्ग
हरने का अवतर प्रदान हो सके। इसिक निर्म किया है। मार्ग को हमत विका हरने का अवतर प्रदान हो सके। इसिक निर्म की स्थान है। मार्ग को हमत विका हरने का अवतर प्रदान हो सके। इसिक निर्म की स्थान हो होता हमते कि

हरने का अवतर प्रदान हो सके। इसिक निर्म की होती । यह सम तह
का प्रयान या । उन्होंने नारी को तमान की होती । यह सम तह
का कि नारी अधिक होन्छ ने पुत्त के तमान की होती । यह सम तह
होनी मार्गिक का तकी। नारी के लिया पुत्ती के तमान आदिक तमानत
होनी मार्गिक होन्छ ने पूत्ता के लिया पुत्ती के तमान हो होता । यह सम तह
होनी मार्गिक समानत

-: isfami vivil :-

वेत्रका कुना ने विधारतीय कारित हुए हैं। किन्ती किवार भारा नाक्ष्माद नाक्ष्मी है। उन्होंने की पूर्वी के तमन्त्र पर वज भग दिया है। जा पूर्वार नारी कार्तमा और उन्हों प्रमोत्नीकता है वे कुनाती है।

-introducing figure i.e.

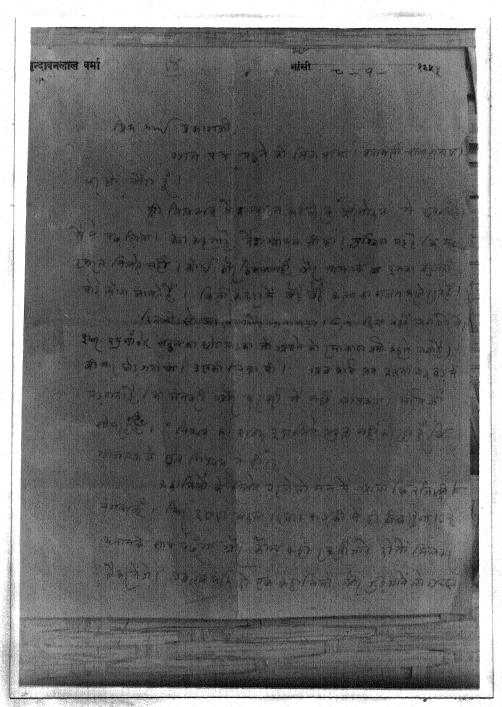
ure derive time mercency it on a 1 forth for sire वद्धार ते "वरिष्णान्त्व" वद्धार वारत है। वस्तुवन वर्षाव वरे त्वापना से उन्हर er i ar i amili est sa finar nitufa ar finafa floor i è danti afre मराज्य को वर्ज के भागिक को को और उनके भारतम से उनकोंने वनता है राजनेतिक वैक्स जगाउँगी । उन्होंने विकामी क्ष्में का और मधानि व्हों का नामत क्षेत्र उसके भी प्राप्तम्य क्षित्रे । स्वीत्रका उन्तीने महापान्य का तेन्या कि रिक्या अर्थ बम्स बम्स अभावे, वादी जम्म, और भीवब विद्योगी लीजीकार खीवी un and a mile for man du four of "often un m" afte arbiten तोग आफ कि वैद्याल जायत प्रक्रिक प्रकृति किती । केत ने विद्यालीचे वर आयल राष्ट्रीय विकेश के वर है व्यापत हुता। अपने 1916 में होता वर की स्था-पना की । विशास अधिकारण के के। अरेट जा केलओं में अधिक क्षणा-आक्षी के। रिलाय प्रयोग केवीर से देशानावत के । और गरात प्रश्नारिक से के विकास क्षेत्रपूर रिकार भी नो रितरे ने बनापर बारते के रिमान सरदू उसने रिमान की रूप much be a tableat of an hearway of he becomes up a रिवायमा वरते के। वे वर्ववाध्वारम की और देखते के। उन्हीं अञ्चल कांच और परिवासकी । से अपने स्वाय से अपने के। विशव वर अधीवाय स्वयाप धर पत्री प्राचेक पारकारणी या पञ्चातिया प्राचितर था । प्रश्वी हे लाग ही रिश्वी को बीजिबकार किसे । कारे से बाजारी के। किनार केरकार कर quiferincer is it apparels it a

Anthre (C) Act (Act)

•। श्री शरीतन्द् योग **।**•

वी अपितन्य जीव को जुलकारी की परीक्षा में उस्तीर्व कोच करने अयोग्य वीवेत कर विधा । वीव आन्योगन के सम्बन्ध में उन्तीर्थ व्योधा जातित के प्रितीयन का यह छोटा और बीचान की राष्ट्रीय विधा विश्व की प्रान्ता न्वीवार करने । सन्ते उन्ने काच आप और न्यापाविक देशनोम का पत्म काज है। 1906 में के "कन्दे कावस्त्र" के सम्बन्ध होंचे विश्व आन्योग में उन्होंके तथा कि आ स्व निर्वेद्ध और निविद्ध प्रतिविध में प्रान्दीय की को अन्योगित के का अवस्थ का सम्बन्ध में अनुवा सम्बन्ध में वाचि के प्रान्थकारी आन्योगन से या । यह यथा केल्यों के पक्ते वाचे के सम्बन्ध में वाचिम क्या । के विश्वप्रकारी से बचने कि विश्वप्रवाद विधायमा । परम्यु वाच में उन्हें बीच विश्व काच । के विश्वप्रवादी से बचने के विश्व 1910 में वाच्योगी भी बावे । उन्होंने में आन्योगन तथा प्रारंख काने के विश्वप्रवाद के व्याप्त में वाच्यो के विश्व के व्याप्त के वाच्यो में में वाच्यो में व

distributed I provinces dis-



वर्भा जी था हस्तलियिवत पत्र

-। बीवन तव्यन्त्री अवधारवाचे । -

त्यारं की की अनुवाल बाधिसपुर के निकारकार्ध कवारी नामक पाँच के

वर्षा की द्विश्वार में महोता पहुंचे वर्षा मारती किय मेश्रामनीयांच वर्षात को अब में को के किया मोर के रहत में सीन-वार मने पणा ने पार्ट के में सोसी नहीं में नहरूता परन तो की बार पांच तो बेला, लगाने में माँ की में हुआ। भरत-मान पोरिश्या और लेखेंड केर पुरः एक देती थी। पिले पी पाति है। ताम्बर ताला पूजा है जाता है में तम्बर पुर होंग्र और मैं हुएसी सोधी थी।

त्राहरीयों के प्रकार प्रमुख्य के क्षेत्र कार्य करें के बहुत में एक दिल्ल के लगा की कार्य के लगा के कार्य कार्य

दार्श को वर्षा है उसके हो। इसके दुई हम्बू " वर्ष विकार के के इस अपने दुई हो। तो कैवर्षा पर सम्बद्ध में के 1 के 1 क्रमणिक हुए 1 दुव्यों के तोन सम्बद्ध कि वर्ष को को को बार 1 दुव्यों के समाधिक में स्था बहुवर्ष के विविध हुआ कि वर्ष क्षा उसकार हुआ वर अपने दार्ग को का तीना

े अनुसार भारत भिन्न से के । बाबू बालगुहुन्द गुब्त ने छाच किने ।

कुछ लाय उपरांत जा यी ज्यानियार के विद्योगिया कालेय में मुली संघे के कि या दिये । स्तुराकि में लाय प्रतास कुमार कुमार के लाय ज्यानियार यह सो वाले में साथ सर्थ रहे । इस्ते साद क्राइम्स्ट्राकी के अद्यापन काल है यह सर्थ पत्र ही साथ आगरे में के उन्हें मीचल कोड़ दी । तेल्यूल के मुक्तियार लोगमाय लेग में तेल्यूल कहा में से किया । इतियारत क्राइस कुमार विश्वास रहा । में की साथ में अब दार्थ में तेल्यूल व्याप्तम की रहाई कुमार वर यह में की स्वाप्तम क्षाइ को न सुन्न को के कोड़े अल्यूस विश्वास कुमार का स्वाप्त की माय दी साथ अस्तास से मेंट को मही । अस्तास में का का नाज्य कोठे में को ने उनके जीमाय करते के और को मही अस्तास में क्षाइ क्षाई दिसी दार्ग में की विश्वास तीन क्षामिया सरकात में इक्तांमा हुई । साथी सन्य भाई लाख्यों के तिल्यार तम् 1909 के अंत में हुन्यों का नायम ताथ का स्वाप्त है।

वर्ष को को को क्षेत्र हाउन का सार्गाहर कराया कर अर्थ के के व्यवस्था कर अर्थ के के व्यवस्था कर अर्थ के व्यवस्था के के व्यवस

ती माजन लाल चुर्ति। "प्रमा" जा तत्वाधन कर रहे हे ।
तमाँ यो क्षण और जी सुन्ति। यो ज"ल्यदेवी वांचन " में लिखा जरते

के । बद्ध यो ने कमाँ की जा परिचय की मन्ता क्रेक चिद्धवार्थी ते त्वाचन

के तरत्वाती के तहवारों तत्वाधन के डीर वाच्छर ते "प्रताय" विवास एवं

के तार्वी में "प्रताय" के तत्वाधनाया करे । "मोलमाल जारिकी तथा

वसी । बद्ध वी मोलमालानेंद्र के नाम ते मन्त्रम दिल्ली जी मन्द्रां महत्ववारोंद

के नाम ते और वर्धावी पिट्यावाबी के नाम ते हा त्व और व्योधन के तेष्ठ

विवास के अंग वर्धावी पिट्यावाबी के नाम ते हा त्व और व्योधन के तेष्ठ

विवास के अंगा वो मोहूल पूरा में पहले के, जीवर ल त त्वावाराच्या वीचा भी वर्षी क्षण तथा हो जात्वाधा हो सहद की वा बारवाची हात्व

चुनेत्वों ते जात्वा । उज्जा प्रतेश किन्दी तर विवास तम्बेलन वा तप्नेत्ववा

को को तर त्वाती में बहुता विवास क्षणके को अन्त्र । अन्तर्वाद क्षणके वा त्वावाधन

करते वार्वी के बहुता विवास तथा हो तिविवास साथ वा ज्यान्यात विवास । आगरा

(4) के अगर के किया को यह यह अपने किया कार्य के अपने कार्य कार्य के अपने कार्य के अपने कार्य के अपने कार्य के अपने कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य के अपने कार्य कार्य

तथा हुआ हे अन्याह वही यह असातके प्रन्त, में किंग्रे, मानवेद, मेपाती तारवहाय प्राथित इकारि की बीर्ति हुई। और दीरे पीरे उपली हुई हुई होता की । हार्त्य क्यों से हार्त्य के से

and the second processes and the second seco

अरे अने अनेक में पुजा कि वा अरो अपनी हार कारावा है। पुरुष्ण करने समझ कारा को के का अरो में उसका में आ को का तेन अरे की क्या-के प्रकार-कारों के परिचार के अरुवा को तेन के स्वाप्त अरो ने प्रकारिक परिचार के परिचार के अरुवा के तेन किया प्रकार कारों की के कारा हुआ के विकास में ने कारावा के तेन काराव का का अरुवा पूर्व कारों के ने सुवार किसेट की ने कारा वाली की अरुवा का काराव होते

हुएत की के बार प्रतिक्ष केत्र और अवस्थित राग हुआ दाल से बंद हुई । बारह बोर वाली हुनाती और तीन में पत्र तर बोर वाली राईका यक्षा की के बाल रही । विकार के वर्ष बार वर्जा की के प्राप तेवर से पड़े । उपने जाने माने व्यापी वा ग्रांच था और प्रकाशत उनती के उत्साद अतिक था ते हुई किसे उन्हों 42 वर्षक धीनव्यत थी। यह दूस का पान हज्जानीम वरायात वर प्रतिविधा है। प्रमानी के के वो आधिकों से ताम्याचा है। सूर्वन पद्धार के उर्जुत पान का पूरा वर है। प्रस्तापत है कित भारत का किस किस है। वह भेरी भारत ही है। जीती किसे में सहजरी अपन्योक वर प्रारम्भ हुआ । वर्ष की की सहजरी स्वीवीकोर की ज्यापना ारने तमे । व्यवं भी था विश्वास या कि सहवारी प्रवस्तों से प्रामीण व्यव ी आर्थिक और सामाधिक रिनारित हम्म सबसी है। ह्रम्य की दिलीर मान ते उनके विकास्त्रों का तेव्राव प्रकाशिक प्रवार । विवार जनवास्त्र राजी वाकी वा बजरे ज उल्लेख हते वाच बारूव पुरस्क है पर विवार । विवार कोई है वर्मा की के फिरोधी की आ का राम की मोरिज्य बेर को सार करे। शीकाम्य में मुक्तेपार में अक्त्यान की की राम कार्य और की शरिकेट कार्य ने के हुई। व्यापाय के मीजियका में का पता क्रम प्रका की के 1 करी क्षा किन्द्रां की कोंगी और की विशेषी और है कि कुछ र स्वार्ट की में क्षेत्र हैं। की अत्रक नहरीयाई उपन्यास के तागर तिह यह वे ही है। यह तह प्रत रचटा लेतर व १ हजा । विरोधन के जिस वर्धा की बराबर बाले रहे अर्थेप अरस्यप सारके एते । ज्यो च स्थी उपम्पास में स्थेट में साम स्थी सामे मजुर्दी की आ ज्येल बहते किसी है। 1908 में वर्ग की वे बार का सुद्ध" वर बीजन वरित विका । जब उन्हें निवस्मार मुख् और विश्वित है भाज

उद्धार के के का का कि शाम का है कार्य की की आ त्या करते की क उनकी अर्थन की कि सार्थिक और क्या दश्या अन्य की केम की हुई तैया कर तके के महार्थीकाई उपन्यास का अधिकार उन्होंने प्रयासकी काने प्रवास में किया के अन्यत केया कोई अन्यतास की प्रयास सकते हैंक यह प्रशास वान्त्र्य के यह सम्मान्त्र वारिकार की है के

gran franchiganna è scarce especialisme feath a ve four le cuf al franchiganna di forel afrag è scarca è fou sere què i storre par especialisme di archemitera storre è ger le straine se ai pe four è sont ve un a è claici cui di è pe è four le sont e sont al generalisme di archemitera est pres four ès

नारी प्राणियों तथा के सम्मारित है यह स्क त्या कर केंद्र विद्या के सम्मारित के अध्यक्ष विद्या के अध्यक्ष विद्या के अध्यक्ष के अध्यक्

and of a color rich of use from an above the color of the

^{1+3:} वी वहाची पुष्ठ- 266 हम्सावन ताल वसा⁸ ।

²⁻सवकी क्षाची पुष्क-266 प्रमाणम साल क्या ह

and all respect the definition expect act and the spectrum plants of the spectrum and the spectrum plants of the s

नो तुन्दाना प्रमाद को जानी कारणकार ने उन्नेत है कि ते के तुन्दान में तुन्दोन्द में वर्षन कि बन्दर वालेन में पर अपनेतन दर्भा तो के तुन्दान में किन्द के वर्ष में में परेपान से सीवार पर के आठ राज्यात कुन प्रमाद पायकीय महाविद्यानान नीवार उन्हेंतीकोर के परेपान आ परे के अपनेतिक प्रतिनाम आदान प्रमाद के अपनेति कार्य की तह परे विवास वर्ष भारत और यह की तरवारों में उत्पाद के

and the confinition was and his and receive of an galler of any and the confinition of th

त्वित्र वर्ष को देशक में के समाचीत का उत्तर तमाचीत कर्म की तो सन्तर कर 1 उन्होंने 6 मार्च को पिन्द में करायक बीधा की पात वित्रान्त्र प्रत्निकारक में दोकान्त्र पाक दिया 1 उन्हें सोविक्स केल पुत्रकार के नाम 16 का, बार को वित्रकों में 6000 करों का उत्तर पुरत्नकर विद्या कर 1 उत्ते ताथ को जाना और तक विद्यों है हुन्द्राच्य वाल तार्त वे अपनी असानी में तिया है, "तिन्यामा है । असीनी महोते और संबंधी के बाजी से भेटी पहले करी है। वेदात है पाणी में उस महोते को तियोचन आगार पुष्पान विश्व । वेश्वती से में और पुन्येत्वापट एक्सी अमी उसम नहीं हो सबसे । वेश्वती पर बहुत पाले तिया या नुस्त पहले की जोताब की ती। उसमें हुद परेस्वाचित परिच्युक्त दरिस्वचित किसा । वेशी बहानी किसा वेद्या में पन्यान हुन्य पहले अपने हो रहेती । वेश्वती पुन्येत्वापट हे तिय प्रमुक्ति की असीन है। विश्व पाणी में वेदी महिले के तिया । वेशी बहानी वास्त्र है उसी में भेट पहले सीनी माने ।

¹⁻अपनी क्षानी पुट्ठ-382 हुन्दाका बात वर्ण I

अपनेष्य वार्तास्य हे प्रतिविध्यत भारी । वार्तम्य वार प्रणीतनीयतः

ा सारक अध्यक्तिः :-

अपना ने पराप का वे निवास होने वह पून दारण है। इस की सार्थ कोवारों और कह बार्थ के व्यावसार का तो की मान अपना के सम्बन्ध के वह में की है । प्रावस्त्र किया में आपना की भी अपना दुल्य का पराप का के हुनेत अपना है। या पराप किया है। अपनी उन्हों, बारणाओं और अपना के काद आ का को पराप का तो अपनी दारे से हैं। बार्थ का बार का अपनी है :--

> बहुत रिक्षण है से द्वीरक पाने, बान पति पर पैठे आहे । केवारपान क्षीरी का राजी, राज रतावन रतार पाने सीवन क्षारित क्षार उज्जावर है तुनी अंग्या पीच पियारर ।।

gu d'inne, face, subor, niv digar, lyn d'i gifeau coig arts foiles and montait or face arment absorbt gur de fye à face di gife aire an ma di se afe facefoiles afront d'inné :-

वारिक-तुम्ब कर कुन्द्र अवधि, जेवन वी क्षीक रिकारिक वरिवाय की वर्षपुरित के, करेनुसार के तुम अवधि 11

th baser or our form our surmeer it got of said of perform

देता है। वह नारी के अध्यक्त का पोषक नहीं है। और उते पुष्प की हुमा पर अवलिम्बत नहीं रखना चाहता। वह उन्मुक्त प्रेम का पक्षमाती है। डा०राम विलास समा प्रेम की व्याख्या करते हुए किछते हैं "प्रगतिशील ताहित्य नारी की त्वाखीनता का पक्षमाती है वह सम्मत्ति जाति,और धर्म के विचार से किये हुए विवाहों की वेदी पर देश के युवक युवतियों के प्रेम की बाल देने का तकत विरोधी है। वह उनके प्रेम करने का और जीवन में एक ताथ रहने और संबर्ध करने के अधिकार का तमर्थन करताहै। जब तक प्रेम के अतिरिक्त विवाह के लिए जाति,धर्म और सम्मदाय सम्मत्ति आदि की शर्ते रहेगी। तामजिक व्याधियां बनी रहेगी। लेकिन ये व्याधियां युद्ध जलत ते हुद्ध जल पीने की ध्योरी से दूर नहीं हो सकती। यह मार्का वाद के विधरीत सामती पूर्णीवादी नैतिकता काम्रतिमादन होगा। प्रगतिमादी कवि नारीको मुक्त न करने के लिए मुक्स को प्रदक्षणता है:-

योगि नहीं है रे नारी, यह भी सानवी प्रतिष्ठित ।

उसे पूर्ण त्वाधीन करो न्वह रहे न नर पर अव सित ।

× × × × × × × ×

सुक्त करों जीवन सीमन को, जनीनदेव को आहत ।

जग जीवन में मानव के तेग हो मानवी प्रतिष्ठित ।।

× × × × × × ×

सुक्त करों नारी को मानव, चिरविन्दीन नहीं को ।

सुग सुग की दादी कारा से , जीनन सकी प्यारीको ।

सुग सुग की दादी कारा से , जीनन सकी प्यारीको ।

उसे मानवी का गोसव दे पूर्ण त्वत्व दो नूतन ।

उसका मुख जग का प्रकाश हो , उठे अथ अवगृतन ।

खोलों हे मेळना सुग की कटि प्रदेश से तन से ।

अगर प्रेम ही बंधन उसका हो प्रविन्द वह सन से ।

नारी पुनो ते पुल्ब की कामवातना की तुष्टित का ताथन मात्र तमकी जाती रही है, पुन युगान्तरों ते पुंख्य उसे क्रीतिदासी मानता रहा है। इतिकर पुगीत्वादी कविकी द्वाबद नारी की परिवशताऔर दुदश्रों की ओर गयी है। रामेश्वर गुक्त अंका गरीरी प्रेम योवन और आवेशमयी भावुकता to other by seeded article of the or go, at, the, and some and article of any of seeded are come it agrees article of agreement article

विश्वती में क्षेत्रकों ब्रह्मच्यों के लोगरे क्ष्मक के उन्त में उन्त नामी भाग तक, व्य अववाद, तेरिक्ष बर्चन सम्बद्धी को बेली विश्व में उन्त नेव इसेने तक और व्य वास्त्र हुट कोने तकों के अ अववादाय तेरून के अभिन्यतिक तक व्य ने न वर तकेन । का देन अवे विश्व प्रतिक्रम इसेने को बेल पर और व्यवस्थातिक नामाचिक कीने बोल्ड को को अञ्चलिकों को जान परने तको और द्वारों और तुन्तिक बोल्ड को को

The state of the second state of the state o

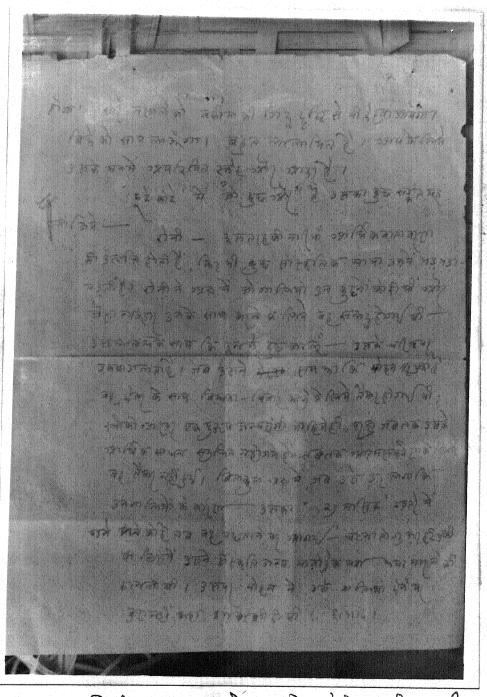
प्रयोग्यामधी जीवरह यह प्रश्नात जा प्रमाप विश्वित त्रीक्ष में अवस्थ कर में समी हुई सामझारी को प्राच्छ तेन है की स्वोगीक्ष्मन है यसप्रीत ताहा च्याक कांग्रा आहेर ताहात मान्य प्रश्नितारों के प्रश्नी काम प्रश्नीक होता। तो तार्त जाती है अस्त को मान्यों का एवं यह महत्व प्रमाप वर्ता है है गानेष समापुर निर्म की लोकताओं क्षेत्रतीय क्रूपोण तथा पर-स्था तेन्द्रवा एक उपस्था क्षेत्रवार्त परमा है। उससे सोमाणिक अस्ती का की प्रभाव नहीं है । वेश्वाले क्षेत्र " लोकता है विस्ते हैं :--

देवेन्द्रः सरवाधीं ही वधिता " एह क्षणकात की गांठ " वे देवीन देखिते रू

प्रणीकारधीरोक्षात क्यांकाच को तो अध्या भागो है। शिक्यांपिति में अध्योत्माच को प्रकाशम भागा है। मार्कावाद का उद्योगम सर्वताचा को के स्रोक्षा को समाध्या कर एक सर्वतिम सम्बद्ध को स्थापित करना है। अर्थ का

दितीय अध्याय

वृन्दावन लान तर्ग के क्या साहित्य का संधिएत परिचय



बर्मी भी का हस्त लेख, 2रे जारे पर विचारी

garfee g

बागीरधार इसाहित के बरतगढ़ में दक्षिया में निवास करते वे वे शिकार के औं कीन के । एक दिन भिकार केलने को ली लगायिनों के लगव एक ते हुए की वंशाधानी किया । वृश्य की वाँच में तिहुए के वाँत यह गते थे। उत्तरिक व अनिव तिंह उदार थे, दिराधित थे, हठी थे, तहवाँक वाली और सक्ता प्रवर्ता थे। हुता कि हु ने अपने भने का उल्पन उतारा और पुरन की पश्चा दिया । मुन्यन और सीने का था और उसमें हुए बदाबर भी है । हुआहर के दान की वे न नामते थे । अतिको उनके ने मिली में तथा अनुवाधिता में हवाहत का वेद बाव बहुत न था। उनहीं परनी प्रकारी है राजा ही बेटी भी । इसर्राध्य व यही बाहते वे कि वह वेट वर बार्व और उनके आदमी हुछै वर उन्मेंट रहें । वह चरहते थे कि पूरन हो तेवा सहुता बहुत उन्हों ही और औं हुई दिन विश्वीर्थ बीचन भी भिने । उनकी बरनी वरवारी वाली ने सम्बन्धी में ते रत्यवदित स्वर्ण पहुँचियाँ विकाली और संस्थी लोधी के शाय हुंबी के वर्श निश्वी स्कंबर वाँच ती स्ववे नेकर अण्डार की क्यी पूरी हुई और तैनिक ताथियों की भीवन व्यवस्था प्रस्क ही गई । वरवारी वाली के बहुत कर वर का है का तीन तवार त्यारे वी तीयी । उसे की तातवार है यहाँ निरावी रवंतर किया दियों के बाकी वेशन की प्रकार किया । उनका बहुए नाम था आतिये जान की बड़े करने थे ।

दिवा एमवास है एक उत्तव हुआ। महारामी की परिवारिकार्य बरकारों बाको सरकार को निकाम्भव करने के लिये आई मेलिम आयुक्ती के अबाद हैं वरकारों बाकों को जाना अद्धा नहीं तथा और बोमारों का बहाना कर दिवा । वरम्बु रामी रेकोब देकों आ गई। बरकारों वानी को दवान का कि इस उत्तव हैं आप बामीरवारों और सेंड साकुकारों स्था अमारों को जु वेदियाँ इक्ट्रिंग होती । उनके पात कोई आहुनेना नहीं है । सबकी दृष्टि उनके उपर पहेंगी। मायका परवारी न होता तो कोई बात नहीं भी जैंगे हान और यका वेकर महनों में क्या हुई दिवाउनी । वहाँ समान स्त्री हाना पूर्वी करेगी । परवारी वाली हो बहा हुई हुआ ।

रमु और पूरन ने डाका डालने की पोचना नेकार तैनिकों के तान डाका डाला नाने और आकुका परकारी बानी को दे कि नाने क्यों कि डाके और नहाई में कोई अन्तर नहीं है। क्योंन की हमारे ही पेट मारने के लिये तरकार ने अपने नहने एक एक करके ताहुकारों को नेंट कर किये हैं। क्यारे को पेते ताहुकारों के पात है। क्योंनी के पात 20-25 आदिन्हों ने नाईवाँ को केर कर बुट लिया। किला के पात अवस्थात नहां हुआ कन मिन नाने की बात तमक्षकर तोने के तमस्त आकुका परकारी वाली को दे किये और वाँकों की नमनी को।

द्विता वाली वहु ये हतेलों को वहवान निवा और लन्देह
होने लगा कि निहलरों ने हाका हाला है मुशाहित हूं को जो लन्देह हो गया
कि हाका वरवारी वाली ने हलवाया है क्यों कि पहुच्चित वेली ही निल
रही की वेली गिरवी वर दी गई को । हुंबी को छुनी तुन्द्र ने भी हतेलों का
वहवान निवा था । लल्की ने सुन्द्रा के लामने वांदी के वंवने और हुछ आपुवला रके जिन्हें सुन्द्रा ने पहचान निवा और पेवने तुन्द्र के हो ये ।हाने को
लल्की ने स्वीकार कह ली । हुंबी को सुन्द्रा ने लव पिक्ला सुनाया। हुंबी ने
कीशवाल अमीन, दीवान सबनों करियाद सुनाई । दीवान बानता था कि
मुशाहित बू रावा के गई के दामाद है और रावा के दरवार में उनके यह ला
महत्व है । मुशाहित बू लक्की के कि उनके आद्या भी नाम कमावेने परण्यु
उन्होंने हुंह पर बोलने के लिये कार्युव तेवार की है । उन्होंने किर भी रामतिह

ते वहा कि वह राजा के बात जायेने और वी हुए एक दे उन्हें। दें। बरकारी बाली ने की वहा कि अपने आदिनियाँ को बबाने के लिये कोड कतर नहीं रक्षनी बाहिये । राजा ने कोतवानी की अधिता िया एक केटी के जीतर सम्बी बीधी और मुशावित हु के मेहतरों की पकड़कर माजी । यहा हिया व ने तिया किया की आखादी कि हथ लीन व कड़ेंगे न वाने के लिये तैवार रही । वीको बावद हवारे वात को काओं है। राजा ने आहा की कि वृद्धि अवराधी केरा नहीं किये वाचे अध्वा पड्डेन में न आवे तो छता-खिल ब क्योव मिंह को केंद्र करते किने ने जाओ और वन्द्रीयुष्ट में वन्द्र कर दो । अन्यया अस्य हो उनही देशा निवास है हो । बोलवास नै सम्बाधा कि अपने विवाधियों के लियार राजा पर आई किया विवह को काटने है जिसे उसी बाजिसे है तो अपन बालों है हुन बहाने है जिसे उसने ही है। अपनी तीन नम्ब हराम क्लेमे । कीतवाल ने प्रशास किया कि तब आदिन्ती और तामान को मेकर का अने बार्ट । हुए तम्ब उपरान्त राजा भानत है। बाबेगा और अपनी फिर सतम्मान क्ष्मा मेथे। जीतवानने हुनानी मुबंहुक अक्षादिय हु है में भी और राया को सम्बाक्त केंग कर दी । राया को समझावा कि सुताहित हु सरदार है और तेवह बरतस वे अटडे सिपाही है और स्वाधियों । मैंने अपकी अका उन्हें देश निकाले ही सुना दी है । क्षा हिल बुने अपने बाद कियाँ के साथ प्रत्वान किया । राजा के के सबन ही गर्व । और इसमें समें कि दिया निकाले का समझ तो पुरा हो बीमवा। का सरकार ने मेरे लिये अनेक बार बान जो किंग में डाली है। इसका आज यह हाल देशंबर द्या अरहीहै औरधाल ने ही उता कि रण है बेसा अहने थाना ठाक्ट बर्डिनाई से विनेषा । राजा में अबर दी अवन्त की मार्यादा पुरी हो वह बरतवह तोट बाधी । होतवान ने कहा कि आपने महाराय ही आहा हा करी निरादर नहीं किया ।

सम्बन्ध साहुआर मी मुता दिव हु है पात आकर लीटने की प्रार्थमा जरने लगे। रामतित कदमा है कि तिनिक्या की सेना रानी जी की नदी तक आ गई है। लीम कहेंगे कि आप करपोर्जी में सब्दों आमें है और आपके तिवाली हाका धालने नैत्रवीच। मुला दिव हु कहने लगे कि हुद्ध में प्राणा देना करआ जाने की औरण कहीं अधिक अदला है। राजा दोदान की तैकर आदे के बाम में बहुते और मुता दिव हु ते कहा कि में तुम्हारा राजा हूँ मिरी आजा का उल्लंबन हो न करोंने। बरसन्द्र बाजों और वन्त्रदा अपना काम करों। वस दिवा पर बोई धावा धोते तो इटकर उत्तका मुखाधना करों। मुता दिव हु नेस्वी बार कर लिया कि त्वामी के हुए है सामने लेवक बा इद नहीं वस स बता अमें याता हूँ हुता दिव हु में राजा से दहा कि मैं यह तब धान बीटवा हुना। राजा में देसकर कहा कि मुझनी उस दिवस में हुए नहीं बहना है।

वस उपन्यात में मुताबिक हु जा परित्र मुनिश्त हुआ है। वह विश प्रजार नदी, अपने राज्य की रना करने में लगई और अपने तेवजी के प्रतिज्ञार और उनकी प्रक्रिता में रनी वाले हैं। अपने सेनजी से व्यक्ता प्रेम हैं कि उन पर अधि नहीं अपने देते।

शांती की रानी लहमी आई

करें को रानी नक्ष्मीकाई उपम्यास है रानी नक्ष्मीकाई का स्विष्ति विक्रण है और उनके कोई, कोरता , स्वतन्त्रता की बावना तथा स्वतंत्रता रंभाग के बीच कोने का संक्ष्म है । उनकी मान्यता वी कि उनका संभाग के निवे अन्यरक प्रयन्त रुके निरम्तर विक्रान आवश्यक है । उनका प्रयन्त नीव के प्रयर्थ के समान है जिस पर क्षम कहा होता है ।

उँगावर राव इति है राजा थे। उनहे राजा में जिन्न होते रहते थे। राजा स्ववैद अजिन्न हरते थे। मोतीवार्क नाइन्काला में बहुत पृतिहा थी। वेद उपनिबंद, अनि , बुराब, तन्त्र, आयुर्वेद, ज्योतिब, स्वाकरण कास्य हरणांद है हाने उँच उनके प्रताकाला में ये कि लोग हर हर है उनकी प्रतिनिधि है तिवे अमें वर्षे

गौरोवणत हो यत्मी हा नाम अमीरव वार्ड था । मनुवार्ड कार्तिह वही । मने 10 189 हैं।। नवम्बर सह 1936 के दिन हाली में इम्ही से उत्पाम्म हुई । मनु वब वार वर्ड ही वो तमी उनहीं मासा हा देखाना हो गया । मनु अवनी सुन्दर वो कि क्ष्रवम में वाचाराय इत्यादि उसकी त्मेहवरा हवीली नाम से पुलारते हैं। मनु वबन हडीली और बहुत वेनी हुद्धि हो वो । हनपति किवनी और अर्जून शीम के बुशासन आक्ष्मानों हा उस पर प्रवाद पद्मा । उसने रामी होने के समस्य गुणा थे । यह हुनां सी वान बहुती वी । मौरोवणत के वास वो हुछ वा उसे वह विवाह में नगने हो तिवार वे । प्रतिविद्ध मान्यनों हो मध्य स्था में तब हुआ कि विवाह का स्थय सिती के रामा वहन वर्ड और विवाह होती में होवल होना । यह जी तब हुआ कि मैरवेपण्य स्थायों तीर वर होती में हो रहेने और उनहीं नगना होती के सरदारों में होवी। उस समय हाती में हो रहेने और उनहीं नगना होती के सरदारों में होवी। उस समय हाती में व्यक्ता और हुआहा दो अन्ते हित्त है । वैवाहर राद क्रीनी है ।

नारायन आतो एक छोटो बंगिन को रहे हुये थे। प्रवनेता जो एक जन्य वासि को सुन्धरों को रहे हुये थे। वनेक है अपर विवाद उठा कि गोदी जाति वाले वनेक नहीं पहन सकते। प्रवनेक और नारायन आहमी विरोध में थे। राजा में न्याय किया कि गोद वहनें बाने को कोड़े सन्वादे। एक दिन छोटी वब जीतर नारायन आहमी है मजान में हुत आई तो वाहर से नोगों में संकत बहा दी। छोटो क्यरेंस पर बहुकर पांधे से बासर निकत गई। नारायन अहमी में पूराने नये बहुत के बनेक छोटी को दिने और राजा से उतने कहा कि वई नोगों में मेरे साब की ब्रद्ध किया है परमूत राजा ताह गये कि यह नेहिंगों को यन पहुमत छटना है, । राजा में उन्हें बांती छोड़ने बादण्ड विद्या।

हैंगा बेर राज का विजाह गएर बाते ग्लेख शन्दर में मनुवाई है ताय हुआ । हुन्दर गत्र के ताथ दाजी जनकर रहने है कि आई परन्तु गत्र ने कहा कि दाजी कोई नहीं नेरे ताथ हुकेशे अगबर रहोगी हुरोक्ति ने जब दोनों की गाँउ वांधी हो गत्र बोजी कि रेतो बांधिये कि बड़ी हुटे गहीं।

विवाह सोने हे पूर्व नेनावर राव की शानन का अधिकार नहीं था।
विवाह के उपरान्त उनकी अधिकार नित नवा । रानी नक्षणीयां सवारी
क्षणवाम स्वाईत किने वाने मन्त के ई निर्द आहु और मैं कर वाली थी ।
असनी सम्म्र सवेशिवई तथा किने के बीतर रहने वाली रित्रमों को वह सवारी .
असन प्रयोग , मनवन्त , क्षणी का अस्पास कराती थी । स्वान की स्वीनी
म्यु का मोबाई के विकास आजीं हैं विनीम सो नर्थ । मन्त में रानी ने केन
की मक्षणीय हैं और की प्रतिवाद की स्वायना की । स्वायी है है का उत्तव की रानी ने मनावाद विक्त सववाद रिवर्ष एक स्वारे को रोगों का दीका सनाती
के और उनको विक्ती म विक्तों के बहाने अपने पति का नाम नेना पहला । राना
के कार कठोर और अध्यावार कुर्ज सीने थे । कठोर आहन हैं नहीं करी करा िक्रमहर्द बहुती को यह राजो के प्रशास के कारणा दिकाई बहुती थी उस समय कारतों में 52 सराजे सकारत है।

तंबत 1908 हेतन 1851ई में अन्यन हुदी रमाया में तो नेनानर
राव ने प्रत हुआ । रावा ने प्रव अनाम दिये । मैनानरराव मा यह वच्या तीन
महीने में आप वानर मर नया ।रावा ने अपने हुइन्यों बाहुदेव राव नेवालनर
ने वांच औं ने पुन आनन्दराव में रावा ने अपने हुइन्यों बाहुदेव राव नेवालनर
ने वांच औं ने पुन आनन्दराव में रावा निवाल ते गीव तिया उत्तमा
नाम बद्धत नर दानीवर राव रना न्यांचात हो न्या । उन्होंने प्रेन्यु ते पूर्व एन
नेनीता नेमी सरमार नहें और उनना न्यांचात हो न्या । उन्होंने प्रेन्यु ते पूर्व एन
नेनीता नेमी सरमार नो निनेवाचा कि वांच नेरा देवान्य हो नावे तो
दामोदराव राज्य ना उत्तराधिकारी होत्या । हुनिया ने 20 नवस्मर तम
।853 नो नंगानर राव ना नरीदा वोनिवरीकन क्षेत्रन केनाई वो हमीरपूर में
रहता है नेवान क्ष्म दिया । नंगानर राव ने देवान्य ने तम्य नदमीवाई १०
वर्त नो भी रानगिन्ने वाने महन में हो रहती वी । रानी ना मत मा निर्म्यु नेमान कर है हो हो दोवन है उन्हों तेन है वरन्तु नो नही ।

नाना और तात्वा राया है िने। नाना ने क्टा कि शांती ही हमारी एक आजा है।

रानी ने प्रदायकों को बीती हैं रहने की जाना है दी । हैनावर राद ने प्रदायकों जोर मोतीवाई को निवान दिया का ।

विश्व को बाद ताका को आजा हुआ के और बोक्का प्रशिक्ष को । रामा ने को ने को ते कहा कि में अपनी कोती नहीं हैंगी। वाँक हजार कारी मासिक कोरत महारामां ताका और उनने हुट व ने किये को बी रामी ने कहा कि कुकार यह कुत्ति नहीं वहां की मही हैंगी। उनकी महम्मता को कि हम को देख की करने का अधिकार है की ने का का मही उनकी महम्मता हरा कि है रवराच्या वारा को जाने यहा बाउंगों । जनता तथ हुः है । जनता जनर है, व्यक्तों स्वराच्या के वया है बांबंगा बाहिये । बनता के जाने शोकर हैं स्वराच्या को पताचा करराउंगों । हैं विका प्रार्थमा को निका पढ़ी बारी ए मुदेगी विकायत हैं जमीन विकास उंगों ।

योगित क्षेत्र क्षेत्र ने भागि है क्ष्मिन है कार्क क्ष्मि निवासकर व्यापीत राम है मान है भिन्न क्ष्मिन है क्ष्मिन है क्ष्मिन क्ष्मिन होने पर क्ष्मिन क्षित कोटा क्षि मोदे मिन्न क्षित होने हैं क्ष्मिन क्षमिन क्षमिन

रानी के नदावनों के नवाई का अध्यान किया बाहती विजान स्थापित किया तारवा ने नारावन आरती वो नवी किने बानते के तारण अनेको तेना ते अन्वर्क में रहने का कार्य तांचा । रानी का निजी क्षेत बहुत का था परदृत दान कुन्य में बहुत के जानती की । वे तरवान की एक पीचना पहने बना नेती के । दानोदा राज के 6 वर्क के तोने पर जोऊ तोना जो पालि ।

जरता है हुआर और गाव की वर्ध की जरता है। जात इस्क्षियों के विश्वत्वामी द्विपादियों में केन्द्र क्रम के दूस और रोटी जगह वन्छ नेन्द्र मंत्रि की बात केन नई । 10 गई को गेरड में सनवार बण्ड्रक क्रम मई क्षेत्रों को बार दूरकर दिवादी द्वारे क्षित्र क्षित्री पहुंच को । वहाँ की विश्वत्वामी नेन्द्र क्षम के किन यह अधिनकी विद्यादियों ने अग्वत साम क्षित्र । वाक्ष्मास्वस्ताद्वर त्यस को दिन्द्री का समुद्र वीक्ष्मि क्षित्र । सम्बुर में बीक्षी कुन को राम को बनायन अस्ति राम के सम्ब सीम क्ष्मिर हुवे । विश्वद्रमानी नेन्द्र ने मुस्ति का अर्थन कर क्षित्र । सबेरे क्ष्मिना और सीस्त्रामार मुस्तिन -बारियों है हाब में आ को और नाना हो राजा धोधित हर दिया। धौडी पुत्र को भी कांनी हैं ज़ारिया के सक्षण पुक्त हुने । कुम्बद्ध रित्त यात्र के स्थापनार इव तेरियह नेकर कम्पयी निर्मित कोटे से किने में धून पड़ा और महाई का सब तावान और व्यवा वेता उठावर ने अवा । वार्डन ने क्रिय रिवर्षी और कव्यों को यहन है आक्य हेत रामी है आवा गाँगी। रामी ने यहन है रह निवा उन्हें रोटिया किया है। बीक्का अभी ने एडीय की भारत और तब काट दिया । शिवर्राहियाँ में निवादव विवार कि रामी से अवदा भी और दिल्ली वस दो । पहि रामी ताहब अवदा न दे तो ताहर से बहुन वरी । रामी में वहा कि अनेवाँ ने भेरे पात ज्यावा नहीं डीड़ा परम्यु बहा कि बुट भार वहाँ न करना और पते ते ही ही वा बार उतारवर काले की वे किया । रानी ने दीवान बदाहर सिंह को कुम्बाचा और नवर द किने का प्रबन्ध करने वा आहेता दिया। मीप उक्त ने कहा कि राज्य का सर्वाहित ब्राह्म रामी सहमीधाई के काव में रहे और तब लीव अपने की उनकी प्रचा मानकर अपने बीवय का निवाह करें। राची यह बार स्वीकार किया । इसिंगे पर बनवा इन्हा कहरा दिया नवा । राच कार्व का विकासन हुआ और एटाफिकारी नियुक्त कर दिसे गर्व । राजी मे पुराने लिखार इक्ट्रेट थिये बनता ने की जीनकर क्यारे थिये बड़े और मलस्वपूर्ण मुक्की के स्थवं शुपती की । और शुरम्त किरीय देती की । उन्हें बता लगा कि बार आसा गर है हुंबर सागर सिंह हाड़ ने नगातार कई हा के हाने हैं। रानी ने कुद्धायका की विचारी नेकर काजावाचर वेचा और कहा कि उते हुत या जीवित तार्थे । यरन्यु बुधायका वायन हो न्या । रामा वातावार्क और मीतावार्क है ताब क्रजातायर गई । वेतवा वेतवाता वड़ी की पानी बस्त गवा था रानी तथी अने वानी है की गई रामी क्राजातायर है किने हैं पहुंची वहाँ बुदावका और बायन तियांनी वहे थे । इंदायंका ने विल्ला हान सुनायां। रामी ने -

तायरतिष्ट को बीविश पक्ष लिया और बोड़ा तटाकर उसकी कार में बाब जान दिया ।

रानी ने सामर्शित को गांकी की तेना में वर्ती लीने को राजी कर निया और यह अपने पूरे निरोह के लाय तेना में बती हो नया ।नल्येश के द्वा में जो सेकेश दिया उत्तका तार था कि सांती पत्नी औरका का अंतर of , as usfun gate à siret à ore feur our , su sirent of वाधित फिलना वाहिये । बीच वो पाँच क्वार माहिक वृद्धि रामी ताहव को क्षेत्र है उन्हें वर्षों की एवं निकास रहेगी किया , मगर और शास्त्र हमारे एवाने कर तो । औरता के द्वा को नरवेवां के होतो का उस्तर दिया कि नः मीबाई एवं को है वो तास्य की अवता की रक्षा करनी वाहिये न विजनते सार क्षा प्रवार का प्रवाहर । राजा कीवी को और से बांसी का प्रवन्ध कर रही है। रानी अध्यो को और से इति का प्रबन्ध कर रही है। नरवेशी की तेना बार बाबर पीढ़े हो। रानी होती ही हर बात में जाने देखा जासती थी। प्रत्येक विकार में कांशी आपी एहे। यह तभी वस देता की की भी है की ते हटकारा भित्र वाचे । रामी को संबरावा हवा वा विविधात क्यी नहीं क्षेत्र उपका कार्य सता: अध्यारत बारी का क्षापी में वक विद्वाद व्रावन्त्रण की प्रारी शादी करने है किये पाँच भी रूपये क्षि ।रानी ने इतनी बारूट कारवाने में रक्षे की आकार दी जिसते हम जिले में केंडकर मही मूर्त गई है । यह राजी की अवंती, वंगती ने वेटा तो उत्तरे दोवान को आका दी कि मांगी वाले, विवारी ताले क्यार ही उनको एक एव हुताँ यहरे और बन्धन देने की वहा पुरन के साथ वन एक बाध्या यर गई तो लगाव हरकारी की गढ़ा तवारी बेर्बना बासता का पुरव राजी हे पात आधा ती राजी ने वांच्या वाले ते पूंछा और उतने वहा कि बारिया मही नहीं । पूरन की एक पैनल देनी यही और हुददी की गई राजी रानी अपने को यहारा-द्व हुए हो य स्थ्यहर विष्या क्षणी स्थ्यही हो। वे बाबत क्ष्याओं हो योक्षक थो ।

सारवार दोने ने प्रस्तारों के राजा भी कर विचार और तुद्ध कर कालकों और नवर । राष्ट्रत नद्ध के बाने परित्र तो प्रकार राजों के तरवार्थी तुने। उनका तरवार तुन कुलन्मद को । उन प्रधानों को तीम अवस्था भी । काहे पट नवे के उन्हें कानेट बीचन पढ़ों किया था । राजों ने उनकों तब प्रवार को तुनि काने हो । पहान्ती ने तुना किया कि स्टार म्य के लिये राजों ने दक्तों है अने तब के किए की । उन्होंने अने तुना वो उन्हा तक विभावत ।

विया वर्षा वरतानुद्धीय में रामी की उनके तम्बन्ध में दुर्व हुवना दी थी कि उम पर गांक हे, बयानक हुई हुआ परन्तु मांतों पर अपनी में अधिकार कर विया । रामी की यांच में केवन हुन्थर, मुनमुक्यमद, देशासुने और रहेनाय तित्व को वांची तब मारे नथे । भाषणी पेशवा तारचा की तैना का तेनापति राव ताख्य को बना दिया । उनकी तेना वहीं परन्तु अनुतातन द्वीनता और अध्यवस्था के कारणा परास्त हो गई । रामी ने दक्ष महीने मंति पर तमनता पूर्वक राज्य किया । वेशवाई तेना तांच्या टीपे प्रभाग तेनापति निमुच्त हुआ ग्यानिवर को योग विया और वहाँ विद्यासमानद हुआ । वहा रंग में हुम ग्या । अपनी ने पिए आकृत्या किया ग्यानिवर तेना के परवर्त में प्रभाग के कारणा पेशवा की द्वार हुया । रामी के कारणा पेशवा की वार हुया । रामी के उसवार तमी हुन बहने तथा । बाबा नेनादात की द्वारी तोनते के अरलर की और यो । रामी वहाँ यह और रहुनाय तिंह ते वहां कि मेरी देह की जुन्ज न हुने वांचे ।

राम्प्रमुद्ध ने अवना वर्दी वर राजी वी जिहाबा और को हुवे ताके है हुन्हें ते उनने जिर ने नाव को बाँका रहुनाय जिंह ने अवनी वर्दी वर हुन्छर है उन्न को रक्ष किया , बाबा उन्मध्यत ने वन विभाषा । बाबा ने कहा कि हुंब नावने नहीं है तो हुदिया को नजदियाँ ते हाह संरक्षर कर हो । देवामुक्ष के आमोद्धरराव को पीठ पर बाँबा और वीड़े पर सवार होकर वन दिया। हुन्धुहन्मद कनोर स्वकर अवना नाम मुनताई रक्षण रहा । रहुनाय जिंह मी भारा गया । मुन्धुहन्मद तो गया हुन्ध उता हो देवा कि हुन् हाद्धियाँ रह गर्थ। उतने मन में कहा वह मरा मही वह कनी नहीं मरेगा । वह हुन्दी में बाम सक्षणा रहेगा। हुन्धों तेना वा एक दल राजी को हुन्न की में बार्य पर आया अपने मुन्धुहम्भद ते दुन्धा वह किता नवार है । हुन मुहन्मद ने उरतर दिया हमारे पीर कावह बहुन वह बहुन करी था।

कवनार वेतिहासिक उपन्यात की कवा अवसा वामीनी के किसे और राज तक श्रोतित है। कि प्रकार किया किया की बाबी सेती है। मानसिंह देवर मार्ग में बलावती रामी है बाच दहेव में बाई दो दामियाँ बल्मार और लिखा की देवता है और क्यूनाए पर जासकत हो जाता है । क्यूनाए सुन्दर और मोरी है तथा नविता बोड़ी सर्वनी । वासियों का बीवन कित प्रकार हुँबारेपन हैं ही व्यक्तीय होता था । यहण्य अवस्तुरी और उनके अवाहे की बात ते हत बात वर प्रवाहा बहुता है कि बीताई लेकिन के लहुत बराइम दिवाल और धनीपार्वन की सामक्षा ते क्षेत्र हे मध्यवान में प्रमा करते है । किसी प्रकार में बामीनी पर हुवे अपन्या है जिल्ला सिंह ने एवा की परण्य वह वीहे है निर नवा और अली प्रश्नीत वाली रही । अववार न ही तहा और क्रश अधिक क्षीने और कार्य का असर न क्षीने के कारणा उसका स्वर्नवास की नवान वर्षात उत्तवी यह से बाह संस्वार की क्रिया करने भी तो वाणी व योहे जीने आ भी और दान संस्वार करने वाले स्वाचित वहाँ है आप लिए । इस स्वीप हैं दुवा हुए एकन व वस्यव दुवा । गोलाकाई है महस्य वे पुता हुए काई देवर उते तीय वर निया । बीरे बीरे हुए स्मृति औरती रही और यह हुए हुए यदि रुक्षे तथा । क्षीप सिंह को गीताकार के महत्त ही क्षी आस्था ही गई ।

क्यवार को कोरे कोरे आजात हु होने लगा कि राजा क्रिया सिंह को महत्त्व के क्रिक्स है जिनका गामकरका हुमन्त पूरी भी है । क्यवार का पामकारण केंद्रजारों को हुआ । बाद में बोरे बोरे रहान्य हुआ । गोरवा-रिमा में अर्था सिंह को सहायसा से क्ष्मेंची पर अनुकार रिमा परन्तु होंगी रिम्ह को को । योग्वारिक्यों को बोस हुई और क्ष्मेंची रिक्स पर अन्वत्र अधिकार को क्या । महत्त्व अध्यादरों ने क्ष्मेंची का अधिकार पुण: रावार रिमाणार्थिक को क्या किया । रिमाण सिंह का विद्यार को महत्त्व में अवनार के साथ करा विचार महत्त्व में क्या आने अधिकार हुई हैरे और योग्वारिक्य यहना में अर हुकार हुन केरान्य में विचार ।

errore is never a record a arrive able continue or continue or continue or continue arriver able continue or continue arriver able continue or continue arriver arriver arriver arriver arriver at an arriver arriver by the continue are continued at arriver arriver arrangement and continue arriver arrangement arrangement are continued at a decrease and continue arrangement are continued at a decrease and continued at a decrease are continued at a decrease are continued at a decrease are continued at a decrease and continued at a decrease are continued at a decrease and continued at a decrease are continued at a decrease and continued at a decrease are continued at a decrease and continued at a de

arriver for gette man, metarer und mini uit uit and arvive et arvive et arvive uit arvive et arv

ards at fifteer

मानव को तिनिकार संबद्ध महामानक है । उन्हें कुछ दृष्टियों की वी को उनके को तुनों के सामने मन्द्र को । हमारे देव में वतनोत्न्यूनी पुन में को महान पर कारी हो है जो माने व्यक्ति हमें अपनी छाप छोड़ को की मानव को विक्रिया और उनके सन्वातीन राव भारती, महिन्या बाह होत्वर, मानव राव बेराक, मानव राव बेराक, सामने सामने को नार्टी क्यानि

प्राप्त को सर्थों नायक का हो हाम का कि केन्द्र हो प्रका कराये रक्षी के साथ हो उन्होंने प्रोक्षों को को आरू निर्मार की रहने में सहयोग किया और किन्द्र मुख्यानों में काला को नायमा कोंद्र करने के प्रयस्त किये। याक्ष्म को विश्वका के सब पात बहुत बोदों को होड़का देशिशातिक है। कहाँ हो प्रमा देना और वहाँ उसका देशायतान हुआ।

व्यापत को तरीने पायह हा हो हाय था कि केन्द्र को प्रका बनाने रक्षी है ताब हो उन्होंने प्रोजों को को जात्म निर्मेश को रहते हैं सहयोग दिया और प्रकारनी हैं कहता हो संख्या तहुद्ध समे है प्रवत्न किने। तहन हो उन परोजों बागोशकारों और बनोकारों हो उन्होंकर नेमा है दिवसात हा मार्ग किन्द्रम किने।

अपने को ना विकास उन्ने नारत को सारों विविधा है जैसे हिंदी की जैसे हैं के सरीवा जरवाना प्रदर्भों राज्यार्थ नारत के और नोई नहीं उत्पादन किया । यह यह विरोध कावार को परावृद्ध की नाम को केन माध्य को हो समय ना तन्ने के पाय जाना के समय को का प्रदेश कावार के साम हो गए है गए है गए हो गए हो गए हो गए हो गए हो गए है गए है

and a

वन जांची प्रधानी है एक बढ़ा वा सल्यनस वम्धरियस का सुसम्बान संबद्ध आयाणी उत्तास कडीर समने संस्थापक वे । अपने यस समहत्व वाले विन्दर्श की को इस संघ में अधिक करना धारते है ।परन्त हमका एक हैगा शास्त्रकाथ मन ही मन का विधार है किए या अवसे बस्कानकार है अभिन ने नवीसओं होने वा भाव देवर वाचव वी है सहे बाई दरवा की वा बाकत और बन्धी सीते हुवे की तिल काटकर प्रशेषकों की बैट किया वा । वक्क्ष वी ने किन्द इत्यापनी में भारतीय पक्षा और सम्बता जरपन्न करने के प्रयुक्त किये वरन्तु विदेशी सुई प्रशामी सुरवादि तथा बाबा हानते रहे । किए ही और अनुवास वास्त्र की है जा क्ष्मी है बहुद सीवंड की- की तेना भाषक राधेवी । रामेवी में जी जानवीय की नवाई के बाले माध्य की ले बाब और ब्रह्म का किया था । मादव की विश्व और मराठी दीपी हैं बांबता की अरते हैं। यन्या केया अने दोहों का वी याचा करती थी। गुरुवा केवत बदाबर तिं भी बेबद बाबती भी उन क्षेत्रिय ने परस्पर निवचय कर रिकार का कि यह अरबरे है जा रही भी तब मार्न में जावा मारकर auter für in und nie ft and urig garer foe b in fant gen पुर गरेता पुरवास को पक्षों हो घातुम हो क्या । मन्या वधारर सिंह के era a ar est i

dens professor of the second s

g2 a72

द्वे अदि उपन्यास में मुसम्बद्धात दिल्ली के बाद्धात , ना दिल्लास और मोसने रोगी तथा पुरवाई तथा तोता का दर्जन है। दिल्ली का बाद्धात मुसम्बद्धात कित प्रकार रहा अराम में हुआ हुआ था। उसके पूर्ण अमेक क्षामियों को तथा प्रत्यमान के होते रहते के और कीमती तकतताउस था। वजीराय की अक्रमण करता रहता था। मुसम्मद भार की तरकालीन राजनीतिक निवास का दिल्लान तो द्वा उपन्यास में होता है साथ हो मुस्वाई के व्हेश के असर द्वांट्यात की किया है।

प्रसाई कारतों को नजी नातों भी उते तुरक्षत , निकास और रस्तान के बद बहुत ज़िय में । यह पत्नी ताकाओं को नहिक्त में भी वह में दे सम्वन्ध सुहम्मकार के दरवार में पहुत गई । कात्युर तोकरी के वाल का निकासों विक्षकों परनी रोगों की और माई तोता वा परनों के कीवा निकासों विक्षकों परनी रोगों की और माई तोता वा परनों के कीवा निकास के कारण वह से मान कर कीच में बरती हो नवा और दिल्ली पहुत गया । वहाँ वह राम को निवृद्धों पर था । मुनम्मकार को नादिश्लाह में कर्नत के वास मान महित कर विकास नाविश्लाह में मुनम्मद ताह ते जाने तब तरह के दुक्तान के बदले बोस करोड़ स्पर्ध वाह । दिल्ली में कावा हुआ और वृत्त मना दी । वहाँ नाविश्लाह की तेना में बहुत नुक्तान किया ।

पुरवाई वेशो हववशो को वेशो को क्लावण्य को जुड़ मध्याह में पुरवाई को माध्याक्षण को वेट विकास परणा पुरवाई मोहन विवासी के साम एक दालों को सहायका से रात में जान निकलों ।उसके वास एक सीने का हार था। विक्ती होरे बदा हरात बढ़े में । उसने से हुए बानने के सीव किरा हो जाबि को विके क्षेत्र को वह अपनी कार में बांच ने महे । सार्थीं में करती में रह किसे । मार्थ में से एक बार के पहाँ को बो रात में हुए मार भी करते थे। उस बाट के यहाँ के लोगों का धकायटहों गया कि इनके पास धन है। पुरवाई ने मोहन से कहा कि वहाँ से कही जन्यन क्ष्य देव में वलों: बन्नी को पुरवाई के नहाते समय वाटनी ने देव निवा था और उसे आभात हो नया था कि इसमें आकृतना हैं। मोहन ने पुरवाई के पराम्वां से एक गड़ी किराये पर मधुरा वाने के लिये की और दोनों उसमें धन दिये। पर्दुत याहोदान ने दलने में बिलम्ब कर दिया। रास्ते में कुछ अधेरा होने पर हालुओं ने उन्हें हुट लिया। मोहन के सिर पर पाछियां भारी परम्नु दूर-बाई ने बड़ी धतुराई से उसे बढ़ा लिया और कहा कि यह बेबर सब ने बाओं। हुछ उनकी सरक के दिया और किर वो इह बया निवा। वे पास हो एक गाँव में ठहरे वहां एक ह्यांका ने उन्हें हुई दिया तथा प्याप सेंको व वांबीन को दी। हसके बाद हात: वे पिर महुरा के निवो दल दिये और वहां एक पंडा के बढ़ी की वाद हात: वे पिर महुरा के निवो दल दिये और वहां एक पंडा के बढ़ी की वाद हात: वे पिर महुरा के निवो दल दिये और वहां एक पंडा के बढ़ी की वाद होता है।

नादिक्षां हत्तर वरोड़ स्ववे हे अधिक नेकर दिस्तों हे स्वाना हुआ। बार हवार दानियाँ तथा काशीनर, बहुई संगतरात्र आदि को नी साथ ने नया ।

भोतन को परणों ने महरवाजीका के व्याधित हो तोता का बन हैंग्रह जरने और बुट मार अरने के लिये देशित किया । तोता और रोगी की ह इक्षर हुन को तीर्व करने को द्वारत से बन दिये । वर्श पर उनकी कैट मोहन और दुरवाई से तो नई ।

पुरवाई में क्रम हैं सद हुए पालिका उसे हुन्मों है जानन्द जाने समा । वह प्राप्त करती और मनवान हुट के मनन पाली । उसका क्षम था कि उसने मोहन को पा लिया । वह ईरान नहीं बाना वाहती थी पर्योषि क्रम वा वाहती थी। प्रश्नी के क्षम वहां कहां । अपना देश नहीं भेड़ना वाहती थी। प्रश्नी में स्थीय कहा कि क्या जिये देशों आया सबहुद हन्हेंगा पन्निहों को छोड़कर

वर्ग वना जाता है। यह बार होई उसकी उसकी तो हुमाई है तो वह विधे हुम्मे नगता है। जान तो हुम देशा। तब देशा। हेरे प्यारे मोहन तम्मे तो यह तम करामात विश्वनाई।" वह कुछ तोच रही थी मोहन में उस्तार के ताब पूछा कि गोपी गया तोच रही हैंछ नुरवाई में उस्तार दिखा "यही कि काम और कवन को छोड़ कर जाने हम और हमना में न पड़ी।" जाती हमराब है तामने दिलों मी अस्याचारों को नहीं चन तकती। "होई महन तथाता है होई मिनदार को तवाता है वर मम को तवाचे किया काम नहीं चन तकता। है होई मिनदार को तवाता है वर मम को तवाचे किया काम नहीं चन तकता के तो काम जाने मम ते और पताम है तेवार करों। इस तथा है तेवार करों। इस तथा है तेवार करों। इस तथा है तेवार करों हुई तथा हम हम तथा है के दिला। इस तथा है हैं हैं हम हम तथा वहां हैं हम हमा हम तथा। इस तथा है हैं हम हमा वहां हम तथा। इस तथा हम तथा हम तथा। इस तथा। इस तथा हम तथा। इस तथा हम तथा। इस तथा। इस तथा हम तथा। इस तथा हम तथा। इस तथा। इस तथा। इस तथा हम तथा। इस तथा। इस तथा हम तथा। इस तथा। इस तथा। इस तथा हम तथा। इस तथा।

-: 177.51

हुम्मानी है वर्धा की की उपन्यत बन का कर करत विकास विकास है। है। यनुकरी बती के अभिना सम्बंधि क्षेत्र, वर्षण तथा अरावकता ने वी व को मुख्या काल प्राप्तिकारी को प्राप्तिक कर किया वा स्वकारिकों में प्राप्त मुख के वन्न-बीचन लागन्य बीचन पुरहेरिक पुवारी तथा प्रत्या घोणियते हे बीचम के हुन्दर किन पुरस्क किये है। यम-बीवन का बहुत उन्त होता है का यह जाह उठन है।साई भाष में फिल्म में बनवीयन का स्थाप पिर्वाचन हुआ है। वाले कबूबन सामान्य धी वन हो। अपूर्व औरते प्राचुक की है। प्रत्यक्षण आधार हो के कीन प्रमुख दर्शन । एव such peur site aller dies ar giver südülyesite dieser fann di yar हुआ का । करी-नेकन्द्र औरी क्या का प्रशासिक का निकाल के वा है हुआ। इन्हीं के वी वर्षों का प्रीक्षिणीय_{नी} हजा है। किन्द्र सामन्ती हे को वर्षेत्र । एउ वीर का रेकिये और प्रसर अच्छी सामन्त के व्य है आपा है। वीर की बाजन नीव्यान और देशनवर्गधा की एक वस्ता का सप्तीके असी वर्ष का प्रतिनिध है। अभी विकेश का अवाय का । अन्द्री साथ-त दीर हा है साथ क्रीकार काला और व्यक्ति है, अन्य कि इते अर्थ राष्ट्रव साधन्य स प्राविधित है। राष इस बारी अभी मध्ये लेकाल से निकट वर अपनी सर्व में बीवन स अभिना

्यार्त की के इस उपन्यास नेतृत्व केवार की पुष्टिन्द्र्योग पर पुनवकति के क्यों तथा की प्रतिकार की देश हुम की अवस्थावर,कार्ववर की, तैनीकेंग्र आ सारीत और बारवर के आवर पुन्धेनकात वार्ताओं का नेतृतित विवास कि पुणकारी हैं। वन्देशकात हो विकास माओं हो असर पेय हुट हा, राध्यों हो सर नहा मेर महित महात तथा पहाला है। सरकार तथा पहाला है स्थान कर का पान पूर्व है। सन्देशकात है। इस्ताम है स्थान है स्थान

हुन्समी अन्यात हा कृत उद्देश्य हम्मानी व परिश्व **को अन्यात** सरकारो

CONTRACTOR STATE

gan fagan

हुत्य विक्रम का क्यायक अवेष्ट्या राज्य एवं कु श्रीच्य हे ज्याचिता है। अमेट्या राज्य के राजा रोगक में । यहाँ वर्श नहीं हुई । राजा रोगक में वर्शकांव व्यन्द करा दो । बहुत है यह विमें उन्हों काफी हामशों कुंगी वरण्य कि भी वर्श हुई और अमेट क्या के स्वांवत शोंद्र कर वासर में देवीयाचेन के लिये हमें यह हुई और अमेट क्या में वासों में मीर्टी और उसके माला विक्रा में । मेन्शियराज्य के पास श्रीच्य केट्रा में मीक्टो करके मीर्टी के माला विक्रा में भी मीर्टी करके मीर्टी के माला विक्रा में भी नीर्टी करके मीर्टी के माला विक्रा में मीर्टी करके मीर्टी के माला विक्रा में मीर्टी करके मीर्टी

हिमानी नीत की पूरी भी । इसन शीयक का पूत था । इसन ने देत में क्षिमनी है औड़े लगाये । रोमड ने जावार्थ में अ बा अपनान भी किया । अवस्थि कियानी ने विकाद में बद्धार तेने ही हानी हो हाचार्च देव वी अवसान का बन्धा लेगा वाहते है। कल न होने है कारण प्रवा रोजह है जहक द ही गई। नेव ने वालाकी से प्रवा की राजा के खिलाफ बढ़का कर राजा की अप व्यव बरवा दिया और राचा रोमड कारे अपने मजान में रहने नगा । रोमड ने अबन को बोग्य बनाने के लिये क्यों कि वह उद्युष्ट और हर या अध्ययन हरने है किये निव्धारण्य जाका में महाध बीम्य है यात केय दिया। वहां बीम्य में अपन की अनेक प्रकार की विश्वास की और आप कोम्प बेट्टा में बाकर बीच मांचवर लागे और का का बान वर लागे वर मादेता दिया । बाँच ने बहै वरिक्ष और अस्थित निकास से कुछ ने आदेशों ना वालन किया। वही एन टीले वर केता वा कि मोरी भी देवा। यह सम्बर थी। मीरी भी अवस है हैंस वरने बनी । एक दिन वस विद्या के लिये हुवन नवा हो गौरी के शाम से धाना विवर यहा । उसके माता पिता ने देव विवा । उन्होंने छवन से कहा हम गरीय आदमी है परन्तु बीम ने नेररी है ताथ विवास करने की स्वीकृति थी।

वहीं पर बोच्य कुत है जाहिया, हथिया, देद, बल्क अहि तिरास्य है।

देन के अपने काथ के कि अपने पार ने निष्य में कहा जिल्ला हैं हैं है जो अपने काथ के हुआ को बाद की न वीच्य में कहा जिल्ला हैं है है जोर रोगक को करना पहान वहीं समावार जिल्ला कि अपीच्या में दो काकी कर्जी हो गई है । यो व्यक्ति हुआ के अपना अपीच्या में दो काकी कर्जी हो गई है । यो व्यक्ति हुआ के अपना अपीच्या को हुआ बाहर को बच्चे में के बोटने लगे । वेशी करने लगे । रोगक में अपनी क्योंन महोता हो बहुआ के बहुआ के हुआ के अपना अपने व्यक्ति महोता हो बहुआ हो बहुआ है हुआ के अपने में अपनी क्योंन महोता हो बहुआ हो बहुआ हो में के बोटने लगे । वेशी करने लगे । रोगक में अपनी क्योंन महोता हो बहुआ हो मोर कर ही और अन्य अपने को बहुआ हो को बहुआ हो मोर कर ही और

भीरों के माता विता जी गीरों को और अभी नायों व गीड़ों
ते सामान को तेकर अविध्या अने चर वोटने लगे। बोच में छोटा ता गाँव
पड़ा। वहाँ छोटों नदी को पारकरने के तिये आमवासियों ने मना किया
परन्तु थीरों के विता नहीं माने। पानी ते निकत रहे में कि वानी की बाढ़
जा नई और उनकी गाउँ वह नई। गौरों के माता विता मो बह नौ । गौरों
एक वेड़ को साका को वन्हने के कारका वह गई। आम वार्मों ने उसे सानस्वना
दी तथा सदेत किया। किर एक अमवासी गोरों के सद करने पर अविध्या
औड़ नवा। जब वह आई तो वर केंद्रसर सो गया था एक छोटी कोठरों वदी
वर्ग सदेवा गीवरों कर हुंगी। गीवरों करने के तिये वस सिमानी के पास
पत्नी गई उसने अन्यों देवा है रक विवा और नाम रेवती रका।

हो कर के वब बहुत हारा बाँट किया और हुए न रह गया ही बोल को कुनो किनाओं के बाब विवाह है हुवन के बाब प्रश्लीय को स्वीकार कर किया । हुवन व्यवित उसकी हुट प्रवृत्ति के कारणा विवाह नहीं करना बाहता वा परन्तु वह सोबताया नोमतो को सन में कह नई है। नोन ने कहा दह हुए बन बन्ने हो केब केमा और होब विवाह के समझ है केमा। किर सब हुवन हुन विक्रम को क्या कीवा है हम उपन्यक्त ने वर्गा की है जीक बहुमदेश तथा को जॉर वर्गन को स्वाक्याओं दी है। जीव विवास प्रस्तृत कि है। वे तब विवास को ज्योद्धा प्रभूतक आवार्य कीव्य कीव के दासा कि नो है। क्या अवोध्या के तथाय जॉर किर ज्योद्या की कुम्बाकी है तुरुवन्तित है।

-ı sîsrmerá :-

अधिरुवाचार्वं विकास प्रतिक्ष क्षीक्षण क्रमारकात्र वोस्तव के पुत्र क्षण्डेक्षण को वर्षित की । व्यवस क्षण क्षत्र 1927 के हुआ का और देवास्त 13-8-1795 को । उस किस रिसंप माद्वाद कृष्णा वर्षकों की ।

अधिकारण है कि साम अधिक राज्य की साम अधिक से अधिक साम अधिक से अप अधिक से अधिक

क्षा बहुत वर्ष की आहु है उनका किया हुत है उन्होंत दर्भ की अब उनके के किया हो नहीं । यांच का कर्मक दर्भ की थी, पुत्र सामाय का देश का इस अगा क्षा क्षा किया का कर्मक दर्भ की थी, पुत्र सामाय का देश का का क्षा । यांच दर्भ की के द्वा माद्र सामाय का के व च्या और उनकी पुत्र पुत्र समाय की दर्भ की की द्वा के स्थानकी हुत के सामाय की दर्भ का का के द्वा का का पुत्र समाय की दर्भ का लोकों की का के सामाय की दर्भ की दर्भ की दर्भ की दर्भ क्षा का की दर्भ का समायोग का वह कि दर्भ की दर्भ की दर्भ का का की

अवित्याचारों के अपने सरका को तीरवारों के बायर कार्यवार के पुरिता को में और त्याचा में बीयर बनवार दार बीका के, प्रान्थाचारिकारिक का विवर्ग किया। बार्च बनवार क्षा के विवर अपने तम्ब को के, प्यानों के विवर प्राप्त विकार्ण, बीवारों से विवरणों को विवर्ग का त्यां के अन्त

^{। •}वोक्कावा कुड्ड•् इ•क्वडकात क्या ।

निवन्ता और प्रवर्षन हेतु ही । और आ का प्रतिकता के हुँठ मोष्ट जा लगण परके तथा ज्याम काने का प्रयस्त कर ते रही, मारे दम तक है, वे अते परव्यक्ष है जो फिल्में उनके सक्तानीन पुना के ज्यामाधीन राध भूगानी ने और अने पांचे कोती हो राजी स्वर्धामाई हुई। ^{के के}

उन्हें काला अपने बोवन बात में तो धेवी ताली तौर काने तो के, बनता में दाना बजा कारितका अपने आंखों ने नहीं वेखा वा, इन्होंस में वृत्तिकों भाइतद इल्ला-वर्तृत्ती के किन जिल्लांस्ता कोता बात आता है । अंगी पुरत्ती में जिल्लाकों को बातन वर्तेच्या और वर्त पराचनता हो प्रति पुरत्ती में जिल्लाकों को बातन वर्तेच्या और वर्त पराचनता हो प्रति अपने हिल्ला में व्यव वर्त अपने में वर्त्त का का वर्तेच्या होंगा। जीन ता है वर्ता को का ता वर्तेच्या में अपने हेव का पर अपने प्रता का ता वर्तेच्या उन्होंने हुत्वान में विकास प्रता, बड़ी लोगे वर विकास हैता और हुना । विकास व्यवस्था ने वर्त विकास प्रता, बड़ी लोगे वर विकास हैता और हुना । उनके अर बहुता वर्त अपने हिल्ला है हो हुने को उनके अर बहुता वर्त हैता है । अपने अनकों हैतों वर अवसाय ही व्यवस्था हो हिल्ला हो वर्तेच्या को विकास हो है । अपने अनकों हैता वर अवसाय ही व्यवस्था हो हो हो वर्ते के लाग अन्य विकास हो हो हो वर्ते को हैता हो हम्में के लाग अन्य विकास हो हो हो वर्ते के हिल्ला वर्ते के हम्में को विकास वर्ते हैंता की हमा हमा अवस्था हो वर्तेच्या हो हमा है । अर अपन्यताल वर हमा अवसाय जिल्लामाई के वरित्य वर प्रवास हमा है । अर अपन्यताल वर्त हमा अर्थ अवसाय जिल्लामाई के वरित्य वर प्रवास हमा है ।

t- addressarid gree+ 2 greatest eine auf t

TENESTY

गढ कुण्डार उपन्यास में नारी स्वातन्त्र की सम्बंधा का यहां तक सम्बन्ध है जन्तवतियेव विवाह का समर्थन किया है । हैमबती राज्यूत नारी है उतका विवाह बुण्डार है राजकुमार नाथ के साथ कराने की योजना है जी वंगार है। नाम हेमवती के तौन्दर्भ की देव मुग्व हो जाता है और उसी के कारण यह होता है तथा अग्निदल्त अपना प्रतिक्षी मेता है। तारा भी प्रमुख पात्र है जो अत करती है और नित्य प्रतिदिन क्नेर है यह य देवी पर बहाती है जिसमें उते मनवां छित वर की प्राध्त हो जावे । दिवाबर उसके सौन्दर्भ पर मुग्ब है । परन्तु तारा बीर भी है, साहसी भी है और दिशानर जी नारावास ग्रह में उत्तर वर उसे मोटा मैनेवानर जल फिलाती हे तथा उतकी बचा लेती है वर्षी के जल के जनाय में उसके प्राण ही निकाने वाले थे। यह अति विचा, और तीर विचा भी बानती है तथा निहर है। नारी को किल प्रकार अपनी तुरक्षार्थ वीर होना वा लिये यह बात नरशे वा ति हो प्रका प्रोत्ता हन देती है। यह तम्यन्य धराने ही नारी को बाँधि केवन सौन्दर्भ वर्डन में ही अपना सम्य ध्यतीस करना नहीं बाहती है। अपनी सुरक्षा हेत्र वे कटार की रक्ती है। बीड़े पर सवारी करने में भी यह है। इस प्रकार यह कुछार की नारी धीर नारी है। अन्तर्वातीय विवाह और वर्षांच्य स्थवत्या तोहकर विवाह करने की बात इस उपन्यास का नारी स्वातन्त्रता की द्वाटित से प्रमुख विश्लेष है।

NETE - SEE

नद्र कुन्हार है बताया है कि फिल प्रकार वैनार राज्य का पतन हुआ और हुन्देंने राज्यूतों ने उसके अपने अधिकार में कर निया तथा फिल आस पता के छोटे छोट मद्रों को भी अपने आधिकार में कर निया तथा उनकी की ति छुं और केल नहें । हुरमत सिंह कुन्हार का राया है और नानध्य उस का दुध वा । नानध्य तरिहन पान की पूजी हैम्बती के सौन्ध्य को धेवकर उसके साथ अन्तर्वातिय विकार करने को अस्तुक है । उस सम्य और छोटे राज्य अरति हो में भेने हुने थे । मुस्लमान आकृत्या करते ये और हुन्ते थे । बहुत से राज्यवार से सौन्य कर नेते थे।

अधिनदास की कहिन तारा को हुन्दरों की । तारा मिनीवाँकित वर को प्राप्ति हेतु इस एकेसे हैं और देवों पर क्षेत्र के पूत्रप बहुतती है । विकास तारा के सीनदाँ तथा तारत को देकर उस पर मुख्य है और उसकी प्राप्त करना बारता है। तारा को एक दिन क्षेत्र और केसी को माना में मेरे देव बार क्षेत्र विकास काम देती है और विकास और पढ़ नेता है।

अधिकारण मानवती जो हैं जरता है। अन प्रकार का उपन्यात हैं
तीन है भी तुम्त है। अपन्यात में एवं और युद्ध वर्णन, विभार वर्णन है और
क्रियों और बुंगार वर्णन है। क्रियार राजा प्रथम जिंह ने कहना मेजा कि
विभार रिक्षित्याय में देखता जा विद्याह मान है हो जानेगा। इन्तेजों ने बान
वालों की कि विभार्त को मिलतों का विद्याह मान है हो जानेगा। इन्तेजों ने बान
वालों को कि विभार्त को मिलतों कुछ विभार वाले उसके बाद मांच विभावा
वाले के वेगार महिला बोकर मनत हो बाते हैं असे शक्त हुन्तेन राज्यत आहक्रिया उनके अपर कर देते हैं और क्रुवार को असे अधिकार में कर तेते हैं।

अध्यक्षत प्रतिकृष्टिको अन्य में बलता है और वही पूरी घोषना आकृष्टा की क्ष्मता है वरन्तु वह हुई करता हुआ उन्त में यारा बाता है । विकादर की संबोधित हैं जान दिया जाता है। उसकी वहीं कामे और पानी की प्रवस्ता की जाती है। परन्तु पुद्ध में प्रवस्ता के कारण और अग्याबीद के कारण उसके वाल पानी और मोजन का जनाय हो जाता है। विकादम प्याता होने के कारण और पानी न िजने के कारण प्रचित्त की जाता है। तारा वहाँ ते निजन रही हो। वहाँ वह विधायम पानी और हुमाका को जीनकर वैद्याधित हैं उत्तरती है। वहाँ वह विधायम पानी अग्या है। यह वहाँ पानी न देवकर मोदा मेकर ज्यार आजी है और पाने। बरकर नीथे उत्तरती है तथा जन पानी पिलाती है तो प्रधायम होगा में आ जाता है। विधायम बहुता है कि हुमारा संयोग अगर है। वर्णांक्रम की योगों बतको गोंद्र नहीं सबती । दोनों बोड्डे पर बेटकर नदी की और योगों में

हुम्बार हो अधिवार हैं करने के बाद तोहनवान का राज्याधिकें हुम्बान ते हुआ और बीध हो देनती का विश्वाह पुन्तपान के ताब हो चया । धीर यारा वा पूका का । दिलाकर का हुक बता नहीं बना । इति कि पूक्त और उत्तका काई राज्य के केंग्री निवृत्त कि पूक्त । इति पूक्त कि पूक्त कि पूक्त । इति पूक्त कि पूक्त के पूक्त कि पूक्त है कि पूक्त कि पूक

वृष्टिकों में उस पहाड़ी है गांचे विष्टा सासियी देशों का अस्थित समाय , वहाँ से की लोकर देखता में कुष्टिया-हूं कंपार संज्ञान विष्यालय हुत्या से देखा था । बोर्च कीच्च कंपार हात्र है कि यह मान्यर है नार्ष की विष्यायमातियों देशों का है कुष्टिकों में कुरण यान कर निवार है । कुण्डार के राजियार है कर तैने के बाद से हुष्टिकों की कुरण याने कर निवार है । कुण्डार के राजियार है कर तैने के बाद से हुष्टिकों की कुर यादी पर से बाद्या निके बाने को पी प्राप्ता है, तम करते हुने बहाने बाका हुष्टेका हुने वह स्वारों हुना ।

विदास श्री पट्टा

्रायादा की बहुआते पर विकासिक श्रीआत है हाले विकासिक वा वा दर्भ हो तहीय वर दिया है। यह कहा करते हैं। हाले अन्य अन्य वस्ता है। हो तहित बहुआतों को पर सर तहिद्द करते पर तहि यह दिया है। ये पहारों हो तहित बहुआतों को पर सर तहिद करता है। हाले के हालाय प्रमुद दिया है। हा जात है कि, हुआ आत्म को विकास, आत्म के प्रधानों के लेका वा दिया राज्युत राज्यों के विकास, और वी एक, कार्यों के लेका है। हा उसमें, स्थानियों के प्रधान है। वह स्थान के स्थान है। हो प्रदेशों है का जाते हुई ता जार है। वह से व्यक्ति के स्थान है। हा प्रधान है। है। हा साथ तह से विकास का ती है। हो से व्यक्ति के ती विकास है। हो प्रसान है। हो में में बीचन है। होर का उसमें हों से लेका है।

ALEXA PROPERTY

^{।-}विज्यो वर गम्ब ता ति स्व पूर-५३०-३३। उर्ग्यस्य पन्ध विकासी ।

वीवन दिव

स्तितादित्य रेतिसातिक उपन्यात सर्व भी ने सर्वदाती होने हे एक सर्व पूर्व अस्तरस्य होने पर भी पूर्व िया । इत उपन्यात को किलो है उन्हें काफी तक्य व्यमीरी (डोचरी) सव, तैत्वृति का महन अध्ययन-कान करने हैं तथा तर्वा भी के इतके महरे वैदने की कोरोक्स की हैं।

लिलादिल आगीर का राजा है। वह अपने राज्य की तरबा करने में तमर्थ है । उनकी रानी वसमावती है जो धारिक है, मीटर निमांच करवाचे में सहस तहायक है और अपने पांत को प्रशन्न रहने की वेषटा करती है। यकृगिया हुतरी प्रधान नारी है। यो तुन्दरी है और कला प्रेमी मेहै। राजा लीवता दिस्य की वह प्रेरक किय होती है। और राजा के अन्ता में उनके लिए लान है। उलड़े कर वर्त ते ही राजा को नवी कुर्ति उत्यन्न होती है। राजा सोच्य अपनी पूजा हे हिलाई महर,मेदिर आदि करनाने हे ताई अनेह करवा क-कारी योजनाजी को ताकार त्य प्रदान करने हैं निसुन है। यह किती सा सहित नहीं चाहता परन्तु मीदरा है देस और प्रसार में कुछ आहार में बीधरा में दे जाता है की कि वह राष्ट्रीरी को प्राम दण्ड दे देता है परम्त बाद में फताता है। वह पेहतरों जो हटावर उनकी बाह ब्यांबचर प्रीयर बनवाने का निर्मय करता है परन्त का मेलतर उनके मला में आपर करते है कि हम अपने पूर्वा की बाह की ब नहीं छोड़ेने । यनीय वह उन्हें बहुत पन और अधे पदन करदाने की लौकना देता है, तो यह अपने निर्मय को बहम देता है और पोबमा हरता है कि उस त्यान पर मीचर नहीं बनेगा वह अन्यन बनवा दिया खायेगा । निर्मय को बदलों और मात किये पर परचाराप करने ते प्रतीत होता है कि अकी प्रतीस का है। महारमा बलका है कि पूर्व बन्ध में वह कितान का हल क्लाने वाला नीकर बा और एक महारमा को प्याने आने को उनने अनी रोटी का भाग और का उन्हें दिया ।

ध्यमिति तुन्दरी राजा की उसके क्षिणक हुए वहारेश में अवस्त कराती है, राजा जब निजय की कामबा से तेमा के साथ आचे बहसा है सी यह एक पश्च निकार उसके किनाफ होने वासे बहुतेश से अवस्त कराती है। यह राजा को वश्च निकारी है और राजाउसके पश्ची पहलर सोट आसा है। यह प्रवार वह राजा की तुरवा वरती है और उसे ब्या वेली है ।

संख्या है। सान्तिक और व्यवसाय आदि तम्प्रदायों को इतमें उत्तेख है। इतमें पान आदि व्यवसाय आदि तम्प्रदायों को इतमें उत्तेख है। इतमें पानों का अधिक नहीं है। मीदिर की मुर्ति को पोतकर उत्ते नहीं कुछ कराकर राजा है अहंकर का लग्छन करवाया है। नेहन, व तृत्त, प्रधानाओं, क अधित, विन्न कर्यों, आदि अन्य प्रमुख पान है। पह अन्यात प्राया पुर धर्मा प्रधान है। राजा योग ते लग्नोंद को राजा करते हुए कर्यों तेकर वाला है। और तमापि में तिता है। परन्तु बाब तोग उनकी मन्ता को निवाद करते हुए कर्यों तेकर वाला है। और तमापि में तिता है। परन्तु बाब तोग उनकी मन्ता को निवाद करते हुए कर्यों तेकर वाला है। और तमापि में तिता है। परन्तु बाब तोग उनकी मन्ता को निवाद करते हुए कर्यों तेकर वाला है। और तमापि में तिता है। परन्तु बाब तोग उनकी मन्ता को निवाद करते हैं के स्वार्थ के निवाद करते हैं कि सहाराज्यों को निवाद करते हैं के स्वार्थ के निवाद करते हैं कि सहाराज्यों को निवाद करते हैं के स्वार्थ के निवाद करते हैं कि सहाराज्यों को निवाद करते हैं कि सहाराज्यों की निवाद करते हैं कि सहाराज्यों को निवाद करते हैं कि सहाराज्यों की निवाद करते हैं कि सहाराज्यों की निवाद करते हैं के सहाराज्यों के निवाद करते हैं कि सहाराज्यों की निवाद करते हैं कि सहाराज्यों की निवाद करते हैं कि सहाराज्यों की निवाद करते हैं कि सहाराज्यों के निवाद करते हैं कि सहाराज्यों की निवाद करते हैं कि सहाराज्यों की निवाद करते हैं कि सहाराज्यों के निवाद करते हैं कि सहाराज्यों की निवाद करते हैं कि सहाराज्यों के निवाद करते हैं कि सहाराज्यों की निवाद करते हैं कि सहाराज्यों की निवाद करते हैं कि सहाराज्यों के निवाद करते हैं कि सहाराज्यों की निवाद करते हैं कि सहाराज्यों के साथ की निवाद करते हैं कि सहाराज्यों के निवाद करते हैं कि सहाराज्यों के साथ की निवाद करते हैं कि सहाराज्यों के निवाद करते हैं कि सहाराज्यों के साथ की निवाद करते हैं कि सहाराज्यों के साथ की साथ की निवाद करते हैं कि सहाराज्यों के साथ की निवाद कर साथ की निवाद करते हैं कि सहाराज्यों के साथ की निवाद करते हैं कि सहाराज्यों

Oug-

दर्भा की के कीयत और कार उमन्यात में व्यक्तिय के की क्यार दर्भागों के आंचे और केंद्र काराय के आधीर्षाय का वर्ष है। साव की की और प्रीक्षा असे प्रमुख पान है। साव कार्य की की की दिन्य का और तेक्स रितेत का वर्ष है। प्रारा कार्यक कुन्येक्स है ते कान्य रकता है। प्रीमार की कार के पृत्ति आत्मा प्रमाणि की है। यह पुत्रय और कारा में पार्यक है। कार पुन पुनर्सी का बीवन वापन जाते हैं। यह फिल पुनर्स से जैन्द्र की देश्या है। प्रारा वर्ष विशास कार है। यह फिल पुनर्स से जैन्द्र की प्रमार वहाँ का अधितीय है और अधान की हुट मी मेंसी विश्वा हिमारे के ते हैं। आप कार्य में होनी । पन्योगी ने बनता के आवार के आंद की ते लो हुट किया की में होनी कार पर रहे हैं, यह अनुक्रिय है। व्यक्ति के स्वपूद में कार्य के हा का लोगों अनुक्ष साथा पर बिता मती कर कार । केन्स वन्नेय व्यक्त व्यक्त होते हो विद्यामों का सामना कर और अभी सार कार्य की माल माल की माल माल मंदी नहीं है। साथ वर्ष में अन्य प्रमाण की साथ मालने की माल माला मंदी नहीं है। साथ वर्ष में अन्य प्रमाण की साथ मालने की माला माला

यह उत्यन्यास पुषे केरिकारिक उपन्यात है। वागम पंच साहर वन्याती वेस्तारों आधारकेरी प्रमुखें के ही केसा है ताथ है। जैन्स की वैदानी वेस वे ्ता का का कार्य के कार्य करी कार्य करते हैं का कार्य करते हैं हमा का का कार्य के बोध करते करते कार्य के के विकास के के कार्य कार्य हमा का क्ष्मी का को कोई कोई क्षिक का क

-: the of the t-

"trough poors" granes and out or blooming surface & हानों देताब वर वर्जन है। देवाबह के नीचे विषया मीविश वर अध्या भी है। यसन्त उस प्रकारी विकास सम्बद्ध 1050 के समामा लो यह संविद्ध वाली ही। हुन्दार विवासनत्त ने रिक्टर हुआर भार मेरिक्ट के कारते और बार्क्डर वस्कोदर भार उसके परिवर किन्छ का बोदिए सम्बंध करनी कुलाबदी का बचा का मीदिए अबोके स्थाप का सोन्दर्व का अक्षप्रत उद्यास्त्रण एका है। इञ्यानानीय क्षण का प्रतिविधिय करता है। देगाह में के निवार के बीचित है। केन कि बाह से कवा है। विकास अर्थ के बीचना । विकास uture frie ale are deut da of mit the à france uner four तल किन को बाता है। का भई का पालन करने वाला बेन, बारे के जोई की हो. धेला यू केल प्यक्ति वाले पर को वारे वारी नवीकिए है केल्वा स्थीपर की पी शास्त्र के प्रवेश कर तकता है। केन कामाने समान है। तक माना करावरी के है। film stoff soft sitter gedre er sitere di erue er ale di ufic कोई क्षेत्र म की को लो जो जानकी कान को बारेन्द्र । मानकी जानी-कड की era se cal, eriva are è diet à plear acurar corà cara re è i chemen yes it the even the years don't the armsit, elonibit footeen, accord sarfeed of orfee to are paid the and great अर्थन केरी की सम्बद्धित हैं। बाम कि है । ज़की कह है की पुनर्श को ज़की कर के । वय को क्रोक्स में जारिया स्ताप करता है। उसने क्या है को सरक्षण साप करता है। प्रश्नी आपमा और विकास के ताथ भी अपन्य परते है उनके किए na est nati i

देखाद का जेडून जीवन जाना पत्रव और विस्तापक्षित है। है तका नहीं है कि सारे किसारे होते और वेदान अलीव द्वायु हो गया है। व पहार की नेपटी-किस्ट प्रार्टी है। नहीं बाहात है द्वारावर पविच्या की और यह पासी है।

rant dant went parter gridel dident, even, circu, stipe after the area about ancest gride to an anoth go after more front even the frame front or survey one is a strong of the area of the area.

अगोद किन बालन की एक्किंग देशीयाँ अवनी के विकास-विकास सुद्धारों है। सुद्ध अनेकृत के अवदाने हैं हुक्का करना दे यहाँ की केना लगा के

देशका के एक अन्य बीक्षित का संबंध तकों की वे क्षा प्रकार रिवा के "बहते बहते के तब क्षा क्षा के क्षा क्षा किया में काम प्रतिकार प्रकार में नाम के त्यापाल के बोक्षण क्षा के को समयों की प्रकार के तक को तकों का काम की रिवारिकार का कार्य अन्यों के बारिका के ताम प्रतिका की तामी प्रकार प्रतिकार किया की रिवारिका के अनी वारोकान कर के दिन के हैं।

^{। -}देवण्ड की सम्बद्धन पुर्वत- 227 हुन-रायन वास्त यस्त्री ।

^{2 -}देवका को प्रकार प्रवास-220 क्रम्यावय साथ वया ।

³⁻देवमा की प्रकास प्रवास-220 इन्दालय गांच वर्गा ।

राम्बद्ध ही रागी

मध्य प्रधार रानी जितका नाम वा अवन्तीवाई । ये लोकी ठाड्डर धी ।
उनके धी बच्चे के अन्तनसिंह और रोरसिह ठाड्डर बनत सिंह व्हकेरा वाने
विकास कावित व्हें स्वानसिंह और रोरसिह ठाड्डर बनत सिंह व्हकेरा वाने
विकास कावित व्हें स्वानसिंह और रोरसिह ठाड्डर बनत सिंह का मताबा कि
अन् विदेशियों ने हमारे देता को हहुया , करती माला की ठाली वर पैर
रोदे रोजनार कट किये अब वर्म की नर्दन काटने वर उताक हैं। कावित ने
समर्थन किया एक दिन अवत्य आयेगा वस हम स्वतंत्र होकर रहेनें । मुनीम ने
भी कहा कि ये परेली हम सब को हिन्दू मुसलमान सबको निटा हमें वर होने
वेठे हैं । वरन्तु सबल नहीं होने अने वेता का ध्याचार घोषट करके इन्हें
क्यास देशे पिएँ ।

ति वह है तो ताकारण बनता ते हैन मैन रकती । रागी बड़ी तथेत, बहुर और बहाद्वर थी । राजा ग्रांकरसाह के कात कमरे हैं बरकेड़ा के ठाद्वर कमत तिह राज्युत हुकराज्यों के ठाद्वर बहाद्वर तिह नोकी और कई मान धुनार रात विराध इक्दि हो कर तनाह किया करते थे । रागी अवन्ती वाई तीन होन कितसमीं हो तहायता करती थी । वह अमेक कितामों हो विनाय क्यांच के क्यां देने नमें वे । रागी का तद्ध्यतकार तारे हनाहे हैं विश्वास हो गया होटे बड़े तह उनके प्रांत आधार है गांव ते वर गये । वक्षणहर सन्द्रात हो गया होटे बड़े तह उनके प्रांत आधार है गांव ते वर गये । वक्षणहर सन्द्राता, दन्तेह , मरसिंह्युर हरवादि इनाहों हो बनता इनकेड है नीचे आ गई होन्तनर हा व्यवस्तों क्यार वन वर ग्रांकरसाह और उनके नहते रहे- गांव हाज ते किया या वे बनावस वर हुने हुने थे । हुकेदार बन्धेवितारी हा गांव की उत्तमें बोर ते लिया । ग्रांकरसंख और रचुनाय ग्रांड को तांव ते उद्दार विया गया । व्यांन्दार्त पर आरोप नमाये ग्ये कि उन्होंनेतियां हियाँ और जनता हो बनावत हमें है लिये बहुताया ।

रामण्ड राज्य वा विश्वार सुवायपुर अवर्वेटव और ववीर चुन्ना तक था । असम है रामण्ड राज्य वी निवधि वेबल मान्युवार नमीक्षार वी रह गई भी । अवन्तीवाई तो दानी वन्नीय वो गई भी कि वन्ता उनके कि अवना किर है की पर केवर भी । अवन्तीवाई में सुद्धे ताबन युटा कि वे तो अवन्य तक भी । उनका और उनको बनता वा आस्म विश्वास प्रका और तवावत था । रानों में ववा कि यह किर्देश्यों के बाँत बट्टे वर वे तो भीनी । अवन्तीवाई में निवास थाने पर अन वर निवा। रानों में बालिय्टन वर वार किया परन्यु एवं तिवालों में वार रोव किया। रानों में बालिय्टन के बच्चे वो अत्वेह यास बाचित जिल्ला किया सिवा रानों में रामण्ड बहुवतर अधामार युद्ध या निवास किया । वह सेना वो वई दुर्गाहर्यों तमें लेक्ट निक्क बड़ी । वार्डियटन ने यथब की हिम्मत वाली औरत है । राम्यद्ध इस हालत में उसे नहीं मिलना वार्टिय वरना किर से केरा हालने में दिक्क बड़ेगी । इसलिये महल बरजीटा पर बमीन से मिलझा दिया । रानी को कर्ष से किसी सहायता की जाजा नहीं थी । उनके तियादी जीवर करने के लिये मरने मारने के लिये तैयार में । उमराय सिंह से तकवार लेकर रानी ने अपने पेट में मौंक की । रानी की मुस्वीरता की प्रश्नेता की और पूछा कि ये किसान किसके बद्धकाने पर अपने साथ कने । रानी ने स्वयट स्वर में कहा कि किसानों को सिवाय मेरे और किसी ने भी मही बहकाया बद्धकाया । ये किल्लुल केब्बूर है । उनका जोई दोष्य नहीं । वार्डियटन ने उथ्य वर्गीय हिन्दु नियाखियों के हार्थों रानी अवन्ती बाई के श्राव का दान संस्थार करवाया । रानी अवस्ती बाई के श्राव का दान संस्थार करवाया । रानी अवस्ती बाई के श्राव का दान संस्थार करवाया । रानी अवस्ती बाई के श्राव का दान संस्थार करवाया । रानी अवस्ती बाई के श्राव का दान संस्थार करवाया । रानी अवस्ती वाई के

-: मारानी दुर्गवरी :-

यो पत्न स्थान-स्थान प्रत्या अस्ति अस्ति विश्व के प्रति

समय उपन्यास व परित धर बायह देशी सिंह वा अस्ती गाम बन्दानास या । यह बहा वीरिस्थानी पुरुष या । नम्द्रमान के भीवंग पराह्म वा कारिय जल जवान्यास में किया गया है यह सच्यो घटना ह । नेवनात है बंदाय कारा आय के उपहचाने पर प्रत्यां आय में वा को है । इस उपन्यास में हैता राखा है वरित का वर्णन है। यह धर में कित प्रकार बंगते ते वार्ष कर अपने ब्रेगीले मिलती रहती है । उसका विवास सम्बन्ध विदर्शेय हो जाता है वरन्तु वह शास्त्र वरके नदी वार वरके स्वात बन्धनी को तीद्वकर एक्षेत्र अपने तर अर्थात वर्ता सम्बन्ध होना निहित्त हो तुना वा वहाँ बहुव बाती है और फिर वह दोनों परिवारों की विना देती है और दीनों परिवार की विनते है। उद्यानड अन्य है। परन्तु नारी है शीर्व और क्षांत्वी को स्वाय कर प्रयक्तिमान गारी की अधि उसके अपने धर बाने की क्या है । बारी दो परिवार्श के ध्यर्व हैं उत्यान्त हुये वेमकृत्य की समाध्य वर द्वी है यह इस उपन्यास से विदित शीता है। वास्तव राजा एक प्रमति बील नारी की प्रतीक है जो स्वमेव अपने पति के वर्ता यूच बाली है। यदि बारियों तह प्रकार अपने बीवन करिया वा वालन वरें तो क्ष्यांच में हमन्त्रद एवं क्षेत्र की बादना वा उद्वर होना और वेमनम्ब भारतम क्षेत्र में वरिवारित के बावेगा । वह उपन्यास ना रिवार ही धनवा प्रदाप करता है।

ya et le

व नहारों पड़ी हुन्दर की । यह हुन्य का उसके साथ हैन हो नहा ।

के दोनों एक इसरे के बात से परिधित के, परन्तु उनका हैन आने न बहु

वावा । सहकी के मासा विकार को उस हैन का बसा सन गया अने नकान

वर उस सहके का आना बाना बन्द कर दिया गया । हाने के वह सहको

वीमार पही । सहका उसे किने को बहुत स्टब्टाया परन्तु उससे न निम्न सका

सहको यह गई । परन्तु उस समय हुन्य को मानुष्ट न हो पावा ।

वह नहार पुनार को बहुआ एक हुँगीन हुनहों औह देशा करता था।

कि दिन वह नहीं उसी दिन पुनार के धर को टलनी उस पुनार के एक

दुनहें को हुई के ताथ श्राहकर बाहर कैंकों के धंनों नाई। पुना का नहारों की

बीमारों की बनर कई रोज से नहीं बनी भी। उसी सन्य वर्शों श्रीकर विकार।

पुनारों के हुनहें को उसने परधान निवार। टलनमी से स्वारे में दुंधा नवा टान

के 9 स्वारे में टलनी ने सम्बा क्या, सब समान्य सो नवा। पुनारों के

उस हुनहें को रास्ते के एक बोने में डालकर टलनमी बीसर बनी नई। पुना ने

विकों को उत्तकर अपने हुन्य से सन्य निवार। साथे बाद वह पानन सो नवा
और किए यर नवा। प्रशी हुन उपन्यास का अधार है।

सह स्वार्तिकार कि अपन्यात के वह बहुओं है भी तीरव है हैं में सरवाति है।
वह स्वार्तिकार किया और बहुते हुआ हुति है भी तीरव है हुआ में सरस्वति है
किसे बहुत बोहत सोतों है भ वह बोरव है है= करती है और सब्ध अपने कि
रहेते बोरव को आवर्तिका को कि सरस्वती ताहों को हंगावकर रहे। सर-रवती है तिरसाने है हुन्हें हुन्हें कर है साहों का यह हुन्दा सरस्वति है
साथ है हुन्हों है रह बचा । सरस्वति विविध्यावक है बच्ची है कि यह
साहते अपने हो को न सहते कहा विवाद से बायतों को अपने हुन्हों बीन कर दोनों हानों है जादों का एक होटा हा क्या हुआ दुक्ता केनाकर कि ने पढ़ा उन्हों के दि! कि ने पढ़ा उन्हों के दि! की है है दो इसक्द कि के के की को है." की एक ने के हि के कि ने कि ने

्री ग

तीना उपन्यास का जाधार लोक कथाये है। धर्म को ये लोक क्या जी है आकार पर का उपन्यास को रचना की है। धर्मों क्ये मार्थ का लेखा है और नावियों को अपनी ध्रम्यत क्यानी वा क्यि तथा का बातका लेखा है कि बढ़ी को रिल्प को द्याना सब कर सकती है धर्म के पूर्व निकन्तें नहीं को सकते हैं। अप धर्म का उपन्यास के लोना और रूपा को पान है। तीना का विवाद देखाई के राया के साथ होता है जो लगहा है सोना बालों को अपीहे किसातों है और एक हार वही उतार कर दून बातों है। यह स्वा जो किस बाता है परन्तु वह कहती है कि बीम ने मई खीन है। वह स्वा जो किस बाता है बरन्तु वह कहती है कि बीम ने मई खीन है। वह स्वा जो किस बाता है बरन्तु वह कहती है कि बीम ने मई खीन है। वह स्वा जो किस का को कहतीं है जो की वह बहत है बहु का है और साथ को ने बता है। विस क्या को क्या है जो की वह की का लोगों है। विस क्या को क्या है जो की वह की का लोगों है।

हा उपन्यास का कुछ उद्योग की मार्ग के सिटान्स का प्रति-पासन करना से तथा नारियों को अपना स्टब्स को रक्षा करना से । इसका सिटान्स है कि देखना सकाई और कताओ उपासना है से बोधन का सरवा स्टूब्सन किसा है। इसका सेवा से कि बान देखी अपना काम देखों। " इसका सेवा से कि बार्ग मेंबा से का वासिश" परिचय न करने बाला को सूबी नहीं से सब्दा ! " वासे मरीन सो, सबहुद से बान्यु औं अपनी सुक्ता नहीं देखों वासिश मारियों के करियोग्ड स, सीनेस सा मई बरिश कि जा सो बान्यद सन्ते के उद्योग्य है यह उपन्यास बहुत सर्वत है। बीवन को की के हरित हेरिया सन्ते हैं बस उपन्यास बहुतसान देशा है।

[.] तीना पुट्ट 220 वृण्यादन वात दर्मा

^{2. * * 166}

J. * * 179

979193

प्रत्यायत उपन्यास में मुर्ति है सीट डासने हो छटना सब 1927 है अन्त या 1926 है आरम्ब हो है, उसका वो निर्माष पन्यायत हैं हुआ या वह सम्बो घटना है । प्रायशिवत से मिन्दर में देव द्वानि है समय फ्लाब से सम्बन्ध रखने बाली होते भी सम्बो है ।

प्रत्यायत की धटना नेमल के इर्द निर्दे धमती है। मैंयन टीकाराम का पुत्र है। यह कुछ करता नहीं है। उसकी न्यानि होती है और से बम्बई कार्य करने है उद्देश्य ते बना जाता है वहाँ ते पूने बना जाता है और पूर्व से व्याचार क्या जाता है। वहाँ पर व्यवसाय गाफिसी धानी हिन्दुओं की शारते है। रहनतुल्ला संगत को अपनी पहिल और पुत्रकी रहा करने हेड केपता है और वह अन्दोलन है वला जाला है। वहाँ पर रहम्तुल्ला की पत्नी बहे साहत से उसे इसलमानों से बवाती है। उनेज उसे हरश्तालवा के धर के बाहर पाकर पुछताछ ध पता लगाने की य बहु से जाते हैं ज़ीज मेंगल की बतनी के बह और पूछता है की बा परिणाम पर पहुचते है कि वह हिन्दू है । वे मैंगल की उत्तरे घर उत्तर प्रदेश में केव देते है वर्ज हिन्हू उसका बाईकाट कर देते है और इस प्राथितवत करना पहला है। परन्तु नवनशिक्षारी उसे परेशंगन करता है और वस उत्तरे मंदिर के व्यक्ति करने बाता है तो वह प्रति की उल्टा कर देता है। En बनान मौन प्राथितिक करवा कर प्रताब वारित कर देते है और भूगत को भिना तेते है । बार्य के आडमबर का इत प्रकार करहा कोड़

होता है। मैंनल अपने धर परित्र और अपनी माता है पास आ जाता है। इस उपन्यास में हिन्दू मुसलमानों का हिल निसकर रहने का उद्देश्य है दूसरे हिन्दू पुजारियों और जाति प्रांति है आहम्बर का अपहन है। हतिहास की बहना है साथ इस्में समाय का विकास है।

-: उमर्देश :-

उत्पर्धन की अधिकाम व्हनाओं को मानों के बीहन ते दुहाया गया है।
वे वहनारे तथ्यों है और पान भी तथ्ये हैं। उनके और तरतय्यन्ती त्यानों के
नाम बद्धन विधे मंगे हैं। ताहुकारी, बेती, कितानों तथ्ये अभीति ते त्याम क्याने
की दुन गांगों में व्यापक व्या ते केती हुई है केते हरे भरे वेड पर आरखेल। उद्धीम
के अधिन रोचगार के तम्माधार और हुक्दमें बहुआ पाने में उपते रहते हैं। एक घटना
वर्म की को भारत के मंत्री की बगाम तान पांडतीय ने वित्तार के तत्य तुनाई
वर्म की ने उत्तक उपयोग का उपन्याम में कियाहै। तहकारी अधिकारी राज्यन
वा नाम बदल विधा है। दुतरे पांची और त्यानों के तह बनावही नाम है।

इत उपन्यात में धर्मा भी ने सहकारिता है सम्बन्ध में अपने विधार ध्यवत किये है। और तहकारिता के प्रति आकातियों को नालायित कियाहै। महकारिता ते अन्य की उपच छलांने घर कर बढेगी। उटीर उदयोग पूले कोंने। और देश ती गरीबी ,अध्यत्या, बंदणी, तब जायेगी । मतलब यह है कि देश की अनेक तब त्याओं वालन इनने लोगा । इनने नाले पर आने व ने हे तिल पुलिया वा बनाना को परी बरात में भी बान दे लो, मिला और लगाई, मतेरिया, वेयव, मोतीहरा, वय-ज्यर, इसादि का निर्माण रारका और मनोरंजन के ताचनों का तथा, हरियनों का उरवान आक्या किन तसी वा प्रवार, बीवन के उसे ततर का प्रस्म, बीवन बीमा आदि हो लोगा । बीवन वा नया औष हाथ में अधेना । वर्मा भी के कहने वा तार यह था ि " मन के भी तर छाई अमरबेल सुविद्धन ने सुरकती है, अभय हो जाजी तो कोई देन हुछ नहीं कर तलती, अभव लींचे के तिल अमा, और ईंच्या का लगण, लोंच में की, केवर में विकास बहुत वर्षी है। दिस्यत है साथ बाउनाईनों हा मुहासमा वरना, उन पर केन कुद के पहिर्य हैतना और मीचन की तरक प्रदत्त है ताथ हटे-वाना ही जीवन है। और यह जीवन तभी तपत माना वाचे-वह बद्धा बदाने हे तिए प्रेरमा त्या ग, और त्या व्या से विले, असी क्रिया के द्वारा भी तर वाली अवस्थेल ment entirely and

^{।-}समर बेल गुरूत- २६७ हुन्दाचन लाल वर्म ।

* ATER

बाहत उपन्यात है अनेक बातों का तहन्तय किया गया है। इतहे दहेब प्या का किरोध िया कवाहै। अंबद का पुत्र दीव है और मैजरी नारी का चरित्र उज्जाल दिलाचा मयाहै। दीय बहुत नक्ष्य है वह ठीक पहला नहीं है। उत्पाद करता है होना क्याता है। यह राज्य के होग में हनुमान बनकर पूँठ ऐती फिराला है कि मन्दोदरी बनी लड़की की ताड़ी में आग लगा देवा है तथा त्था के में को बेनिकान आ जाते है। उनके पिता उने बादते है। एक बार उने इतना डाँा कि दीय माँ के व्हुषे को पुरावर वानपुर मान ग्या । वानपुर में उलकी के लक्ष्मक ने जो बाती है। बो पल बेबता है। लक्ष्मका दीय को पटने की पुराषा देता है तथा उनकी बहुत प्रेम देता है। दीप पहता है और हाई ताम उस्तीर्ण कर नेता है तहरा एक०ए०थी०एक०ये आ चाता है। और वह जन वेचताहै। महापन उलको मार्जीकन में हेता है तथा उतके मिर कुछ हिला निकास वर उने किए देने की बना कर देना है। दीप नाईकिन पर अख्यार की देवना है और कम पैते में अर्फ क्ल देता है। और वर कर्व हो जाता है उत्वा मजन भी भिरती रक्ष जाता है। तथा वह अमसुर छोड़कर बाहर जा जाता है। तथा तापु हो चाना है। भेजरी अपना चीवन वापन करती है, चरका कानती है। तया अन्य बार्य बरती है तथा केना वे पर जरी बाती है और वहाँ रहने लगती है। देना के साथ हवा-दुवी का केन होता है और पानी की धार में दाना तेरती है। एवं बार मैना को हुबने ते मेवरी बचाती है। इस्ते उनकी क्यारित घटती है बाद में वह मेला को तो कुलो ने बचा लेती है परन्तु कुद पानं में इस बाती है। इसने का तमचार , तमाचार पः में दीप पदता है औरमहरूर अमरपुर आकरजनका किया को करता है परन्त बाद में यह बी पित क्षय जाती है। और देना हे पास जा जाती है। हानपूर में हाजा दीप ही का की हुजान ने का तेने आती है और उतका परिचय उतके ही जाता है। वह अध्यापिका है। दीप उनके पर अध्यार की है देता है। जाया का विजाह ला हो बाला है और उलके पिता ने नहके के पिता 6 हवार वाये दहेव में व्योगते हैं। यह बरात जाती है तो उलने गुरू यी और लाधु भी है यो करन

आदि गांधे हैं। फेरे के तमय फेरे होने ते पहले कर लड़के के पिता 6 हजार त्यां मांगते है तो हाया के पिता भी तीन हजार समये ही देते हैं। इतपर लड़के के पिता और दुल्हा विगड़ उठते हैं। कि पढ़ाई का आधा भी नहीं हैं। ऐती भगह विवाह नहीं होगा। तो हाया लड़के के पिता के चम्मल मारती हैं। वरात वाधित जा जाती है। उन तमय हाया के पिता कहते हैं ि कोई ऐता है जो हाया के ताब बादी हर ते। दीम बरात को कत किताने देते को लेकर आया था। उतने कहा कि मैं तुम्हारी जाति वा हूँ बादी करने को तैयार हूँ। हाया की बादी दीम के ताब हो जाती है। गुल जी तक जाते हैं और दीच उन्हें पहचान तेता है, कि वह उतके पिता जी है। राम ताल हाया के पिता ने वहा कि वह त्याग पत्र नहीं देती। तथा उठाती रहेगी। अमद ने कहा कि वहां दीम की माँ बहकर की मती है दीमू और बहु वहाँ थोड़े ते पून पदा दे और गांव के कुछ इन्द्र मित्रों को मोजन देवर तोट आवे। फिर मैं बगत के ताथ अयोध्या कता जाउंगा। और बहु तहित दीम वहाँ आ जावेगा।

वहुती के स्थाप के तमा घर वह पाता में पर वर प्राप्त मन-बूटाय हो पारत है। क्यों क्यों मारवाहत कर पाती है। होक उती तक की कांकर एसर का उस्कें का उपन्यात में रिकार क्या है। उसी तक हो कांकर उटनार सरवाहर रिकासन अन्तर्गत राखार हात में कर उपन्यात है विक्रों के परिद्रा वर्ष पूर्व हुई दो ।

वासीनाती के व्योधीवाधि जोगी तम वाने पर में जुड़ानान प्रोधित वर्ष गया । तम 1917 के वरीव तसतीन माणितार अन्योगत नारातर प्राप्त के निवाली तैय प्रोक्त त्यान तम निवा पर तबकायती प्राप्त के द्वार तिव नामक एक ताहुर में दो लागी अवास्त्र का भारान्य निवालायने के वारण पूर्व लोकर मोली दवाई भी । तम वह केरि की को पालीनाती के वीधीवाधि के वोधन वेती अरेंप उत अरेंप की को बालीनाती के वीधीवाधि होती हुई वार्ष काम की माल मेती हैं। अपने । वहण्यत्य तह वार्ष को और अर्थ का बीधीवात हैं। कोनी वार्ष वार्थ है अर्थ का मोहद है। हैवर लिंट वार वहना के बाद्य काम होते हमां का वार्थ का केरा अरेंक हम काम कि लोग करने निवा के प्राप्त हमां हमां कर्म हमां

तंत्रक व्याप वर्ष किलाह, वर्ष है हाथ के प्राटक्त दुग्हा हा।
विका किलाह का वर्ष होने पर पास वाचा, तुक्कार और सामक्ष्म
के सम्बन्ध का पूर्वपास और हाथा प्रशासि हुई क्लामें किन्द-नेपन्द
सालों की विन्द विन्द सका प्रशासि के आधार पर है। उपना सका
और न्याप सकावानी अने व्यवस्था के अभी सीचित होने है सार्थ वहीं प्रसारत हम सम्बन्ध । हुन्देशकानी कर्नावनों के हुई मीस की हुई

हा अवस्थात में सहैय न तेने, अपित्यावाची न पूजने रेडी ज नाथ न करने तो बात कही है। व्यव की विषयाता विभाग और तहणांच है पत्रवाती है। विषयात केवर क्ष्मने तो पूजा जो है को विभाग विकास सम्बद्ध है।

्रायाम केराम का मनाव की मान को जाना पाइस. अंद को पाद सामी कियों जा की भाग अमे पात के का जा देना है। अंद करा है के प्राप्त का जा जा लोगा। को क्या किसती है कि अम्ब है, अ का काम क्या होगा।

इन्ड्रम**े-**यह

वृन्दानी वह उपन्यात में अवि हुमार और पूना हे तम्बन्ध में प्रश्नाचे तथ्यो है। परन्तु भोड़े ते देर-केर हे ताथ किली मति है। पेनु और हुदा ते तम्बन्ध रको वाली "इत-बाधा" ही व्हना तस्य है और साम ही है। अवित हुमार वित पाय वा प्रतिविध्य है वह अभी वीवित है। रतन अब नहीं है। मितवहुमार और विद्या नात है परन्तु उनहें हुमा चरित्र तमाय में दिना नहते हैं। मुख्या हुट हुमरे हुम क्य में अभी तनार में है परन्तु यह पता नहीं कि उतने हुनरा विवाह किया है या नहीं। मुख्या ते तम्बन्ध रहने वाली एक आप इहना तस्य है। अध्वाद अधिकाद अधिकाद के वाली एक आप

अवस भेरा गीई

त्य 1945 के दिसम्बर से नेकर 1948 तक की दिसीख चननाओं के अधार पर अध्य मेरा कोई उपन्यास की रचना हुई है। जो कुछ वाहर भीतर होता रहता है उसी को समझव के सामने बाने का प्रयत्न अध्यामेरा कोई में किया है। बुन्ती " अध्या मेरा कोई" के आगे हुछ नहीं सिख सकी।

इस उपन्यास में बार ही प्रमुख यात्र है जवल, तुवाकर कुनती और निशा। इस उपन्य से में स्वतंत्रता संभाग की घटना स्वतंत्रता संभाग के तेना- निवा की केन वाला और समाज निर्माण की बात है। विधेवा विवाह की बात है। यन्दे समाज की बरवाह न करना, माला विता के सम्मान और नारी सक के साक्ष्म की बात है। विस समाज में नारी साक्ष्मी है उसका कोई कुछ नहीं विवाह सकता। द्वारे के लिये अपने उरसर्ग की बात है।

हुन्ती अध्या हत्य वरती है। ताल यर हत्य वरती है। अवन उते जिला देता है। सुवेग्वर अवन का यरिधित है। हुन्ती वी वारणा है कि वहिंद वे अने वारीर की यिका बनावे रहे और हैं अने वारीर का यक्ति बनावे रहें तो किती के मन ते कोई वारता नहीं। हुन्ती अवन ते बीव मांगती है कि वह निवा की अपना ने। किया की पाकर अवन हुनी नहीं रह तकेवा वर्षीकि निवा हुन्ती ते बहुत अध्यो है। तुमांकर कुनी ने कहता है कि हुन्ती की प्रस्ता उस है और सुवारने की नहीं। कुनी को नगरणा आया कि सुमांकर ने अतके निवे आवारा कहा था। वह कुना करता है कि निवाय यानी है हुह भी बाजना पिछुंगा नहीं। हुन्ती कहती है कि वर्षि क्यार और सुक्तों के अत्यादार के कारणा िन्नपाँ ऐसा प्रणा करने लने तब तब होगा । हुन्सी कहती है कि अनवाम जामते है में किन्दूल निक्षों हूं । हुआकर पानी गाँगता है । हुन्सी जाती है और हुए क्ष्मा उपरान्त हुतरे करने से आवाज आसी है बहुगम। वैसे यन्द्रक वली हो । हुन्सी के तिर को कोइकर गोली उस पाए हो गई । बन्द्रक एक और पड़ी हुई थी । हुन्सी हटापटा नहीं रही थी । एक कामन पर विक्षा अवल मेरा होई आमे हाय अप्रैप नवा था और किल एक विमन्नी हुई लकीर थी । इस प्रकार उस्सर्ग और विसर्वन की इस

कती व कवी

विष्यां के राज्यार तह ताल जीन नजा एक व करी सहक बनाई और बेतवा पर लगजा तीन कर्नाय स्वटा और बुन। इस उपण्यात की अधि-वांता वटनायें उस रचटे घर वाम करने वाने स्वहरों से सम्बन्ध रक्तीट । इक वटनाओं को तो वर्गा को ने मेंट स्वहरों के विना वाम की देश है और हुए द्वारों से बुनी है तब बटनायें पर को सम्ब और पर स्वान से सम्बन्ध महीरकती ।

इत उपन्यात है देख्य करणा और कोना प्रदूष दाल है। नोना का परित्र उपन्यति है जन्म नैजयस्मा है ।नोमा को स्वप्नरों है नाथ कार्य करती है ।

मेट लोगा है जम नार्च नेता है और उसने साथ थोड़ी देर है लिये आगण्द करना बालता है। परण्यु नोता उसने दने हा नवाब देती है तथा उसने वह देती है कि वह हुँवारों है तथा उसना विवाह होने वाला है। यह नेट नो नाटे का स्थाव देती है और दद्धा वहाँ मी उसना विवाह हर देने वही वह बनी नावेगी। देखु नोता है पान आ बाता है आर कहता है कि मेट अनुविश बात कर रहा था। देखु है ताथ उसना विवाह होने वाला का परण्यु देखु कहता है कि वह मरने है ज्याप है। उसने पान एक बनी बहता है और यह उसे नोता है विवाह है उपनीय है।

क्षाने कोका का उक्तवन और सम्बंधित विद्यारत है जब की विद्यार है कि काम करने जाने मजूरते हैं भैट की द्वारत किस प्रकार काम करने बाको सद्वित्ती पर रक्षती है अपने काम का नेते हैं और पैसे का भी है अ मजूरते है जोवन है किस्स है वह उपन्यास और द्वीय है।

5101 314

शीशी आप है दिल्ली है हुये देने का वर्णन विवार नवर है जो एक रेशिसर कि बटनर है। यह विकट देनर सब 1729 केंद्र में हुआ वर 137 कर क्योरा अधिकात है। विवास का है। हुम्कार की निवही है कीनी वाली हरिवही यर अभीर अध्यक्षा का कुछ महावत में कुदला और इन्सार दारा पीटा बामा इत्यादि बटमावै लच्छी है मुनाब को बेचन राज्यम और रागी के की के बाम करियत है बरन्तु बटवाई बान्सविक है। जन्य बार्यों के बाम इतिहात है ज्यों के त्यों किये गये है । बाब कर्ण की होती को तोहकर उन्हें बन्डक पर हानी हाफिन में हो बाहा भी दक्ता जाना और दहीं उत्तनी बल्बी महिबद में बहुर कर दिवा बाना, अमीर और अकान का शुक sof of crea due face area gof area cura or gerfa, of of g st ered nar gent traditio ar uniq graffe, and efacte à fou की है। दिल्ली है 1729 बाले बीच्या ही है पुष्ट ही बाला है कि मानव की अन्वविद्या किए बरा हो एक बाने पर विकास अभिवास्थित हो बाती है और राजनेतिक कालन्दी की कहर है पहुंचर कितनी प्रकार और इतांत की बासी है । दबी विकासी को कुछर बीच जिल जान की प्रव्यक्ति करते है यह द्वादायन हा बयायह हम पक्दती है बेता कि किर उनके ही बत ही नहीं रहती । उताब की और गीर अभग तरीवें व्यक्तियों का स्थान और तार्य कर बात की बाद विभाग है कि मानव की मानवीयता और संस्कृति अप की बीटका क्यूटी एक की जीवा करके उसर आती रहेगी ।

उदा हिल्ह

उद्ये और किला उद्ये किला उपन्यात है दो पात्र है। यह
उपन्यात उन्हों दो पान्ते है नाम है है उपन्यात का किला मी हम और
श्रीत है जैकी ते बाहर हम हम हे हो जा पाता है। हुंगर सिंह तरी है
पूराने बागोरदार दिका हो उद्योगरण पर पम उठे। इस उपन्यात में नेवह
में अगी एक विद्यारवारा जो तरहार हम दिवा है। उन्हें तहलारिता
ह वीआपरेटिया प्रयात बहुत पत्नी हमता था । यह सहलारी केशी तनियोत
का पर्वपाती है। तहलारी केशी सहलारी उपीय बन्धी जादि है यह पत्न
है है। सहलारिता लेकी प्रातः वाल को हम जिस्ली पर जोड़ा ता
अनुवद होन्या और अन्याने पन वा हुताता लागा हुता है। यह देता है
तहलारिता है जैक वार्व प्रात्म होने तो और हुतहानी का बादियो।

हानर अन्य हैं वहाँ हे कितान तहना दिया है हैतों नरते हैं। वहाँ किताबीटा नो कितान है किते तहना दिया संबंधी नाइन हैना नामा है। उन्हें उद्धा और किता तहिय नाम तेते हैं ज्या तरनारी अन्यार में देन्ते हैं। अन्योनी पर अन्या नहन इन्हेंन बहुता है। किरना तहिन गहनों हैं भी जान्य नवाना नो कोननों है और तहना दिया है जानी हैं की मान नेती है अने अन्यार में कोननों है जोने कान्यों से अन्य ने नहीं तरनारी होती है का दुनार अन्य पात नो कहनारिया है जर्म को नहीं तरनारी ना प्रवार दूनार कीना है आरनार को बोनना तहनारिया है जर्म है उद्धा और निरमा का विवास कन्यन्त हो नामा है वहन उपन्यास ना नुवय उद्योग्य सहना-दिसा हो नेती तथा जन्य नाम का नामा है वहन इन्हों रहना है।

हमाँ यो के " मारत यह है " उपन्यात में भारत हमें का विहेचन है। ये विभिन्न पहनाओं के माध्यम से भारत के व्यक्तियों के योर मं को सामने रखते है तमा भारत वर्ष की प्रमुख अध्यातिसक, धार्मिक एवं सामाधिक विधिम्ताओं पर प्रथम डामते हैं। उनकी द्वीक्ट में भारत एक महान्येम हैं। को योगिक दिवाओं में बड़ी सामन्य है। योद यह कहें कि इसी भारत की मौरक पाया का सम्बद्ध विश्व है तो उद्युवित न होगी।

अनेक विविध् वाते भारत वर्ष में देखता है। उनके देखने के माध्यम ने लेखक ने भारत का तुन्दर विश्व निर्मित किया है। ठाकुर शाहब की धारणा है कि अन्यहं भारत के बारे में अब्दे विचार लेखर वाचे । अन्यहं ने भारत के अनेक वार्च-कवायों को देखतर क्या कि "तबमुच अलगी भारत यह तब है।" वर्षा नहीं कूट्रेग । "अन्यहं ने देखा, धोर उंध विद्यात के साथ उस मोनी की योग क्रिया। फिलारियों में दानमीतता, उ लावेमनी के क्षेत्र में वह ईमानदारों, सड़कों के उपहाने के ताथ वह विवह आ सा त्यांचा गांदों के व्यापियों में बेता यहादारी त्यांची सहवा, विवने उन्हें पर क्ष्म है, को दिक्षा कर रेत की पत्रहने से बसा विवस

वर्ष तो है ही सारत वर्ष था तथ हुए । तेतार घर था मानव विकासमीय है परम्ह हमारी कर्मजन्य, ते हुएति का दिल्लीतमा अँदूट है। हम चिरे उठे, हमझह भी है, और रहेगे, हमारा त्य और भी निसरेगा । यहाँ हैगोर तरीके कवि, महा कम गांधी तरीके, तन्त हुए है। कवियों की कविताये, उपन्यात, और काची -चेड़कों की कृतिमां पढ़ों ते केवढे तुनते है। और कृतित होते हैं। यहाँ देखों वहाँ उच्चे उच्चे पर्वतों से हिमाण्डिस विकार और नीचे हरी घरी विचास हुछ- हुने, वारों और कुंसों का राज और तुनीन्य का रिनियास । निस्तवारतेन्द्र ते भी अधिक तुन्दर । कामीशों नर-वारेरकों के तोन्दर्य को देखकर तथी प्रमाधित होते हैं। यिखद में नमाज और मीदर में पूजा होनी एक ताथ । यहां के हिन्दू सुनत्वयन एक दुनरे के स्वोसारों और त माजिक समारोहों में पुरे हैन मेल के तथा बारीक होते है। स्ताद है ही की ।

पाकि त्यान ने यो ही यहाँ के लिए उन्द मया बर एका है।
हिन्दू नारी एकत्यान बच्चों की जान बचाती है कामीर की जनता
के प्रतिनिधियों ने कामीर को भारत का ही बाग माना है। और
उसे बारत में मिना दिया । वहाँके हिन्दू-मुक्तमान भारत के ताथ
ही रहने में उसका ईम बने रहने में एक मत है।

शील मिल कहा निर्धा

्म की की परिशासिक क्षणिया से स्वाप के प्राप्त कर निया है। इस क्षणिया के नाम है - इह बना पा , मेर काम, काद की मेट, पर्ट्स कान, फिरोह्माए कुमक, की सहानुस्ति, कुटरे का विशेष, यहाँ मीर की समझ, 13 सारी का और सुम्बार का दिन, क्ष्माना किसका, सच्छी सुद्धि, मेर्डे के नाथ क्षा, योडी हुए और, देशन की बहुती, मरसप्तारी का समझ, परित्र को क्षामा

"लच्यी ग्रीड" करानी में दिक्षाया है कि दोष मन वा होता है,

गरीर वा नहीं। मन ग्रुड हो गया तो तम बेचारे ग्रीर को को रक्क नहीं
वर देना वा लिए। गरीर मन वा राचा नहीं है,गरीर का राचा मन है।

इसमें मीना के चरित को दर्शाया गया है,यह राम ग्रुनोगन में नहीं पहली।
वह देगों के तमान है। मुस्रात का राचा अवस्थान 11170-1176 होती पर
वहां चला आ रहा वा उतने हुए ते ही मीना कोदेका। मीना राचा वी
तगरी को अपनी और आते देकदर कर नवी और उतकी और टक्टकी बांध
वर देकने नगी। राचा ने बात आवर उतकी बड़ी जीकों को टक्टकी लगाये
देशा। राचा ने पात बावर मीना त मुँठा-तुम्हारा नाम। यह कॉमते त्वर
में बाती " की मीना"। राचा ने वहां तरों मत तुन्दरी। बोन हो तुम १

धी,आपकी बोचिन। बहुत तुन्दर हो। पंता तम तो महनों में ही नहीं।
दिक्षणाई पहला। " मीना हम और उतका खरा नाल होते होते पीता
पड़ने तमा। का राचा ने वहां कि तुन्दें को महनों में रहना चादिए को मीना
पड़ने तमा। के पान ने वहां कि तुन्दें को महनों में रहना चादिए को मीना
ने बहां " मेरे काड़े कोन बोचेगा महाराज। राचा बोता कि " बहुत ते धोने
हाले मिल बांकी - चिन्ता मत हती।

^{।-} पेरिस्टारिक करों कार्र -राष्ट्री मुद्दि -गुब्द-३१ - ग्रन्दाच्य मान वर्मा ।

मीना करती है " आप पीयेंगे " रावा हा केंद्र पर गया वह करती गयी -" मैं अपने पात ते पूँछूनी कि तथा आगे भी ऐते राजा के कपड़े भोजों में? जोर यह भी कि ज्या उक हती राज्य में रहीं के या मालवा में वा सतों में ? " हत पर राजा ने करा कि तुम तथमुच देगी हो - मुझे हम्मा करना ।" राजा के मीतर ते बार-बार कोई वह रहा था " तुम्ने और पाय किया । तुम्ने बड़ा भारी अनर्थ किया । राग राजा होकर अमनी प्रचा के ताथ ऐता कुकों । आधार्य के पराम्मों ते राजा किता में कल्मा वाहता है। परम्कु फिर आधार्य कहते है कि तुम्हारा मन शुद्ध हा क्या और तुम फिरा ते उत्तर पड़ों । राजा मीना ते पूँछता है कि तुम्हारा मन शुद्ध हा क्या और तुम फिरा ते उत्तर पड़ों । राजा मीना ते पूँछता है कि तुम्हारा मन शुद्ध हा क्या और तुम फिरा ते उत्तर पड़ों । राजा भीना ते पूँछता है कि तुम्हारा मन शुद्ध हा क्या कर दिया " इत्तर्म मीना के आधार्य विराग स्था हो साम है।

रिस्हातिल बहानी मुद्ध जी प्राम्थ्य बहानी "पति को घषाचा " में जोबारम के बार्ष जा कर्म की ने वर्षन किया है। वह बड़ी वीर है आर नदी में अपने हुए अपने पति सो पानी में इदलर किनारे पर ल आती है । क्ष प्रदेश है एहं गाँव है नीय ते नदी बहती ही । उत नदी हा नाम तानारी था। एक किलान की लड़की कांजल्या की । लंबाल्या की बादी हुई और िया है तमय मार्ड में यो तीन लड़हे रियंत में देवर सम्बंधार वांस केंद्र विन्होंने उसने बात करनी वाही । रा से वे उसके मायंके की नदी सोनारी ते बड़ी नहीं किसी । मल्लाओं ने कहा कि नहीं बाद पर है बात का क्षेत्रा वां किम था काम शोचा । द्वल्या क पिता ने पेते देवर मल्लाही की अनर स्पर उन्ही कर की की बाल्या और ये महके और बोजा ता हठकर पुल्हा और हुठ वराती बढ़ गये। हवा की तमी के कारण नाव नीच की जार बहन लगी। नाच यावायक करीर के करेंद्र की तमेट के बात बहुँकी । तथा के खंका ते साव लिए हो गरी। बाघ लो नहीं हुनी परन्तु हुल्हा नाय व लिए हो जाने के कारण पद्ध ते नहीं में जा गिरा । वह गों ते वेतलता आयाज निकती -ववाओं ।" अंद तो बांद्र नहीं हुदा नवस्तु वीशल्या न एक छम के मीतर िया । पुनः उपाडलर अलग ही नही किया विल्ड बलोटा कता, अह धानी ताड़ी ते कार में पेंट मांधी और आप देशा व ताप देशा,

¹⁻शेरिका तित वक्षा निर्मा नायमी सुद्धि पुष्य-39, न्युन्दायन साल वर्मा 1

इट प्रचा में हुई बड़ी । उसी एड क्षम के मीलर । जय मुडडा मगा की करने के साथ ही उसने कहा था ।" (1)

अवल्या ने लवाटे ए ताय ाथ वेर केंड और त्याह ते हुल्हा जो पानी में त उचार तिया । फिर वह उत्त ताथ हुए किनारे की और आतमी । नाव पीड़े आ पार्ड । वे द्यांची श्रीपते-लावते किनारे पर वा वेड । * 121

वांत्र तथा नवीनी और सेरन सेम्हु है । यह अपन परि को हुनने त बचाने में तकम है । इन्युकार यह पराप्रमी नाहती , और प्रचीर है । यह परित्र हुत्या भी है । अपन परित को हुनने ते बचाने में यह दिती प्रकार की नजना पर्ने तैजोच नहीं करती । इन प्रकार यह ब्हानी भारतीय नारी क सार्व की बहानी है ।

^{।-}चेतिसातिक क्ष्मीविण "- पति कोषधाया पुष्ठ-60 - हुन्दाच्य तात दार्ग । २-चेतिसात क क्ष्मीविया"- पति को षयाया पुष्ठ-60 हुन्दाच्य ताल दर्गा ।

अधानार वा सम्ब

" जनाजार वा दमड़" जहानी तेवह है दें जनाजार जा दमड़ दोनों हाथ नहतु, जनुराहों की दो प्रतियं, जेतावादी केमम, मध्ये की मुकेदारी और दूटी तराही जनानियाँ तेवहील है। केनावादी वेगम और दूटी तराही दें ही नारी पाओं ज वर्षन है।

वैन्यादी के त्यस्य का वर्षन कर्म वो ने द्वल प्रवार किया है जा म की द्वाल ते द्वाल यक्तायक विन्तान , उल्ला क्षी की कर्म की ना जायस्य विद्वाल । उनके द्वारे द्वाप ने क्ष्मक देवर सम्मानने की वेकद्या की , यह विल्ह्स द्वी विस्ततन्त्र गया । वैनायादी के क्षेरे सहीर ने यक तेंग्र सार्थ। वहार ती आह लेकर वेनाया-दी ने अपने कीने जायस्य को सम्माना और तैयारण । तिल कृत्या । कृत्या ते तमाया द्वाण केंग्र क्षमय कृत्या गया । वेनायादी ने स्वत्यादे को नत्त्रात्मक जायाय यक्ताया और द्वार्य बोद्यार खडी हो गयी । कृत्ये दुर तिर की स्वेतर जावाय यक्ताया और द्वार्य बोद्यार खडी हो गयी । कृते दुर तिर की स्वेतर जावें योडी तो अपने जरी। बोद्यों ने सम्मी बर्गोनिया पू गयी । कृतायों वेदरे

^{ा-}व्यापार वा कार -केनावादी केवा - वृद्ध-31 वृद्धाका साथ दाता ।

²⁻क्षाकार वा एवं -केनवादी वेका - प्रथ्न-१। प्रवतका नान वर्ण ।

³⁻कताकार का क्रांट- केताबादी केवा - प्रवत-13 प्रन्दावन ताल वर्ज ।

िल लाज्यम पर उत्ते का लालता का की योजदान कर दिया। [1] वैनायादी नायने गाने का बाम अनोकान के ताथ करती रही थी। [2] रंग सा मद, योजन उस थोड़ी ती आयु में ही देहान्स हो चाने

पर मह जाम स्थास , यह अधित तहार, और होता है मन में छोड़ हो । १३ ई के तथादी ही सनद को सुरहा-सुद के तहलास के किनारे होगी सुनदी गाउँ आप की दिलाती है, हह दिन और होस के आंद्राओं से तिवादी रही। ^{84 ई} नगम रोचे तह पर होट आये । इस्त और तैनीन बेनायादी ही हमर में तहा होगे । और होने में उनको पित तिल नहीं उताने दिला । ^{85 ई}

ध्य प्रकार हा देखते है कि बेनावादी तुन्दरी, और गायिकाहै और मोग तक उसके किए व्यक्ति है।

दूरी तुराली आक्यां यह है सब-द ही याचा है। सब-द हा लग ताक्य , तो-दर्य औत है पर रहाए बेता था । वरन्तु बरा तो बात पर उते किये हे नीचे केंद्र वर कनापुर कर दिया पर्या । वेवक वे सब-त है का तो-दर्य वा वर्षन इत प्रवार किया है - एक तौड़ी पर बड़े पुत्र पुर वलॉगीर। सब-त औत वेती आबातर। औत है पर स्वार वेता उत्तरा व्य नाक्यय, तो-दर्व । विज गता, हुलवान ओखी पर बरत गयी । हाजों है औच और वेरी में स्वतता आ नगी उत्पात है जरे प्रोप की परिदर्श पूर्णमा में विह्यती तो दिखनाई वहीं और वारे उत्पात है विद्यते हुए है । अब बाद्यात है हर हुक्य को बजा नाने है किय व्यक्त वहीं उत्पात है विद्यते उपनिचल बान्धाों में अंबों का । तहाट के और को बहुल वह हुन्न आजा पातन के तिय अगे हुत्य के प्रत्येक आप को न्योकातर हो बाने पर सबना ने अने वो उत्तर पाया । विशे

"आबा पाकर कवन ने मानों तब कुछ पा लिया । दोडी तुराही उसने की देर भी कि होच में डाली, बरी और दोडते ही लाई। जिलनी वह मुकरा रही में तुराही में उसनी वैचन जैल्ली मी न मुकरा रही होती । वैकि

परन्तु उनका पेर फिल्म कार । प्रतान करने पर की न तमका पाई और धड़ाम ने का फिरी। तुराही कन्सपुर हो करी । ईपूरी एकं पर केम करी । पर्व की फीमली ईरानी कालीन की और सादमाह के ही नामने । कर्त केम्म और अनेक्स निद्यों की ही। हहाँ किसने को टी की इह । 121

थादमा है जो जो ने निक्या,। "हजरे ही ताओ वह मुसाती। यह कमीनी हरकत। ने बाजों इनकों। इने वनत किने की दीधार ने नीचे पेड हो। ऐसा पेडी कि की इने तरह ने प्रज्यापुर हो जाये। वैसे तुराही हुई है जोर कीच उसी तरह ने किन्त की पाने।

चित्र गोर बादबाह की आजा का त्यन्त बातन किया गया, रोती किलकती शब्दमा को पहरेदारों ने पत्का और किसे की दीवार पर ते गोरी के दिया । शब्दमा त्यादी की तरह पट्यापुर हो गयी और बेरानी कार्याम पर किस्टी हुई अनुसी की तरह किसे की नीचे किया गरी और का प्रारक्षित कर किसे भूकों में तथा गया ।

इत प्रकार हम देखते हैं ि काना कित प्रकार तुन्दर और त्य तालण्य ने पुन्त की परन्तु करा तो बात पर कर्तुंगीर बादशाः है तोप की शावन हुई। उनका बोजन दुक्कद ही रहा ।

^{ा-}काराजार वा दण्ड, त्राही हुटी, पुर्ड-55 हुन्दाका नाल कर्ण १-काराजार वा दण्ड, त्राही हुटी, पुर्ड-55 हुन्दाका नाल कर्णा १-काराजार वा दण्ड, त्राही हुटी, पुरुड-56 हुन्दाका नाल कर्णा ४-काराजार वा दण्ड, त्राही हुटी, पुरुड-56 हुन्दाका नाल कर्णा

"भैद्रवी वा लाह"

मेहणों जा ज्याह , जहांनी नेहर में तेरह कहा निया है- मेहणों जा ज्याह, मूंह म दिखनाना, ह्यार ने उपमन, मानिया मानिया। जा ज्या का हीरा, का का ता हूं, पूरन करत, राजनीति या राजनियल, हार वा गुहार, तरलारी करम द्वातनहीं मिनेणों, घोर बाजार, जो मंगोंनी, राजनीति की परिवाधा, विल पूजन यह।

पिल पूजन का में नारियों की वर्षन है। पील बात की अर्जाकिनी है या या कि । दा हिने जैस ने किसी बात में कम नहीं। कुछ बातों
में बहुत ज्यादा । फिर भी लक्ष्मफ में बाये जैस ने दाये की पूजा करवाई
गर्म । ठीठ भी या । एक ने मनु ख़ाति की बात वहीं थीं। नारियों की
पूजा छोटी होगी तम तो उन भरों में देवताओं का निकास होता होगा।
यानि शाम्ति आ बिराजती होगी। जर में धरातन ने नेकर उमर आजाब
तम तुब छा बाता होगा। के कहते है कि पील देवता है उनकी पूजा करों,
पूल काओ, अरती उत्तरों, पेरों में तिर रखों। कि मुहलने बाते वक्ष्मा
रहे थे, यह तब बया है दूना था कि पील पूजन यह हो रहा है पर
निक्षा गया है द्वार पर पील पूजन यह । ज्या ये तब पहलवान, इतने दल
गये १ इतने कुम गये। कि पील पे एक एक निभा ली, कहा- हा,
माईसी। ये माईसी उन कि मों के पील थे।

यहने उन्होंने अपनी परिल के लामने दूरने देने और नेते ही माया देवने व जो हुए कि परिल्यों पटे छोड़कर उठन कर के बड़ी हो गती । एक्ट्रम किला पड़ी - हुम्हारा नहरानाम बाय ।

> हुम्हारी हाती यह बाय। जर में नहीं है दाने, अन्या की हुनाने ।

^{।-}बेहरी का लगार परित्र पूका यह - पुक्ठ-59 तुन्दालन ताल तर्मा 2-बेहरी का लगार परित्र पूका यह पुक्ठ-60 तुन्दालन ताल तर्मा 3-बेहरी का लगार परित्र पूका यह पुक्ठ-62 तुन्दालन ताल तर्मा

दर्श जार, हमें बदनाम करना वाहते है। हम क्या पुढ़ेन है। जाहम पुर्तिया है।

इतना बोर गया कि येडित ने बानों में ही कुमल काही। बह हह बाहर निवल वर आगा" पति पूजन " ही पटटी अपने नाथ नेता कतारता। 114

इतमें पुत्यों दारा नारियों के तम्मान की बात है। परन्तु नारियां अपने परिवाँ को तम्मान देना चाहतीहै। इती में दे अपना गौरव तमकती है।

^{।-}बेहकी का व्याह -यरिन पुचन यह पुच्छ-62-63 हुन्दाचन लाग तथाँ।

-: जे की का दान :-

्या को के अनुहों का दान कहानी तेन्ह है के अनुहों का दान, जन पूली को क्वला, तक और अब, धानेदार की खाना तकाती, धरती एका तो की तुरिएं, घेटी का नेह, बाह बदाका, पुनाल ने बालदान को पाट लिया, तमला के लिए बलिदान, उन्ह का अनुक ही क्यार, वह या वह, पन में ज्यान्तर राज भा नहीं की निश्वा, उस प्रेम का पुन्कार, बहानियां मुहोत है।

" जैगुठी का दान कहानी है गाँच वालों को लक्दान करना था।

जवाल मबद्धर या मबद्धरी का पेता देना था। गाँव में मबद्धरी की कमी

न थी। ते वेचार सवाथ दिन तो मुक्त में काम ह लमदानह कर तकते थे,

परन्तु तमालार कई दिन या कई तप्त्यह तो करने ते रहे। तरकार के

किटठे में चितना त्यम देना तय था उनमें अधिक और नहीं छोड़ा था

तकता था। जब की वो मीटिंग हुई उनमें गाँव की तिन्त्यां भी आई।

यातक तो आये ही रामा भी आई। योचना जकतर ने तमझाते हुझाते

जन्त में थिथियाने स्वर में कहा -" दो तो त्यमें की अटक रह गयी है।

जाम वर्ष नहीं चाहेंगे कि यह पूण्य कार्य अधुरा मड़ा रह बाये। और

जरे माई अधुरा तो नहीं रह तकेमा, यरन्तु पिछड़ बायेगा। किया

कराया बराब हो पायेगा और फिर ते हुल करने में खर्च और भी ज्यादा

यह बाने का हर है। यह मन ही मन पहला रहा था कि चार महीने

पहिले ही हमी न पुरा तथ्या उगाह विया।

धारण-वारिकाओं है हुन्ह में ते यहा पह एक सड़ही हही हुई। पोजना अम्बर के बात आई और उतने अही देखी में ते तोने की डेपुडी उत्पर कर अम्बर के हाथ में देखी। यह सड़ही रामा थी। घोती-हमारे पिता थी पुलिया और सड़क पर ते काम करके यह सोहते है तह धुन को ने समते है उनकी सरफ ते यह अहती पन्दे में में देनी हैं। ¹²⁴

कर्ड व्यक्तिकों ने प्रमेशा की । "राम विकारी का यहा पर

।-शुक्रीका दान प्रदर्ग 6 2-शुकीका दान प्रदर्ग

हुन्दाका साम वर्गा हुन्दाका साम कार्ग आया और अखा में अहु आ गये। उत्ते राष्ट्रा की को तथा तिया।
रामिक्टारी को अभी रेगी तैलान घर घटा गई था। मुक्तित ते
अपने मते के उद्धरोध को तयल करके राम किटारी घोला- में फिर की
काम घर करी कमी पहुँच बामा करूमा। यह दान लो मेरी जिटिया
रामा ने किया है आय अपने कामजों में हुनी का नाम किटारा।

गी दिन में बान नेने वाले ब्रामी भी नहर ती हो है गरी। कई दिनमें ने अपने छोटे मोटे पहने मोजना अफलर को है जाते थे। जन्दा बात ही बात में माँग ते अधिक हो गया। योजना अफलर ने कहा"राम चिहारी भी बेटी का इरामा ह का नाम का गर्भों में तो क्या जिले पर के माने पर निका जा मेगा। जिले पहकर काम करने के लिए लोग कार कतकर तैयार होते।

इतहें कहान के लिए प्रेरणा है है ताथ रामा की कहान के
प्रति तद गणना है। रामा की दानमीलता तो दर्गनीय है ही तेशक
का कम्दान वैती योजनामी है प्रति श्रुवण दिवाई देता है। रामा में
त्वाण और अन्धे वार्व है प्रति एक तालता है जितते प्राम की उन्नति
हो तहे। यह भी देशने योजय है कि तभी का तहयोग जित प्रवार अनेक
योजनाओं को तमन बना देता है।

^{।-}बैयुकी का दान हुक्छ-१ - हुन्दावन सात वर्मा । २-बैयुकी का दान हुक्छ-१ - हुन्दावन साल वर्मा ।

-: शर्भागतः :-

शरणायत वहानी तेवह में शरणायत, वहा वहा व्यवा, तैतरे वाली राखी ,हणीदा, अण्या वी वंस, मालिश -वालिश, मेरा अगराय, राखी, क्वोला चारवार्ड, अर्थ बीसी, रिहाई तक्वार की तर वर, और महब एक मामली नवार, व्यानियां नेवहीत है। शरणायत और अन्या वी वंस व्यानियां 'सोथी' व्याची तेवह में भी मिलती है। मालिश मालिश, व्यानी मेहकी के व्याह व्यामी तेवह में भी तेवहीत है।

"हमीदा और राजी कहा नियों में नारियों के घरिन, तुन्दर सन घड़े हैं।
होगी में घार हिन्दूने, एक मुनलमान लड़की । यह लड़की उन गांच के मागे हुए
मुनलमानों के तमूह की थी, हिन्दूओं ने मुनलमानों ने वेमाचर का सदना छुकाया।
उन घार में ते बढ़ा लिखा आवारा धुमते-पिस्ते अब तमत इन मनलाओं में आ
मिला था । किना किनी बड़े प्रवात के वह मुनलमान तक्षणी हाथ पढ़ गयी ।
उतको घोड़ी न्द्री के मक्ष्मार में हुन्हों देने जा निक्रण्य कर तिया । तड़की में
कहा कि मुद्दे मारिये नहीं, मैंने किनी हिन्दू का हुन नहीं विमाजा। उतने वहा
कि हिन्दू विना अमराथ के घोढ़ी जो भी नहीं मारते । में तो मुन्दय हूँ।माधव
ने वहा कि हमीदा तम बनान हो में बनान हूँ तुन्हें हिन्दू बना तूँचा । वह
वहने तगी आपके ताथ व्याह कर तूँगी । माध्य वा कहना था कि इनके ताथ
विचाह करने ते एक मुनलमान कम हो बावेगा औरएक हिन्दू बह बावेगा ।
हमीदा का नाम मान्ति एका गया । माध्य ने हमीदा ते बम बूँठा कि तुम
तुनी हो तो हमीदा अने तभी ," आपने मेरे प्राण बमाचे आपके ताथ मेरा
विचाह हो गया है, अप मेरे पति हैं । आपके ताथ बीवन बिताना है, तुनी

यह पति पत्ता है, मायह तकत्व प्रतन्त है, वहकहता है कि ' में तक्त पहुंच पहुंच हैं कि हार और बता तकार विल्हुस असन असन की है। स्वा इस गुढ़े एक बच्च है तकोगी। ¹²े और और इस्टार किया और कोई हो नहीं या को पार्थमा। कन्यमा बायद हुद दिलात में यह बाओं, दिन है स्थाप तितार है ताको पति बांच और राज में यह हुत्ये में विल्हान अवस्थित। ¹³¹

I- शरणायत - हतीदा एटठ- 20 हुनदायन गान वसा I

²⁻ प्रत्यागत - हमीदा पुष्ठ- 22 हुन्दाचन नाम वर्गा ।

³⁻ भरणागत - हमीदा पुण्ड- 22 हुन्दालन वाल वर्मा ।

हमीदा का जिलात है कि परित्र कल्पना । दोनों की रहा करती है। वह कहती है " कि हिन्दू सुलक्षान दोनों में यह रिवाच है कि जिलकों कोई बहिन मान ने तो यह परित्र कल्पना दोनों की रहा करने हैं बड़ी तहातवा करती है। 118

माध्य ने हमोद्धा ते वहा, हिन्दारे परिवार का पता वन का है। इतिन आई है, ताथ में हा हारा भाई है। हमीद्धा थोगी, तोपती हूं, में न जाऊ, क्यों कि पर में मुक्के तन्देह की निमाही ते देखा खानेगा। मेरी परिवास में विद्यान नहीं किया खायेगा। मेरा जीवन सुम्बन्स पीतेगा। दें

माधा बहता है कि विक्हूत नहीं, में सांगन्य का हुंगा, नेपायती उ. ह एउंगा तुम्हारी पविकता पर उन लोगों को विक्रात करना पड़ेगा। ^{14 के} हमीहा कहती है, पर में पाना नहीं पाहती, लोग बतनों का विक्रात बहुत कम करते हैं। ^{15 के}

भाषा हमोद्धा को उसके परिवार के हवाने कर आया । दिखा के तथा हमोद्धा ने भाषा को प्रभाग दिवा । उसकी आंखों में उसने को कुछ उस समय देखा ,बब्दों में व्यास नहीं हर पाया, तोचा आय सक्ष्म की बारिन्त को वा निवार ¹⁶

हत पूर्वार हमीहत ने पवित्र बीवन वापन विवा और को परिवर्तन रहे अने बावों को बन्त किया । वह अने बच्चों को हर पूर्वार ने ववाना पाहती है । अने बीवन को परिवर्गनाने रहती है और बीवन का की परिवर्गन बरती है, हत पूर्वार उत्तवा परिवर्गनिन है ।

^{।-}सरमारस हमीदा १५५- ३ इन्दावन सत वर्मा ।

²⁻बरणायत स्थीदा प्रकर- 24 इन्दायन वाल दर्जा ।

³⁻ शत्यायस हमोद्रा प्रक्त- २५ इन्द्रावन सास वर्गा ।

⁴⁻सरपायत तमोहा प्रका- 24 प्रन्तावन ताल वर्गा ।

⁵⁻सरवागत हरीदा प्रवत- २५ वन्यावन सास वर्गा ।

⁶⁻बारणाल्य हमें हा १५७- १५ हन्दावन मान वर्ग ।

राखी कहानी में राखी हा महत्व दिख्याया मत है। गंग और प्रयोग हा चरित्र पिन्म किया गया है। प्रयोग छनीहर और हमदन को पदाले है । पक्लक पदाला है गैमा बेठी रहती है । प्रयोग के म्न है रह रह कर यह बा उठ रही थी कि मेच उनने प्रेम करती है। किन तरह का प्रेम 9 प्रेम था लोह 9 वह तह पदता है और में जानन्द हा गा रहता है। एक अनन्द ता । 👫 जेना बहुत दिनों से पदाना ध्यान पुर्वं देशती वती आ एडी है। उतके नीचे में कितनी मादकता थी। हैती किल्मी व्यवस्थी। उसमें िलना भवेचर आवर्षण था। जिल दिन ले देशा उती दिन ते वही भाव निरम्तर क्या आता है- बंदता ही जाता है। ³²¹ परन्तु बक्षेन गेम को दिस्ती विकता है, " बहिन केन, आप में यदि अपने धर पर होता मेरी बहिन मुक्तो राखी बरिस्ती । यह भी मेरा पर है, और दुध बहिन के तथान । इनिकर मुख्यों राखी बांधी, तक बोचन करेगा । ^{33 वे} चिटटी पदने हे कारण अथवा चीके की गरमी के जरम, में मा जो पतीना आ गया और उत्तवा हैंट लाल हो मना। उनने पतीना पोछा। गंग ह ने दूर-त वहा, अच्छा यही तही । मा सर गाटक पहले आपणो राखी वांधुनी। बक्तेन का हाथ पतारा हुआ ही था, गेगा राखी घोषार भीतर वरी गरी। बातेन ध्यान मन्न होवर भोवन हरने लगा । येथा परोलमे हे लिए हुई हार आई । जिर खोले ि छारित में ियर शोवन, किना मुनकान के हठे तहे दूर होठ, उतने उती बाह है लाय अपने माईवी को भी राखी बांधी और उनको खाना परील दिया।

इस प्रवार देखते हैं कि मा तहर बयतेन यथीय नेमा ते त्येह करने नमता है परन्तु उनका प्रेम बहिन के परित्र क्रेम में परिवर्शतेत हो जाता है और साथ ही नेमा की मा तहर बयतिह को क्षाई के तमान प्यार करती और

^{।-}शरणायत राजी पुष्ठ-५६ वृन्दावन शाल वर्मा ।

²⁻बारवायत राषी पुष्ठ-57 पुन्दायन नाल धर्मा ।

³⁻बरमायत राजी पुष्ठ-58 वृनदावन लाल वर्मा ।

⁴⁻बारवायत राखी पुच्छ-59 पुनदाचन ताल वर्मा ।

mild m

राखी बांधती है। यह पाई को राखी बांधकर रखार्थका के महत्व को लार्थक करती है।

" लोपी "

तोगी कतानी में तोणी ा घरिन धिन्म है कह कित प्रकार अपने बच्यों को बचाती है। नामक्यूर फिले के मक्ता गाँच में हिन्दा -अहिन्दू आदि का तान्मदायक क्रमहा हुआ, मुनवमानों ने लोगी के बर आग्रमक करने कियाड़ तोड़ आले, और बच्यों को मारने को हुए वरन्तु तोगी ने उनको बच्यों को मारने हे रोका। यह बच्यों को बचाने के लिए इन्लाम धर्म ब्यून करती है और उनका नाम रहीमन हो गया। एक मुन्डे के ताथ उनका निकाह कर दिवानमा। पन्द्रह दिन बाद उत मुन्डे ने लोगोंको तनाक दे दिया। मुन्डे ने कुछ न्यायों में लोगों को दुनरे मुन्डे के हाथ केच दिया। इत मुन्डे ने एक ही तज्ताह में तनाक दे दिया। तीनरे निकाह की त्वारी हुई। तब तोगों ने लोगा- ऐने बच्यों का ज्या करनी फिनडे लिए इत्ती हुई। तब तोगों ने लोगा- ऐने बच्यों का ज्या करनी फिनडे लिए इत्ती हुई।त नहनी यहे १, उनने बच्यों को मार कर मर जाने वा निर्मय लिया अधार ब्रोधने नगी। है हिन्दु त्यानी पुलित और लेना जिन कियों को निकामा या व्ययं तमका उनको हिन्दु त्यानी सरकार के हवाते कर देने में ही अपनी पिपमेदारी को पुरा करना वाफी माना।

नेद बाल को अने घर का लोग लगायार मही मिला । नेद लाल के वार्ष जिला राम के उनके पान को लार आये एक पन्ने निल्ला था ' मुलते आया है कि लोगों और वच्चे किल वार्षों । यदि सोगों के लाग कोई कर्ति ली की महीलों, यदि उनकों मुलताम बना निया यहा हो सो ही किलों पर उनकों हर ने मुलत कर लेगा । यह केन के लगान परिष्य के लानों हेट की कर्ता क्षा है तो के विकास है हर के के लगान परिष्य है लानों हेट की कर्ता हुताई है जोई प्रयोग्य नहीं । यदि उनकी आरमा को क्षा नहीं लगा है से उनकों देशों की लगा है से उनकों हुताई है तो क्षा अपना कर पूर्व अपना के लगा पर में आपना । में उनका हुता है सी क्षा अपना कर पूर्व अपना के लगा पर में आपना । में उनका हुता है सी क्षा अपना कर पूर्व अपना के लगा पर में आपना । में उनका हुता है सी क्षा अपना कर पूर्व अपना के लगा पर में आपना । में उनका हुता है सी क्षा अपना कर बाद का लाने को लगा रहेगा । मुलते लार देशा में हरणा साम है सी अपना कर सी का लाने को लगा है सी आपना । में उनका हुता है सी का लाने का लाने को लगा है सी आपना । में उनका हुता है सी का लाने के लगा है सी का लाने को लगा है सी का लाने के लगा है सी का लाने हैं सी का लाने के लगा है सी का लाने के लगा है सी का लाने हैं सी का लाने के लगा है सी का लाने हैं सी का लाने के लगा है सी का लाने हैं सी लाने हैं सी का लाने हैं सी ला

वह मुन्डा तोषी ते पीछा हुडाना चाहता था। उत मुन्डे हे हमें वाल है का मैं तोषी है पृति दिती पुरार का भोट न वा। तोषी ते हहा गया अपने बाई-बन्दों में बाजों, अपने अमाच में साधिक हो बाजों। वह सहने तमी, में

^{। -}तोषी सूच्छ- २० हन्दाका मान वर्णा।

²⁻सोपी पुष्ठ- 29 हुन्दाला साम ार्मा ।

िन्द्रतान है कोई बड़ी है। तेनार है देश होई हाना हो। देश हरतानों दे तो है कमान्त्रों है कमा नगई तुम्हारों बात हो नाहता है, हम हरता है कि भी तो रही हो, ते जो हा और फिलों । तुम्हारा नाम हतमा कुट और निवास नहीं है जिलमा का कहती हो । तुम हो बाहे कि बात है जिला पार्थेग । यदि तुम्हारों हाला हो तो जा लोगों है नाम होता हम हु

[।] सोधी पुरुठ- ३० हुम्बाच्न मात्र त्या ।

²⁻ सोची पुण्य-30 पुन्दाचन साल ार्स ।

^{3 -} दोषी प्रवत-31 हुन्दाका साल लग्ना ।

° रविश-खूट °

"रिविध-त्युट" वहाणी तेज्ह है, में उन्ने जीव को काने ते बयाया लटकी ने बुढ़दे के प्राम बयाये । बाएट घरत के लड़के ने डाबुड़ी का नामना कि बहवादे की डिक्नारीड़ा , लड़के ने रेल हुईटना बयाई, लटकी वान्त का तैयम तरोच की दहला, रम्यू का उनुवातन, में ज्या विकारीहर, नांकरी ते बहकर : आहा-नालन, क्यन का निवाद, डिक्नाईटी का लामना करों, मा के बुल को लाहत ने कमाया, वाड्डियर की बहादुरी आदि बहानिया तेज्हीत है।

लड़नी ने लुड़दे के प्राम क्याये कटानी में अवशेर की रहने हाली स वन्या वा वर्षन है। एक हुइटा हुये की दीवार की हुई हुए। ईट दीनों हा व ते पकड़े, चिल्ला रहाथा कि उसे कोई हुये से बाहर निवाले, सड़की अपनी साधित के लाथ हुन्नी डाले थे। उलने अपनी हुन्नी उतारी और तब महीकवी ते हुन्नी उतार वर उनमें भार मारवर बोजने को कहा। यह एसने मन गयी और उनको हुवे में बहजा दिया । नीचे वाले जिल को हुहने अच्छी तक्ह पकड़ लिया और अगर बाला तिरा हुवे में की बाट ते कतकर बांध दिया गया । हुछ लोग जो रा ते में निक्ते नहीं क्यों ने उनकी तहायता चाही, परन्तु से नहीं क्यों की किन बाड काक्षर को को। उस लक्षी को तरम्य का बात व्योगि बोडी पुर पर एक गांव है । मैं वहाँ दोलार वाली हूं और क्षेत्र घाटर निवासने के लिए नोगी हो किया वे माती हूँ। मज़ी दोड़ती हुई गाँव में पहुँची । उनके करने पर कुछ गोग किना जिलाम तैयार हो गरे और इसते लो हुए ने बाहर निकारी का हुछ लामान नेकर उस मजबी है साथ घले आये । धूटा हुकने को ही बा िये तम हैंये वर वा यहुवे। हुटे को बाहर निकाल लिया । यह बड़ी देर ते हुये में बड़ा बा। हुर के रह बांच हा निशानी था। धानी पीने हे किए उलने अपनी डोलगी हुवे में डाली भी बींचने के तक्ष्य डोलगी हुवे की सुरदारी हुने में अटल गरी । एसरी हुट गरी और मुद्दा मुने में था गिरा का । 🛂

मुद्देने और उन तथ ज़ार्याचाँ ने उस बहुकी को देवी के त्या में देखा । सड़की ने मुद्दे के प्राप्त बचाकर देवी का कार्य किया ।

^{।-}रिवास समुद्ध - लड़की ने मुद्धे के प्राप्त वचाचे पुष्ट- 6 हुन्दावन साल वर्णा । 2-रिवास समुद्ध- सड़की ने हुन्हें के प्राप्त वचाचे पुष्ट- 6 हुन्दावन साल वर्णा ।

" तरोच ही दुध्ता " नामक वहानी में तरोच ही दुध्ता का वर्षन है। मरोज के पिता जी के जिन की मरोज पापा जी मानोधन करती थी । याचा बीडी तीवयत खराव हो गयी और यह धीरे धीरे का स्वय बाब बर रहे थे। नरीच अवसान में वाचा जी के जिर की मालिस करती थी। चाचा जी ने एक दिन देशा कि मरोच के कुछ पीढ़ा हो रही है। उसके हाथ में मोटी पटटी केरी थी, याचा जी के बूँडने पर नरोज जो बतलाना पड़ा कि "लिबालत मोडा हो गग था । गीर-बाड हुई। अवहा हो गग था । बुह दिन हुए फिर उपर आया । कत दूतरी चार गीर फाड हुई । थीड़ा ता ही दह है । और ेबुड नहीं 👫 उन्होंने आपर्यं पुष्ट हरते हुए छड़ा है बढ़ा तक पास विस्त्रत अच्या न हो जाये और मेरे पान मत जाना । तरीज मोली नही आहेती । उसके तार में निर्देशता थी। भाट में पीटा बंद गती भी शायद । दुनरे दिन वह फिर अस्पताल में जावा ची के पात आ गयी और अपने वाचल हाय हो िधाये नहीं थीं। जल चाचा जी ने कहातुम फिर आ नहीं बेटी, तो लह बोली मैं नहीं हूँ। मेरा हाथ की ठीव है । विल्कुल ठीव है, तकी तो आई हूँ। ठीव ही केते आपका तथा रूप । यह कहने तभी आधारात शाली ने प्रत्यास कि आपडे त्या रूप के तुवार की गीत बहुत बीधी है लो में वती आई और बराधर आती रहेंगी । अप नहीं रोक तकेंगे । 424

तरोच अपने टाथ की पीढ़ा को कुनकर खावा जी की तेना करती है। यह अपने टाथ की पीड़ा ते हुती न टोकर जावा जी की तेना में लगी है। यह परोपकारी है और उत्की तेना भाग है। इसी तरोच के चारित का इड़ता का प्रदर्शन है।

^{।-} रविम-मूह " तरोच ही हुदला " पुण्ठ-20 पुनदाचन साल वर्गा ।

²⁻ रिश्य-मूह " लरोज की दुदला " पुरुठ- शुरुनदाचन साल टर्मा ।

"बचन का निर्वाह " कहानी है सारमोद्धेल की की भोड़ी का ार्पन है। एक भार वहता है * आन्नदाता यह पोड़ी अपने भार ही गारिपी देख जी की है। उन्हें दूर दूर है लोग मानते हैं। दुर्गाणा अवसार करते हैं। छह नाय बाली की है। देवल की चारिकी को उनके मानके के किसी नरदार ने घाडी मैट की है। यह धोड़ी बहुत तेव है। कालगी इतहा नाम है। विन राघ ने तबेरे उठते ही पोडी को माँग फेबा । उन्ने कहा," हमारे लगने करी अपनी पीडी घट हमी के बाम की नहीं । राजा के योग्य है। देते तो हमें यो ही बेट वर हैना या किए भी । यह भोडी तुमको, परन्तु याहो तो बदने में दाम दे तकता हूँ [1] "देवत पी अभेड अवत्या की तभी थी। तम और मन ते तात्वय उत्तका बहुत तमत्व पूजा पाउँ जाला था । जरिका अवंथी । और बात की ज़री । बड़ी हा-िषयानी और केन्द्रर । राजत्थान का ब्याबाय उत्ते की औ पाया व्या । 12 व परन्तु देवत की ने राजा किनलाय खींकी को ज़रन्त कोरा उत्तर किया दिया। * आप उमारे राजा है। समान ने आपको प्रजा-बाहन है किए राजा स्नाया है कियों का का सम्परित छीनमें है किए नहीं। बोडी नहीं ही जा तहती। ¹³ ो जनता की बद्धा उस स्थी के प्रति बहुत थी। वह कोतुम्ह के पास गांच वाकर रही । उनने बापु जी ते कहना केवा " मेरे मोधन को जायत में बहुत हानि पहुंचाई भगे। मुद्रे अपनी मार्थे बहुत प्यारी है। यो बबी है उन्हें भी मैं बहुत लेक्ट में पड़ा हैक रही हैं। यदि आप मेरी पायों की रक्षा के लिए अन्ता नितर देने को तैवार हो लो म अपनी भोड़ी आप है पान फिल्मा तहती हूँ। गुढ़े दाय नहीं चाहिए । मुके तो श्वी अने का केवल यह बचन या हिए। भाय की रखा है अपना पास लीच देना कैले भी आपका को है। ¹⁴¹ बाद जी ने स्तीकार कर किया । बाद जी ने प्रत्या केवा - में अपना तिर देवल भी के परणों में हैं कुछ हैं। मेराप्राम उनके खेखा की रखा करते बना ने पातवला है। मेरे ताथ कि गह करने तेल्या नाम होणा बाप सी की सवारी कालमा पोडी पर दी और हनाई दिया कि जायन के फिनराज बीची ने देखन

^{।-}रिश्म समुख बचन का विकास-पुटरी- 3/ हन्दासन नात ाम । १-रोध्य समुख बचन का विकास-पुटर- 39 हन्दासन नात हमाँ ।

उ-रीम सह बज अ िहार्ट- 9=0-39 तुन्धाचन ताल हाता ।

⁴⁻रविश तमुद्ध ध्यम जा निर्वाध- पृष्ट् ठ-४० हुन्सायन सात दर्भा ।

mand of the

वी यारिकी की मार्थ के हैं। धुराये लिये जा रहे हैं। लिर यर दुल्हा का मुहुट था। बापू जी को देख की की मार्थ हुटाने में नकत्व प्राप्त हुई गार्थ वर आप गयी। फिर भीर युद्ध हुआ। बापू जी ने किनराज के बक्डा तो छीन लिया परन्तु युद्ध में अपना तिर दे दिया। आज भी राज व्यान में बापू जी को देखता की तरह माना जाता है। और उनकी स्कृति वर उनकी के लिया प्राप्त के वि

इस कहानी मेंदेवन की का मायों के प्रीत प्रेम सक्ति होता है, वह पोड़ी के बदने में की भी नहीं नेना जहती इस्ते प्रीती होता है कि उसे किसी पुकार का की लोभ नहीं है वह अपने कवनों की रखा हरती है तथा मायों तथा पोड़ी ही तुरक्ति रखना पाहती है। इस पुकार वह स्वाभिमानी है। उसका चरित्र उपवहत और आदर्श है।

ाठनाईयों था लामना वरों, कहानी है हुआ का चरित्र विका हिया गया है। वर्ष होने तमी और उसने उसकी माँ तमा उन्य मूल बाने के किए मारा वरते हैं क्यों कि वर्ष हो रही है, मुहलों की एक तड़की ने हुआ की और देखकर बोली, " क्यों दीदी उसर की यह मुललाधार और लड़क पर खहने वाली धारा ह्या विका के उस प्रवाह है भी ज्यादा महरी और तेन है जिलको जोताकी रानी कभी बाई और उनकी लोडवों हुन्दर और मोती बाई ने उस दिन प्राची ही तो होड़ समावद पार किया था। ¹² वे जब लोच रहीयी -हम लक्ष्मीबाई के कम लेका कुट हुम तो तैनों कर ही रहेते।

्या ने कृता के जाय उत्तर दिया, कि- के जिलाईयों का ताकता इरना तीक रही है। इस तक। • 33 वे

का पहानी में तुमा के साहत का वर्षन है। वह कित पुकार हाता है मी सेहप्यत करके विद्यालय चाती है। हुमा के साहत ह हिल्मत का इस बहानी है हार्षन है।

¹⁻ रोक्स तमुह तक्त का निवाह पुष्ठ- ५२ हुन्दाका तान टार्ग ।

²⁻ रिनम तमुह बचन वर निर्माह पुच्छ- 45 एन्झाइन ताल एता ।

³⁻ रोध्य तहुत बाल हा देशांड कीठनाडन हा लाहना हतो पुढल-५६ हुन्दातन ताल हुआ ।

द्वे पाँच । शिकारी व्हानियाँ ।

"सबे पाँच" हुन्दायन नान यमां की मिकारी तथान्यी क्हाँियों या तंग्रह है। क्षामें मिकारी तथ्यान्यी छोटे-बहे तेहर क्यान है। यमां वी छा कथन है कि " यो पाँच" अधिकाय में मेरी मिकार तथ्यान्यी आ सक्या है जो नगरम नन 1922 ते आरम्म होती है। हैं वे पहाड़ों और नीययों में क्षाम तन 1922 ते आरम्म होती है। हैं वे पहाड़ों और नीययों में क्षाम है कि पटनाये क्यों कुन नहीं तबते । अनेक पटनाओं की तो उन्हें तारी याद है। उनका कथन है कि, " मिकार कोई खेले यह न खेले, परन्तु में परन्तु में परन्तु में अपन्तु है अनुरोध करणा कि वंगलों और पहाड़ों में मूर्त बल्या। होते ही नहीं पटके और दो बार अपनेवटने भी मोड़े। " हैं अपने वे लहते हैं कि, " जेनन पहाड़ों के नांचने के अभ्यात को योग्हम बीवन की कठनाईयों ते नहने और क्या उनके पार पाने की क्रिया में परिचार्तित कर दें तो किसी को ज्या बिकायत हो तकती है। " में मार तके तो उस कुम्म का आनन्द हो क्या कम प्रत्यान है।" " हैं में मार तके तो उस कुम्म का आनन्द हो क्या कम प्रत्यान है।" " हैं में मार तके तो उस कुम्म का आनन्द हो क्या कम प्रत्यान है।" " हैं में मार तके तो उस कुम्म का आनन्द हो क्या कम प्रत्यान है।"

I-दो पाँच व स्ताव्य हुव्छ-। - इन्दावः तात् वर्तः।

²⁻देशे पाँच व वसंबंध प्रकार-।- व-दोवन साल पार्ग ।

³⁻को पाँच व स्तम्य प्रका-३ प्रन्तावन साम कर्म ।

भन्दो पांच व उत्तव्य पृष्ठ-100 हुन्दावन साम वर्मा ।

तृतीय अध्याय

वर्ग जी के उपन्यासी में नारी के विविध स्वस्य

diagras

हुननवनी उपन्यात में अपे हुवे तभी बारित थोड़ों को छोड़कर रेतिसातिक है। बोधन ज्ञाम्सन रेतिसातिक ध्यांकत है। हुननवनी ने अपने ध्यास के जिल पक्षी राजा मानशिस ते कवन सिये थे, उनमें है एक यह भी वा कि राजा राई गाँव ते प्यांतिवर किने तक तीक नथी की नसर ने बाधेने। राजा ने यह नसर बनवाई उसके विग्य उस भी वीमान में है।

मान तिंह तोगर 1466 ते 1516 तक प्यानिवर का राजा रहा
करिस्ता के हाँतहात नेवंक ने मानाहिंह को वीर और वीग्य आसक
कालावा है । इंग्रेष हांतहात नेवंकों ने मानाहिंह के राज्य को तो तोकर
हांतन का स्वर्णांचुन कहा है ।
तिकन्धर प्यानिवर पर पाँच बार वेन से आवा । पाँचों बार उसकी
मानाहिंह के तामने से लीट बाना पड़ा । उसके दरबारी हांगहात नेवंका
अध्वार नवांती ने निवा है कि मानाहिंह ने प्रत्येक बार तोना वांदी
देने का बादा तोना वांदी नहीं केर टाला । यह आवर्ष है कि
तिकन्दर तरीवा कविन वांदा नाम मी नेता था । परवर प्यानिवर
राज्य है ना उस पर दावा राजहिंह कहवाह का या । राजहिंह ने
तिवन्दर का साथ विद्यानिवर वांते ।। महीने तक तनातार हुई है
हाता अहारी रहे । मेरे हुन है हाने संबर्ध है मी मानाहिंह हुना ।

न्द्रातिकर किने के जीतर जान यान्यर और युवरी यहन विन्द्र बारत क्या के अरबन्य हुन्यर और योग्ड प्रतीक है । धूवरय और क्यार की बावकी और न्द्रातिकर का विकासीत विश्वके विषय वासीन अरब भी भारत वर मैं प्रसिद्ध है। मुक्त वास्तु और स्थायत्व क्या मामसिंह के स्वानिवर विश्वतिषयों भी देन है। मामसिंह मान मन्दिर और मुनशी यक्त को काल के औरों को मुस्कान कहते हैं।

वृत्यों रानी कृतनवनी के ताय मानतिंत का विवास 1492 के लगम्य हुआ होगा । यान यान्यर और वृत्यरी महल के हुवन की कल्यमा को कृतनवनी ते ब्रेस्का फिली होगी । केवनाथ नायक हेंच्यू वावराह मान तिंह कृतनवनी के सायक थे । वृत्यरी टौड़ी, मैंगल कृतरी हरवा दि राग हती कृतनवनी के साय वर की है । कृतनवनी कृतर हुल थी । राई गाँव की दिहा किलान बन्धा सारीरिक वल और परम सांस्टों के लिये विवाह से यक्ते ही ब्राह्म बन्धा सारीरिक वल और परम सांस्टों के लिये विवाह से यक्ते ही ब्राह्म थी । परम्यरा के अनुसार कहा गता है कि राजा मानसिंह राई गाँव के बन्ध में विवार केतन गये तो देश कि कृतनवनी कृता मान बन्धा में की हो होने परमुख रही है और उसकी मोड़ रही है । राई के ज्यर जेवी पहाड़ी पर विवास उतके वाई की बड़ी भी अब बन्दास हो के है । परमुख उतके बाईउटल और लाखी के रवार्यों के बन्दास नहीं हुये है । परमुख उतके बाईउटल और लाखी के रवार्यों के बन्दास नहीं हुये है ।

वाकी और उस्त की क्या है साथ नहीं का सम्बन्ध है । नहीं और गरवर है पूर्वेंच में एक दौरा प्रचालत है -

> मरवर बहै न बेहुनी, ब्रैडी हवे न हाँट युटमीटा बीचन महीं, एरव वर्ष न ईटा

िन बद्धार है कि किसी में एक महिनी। केन्यों । को मरधर किसे से बाहर है रहते वर हैंगे-होंगे बाहर को किसे है बाहर एक मैह से कैंग्रा हुआ का विद्वारों से बामे है किसे कहा और क्या दिया कि पादि विद्या वाक्ष्य बहुंदा हो तो नरवर वा अवा राज्य है दिया वाक्षेता । निन्नो रस्ते वे तवारे किने ते वाक्ष्य को नई । यब उत्ती तवारे जिलाचित अर्थ हो भी एक करन हैने वाले ने रस्ते को वाट दिया और निट्नी

हम वह सबते है कि स्वन्यनी ऐतिहातिक पात है और स्वन्यनी उपन्यात ऐतिहातिक उपन्यात है। दर्भा जी ने इत उपन्यात में और एतिहातिक तथ्यों का उद्धारण किया है।

द्वे कि उपन्यास के मुसम्मकात व ना विरागत तो देखिता है। वाक क्षित्रकात स्वाप्त स्वाप्त

पुरवाह कारतो हो स्वर्त हो पातो हो भी उते हुए हात. नव्यहा नव्यहात और रतवान है यह बहुत क्षित्र है । हो सबता है वहपुरवाह ने होई यह नाया तो शहरवह बाह ने नाहिस्ताह हो हुनाया हो कि हवीया हो तारोफ सायह अपनी हो तारोफ, है है । हुं

i. हुटे बाँटे की हायका डा॰ वुन्यायन बाब धर्मा

^{4.0}

-: Partho :-

अविष्याचार्ड जीव्हात प्रीयत हुनेवार अवहारकार होतावर के पुन कार्यकार की परेका की 4 मन्या छक्ता का 1927 में हुआ यह आरे पेशान्त 13+8+1 95 वर रितीय उत्त किन बाध्यात छुन्या रहेंग्री की 1 अवहारकार है किनी वाले भारत राज्य की कारी बढ़ी की उपना अर्थकार के की अर्थकार है।

वित्र वारत वर्ष की अनु में उनका किया हुआ । 29 वर्ष क्रीड़ मा में किया हो भगे थे, बहुत का त्यात केल और उन बा, का तर उन्हेंने तर । कि वा 42-43 तब की भी पुत्र वानेत्र कार्यशास्त्र को कता । जह उत्तर वार्क की आयु 62 वर्ष की समझा तो श्रीतिका बातु का काल । जहर वर्ष को के समझा वालेत्रक का है व रहा । और उनके पुत्र पुरस्कार्त को से की । पुर के तकन्दी श्रीतिका के पुत्र करावा का उनके के सा तक्ती है की कार्य कार्य की साम क्ष्य का , नाम और प्रमाणन के सा स्वारतिका । यह दह जी का उन्हें हुम देश का किया , जीवा की प्रमाणन के सा

⁻विद्यान १ १०५- १ | इन्द्राक्तान वर्गा

धा कि

महारानी हुर्गावती में रक्षा की समर्थक है। वस साधु समाव हो में जंबा तथाकर हन वसीत है क्यों कि किसान मों को हन में जीत रहे में और नहीं मान रहे में तो हुर्गावती उनते कहती है कि वह सरकारी कोंध से केन मनवायेगी और सुधार करेगी जितते मों हन में नहीं जीती वामेगी तो साधु समाव के व्यक्ति भाग वाले है। पर्यास हजार तोने की आर्थियों उसके देवर की निनती है तो वह अपने व बात दनवातिशाह से कहकर उन्हें वह देवकर कि हमान वो सही दे दे कि उसकी है समस्त अगार्थियों को साहुकार कोंद्री दास को लीटवा देती है। यह अध्ये महीं वाहती। वह कर में वो मान्क करवा देती है। इससे उनकी धार्मिक प्रवृत्तित हिंद्रियोगर होती है।

ह्या होना उपन्यात हो यह हहमी हो हा द्वान लगती है। यह धर्म ते बहुकर धन हो नहीं मानती । वह हहमी ही हो पूर्वा हस्ती है। एवा हो पूरा प्रका विद्यात हो नथा बन्दान मेरे ताब है।उनहीं एका हा क्षा मेरी होड़ पर पहाँ और मेरे पांत हो पीठ पर वहाँ है। उसे बन्दान पर उद्गृह विद्यात है। उसे अन्दान है कि " विन बन्दान में पूर्वी तक्ष्मा दोने ही म्यूरी पर बेबा है वे ही वार ह्यांचें।" मेरा हत्य अविन है तो वे हा बन्दान मेरी एक्यांचा होते. व्या हा विद्यात है वि क्यांचा है विवास के व्याचा है वि क्यांचा है विकास है विकास है विकास है व्याचा है विकास है व्याचा है विकास है विकास है व्याचा है विकास है व्याचा है विकास है व्याचा है वि क्यांचा है विकास है व्याचा है विकास है

I. बीचा ए० IO4 gन्दावन नान वर्ग

^{2. 10 176}

8377 dis

ने निरुष में बहीन्यान वेधारवान, जोर हुन्केन में नेवर शिक्ष में शहरावान हैं। निरुष वेधारवान वेधारवान, जोर हुन्केन में नेवर शिक्ष में शहरावान हैं। जोर विशेष में शहरान में कार में कार मोध्या हैं। जोर विशेष में शहरान मोध्यान में तेवर पूर्व में बार जोर विशेषमा में शर्म मोध्या में तेवर में तेवर में विशेष मोध्या में प्राप्त मोध्या है। जोर माध्या माध

^{।-}वासिकायाचार्य प्रमण- १३ प्रस्थातम् सारत् स्थाति । १- अस्तिकायाचार्य प्रमण- १३ प्रस्थातम् सारत् स्थाति ।

े धार्तिक समिताहि स्व

निवसिद्ध अवन्यात में राजा निवसिद्ध की परिल कानाजती ।

प्रिणंक नारों है । उनने मंदिर निवसिष करनाये और जब मेहतरों के निवसित के जान पर मंदिर कानाये की पोजना कनाती है तो मेहतर और उनके परिवार जाने महत में आते है जिनती करते हैं कि ने अपने पूर्ववों के न्यान को नहीं होतेंगे। इन विनती पर बनीवत में कह उममें निर्मय को बद्धन देती हैं। वर्मा पी विकार है, " मीजन भागना के रस में उस समय देती मीज कारी दो कि वह किनी मंदिर की पूर्वारित हो । "में वे आने निवसित है कि अपने कह में रहनायेंग को बुत्वा ने और आनन्द की नहरों में यह वाचे। अवना राजी वामायती के अन्तरात में या पूर्वा वो मन्त पूजन की और विकार का ने तम मनी है 9 में राजी तहती है, " हुई तो प्रतिदेव की पूर्वा और मन्तरात में या पूर्वा लिता है वहीं बहुत बन देता रहन है। "में तमिता देव राजी के तम्बन्ध में कहता है , " हुई तो प्रतिदेव की पूर्वा और मन्तरात वेंग मान्तरात है वहीं बहुत बन देता रहन है। "में तमिता देव राजी के तम्बन्ध में कहता है , " हुई तो प्रतिदेव की पूर्वा और मन्तरात वेंग मान्तरात है कहता है , " हुई तो प्रतिदेव की पूर्वा और मन्तरात वेंग मान्तराद कि नक है वहीं बहुत बन देता रहन है। "में तमिता देव राजी के तम्बन्ध में कहता है , " हुई अब कोई और हु:ब्बर नाम नहीं करना पालिस। वह भवन पूर्वा बहुत करने नजी है, और अपाई पर पूर्वा मती है। " वह भवन पूर्वा महत्वा करने नजी है, और अपाई पर पूर्वा मती है। "

व्यविद्या राजा को यन विश्वती है। आपका जो केन हुके प्राप्त हुआ वह अक्ष्य है। उसी ने हुके मन्द्रान है वर्षों में अष्ट्रार िया है। बान पुनन में भन तथा रहता है और विश्वास है कि आपकी प्राप्ता और प्रत्यान को हुआ ने आदीवन उसी में स्था रहेगा। ⁶

का प्रकार में पहुंचने पर राजी उनका लोड के लाय त्याणन करती है है राजा करते हैं, " कुम प्रिक मान्या ने और प्रोत हो पद्धार्थिका। तदावृती रही, और हम तम्बी कुमा वामना के जिस मुम्लान ने प्राचेश परती रही।" ³⁶ी

^{।-}वीवता दिस्त पुष्ठ- ।। हुन्दाचन सान वर्ण ।

²⁻राजित दित्व इंटर- १६ इन्द्राच्य गांव वर्ता ।

³⁻मिलनादि स्व पुष्ठ-220 हुन्दायन लाल वर्षा ।

⁴⁻नोबनाहित्य प्रवत-शाः प्रन्यानन वाल वार्व ।

⁵⁻लीवलाबेद सा पुष्टु-130 प्रन्याच्य बाल कर्य ।

⁶⁻नामितादिका प्रयह-159 हुन्दाचन मान एवा ।

dat

अवन पेरा नोई उपन्यास की हुन्ती असाक्षाक है। उसना नीवन भी असावारण है। वह वानेदार से नारियों नी हुइति है। वह अपन से कि करती है। वह अपन से कि करती है। वह अपन से कहती है। वह अपन से कहती है। वह अपने वीवन नी उस्तर्ग करती है। वह अपन से कहती है आप निवा के साथ प्रेम निर्देश, उसके साथ व्याह करके उसकी अपनाहचे। केवन वही त्याम और वही प्रम था विसर्वन। वह विश्व और विश्व और विश्व सक के सम्बन्ध में अधिकार नहीं मानती। वह वहती है, में विश्व की सम्बन्ध में अधिकार नहीं मानती। वह वहती है, में विश्व में मी दलती नहानता वा उदारता वह नी है कि इस बांबम स वान्य के मार्थ में अभी राई रस्ती हमर उत्तर हावाहोन होते नहीं दिन्ती। व

i. अपने नेरा कीई go 235 ब्रुन्साबन साल वर्ना

^{2. * * * * * * * *}

अ विषया हो पद्यापनी वृन्दावन नाम कर्म हुए 7

वरते हे । सब्दान तिंह कहते है , उस नहां को नोग देवों का अवतार मानते हैं और वह नेशे जाति की है । मैं क्या का हुए सक्त में क्यों जाता । विशे हुन कहती है केशे हवे ह्या का हुए सक्त में क्यों जाता । विशे हुन कहती है केशे हवे ह्या का विशे हैं । हम नोग कि हि कि वा वह नहीं वानते कि हुन नोंक पूज्य है और देवों का अवतार है । विशे हम्मर कहता है हतो हुन में वह देवों को । कम्यान और न्य निगी का और नावन्य, वस्थान और है हमों को वह विशे उस कहोर नुका है जीतर ।

% ° 0 211

3. * go 219

i. विशाद की परिवासी क्षण्यादन लाल वर्ग हुए 90

नियम्बद्धनीय व

ह्ममधनी भूवर हुन की भी । यह राई माँच की दरिद्ध कितान कन्या की । यह आशीरिक का और परम लोन्नई के लिए किताह के यहमें की प्रतिहालों मई कि । यह समझ मुन्तें से सन्यान्त है । यह असी के माथे में बड़ी कोंसकी है । यह बच अपना कांपता हुआ कुन मरा साथ मामतिक के साथ में दे देती है सो कहती है.

्रें नहीं जायती क्या कर रही हूँ। मैरी यत रहना ,"
प्राम के लोग इतकी निम्मी इतके हैं।" वह उम्या क्यिने एक एक तीर
से बड़े नावर उरने , क्षेत्र की वीतों वाने तुलर मार निरामें है ।देशा निशाना
सनाती है कि आपके तामम्स की ध्वरा कार्य । नाती की बहुत अरहा

नाजारानी जो निम्म वर्गीय है। वह हुमनवनी वी सहेता है। वृत्वारों ने उसकी हम हकार व्याववार को है महाराज हमना नाम नाजारानी है। कहते हम तीय हमनी ताजी है। यह अहीर है। हमारों है। कहते हम तीय हमनी ताजी है। यह अहीर है। हमारों है। कही नाहर है। हम्मी वीची नहिक्जों ने उन दो बेरियों की नार निसाम का और दो को नम दिवा था। यह नी नहां अपना निसाम नगाती है। अपने बहुर नो है वह रूपी कुंता है कि माना कहां है आई तो नाजी कहती है हम्मीने मानर को तीर है मारा और अरों भी है हाँच मोड़ दिने । हतांकी राजा ने हमाय है मारा है दी । विसाम की से सम्मान है हो हमाना है वाहर्ष होते हैं हमानानी बहुत होते विसाम की वीचार को वीचार है हमानानी बहुत होते विसम्मानगीं हम को वी वरस्मु मानतिह है हम्म इंग्रस्स विवास होता है

i. भूगनवना ए० 183 g=दावन साम दमा

⁽O 16)

Tal ania

माराजी मुर्वावती जानंगर है अभिका गरेम ही विश्वित ही एक मारा तैलान थी । यह मिल्बर में मार्चमत मर्थ तीर मार्चम में निश्चम थी। यह वेर जा मिलार लगे की मौतीन थी । यह मुझा है मार्च ते मिलाराम्द है मीद राजा मन्यतिमार है ताच को जाती है तम वहाँ उसने ताम विवास हो माराज है। जोर पुत्र उसम्ब होता है। यह अगरी पूजा का ध्यान रखती है। यह तम्बाम मन्यावर तेती में कृतार करती है। यह अगरी पूजा महिला को मुखा पूजा प्रवास करती है। यह तामु तेती को भी तम्बुट्ट करती है और मौराज की मार्चक है। यह मुद्दा प्रवासी नहीं है। यह अवसर को अग्ना तमेद साची नहीं होते और देव की रखा है तिर आपन प्रवास तम देती है। यह तम्बद्ध की प्रतिमा है और तित्ति वर्ष हो यह है भी मुजीत वर्ष की तम्बी है। यह सुख्य के भी मुखा करती है क्या मार्च को महाराज ती हाम ही नहीं महाराज है भी मुखा मुद्दा है। यह अभी मार्च के ताम राजवारों है हाम ही नहीं महाराज है मिला मुद्दा है। यह अभी मार्च के ताम राजवारों है हाम ही नहीं महाराज कर दिवार कर कितानों की तहाय-सा तरते है। उसने कर ही प्रवास को भी तमाम्ब कर दिवार । यह अम्बद्धार्थ सार्च को मीति तमास लागे तमाम्ब करती है।

चतुर्व अध्याय

वर्मा जो के कथा ताहित्य में स्वतन्त्र व प्रातिकाल नारी की विशेषतायें

वीरत्व

ध्यनपत्ती और लाबी दौर्मी ही बीर है । उनहीं बीरहा हा ्यान पुनारी भागतेंद्र ते इत प्रकार करते हैं ." महाराज इस तहकी का नाम प्रमन्त्रनी है। माँच है लोग काली प्रमा निम्मी बाली है। यही है हमारी वह बन्धा विसमें एक एक तीर है और को मालर परने मैंते, जीतों वाले तुमर मार निराधे है । देता निवामा लगाती है कि अपने तामन्त की वजरा वार्षे । बाती भी बहुत अध्वा है हमारी निम्मी ।" रे पावा अरक्शक्द करते हैं" शास्त्री वी धन्य है वह गाँव वहाँ सब मुन्ति है सन्यम्म हमनवनी वैशी रश्री हो ।" " प्रमनवनी बहुत बीर वी । देखिने पंचम्पी का एक तीर से बड़ी बड़ी बीतों वाले हाअरों का मारना और बन्धा पर एक बारी धरकम हाउर की कोलों की दरी है अपने वर उठा ने बाना तथा अरने देते का लाखी दारा वांत क तीर है याचा बाचा . हर हर तह बोहे ही तम्ब में विख्यात हो गया। our agur of crossi are, hare of crossel forthe, garra की रायधानी अक्ष्यदाबाद बहुवी । और बी अन्यन्त्र तथानी पर ताय ही प्रशिष्ट हुआ उन धीर्नी प्रवृतियों का अप्राप्त अदितीय अक्षाधारण तोच्छा और सावन्य की ।" अटल ने सुकी को कोट पर से भार अपाधा रत्री कक्षती है तुम्बी ही य वह गुवर डाहर विन्होंने रात में तुनी ही कोट वर है बार बनावा ±¹⁴

रावियों की बाँखों ने तीर कमान और तनवार को क्यो अपनी त की नही क्यावा क्योंकि, वकी की तांतवों ने अप और विका की

[.] ह्यववनी go 165 geदावन नान वर्गा

^{3. 00 69} 10 275

विश्वना प्यार किया उसके बराबर तीन और तनवार है साथ वी करना वालिये था। अने दीचिये वैरी को किसे है निकट फिर देखिये मेरा और नाकी का काम। विश्वनयनी ने कहा " मैंने महाबारत में वड़ा है कि देवा को रक्षा शास्त्र द्वारा हो जाने पर हो शास्त्र का विश्वनयन हो सबता है। वेरा यही प्रयोजन है और दुध नहीं: विशेष प्रभावनी किसे को रक्षा है जिये नाकी के साथ रहती है। युगनयनी बीनो में वी यही बाहती हैं। वेषा से कहे देती हैं राई की नहीं हुए यही नहीं हैं। हम दीनों यहां किसे को रक्षा है लिये एक साथ रहेगी। विशेष युगनयनी और नाकी दीनों हो वीर है।

वन्नविषय और है। यह कुल वा को देना बारणा कर सकती है। और पर पहुकर पानी हैं बोजकर को वेर्त बारणा कर जननी बोरसा का परिचय देती है। यह कहती है हैं पानी का बहुता हैं। जाप पानी पीना पाने सो बहुता हुट बायणा । विशे वह वह विष बासी है और कुछ पढ़ तेरे है सो के है हुई पड़ कि हो है सो के है हुई पड़ के बोर है वानी जाता है वानी है अरह कर देना बासी है और कुणमी है हाथ है न पहुंचर जाने बोदन हा अन्य कर देना बासी है।

उसा किरण अपन्यात की किरण बोर है वह बाहुआँ के और पर अपने पर विश्वनका करती है। बाहुआँ का शुक्तका करती है और दूसरा बाहु असकी धन्द्रक का विन्तार सोसा है। किरण और दुक्ति की बन्दुओं के की मारे बाते है और तीय बाहु साधन सोकर गिर पड़ते हैं।

[ा] हमस्त्रकी पुठ 321 तु=दावन वाव वर्णा

a. • 90 389

^{56 * 80 413} Harris

के माध्य की शिष्टिक्या हुए कंठेड हुन्दायन नानवर्गा 5. इस्म क्रिका हुए 93 हुन्दायन नान वर्ग

मनारानी हुर्गावती बीरत्व की नावसा ते जीत प्रीत है। वह तीर बनाने हैं को व किवार में हैर की भी एक ही तीर ते मार निराने वाली है। वह पुष्प वैदा धारण कर मुझाता वाँचकर पुद्ध वर तकती है। महावत का ब्युका अब नदी के प्रवह हैं हुव नवा तो हाची ते हुद कर तैरकर उसे बवाने और किनारे पर नाने हैं तमके हैं। अकबर से भी नहीं हरती और अपने राज्य की रक्षार्थ वह करती है और अपने राज्य की रक्षार्थ वह अपने प्राप्प की उत्तर्भ वर देती है परम्यु सुकती नहीं है। "हुर्गावती ने उस दिन भी युद्ध किया वा उसने सवक्षको व्यक्ति कर विद्यार्थ बहुँ और धौदों सबका विद्यवास हुर्गावती है सीचें, वेर्व ,और वनश्ति विद्यान वर वा। "विद्यान वह विद्या विद्यान है वह वह वेरी है स्वहां हैं नहीं वाने देना वासती वी और बदार हाती में बाँक कर अपने प्राप्तान्य कर देती है।" वह बहुत अदहा वह वेरी है साहत की मुर्ति है। "

वा विषय में लोग राज्य हो रामी अवसीनाई विकट और त है। याथ को विष्यत हो। अभे को इस सरक आई से राज्य इस सामा है जो नहीं जिल्ला बालि करना नहीं किर से केरा हामने हैं बढ़ी विश्वत पड़ेगी। "वह महिला हुतो अवहुत जान को किर से वेता सकते हैं अवस्थानों के बात जोड़े से विवास और सामारण को बुद सामग्री साथ है, किर को विश्वत संस्थान को जान की और केरा बार्शनिक्ति हैं कह नहीं है भी विकास सम्बद्धता को जान नहीं को

^{1.} यहाराची हुर्गवती go 304 हुन्दावन बाल वर्ग

^{2. *} go 269

^{. * 90 71}

क रामगढ़ की राजी हुए 129 हुन्यावन नाम वर्म

^{*} 10 1

^{. 90 1}

वीरत्व १९वन विक्रम १

योगी विवास विभागों के बहुका को सम्ह मेती है कि किस प्रकार विवास का होंग करके कावेश के मैन्सिट में तुना के समय मार देना वास्तरी है। यरण्यु गोरों कहती है में धूयन से प्रेम करती हैं, वह वाहे या न वाहे में उसकी रक्षा में अपने सन के कंग्ड कंग्ड करा हुंगी। मैं उस अवसर पर हर नहीं रह सकती। हुंगी भी सी होड़ पहुंगी और बमती आग मैं हुए पहुंगी। है। जब सक देश में प्राथ रहेंगे उन पर अपनि राजकुमार पर आँच महीं आने हुंगी। हैं हैं

i. हुवन विक्रम gPeren बान वर्गा g0228

2. 10 202

10 201

TO 305-306

* go 307

वीरस्य । विराट की पहिल्ली ।

रानी कक्षती है में भी तेन्य संधालन कर सक्षती हूँ । लहना , मरना और राज्य करना भी बानती हूँ ।

छोटो रामः कला है स्मारे भाग्य में राज्य निका है व्या पानम निका है और बनाईन के बाग्य में प्राणावन का स्मन्न करा है ।121

वही रानी विशो से भी नहीं हरती है को है हर नहीं में हरती कितों से भी नहीं । परम्यु यह अक्षती हूँ कि बी हुए करो, तीय समहतर (5)

हुए वर्श पूर्व पेर अभे नहीं बहुति वहीं दिनवों है अभे पेर बहुत्ता है वहीं हरी की वस्तातों है। उत्तवा क्वन है वर्श पुरुष अभे पेर बहुत्ता है वहीं हरी नहीं बहुता वहां हरा को अवसर होने में व्योग संबोध होना वाहिये। [4] रानी बीर है वह उहती है "राज्य नहीं बाहिये और न क्वाधित निकेशा । वरण्यु हाथ में तनवार नेकर देवीतिंह के ब्वय और दिनम को अवस्य ब्वाहुनी और जिस महेनी। हो [5] होई नहीं रोक सबेगा यह तो मेरे अपन्य में होना मोमतो रानी बिद कहती है मेने क्याधाहियों के हा अपने के अर्था वहां हुए सहा है अभे क्याधाहियों के हा अर्थ में होना मोमतो रानी बिद कहती है मेने क्याधाहियों के हम और व्याधाहियों के हम को मेरे व्यवस्था वासी है। मेने क्याधाहियों और विद्वतिक्षित है सामने क्यो तिर नहीं नवाया और न क्यो नवाईगी । [6]

भोगती जो जोर है बहुना जाहती है कोच्छ पावन करना जाहती है। है जो महारामी है पास रहकर बहुनी हाहर की बेटी हूँ। अनमा कॉक्ट पावन कमी 1578 कुलो जाके जानने ने जायको कोई बाद न होना ।

वीरत्व । जीती जी रानी ।

करेंगी की रानी नदमीकाई उपन्यात में रानी का वरित वीरत्य की
गांवना वर्ष देता कानत से जीत वाल है। वर वीर है। सानर सिंह डाहु की
काजातानर में बच्चने के लिये "वे तको जाने वीदे पर पानी में बंत नई। । ।
धीदा तमकर तानर सिंह को पत्ना । उनका सिद्धानत था कि "वीवन वर्तव्य
वालन का नाम है कांच्य पानन करते हुये मरना जीवन का ही दूतरा नाम है।2'
रानी में द्विमेडिवर किम्थ को सरावा । देखिये द्विमेडिवर किम्थ को रानी
में उत दिन को पानों में और शहरवीरों में मात ही । किम्थ उनके प्यूह को
न मेद सका । उसकी नदमीकाई के मुकाकों में हारका लोदना पड़ा । । अ
इसके वाद्य रानी में आकृत्या पर आकृत्या करके हुबर सवारों को पांठे स्वा
हटाया । दोनों और के सवारों को बेहिसाब होड़ से हुंग के बाह्या सा नी।
रानी के रूपा कोशान के नारे अनेन जनसन वर्ता में । [4]

प्रवाद को क्षेत्र सकेकियाँ गोलीवाई बुन्दर, युक्तो, आदि को उसी प्रवाद कोर को किस प्रवाद कोरों को शामी । स्टॉल्स्स को सदाई में उनका को कुनों गोमकाम एका । गोलीवाई कसती है सरकार कुन्तों और वेटी संगीमाँ को अन्य अन्य गोर्थ किसे बाव और विर देश बाव कि स्वराय्य को सदाई है किसे होतों को क्षित्रमाँ अभी यहां कार कर स्वती है । इंडी मोलीवाई सुन्दर आदि सकी मारियों तोच कारतों है।

हमजारी की हाथी बीर है कि यह जीकों को इस में रजे है किये उसी प्रकार का कुंगर करती है तथा बहिया से बहिया काई पहनका की अवशीका है पहनता को जीकों तथा को अध्याचे रहती है जिसी राजी हर जिसा वासे और जीकों तथा प्रकार में पारे !

क्षित का राजा वक्षणकार हु० 255

^{60 450 454-373}

वीरत्व | यह कुण्डार |

तारा बड़ी वीर है। दिवाजर है जब तम जाती है और यह तारा ते कहता है कि अब पुम बाजी तो यह उस्तर देती है " यब तह आपकी मरहम पदटी नहीं हो बायेगी। ,मैं म बाउमी वाहे हुते कोई मार डाले।}।}

विवाय कराती हो कता है, " में निर्मा नहीं हैं और यदि मार्न में मर भी बार्ज को विकास मत करना । छोड़कर को बाना । बालिन, तुम रो रही हो ? शुन्देशा कन्या को जाँच में तंकट के समय में आहूं। यह कहाँ से शोधा ? हम राजकुम, पद्म हम का समरणा रचना । बालिन तैयार हो बाजों, मेरा मोह किया को कटार महर कर अभी मर बार्जनों ।" [2] हेम्बली में स्थेत होकर कहा " में तैयार हैं केशा । तुमकों अपने धोड़े पर गोधा में रचकर में बहुंगी ।" [3] हेम्बली कीर हैं।

i. 45 metr per 334

^{2. 46} BUSTY PET 139-340

^{3.} Ap graff p 5 3340

नः स्वापि-पण्लिः : -

विभागती गोरे रेग ी प्रोड हुन्दरी थी । आयु के कारण अंगों में हुए गिषियता आ भवी थी, परन्तु उस वहीं के उच्चान के कारण और उनकी सम्बद्ध ने विधियता हुएत प्रायः नी हो गयी थी । आसे एडी -कहीं महत्वापतिक की कार देने वाली और अदम्यता की नोतक 1-114

राचा के तिर है पीड़ा होने पर वह तिर दक्षाने सा स्वाताने को तबार है। राजी पुर करर के वार्यका को तबायन करने पाना ने वहती है * आपने निर नी वी अ वह नहीं है। दिन वर ने बेके, किन वर राज इ.सी धील भगी है। घरिये जिर दाच हूँ वा दक्षण हूँ। 42 ई राजी क्टती है, आर बह परिदेव नाना प्रवार के कार्कियों और बनीटल कार्यों में तमे रहते हैं. किर की दाल पाकर प्रतार्थ हो जाती हैं। ^{13 है} कह राजा कहते है कि वह सन ने अधिम कराये रहते हैं किए भी मेरी है तो राजी कहती है , के लो भीत देव के पूजा और भगवान केवर के भाग ते को आनन्द विवास के वहीं बहुस का देश रहत है। को अब राजा अध्य पीकर मुद्रम जाते है और वहते है कि है दूभ करता है कि किसी भी परिनियति है बदापि महिरायान नहीं करेंगा राजा राजी ते कहते हैं कि , कुट बहुत कहर हुआ है। हुई बेद है। तो राजी कहती है कि," जी बारे की ही वहें यह वर हो उने यह कह मोजवा ती पड़ता है। आप त्या उसी रहे, कुछ और कुछ वाहिए ही जगा। " ³⁵ । राजाका करते है कि इसी पी उसी कि में हुए कथा। कि वह जाता तो अधार पा । रापी दिल्ली के ताथ कहती है, देना मन डांड्रेस क्यी मन डिट्से, है। क्यापन ने प्रार्थना करती रहती हैं कि जान अवर हो। *

I- वीववरोद्दर्थ पुष्ड-II प्रन्याच्य शाल डार्त I

²⁻ तीवताहि वा प्रवत-५५ एन्टावन ताल वर्ग ।

[🥦] वरिवारिक प्रवत-१३० इन्सावन वात वर्ग ।

^{♦-} विस्तादि स्व प्रवत-220 हुन्दास्त्र साम और ।

⁵⁻ लीमतादिख प्रदर-273 प्रन्याचन लाग ार्ग ।

वाग्यकाच्य

अग्रहत उपन्यात है। तैतरी आने पूज के बाक्ष को बाने यर अपने पाल जो शास्त्र बैदाती है। यह अपने पाल के वहती है, " मकान का मान वरी । उनकी अगर के एक दिन पाल लोटेपा। ^[1]

का कैनरी का परित वर्तन वीपानर वस्ताहे, " केन्द्रित हो की ताफ शोधे हैं । पोच भी दिवार वर्तना विवास क्षणा। विवास क्षणा क्षणा क्षणा कर पान कुछ पान न्यूका और वार्ति विषय वार्षी ताला विकी, तो कैनरी वस्ता है , "मेरे कान्द्र वेट हुट योडे की गो है, भी कुछ मह करने तमे को बन्दा वसी कह मह । \$2.5

FOTER SEC-12 SECRETARING STATES

देश-परित

विश्व कि वा उपन्यात में जुड़ारिंडा विश्वतादित को वीट आने के विश्व पत्र विश्वती है। और वोटकर कियान मिलतों ने बचने के विश्व व्यक्ती है। यह देश पत्र है। और विश्वयान मिलतों ने अपने देश और राज्य को स्था वेती है। स्कृतिर्देश किलती है, " तारा के हाथ तम गया । त्यक्तिया का नरेश बद्धन और नरेश नेशन के ताथ किलतर पड़ां कर राज्य को अपने सद्दान सार्थित पर्वतमाना है। अगेर कियस तमने और रेश की व्यक्ति सार्थित विश्वय तसने और विश्वय तसने और विश्वय तसने हैं। नेशन और देशकी और भाग निकाने का प्रयान कर रहा है। अग स्वत्व सद्दान तस्तितमा का क्यने राज्य कने वा। ये सोर्थित है कि अग परनी पायकित शीमतान में देने रहे और आपके तमका को हानि सुधी। भगवान सेवत स्वत्व के स्वाव के स्वता के सेना स्वताचि नहीं होगा। नेशन अग्रवनाय तीर्य ही या ना के स्वताचे की नकर के साहत्व का स्वताच की होगा। वेतन अग्रवनाय तीर्य ही या ना के स्वताचे की नकर के साहत्व को होगा। वेतन अग्रवनाय तीर्य ही या ना के स्वताचे की नकर के साहत्व को का स्वताच है। मुक्ते नाय काने को कला। सेने उत्ते अटकाचे रक्ते के किस होगी मरवी। "अति मरवीन ने राज्य को सुतरों के हाथ नेवलने ने स्वताचा मरवी। पत्री। "अति मरवीन ने राज्य को सुतरों के हाथ नेवलने ने स्वताचा

रानी ने परिवालिका कि "उन्होंने तुमारे के पान की बात हुनाई तो दुम्हारी परितालीय प्रीति पर न्योदायर हो जाने के लिख मन उपदा । तुमने राज्य की रक्षा करने के लिख कहा हाथ लगाया है।2।

राजा तोची तथा थि, " जुमीरीज ने जो हुए किस केता या डोर जो हुए कहा उसी के। मान की हुँछ नहीं या 1^{13 क}्युटारिज देसकत है 1

[।] स्वीत्रसाधिक पुष्ठ - 130 ट्रन्याच्य वाल वर्षा ।

²⁻नवितादिस्य पुष्ठ- 160 प्रन्याच्य वान वर्ष ।

³⁻वीमताहित्य gsp- 262 gन्साब्य लाग तमा ।

अविष्णा है देश पर तो । यह देश पर विस्तित हैं हा अधिकार बड़ों या हती थी। उन्होंने कता, है देह से बढ़ की हूँद एकत अब तक रहेगा अब विद्तितारों से बहुती । य देन हुंगी और य केन केने हुँगी। विश्व का विद्तितारों ने बहुतवाया कि है आपके नाम पर युद्ध बारों रहेते । तो अवन्तीकार्ज ने बहुत, से नाम पर । वहां केरे नाम पर नहीं । देश के नाम पर, वहां के नाम पर, राजा नेकर विह के नाम पर, में बहुती और से आ भी हती पर तहें ।

^{।-} राज्य की राजी पुरुष-102 , पुरुषायन साल तर्मा । 2-राज्य की राजी पुरुष-105 , पुरुषायन साल तर्मा ।

ATG.

निक्नी तासती है। देखि उत्तरे उत्तरकर अमी और वाने एक ताँव को दोनों स्वर्ण से पक्तकर असे को प्रकार केन के तान करका दिया जरमा द्वा गया दिन नवा और क्षम्म से गिर नवा। निक्नी को उत्तके ताँच को पन्ने हुने उत्त पर गिरी परम्यु तम्मन गई। उत्तका होटा ता ग्रीनवा इहाता इटके के ताथ कुनकर असे पर गिरा एक होर असे पर बाकी करती परा गिम्मी का एक तीर नहीं नहीं वाले हुअरों का भारमा और वैकीं पर एक मारी भरम्म दुअर को कोतों को हुतों से अपने हर उठा ने आमा तथा असे मैसे का नाको हमरा बांस के तोन से ही मारा वामा दूर हुत सक बोड़े से हो समय में विकास हो गया। " है है हम प्रकार हुतरों और

पुष्यकारी का कान है। बोना को नमते नमते कान गुने पर पहि तुरमा तनवार न उठा प्रश्ते, डोम्मा तेन पर कोने तोते तंनद आने पर पहि तुरमा हो उदल कर कारन न करी हुन पद को गाने गाने राष्ट्र के बामने जा को होने पर वहि तुरमा गरन कर बुनोवी न दे पार्थ, किन कार्यों हैं गोने रेक्टों को समार वह वहनर ना रही थी उनने जाने। हैं वहि का वहनी जोर कहने को तुन न तमा पार्थ को नेता।

हुमनानी का काम है कि " जैने महाबारत हैं पढ़ा है कि का बीरका होतन दारा हो जाने वर हो अगन का जिन्तन हो तकता है। मेरा वही हुमीनम है और हुक नहीं : " हुन इसर विद्या होता है कि उसी हुई विक्रका और अदिवीय होता है।

^{1.} प्रमनवनी go 181 क्वांबन नात वर्ग

^{90 322} 90390

रामा ने सक बार कहा जा कि उसके प्राणा बेसवा है बाजेने यह साहती है। रामा मन में वय येगा मेवा कहती हुई नदी में हुद पड़ी । भगरों ते हरने वाली रामा की उस अंबेरी रात में उस प्रवण्ड वैक्षवा की ब्रांकर धारा ने हरा न वाचा । विकट तास्त के तान हा व मारती हुई सवन बादवी में कि हुई वन्द्रभाकी तरह रामा बेतानों की आँव से उछनती हुई नहरों के और हो नई 1° 124 रामा प्रार्थी की औड़ अगावर प्रवश्य के ताब प्रारं वरने लगी । वह जीमन द्रवेश देह और प्रकृष्ट कार्यक बारा । श्रीकृष प्रकृत श्रीवापनारी इस्तास्त यह यह अने बाली वस्ती की परवास नहीं -हरिट केन्द्र विनी द्वारेड व्यवन ही एवान पर निरिक्त । वेतवा के उद्यक्त कीना छन और महरा बाम का उरतर देने बाने देवन वे नम्बे बाच पेर । राया नदी हैर आई है । हुक्सी पहली है परन्त बड़ी और है दिवसिंह à eure yar mess à 1º 141 daffie ment à for en afait à अपनी विद् और देवता ते हुन दोनों की तबाद कर दिया होता पर बहु के बुक्त ब्रह्माय से हम सब बच क्ये । हैं हैं।

^{।.} समन पुर १० वृत्याका साम का

ant 1 ant 90 to

वन केन्द्र करता है कि " वर वहा नकाश है। अनुधित नाते कर रहा वा । मैं डीक सम्य वर बहुँच मना नरना न नाने क्या नाता। ¹¹¹ तो लीना बात काटकर कोमती है " तो वया नाता है, फैक्ट के प्राणा है दती और ने नेती। कोई जाता या न जाता। ¹²⁸

वह की तास्ती है और वसाना व बुद्धसवारी वानती है। दिवाबर से वस क्वा विवा तो दिवाबर करता है, " तारा है औन जीन है और हुम्मे की समग्र बद्धा तास्त क्विंग 9 किया किही हथियार है इतना पुरुवार्क हुम दुर्ग हो।"

वस सारा को विक्रवात हो गया कि वस म विक्रमे के बारका विक्रवात को महर्वक में हा हा स्वाप्त कर कार का महर्वक माने को हुई । म बा हकी । हक हुँह में भीटा क्यांकर उपर वहीं और उसी अवस्था में बामनों को सरक बोहकर नहीं से बोट में बामी करनाई बाहिये से बो बच्चे को उपर बोधकर नहीं से बोर्क से बांका और कोरें स माने करनाई बाहिये से बो बच्चे को उपर बोधकर नहीं सो किर से बांका और कोरें स माने अवस्था से अवस्था से

i. क्यी न क्यी पुछ 112 पुन्दावन बात वर्गा

^{2. &}quot; WO 112

^{3.} RE EVETY NO 335

^{4. * 90 437}

अधन मेरा कोई उपण्यास की हुन्ती साहती है, उसमें हिन्मत है। यह
गानियार का सम्मा करती है और प्रतिवाद करती है, पुनर्की को
हिन्मी का गरीसा नहीं है इस निये इस तरह के इरपोक्यमें को बात
करते हैं। यो हिन्मी अपनी एका का दम रक्ती है उनका कोई हुक नहीं
भर सक्ता । उस दिन धानियार तमेया लगाये बेटा या और उसके खास
पास विवादी थे। येग हिन्मत करके बंधी हुई हिन्मी को कोल दिला
और धानियार के सामने कही हो गई । उसको पुगोशी दी येन पड़ा भी
विवास हो तो परन्तु वह हुँग कर रह यहां।

यय करायम्भुन मंत्रत को मारने के लिये लाजी जानता है तो र स्वयम्भाग को वीकी योधे है उसनी वाजी यन्त्र है ली है और स्वयं कर सेनता है यही मार सन्ते । 1 वा मंत्रत कहता है कि है के बात है हिन्दा है वहां मार सन्ते । 1 वा सान कहता है कि है के बात है हिन्दा है व वा मंद्रत सेवला और वागी । मार हानों । र स्वयं तम्मा को बीजी मनवालम है कहती है कि नहीं वहां र सिन्दा है । व्यवंद है बन्धंद का रहने वागा है मंद्रत ने सनने पहले रहन्युक्ता को वरनी को हाथ बोद कर नम्पनार किया । बद्धे रो रहे थे । उसने बहे बद्धे के सिर पर हाथ रखर सेवल को तंबोधन किया और विश्व अपनी हाती वर हाथ हु विवास मानो बहती हो कि सुमनी अपने हती वायह को सरह सम्बती हैं। बत्ते मानो बहती हो कि सुमनी अपने की वायह को स्वास है । वोमवती बीहत को ते हु प्रवश्चित करने के लिये कहती है। वह बदे साहत के वाय कहती है जा विश्व हम सीनों है को बान करने है ता वा और रख़ी वेता राहती वास हम सीनों है। वह वह तो हम का ना और स्वां वेता राहती वास हम सीनों है को सान हम हमें करने देता वा और रख़ी वेता राहती वास हम्बां है जो व वर सके।

i. अवस वेश कोई पुठ 230 वुन्दावन नाम वर्गा

^{2.} प्राचायत हुए ५० शुन्दावन नान वर्ग

t: 10 154 a -

⇒ साहती :=

अधिनकाषार्थं की तीरता जा पता कवार अधिनकाषार्थं हे हुए है विकार, 1 'क्षणा हुआ । कुटी ने अने विभे जा का वाचा । तुमावीक जो जोग है कि है वाधिज उस को । ³⁰

Ho all

såggr

रूपा कर्में है। यह कहती है कि "तुम अगर किती मन्दिर है वनाने के काम पर तकते ते नकरा चना दोने की मनपुरी करो तो तुमको बीवन की कदर मासून सी और तभी यह बान पड़े कि मबद्धरी का तसना ज्यादा अशाम देशा है या क्यों को तेन । क्यों देशों विश्वना हुन विश्वता है । " व्या कहती है कि तसने की अबदुरी करों वहाँ मन्दिर वन रहा ही वह प्रश्री की तेव ते अध्वी रहेगी वहीं तो एक दिव लॉप इतेगा और तब बीयट ही बायवा अर्थात हम की गरीय वे उसते हुए हो बावेवे stuc note of neardi-121 sant arror & for these auth और क्या की उपासना से ही सच्छे जीवन का बहुच्यन मिलता है। उतकी कामना है कि धर बनकर मबहुरी कहेगी और उनते कराउँगी है व न करें हो में किसी भी शासत हैं मेहनत मबद्वारी करने से नहीं मानने की।" अञ्चय की कहता है कि परिक्रम न करने दाला कवी तुनी नही हो सकता । ³⁵ तीसरा स्वर्गस क्लता हे नहीं दिशवाँ बहुत कुठवर हकती है और वर्श की स्तियों क्षाना तब कर तकती है वर्श के पुरुष िनकामे नहीं हो तकते हैं। ¹⁶¹ हत प्रकार तीमा उपन्यात है वर्ग जी ने को हता जाउपकेर किया है। महनत, मनदूरी , परिश्रम ते ही जीवन वृत्यम स्वं हुती ही तस्ता है।

[।] सोना हुए १६६ कुन्यावन साम कर्म

८ तोना छ १६७

^{3. . 10 178}

^{.. • 00 101}

^{5. * 30 226}

^{6. &}quot; 90 228

हमनवनी के तस्य में ब्लाओं को द्वार हुई हमनवनी ने अनेक राम रामनियाँ का अन्यात किया और वर्द नवे मामकरणा हुये। बेबू में बर्द नवे रामी का माम हमनवनी के माम पर रका । हमनवनी की कर्मकर्ता की कि वह राम रामनियाँ में दूर्ण वार्यत हो गई और नवे मामकरणा हुआ । उत्तका तिहास्ता था कि बोबा को कराते वयाते , बाम पहने पर यदि तुरस्त तनवार म उतावाई, बोमन तेन पर तीचे तीचे लंकर अने पर यदि तुरस्त तनवार म उतावाई, बोमन तेन पर तीचे तीचे लंकर अने पर यदि तुरस्त तनवार म उतावाई, बोमन तेन पर तीचे तीचे लंकर अने पर यदि तुरस्त तनवार म उतावाई, बोमन तेन पर तीचे ताचे संबंध के तामने आ बड़े होंने पर यदि तुरस्त यरज्ञर जुनीती म दे याई, जिन कान्यों हैं मोठे उत्यहीं की रतवार वह बहुकर ना रही की, उस्तो कार्नों में यदि रामवायी और बहुवी की दून म तमा वाई तो सेती बीचा, तेन और हुववद की तान्यों का काम हो क्या हु

उसके वारत हैं बोरता और क्या का समन्यव है। एक और भीवें और वराकृष है तो क्वारी और बाव गावन और राज राजनियां बह कोठ है क्वारिये जीवन है दोनों पहलूजों हैं वह सम्म है।

In सुवनवनी प्रo 322 वृष्यादन ताल वर्ना

ja.

पुरस्तानो पहली ह्यूनी पहले हो उनकी स्थारण है। अपना है,
इस सम्बद्धा को पहले हो बच नाहर को एक सोर से भार निर्माण
वस अरमे को सूनि प्रकार मोहने का प्रवास किया, वस रामा ने पहली
वार देशा का उम्होंने हती हता है अपर होते, सीने का महाउ वार
को है अपना वस तम्बनि हता है जान महे हैं बात अपना है। माने
किस होता है बोतने सबसे हैं। अस प्रवास मानति कार हमाना है।
प्रशास हैय के द्वारण इसन्तानों कार्यांता है के हैं।

^{।.} क्षुनवर्गी पुर १७२ तुन्द्रापुत्र साल वर्गा

वर्ग को में कवनार है जो है में पुराने केवरित को उमारा है। विकोध दिख कवनार का हैमी है। मानसिंह रानी कनकारी है विकाह है तका है की उसका हैमी है। वस्ता है। वर्ग की कमावती है ताब मानसिंह का विकास विकास करा हैते हैं जार बाकी कवनार है ताब करीय सिंह का विवास सम्बन्ध करा हैते हैं। इस दूसर आबार देव का कर्मन उन्होंने कवनार है दिखा है।

अधन देश की ई अपन्यास का अधन कुनते को इत्य सिकता है हुनतों का देन अध्या के हैं है अपने दें के अपने हैं वह सोवतों है। यह इत बात नहीं है। अधन उसे इत्य सिकताते हैं यह सोवतों है। यह इत तम्बन्ध को यदिक मानतों है और अधनों है - मैं स्थिक और सिक्य एक का तम्बन्ध अधिकार का नाता नहीं मानतों और उन्हें ते हतनी पहानता का उधारता कह तो है कि इह यदिन तम्बन्ध है मार्न है कती राई रहतों इतर उक्त इत्यादीन होते नहीं दिवते ।

I. अपन वेशा कोई हुन्छ 126 कु^{म्}टाक्स सास वर्धा

Ja igan fapa j

हुवन में विक्रम में गोरी प्रवम विक्रम है हैम करती है। वह जब उनर टोने पर वेटता है तो उसके पात कुल कुल तेकर बाती है । बय बुदन की न्य वेदा में धात्र के नाते बोब तेने बाता है तो वहां मी उसकी और देवती है। बह वब उम्म्डन में अनाब डानती है तो कुछ विवर बाता है ।उसने बाद वह वह अवोध्या है मोटकर हा बाती है ती हिमानी है वहाँ नौकरी करने तनती है। परना किमानी क्षम को भारता ाहती है। विवाह वा दाँग वरती है। बालकेंद्र की पूजा के तमद हुती है हुदन की बाएना वास्ती है परण्य पौरी कुवन को सम्बा बहुके बता केते हैं और अपना कीन वर केती है । यह वहती है कि बाहै उसके अने अप ही क्यों न कट बादे उतका बोखन हो की न समाप्त ही बाबे बरम्ब इवन को बवायेगी। बालदेव में बब इवन पूजा करने बाता है हो दिमापी है इस्ता है कि वह दीनी हुटने मही हुआवेगा । की ही हिमापी हुरो निजातनी है और और बार पार निजानना बाहती है औरी अपने पुटनों ते हना देशों है । दिवानी पिर बालों है और वीहे है उनके हाय बांधकर दिये वाते है । बाद में कंतीपारणा हे ताथ उत्तहा विवाह प्रवन विक्रम है ताथ ही बाता है। इस प्रकार यह अपने देगी है लिये अपना जीवन न्योठावर वर उसकी वान क्या तेती है उसका के सरवा है अनुवरणीय है। आवार क्रेम का निवास उसरे बोदन में हमा है ।

मेग । हरे वरि ।

हुटे विट में नुस्वाई हैम यात के अन्तर्गत जाती है। यहने वह
तायाओं के वर्त हुवसा विचा करती भी और उसका स्नेह हुएया था। उसके
वाद वह नुहम्मद संग्र के दरवार में जा गई। नादिस्ताह उसे ईरान ने जाना
वाहता वा वरम्यु वह वहाँ नहीं वाना वाहती थी। वाह उसकी वान ही
व्याँ न वनी नावे। वह मोहन के साथ नादिस्ताह के वहाँ से स्व दासी की
सहायता से भाग निवती। वह मोहन की वाहने बनी। उसको हाहुआँ से
व्यान के निवे उसने हुव सीना व हीरे आदि हाहुआँ को दे हाने। उसका
वोधिक हैम वास्तोधिक हैम की और उम्मुख ही नवा। वह हुम्यावन में वासी
और मोधियों को आँति मोहन के हैम में उम्मरत हो वासी। उसने उस
विवय व्योगि के दर्भण थी किये और एक आवा उस वर हा गई। वीवन
वर्षम्य वह हुव में रहने बनी इस हुवार एक नईकी वाधिका केवा से वह —
वर्षम्य वस हुव में रहने बनी इस हुवार एक नईकी वाधिका केवा से वह —

पुरवाहें वारोव रक्ष वे जीववे हाय कहारे हे "पुरवाहें जी हो देने बाहे हो बाह दिया है। वह सक्ष ने विचे वह । उनका नाम क्या न तेना । अब हो वह अने बर्गाया को नोची है। हुं वह कहारे है कर्नेवा हर बनह है क्यान में । और फिर अंगों में को हुने के बर्गाया हम हो ।[2] जीवन हम्बं क्या है बहुता है (बर्गाया को नोची अन्तों बर्गाया है जीन वर है और बहुता नेवा ने वेट हम्बं हरों को बावनी ।[3]

3.

I. हटे और बुण्डाबन बाल वर्णा हुए I49

^{2. * 50 170}

नुर बार्ड नवन्य केंग्र से बोनतो है, मे तो हो पुनी, नव उस नरन को लोइनर अपना है है है है जो से पुनी उस तो केवन मिदलों को मुनी की सिन्दुर का लोका सर बनाना है है है हिन्दुर बार्ड मोहन को बहातों है कि मैने कन्त्रेया को दुन्कान देवी और हरकों मे से मिनलों सान सुनी । उस समय न तो कोई और विक्रमाई वहां और न बार्ज बार्जी का नोई और सुनाई वहां है है। मोहन को अब अपना होती है कि मुस्काई के कम और मुना को वर्षा आनरा और विक्रमा में न पहुचे होती है कि मुस्काई के कम और मुना को वर्षा आनरा और विक्रमा में न पहुचे हो मुस्काई कहता है " वस द्वानिया का मुस्ताक्ष साथ है मेरा प्यारा सम दिल्ली किया जया तम सेनो १ मुहती अब लोई हर नहीं है अने मही। मुस्ता वास बहुने के लिये किसी को आदावियों वा मार्फसदार की कल्सत नहीं है वस मोच आवारों सब बुद्ध मार्जी। है की

नुष्याचे को अब कियो का इस नहीं रह यहां था । गोहन है वह कहती हैं "
इक्ष्मानी अवाय या कोई आ अब अब किसका हर १ तब हुए या तिया गिहन
को या तिया । तुमको या तिया। " [5] तुन्य में वस नुष्याई ने माया और तुप
है हाथ प्रकृष्ट मोहन केन्द्र में ने आया तो क्षित स्वर में मुखाई कहती है ज्या
हाँच देवी अब । तबहुप कन्द्रेया मान्यती को होहजर पत्नी बना आता है । यह
बार कोई उसकी उसकी हो हुना है तो यह योह पत्ने तन्यता है । आब तो
हुन देवी । तब देवा। [6] मेरे प्यारे मोहन तुमने हो यह तब करामात विक्रानाई।

I. हुटे वृद्धि हुन्द्रावम बाल वर्मा हुन्छ 178

^{3. * 0 191}

^{. • • §0 199}

^{90 204}

^{€0 222}

^{। -}तीवताविका पुष्ठ- ६। हुन्दाचन तान वर्षा २-तीवताविका पुष्ठ-६२७ हुन्दाचन तान वर्षा ३-तीवताविका पुष्ठ-९१५ हुन्दाचन तान वर्षा

क्नतितादि स प्रकल्नात्र १ नाउठ प्रन्यापन नाम वर्गा ।

TOP.

न्यवार्ध की तायतकों ने उतके वायन और द्वाय पर प्रतम्म हो कर
भी विवर्ष , होरों यम्मा ते बढ़ा हुआ तीने का हार दिया वो पांच
लाख क्यों का था । नाविस्ताह के वर्ता ते मिक्न आगते तम्य यह कुछ
हार के दुख्ये व आकृत्वा ताय ते आई तो । मोहन को यब हुटरों ने
लाठी भारी तो हुटेरों को रोक्ते हुये उतने तोखा आधि हुरम्म डावुकों
की दे देया चित्रते यह क्य तके । दूरम्मद्वाह के दरबार मेंउतका बहुत
तम्माम वा परम्यु वर्ता ते वी अधिक नाचिरकाह के वर्ता तम्माम ती
विवता वी और आकृत्वा और वन को जिल्ला परम्यु नाचिरकाह के
लाव ईराम नही जाना वासती थी । उतका विकत्य वा कि वाहे नाम
ही वर्षों न वनी जाये वह स्ववेश होड़कर ईराम नही जावेगी । इतकार

वह तीने और होशों हे हुन्हों से कोई गोह नहीं करती । वह बोनों करते । वह बोनों करते । वह बोनों करते । वह बोनों का नहीं है हुन नहीं वानों । अब वह बहुनाओं कि हुन नावार पुरवाई को वाहते हो, वो कार है बाद हो वह वा हुने हुन सम्बद्ध हो वा तानने कही है । वह सुरवाई ने बहुन हो वह हुने हैं हुन का है ताव गहरों वार में के दिवा हुना है वह हुन्हों वहीं समा नवा

क्षत द्वार वय वह घोडन की अस्त हो गई तो उसने समस्त तोना स्थाय दिया और घोडन पर सब न्योक्तयर कर दिया।

होटे कॉटे क्षण्यावय नाम वर्ग क्र 238

⁴0 238

मानव स्वमाय है कि क्यांक्त अपनी है लिये राज्य धाहता है। विश्वामा में एक किए के क्या वाने जेन पर निका वा बना और दूसरे अंग पर विका या करेटच । हमनवनी ने मानासिंह है साथ में एक पन दिया। मामसिंह ने उसे पढ़ा उसने लिखा वा " राजितह और बातिसेंह मददी वा नामीर के अधिकारी नहीं होने । वे अपने बाई की आबा का पालन करते हुये केवल अपने वर्तका का निर्वाह करेंने इस तेव की एक प्रतिनिधि महारानी क्षमन मौहिनी है वाल आज ही मेन दी गई है।" मुमनवनी ने कहा संकल्प करिया हे और बावना क्या । क्या और करिया का समन्यय क्षते कार को एक विन अवश्य पुरा करेगा । शुगनवनी का अपूर्व त्यान है कि वह अपने पूर्वों को महती न जिल्ला कर विक्रमादित्य को राज्य िलवापा । वर्षा की ने उपन्यात की मुनिका में तिका है कि मुनर्ते की यह द्वारी वरम्परा है कि हुमनवनी ने अपने पुत्र की राज्य न दिसवा कर विक्रमादित्व को राज्य दिनवादा बण्डादन नाम वर्षा को भी पत्नी मत मान्य है अब बटना समन्तनी है त्याम का जीता जानता उदाहरण 2 1

I. हुननवनी पुरुठ ५४७ हुन्दादन शास वर्गा

The state of

व्यक्तिकार अवन्यात में वेद्याती तालेग्द्र और तीक्ष्य बात जे लेगारों ने व्यक्त की के क्षित क्षा उक्ताती है । अते हे तुनमाने वर तालेग्द्र और पुर्वापाल की लेग हा धार्य में और अधिक प्रमुख्त पूर्वत ^{18 है} देखाती वाली है," योद बन ने बड़ी घार तबके हो ले हन ने भारते— बेद्या क्षा में अपनी के जो किसी पुरार बोजी 1⁸¹² है

the single side at longers over it was it to make the side at it are as a grave over it and as with all of and of an it for a side at the side of and an it for a side at the side of an it for a side at the side

अरहत अपन्यात है। केलों के अपनित है। यह केला के पानी में इसने ते बचानी है। की फीट वर पानर विकास देती है।

I-US DESIGN SECTION

Serie SPORT FIGURESIA

^{3-45 (#370 (#40-404}

and the graine one are it does a character great a mean and the character great a mean and the character grains and the character grains and the character and the character grains and the characte

Jarka -

"राजी अवन्ती बाई होना होना पेलाची के सहाचार करती ही एवं देते अनेन पिताची के फिना काच के रूपा उन हैंने बनी के अने हन बेली के अने बेब क्षेत्र काच पर पुकारों का सहयह में अन्य का दिया-स्वाची करते हो-स्वाचा विकास हो ह²⁴

क्षणार सम्बात में क्षणार और क्षणाओं दोनों हो उत्तर है। पिक्रीय पिति के वह हुम्बर केन्द्र के बार क्षणोंकी है। प्राप्त के क्षणों है

मान्य कारणा प्रदेशन **२६** जन्माच्या व्याप प्रदेश

³⁻वासामा प्रदेशको सन्दर्भन साम स्था ।

a-derende green des-169 begrave arrend S-errore de error ges-169 begrave arre de

विषय प्रशिक्ष का स्वक्ष का अवसी बाई के आयोगनी को रिका में उसे का स्वक्ष करते हैं। यो परन्तु अने अने क्या किल रिकी ने क्या -"अमें में को अमें और को हम्म के बाजरे । क्यो विस्ता का पत्त नवाकर उसे बीच असी । "अमें प्रक्रित जीवा है कि व्या द्वासू की । यह अद्वर इस ने परिवर्त हैं।

वारिन्दरित के अध्यक्ष

what different

"तीका तेवह कोई अन्यास को इन्सी दोको समय को परवाब को करता । असन करने हैं कि " सोध समय दासर क्या है कि उसके हमी में मी हुई-थ उसकी है को समर्थ असने परवा में सरवाद की है। के

[ि]रायक की पानी १००० छ। एन्सका यात का

a-विवस्तरात को वाद्यक्षिको पुष्टक्**टा**ठ प्रमायन मान कर्य ।

³⁻नेपराटी भी राषी ग्रहीकी न्यूबर-200 वन्तारक ग्राप स्था । 4-- श्रेण वेशा वोधे पुष्टा-250 प्रन्यायम् ग्राप स्था ।

रायम्ब में रामी अवस्ति वाई वर्दा नहीं करती । यह फिलर केंद्रती है। आधारम करता ते बहुत हेल-चेल रकती है। यह दुकार वर्मा, वी वर्दा दुवा के विश्वीची होते है।

दाती प्रथा जाविरीय

क्षार अञ्चार है किया है है कि कि पूजार जाएकों के साथ गोधन और क्षार दारीकों के भी भी भी अधिकादिक सके पर भी उन्हें नार-दीव बीवन क्षार करने से क्षार्थ होना बहा। है साथी की देवा हुआ है हो बीवन क्षार कर हैते है। है बसूब है हैय ही बाद में दुई। की जी पर दुवा करने तथ स्वास्त्र कर है है कि मी स्वास्त्र हो बाद है है

पंचम अध्याय

Bu dan

वर्गा जी के क्या साहित्य में स्वतन्त्रता व प्रगतिगा निता के प्रतीक प्रमुख नारी पात्र

arer

वह अभिनदात की वहिन तररा नह कुण्डार उपन्यात की प्रमुख यात है। वह द्वा करती है और कम्मेर के कुम्पों को देव के अपर बहुतकर अच्छे वर प्राध्य की कामना करती है। उसके क्य सीम्बर्ध की देखिये तारा जब क्यी गीचा तिर कर नेती है, तरे भितात हरण लम्बे देशा यमक से बाते है और बन कमी हुए उत्तर देने हे सिवे किर उठाकी को जीवा की सुन्दर गठन तम्पूर्ण क्या में प्रवट हो जाती को 1818 विष्णुदाल के यहाँ सहवेन्द्र और क्षित्रकर एक ही। समय बीयन के लिये नते । वस लारा बीयन परोतने आई तो स्थितकर ने आँब पुरा कर अध्यक्षत की और देवा तारा और अध्यक्षत " दोनों का एक ला क्य लवनम एक ती देह, एक बी वच 1 121 विकापर उसे सुनील और देवी के समान सम्बत्ता है। यह अभिगदल्य तारा से बहुता है कि " मैं इस विधावर की बहुत अविकामी और सहका आध्या सम्बद्धा का । यह देता हुए ती नहीं बान पड़ार) अ वारा उत्तर्ध है ताब कहती है नहीं केवा वह ती बहा केट ह पुन्त नायुम होता है। तुन्धारे बह निर्दे हतना कट तो हमार दादा नी न उठाते। "हें के मानदती वय तररा है पूछती है कि तुम द्वा है बन्दात हाथ जोड़कर अति ईदकर देवता है सामने बड़ी होगी, तब किस प्रकार है आ अर्थ वर की कामना करीगी ती वारा तलता से बहतो है, मुद्दे वह सब औपने को बनी जावत्यकता ही नहीं हुई। दिवता की भी बद्धा बीची बी बीचा ।" 151

िक्षाकर ने एवं बार बोचन परोतने के समय अधि में सक्य तरत सुन्वराख्ट देवी को, प्रवरों बार अध्यक्तकोगन इतकता को देवा था, जान तीलरी बार उन्ह जानी में को कुछ देवा वह बचा था १ 163 जब दिवाकर कोर्ट मेरे को को माना को देवता है तो के को बाता में बार अबस की हुए है मेरे देव

In the province of the

a. 5 - 10 175

^{3. * \$0 197}

^{4. 7 10 197}

^{. •} go 211

a. * Eu 200

विश्व कर को वस के ते हाल दिया तो असे वाल पाणी समापत सो गया
और पाणी के अमय में वस अदेत हो गया । शारा वर्त ते जिल्ला रही थी। लह
दूहां के नीये नदावाती से और अंगर के को की अतार देशी है 'अंगर के से उतार
कर हुलरी और हाल दिया । ताही उतारने को हुई कि तरीर को लख्ता का
क्याल जा गया । एक साथ से ताही का और वर्क हुंस-केगा, तिर पर हुलरा
हाव रखे पन्द्रमा को और देखने तथी । उस बड़े बड़े नेलों में से आया हर रखी
थी , जिल्लो मन्य मन्ध बहन हिस्सी हुई पांधनों में उसी हत पर हिलरा नता
रक्षा का हिड़ी विश्व कर तारा को तैसार को गरिया रच्ये को पविच्या, [9] समझता
है । विश्व तारा लोटे हैं यानी अरकर नीचे उत्तरती है और विश्व कर हुई सरीर के
लिये सतना मोस्ट और विश्व कर विश्व तास्य विव्य क्षा विवा कर हुई सरीर के

^{90 - 4} 90 - 4 90 - 5 90 - 5 90 - 2 90 - 2 90 - 2 90 - 3 90 - 3 90 - 3

तारा विवाहर को न कुन तकी । तारा बहुत जीमन है । संसारवहुत कठीर है । इ । वर्णांक्य क्ष्मकृत्य को विवाह हेडू तारा और विवाहर मानने के वर्ध में नहीं है । विवाहर कहता है " तारा हमारा संबोध अवन्छ और अनम्य है । वर्णांक्य वर्ष हमारी देहीं के संबोध का निवेध कर सक्ष्मा है । परम्यू आस्थाओं के संबोध का निवेध नहीं कर सक्ष्मा । वहीं हमारा संबोध हैं । तारा हक तीय बोध साध्या करेंचे ।" \$2\$

शारा वा वाएन जावार वरित्र है। वह विवादर को वासने ननती है। जाने वाहे हुवे वर को प्राप्त करने हे किये द्वार रख्यों है और रोज क्य क्षेत्र के पूक्ष वास्तों है। उनको माला मनाती है और उन्त में विवादर को का विवाद कर विवाद कर उसको बवाती है तथा उसे मुक्त वर वर्षांत्र वासनों को स्वीम वर उसे प्राप्त करती है।

का उपन्यात में नारों को बीर तथा पुन्हों की दीरता पूर्वक सहायता करने बाजी दिवाया है। नारी हुन्दर की हो भी दीर है। अपने मन पतन्द करों को प्रान्त करने वाली है। केम्बूक्त नहीं है। इस प्रकार वह प्रनिक्काता है और एक्केस्स की सदका उसके कर कहे है। अन्तर्वातिय विकास की अस्तर को नेवक ने इस उपन्यास में स्थान दिवा है।

^{1.} WE DESTY NO WAS

^{2. 90 442}

decat seems

हैम्बती सीहनवाल हुन्देशा की घुनी है। यह वार है। यह तरका वाँचने में निवुण है। यह नाम से कहती है इहारिये द्वारा तरका बीठ वर है वाँचे देती हूँ, तब तक आय अपना पहला तरका बीम नीविये। उसके तीर छोटे हैं, ये कई है और कमान के अमुकूत है। उसके तीन्दर्य का वर्णन वर्णा थी ने इस प्रकार किया है " नाम ने तीया कोगल जंग है, उस्ताती हुई बड़ी अबि है तीने का रंग है, वरबोशी छोड़ी है, तीवी नाक है। मैनेपुल कराते हुंचे भी देव निवा है है2] तीन्दर्य अपूर्व तीन्दर्य है। और साथ में तनवार और तीक कमान वह तीर छोड़ने में यह से " नाम, तहवेल्य और हैमदती में विद्यारों में वीकर तीर छोड़े वरन्तु उनका कोई प्रवाय छोता हुआ नहीं विद्याई वहां। " हुंग्रे हुन्दर वा रावकुमार नाम उससे रनेस करने तमता है। यह महाराव कुमार को वासती है। हुंग्रे नाम उससे रनेस करने तमता है। वह महाराव कुमार को वासती है। हुंग्रे नाम असे विवाय बीचित नहीं रस सकता। इंग्रे वह नाम की "हिम्मोंक्या बेती कठोर मानुम होती है। "हुंग्रे

नाम वस देमवारी को अपने बीवन की एक मात्र आशा सवाता है। [7]
तो देमवारी करनी है कि "पदि आप पता है नहीं करते हैं और म तह तकती है और वैनार राजा और पर को हुन्देमा राजा का अपमान करने को वांचा नहीं रकता, और यह वहाँ है हमरों और यह वी [8]

^{1. 45} SPETT- 80 43

^{2. * 50 44}

^{3. 90 44}

^{4. * 90 61}

^{5. * 90 113}

^{6. * 90 226}

^{7. * 90 295}

^{0. * &}lt;u>9</u>0 295

प्रशास का देवते हैं कि देखता हुन्यते हैं। अपनी परित में अस्था एखती है। वर्गत है अंध गीय बाय से यह अनुप्राणित है। यह बोर्सनमा है। सरकत का सकती है। अपनी बाति को रक्षा करने और बाति गौरव है हितार्थ का और का से काम मैंने को प्रध्यातों है। यस प्रकार से यह के के कुण तस्यान्य है। गाम राजकुतार है बालने वर भी अन्य बाति का होने पर यह असके ताथ विशास करने को असा गर्थों है। यस प्रकार यह अपने गौरव को रक्षा करती है।

^{1. 35} graff go 340

^{2. * 30 340}

^{3. * 90 372}

[.] go 372

areas s

मानवारी तीर कमान वार्गा का अध्यास करती है, देकिये दाने में मानवारी तीर कमान नेकर आ गई। वोनों महल के अग्वास में वो किये के वहिला बान में या वने गये और एक नव्य रिवर करके वोद्धी द्वार से वेव किया के अन्यास के निवे एक स्थान पर बा बड़े हुये 1515 वह अग्वासका से स्थान करती है। यह अग्वासका से स्थान करती है। यह अग्वासका उसके पास कहता है कि संलार में एकेये, तो हम तुम दोनों एक द्वारे के शोकर कर रहें में अप गर्मों को पासे अग्वासका पुम्हार विद्या नेकर .. 1525 हम मानवारी अग्वासका से कहता है " आगे देनों बात कभा मत कहना । द्वार 1525 हा विश्वस संस्थान संलार में हमारे तुम्हारे दोनों के लिये बहुत स्थान है।

हुमार कहता है कि याँ थी से कहुंगा में उससे अनुरोध कहुंगा कि महाराज हारा पहि नावा हूं से कहनता हो कि ब्रान्टना राशि और देखों के नंबों के उच्चार के साथ अभिनदास का बीध वालिएडना उस उपर जाति को बन्धा के साथ करा हो, यहाँ तो बहुके से हाथ होना बहुंगा और यह कही नी-हो ग्यारह हो बावेगा। दुंधां

उत्पानितीय विवाह की समस्या की आहे वरित्र के माध्यम से तेक ने एका है। नारी की पत्नी प्रमास्त्राभिता है कि वह अन्तर्नातीय विवाह की प्रोत्तरका क्ष्मी है और तीर आदि क्याने का अन्यास करती है।

i. og grøft go 155

^{2. * 90 197}

^{3. * 80 157}

^{. . 20 101}

कुष्ट | विराटा की प्रधाननी।

नरपति ने कुमद जो जेंगुठी पहला दी । ह्याद रजलपात जो विशोधी है। वह नहीं बाहती कि वादित त्यान वर रजतवात ही लीवन-तिंह ने करा कि वह बहुकी अवस्य देवी वर किसी की अवसार है। उत्तर्भ बाप व्य लोबीऔर प्रचंड पूर्व है वरण्य बालिका बाद .सरस और भौती बाली है । १।१ अन्द अर्थ ने प्रार्थना करती थी वह कहती है में तो दुर्भ ते देवन प्रार्थित अवती औ हूं, स्था विकार को हुए नहीं है सबता । जो इतते प्रविद्वन विक्रयास करते है अपने समय अन्याय और मेरे साथ अरता करते हैं। 122 अपने ताथ अन्याय और भेरे क्रिया करते हैं वह देने हैं बड़ी बीबी वाबी धीन बन्दा थी । अउत्तरे सीमान्य में रागी व्यवा किया है, व्याद बाह्य हो उसके शोष्ट्या के मारे बाचा पीचा हराम है। १ के सबका सिंह है बा कही मैं उस बहुकी की और देवी का अवधार भागी है और वह भेरी विक्रित है। 155 इन्द्र की जारांका थी कि राजा और महाब है बीच पर्श कु होने बाला है हुए कुरान पूर्वक समाप्त न हो या कालिये वह बाहती है कि गोमती संनीयनगर बनी बाये। केरी कई क्ष्याचित्री है। इन बाग किसी जैयन हैं बचन वरेने 1363 नीमती क्षा है कि मुद्ध तोड़ पूजा है और देशों का अवतार है । 171 मुद्ध को क्यों पर पूर्ण विश्वास है। योग्दर को रहा में उसे क्यी सम्देख नही है । हुनों रक्षा करेगी । 101 हुन्यर सिंग जो सुंपूर्ण वहा वा वेन्द्र भागी है।

यह वस्ते के जान नेशी पूज्य है। नेशी लंपूनी सदा की केन्द्र है। नेशे कोई जनोबर वर्ष नहीं किया ।()।

वय बुद्धा बदलाय जी देश यह खंडी की यदी भी उस समय के उसके रूप वा वर्ण वर्ग को ने वत प्रवार किया है देशा बान वहा केते प्रवारा मुंख बढ़ा वर विवार नवार की । येशीं की वेचना वर सूर्व की स्वार्ण रेकाये र्वाचल रही की ।वीली छोती में ब वक्ष्म के छीने हजीरे ते हुमी ही पताका की तरह और और सहरा रही थी। उच्यत मान मीतियाँ की शरह बाहमान था बड़े बड़े काले नेजों की बरी निर्वा और के पास पहुब गर्क की । अर्थि है करतोष्ट्रके प्रभा सवाद वर है वस्ता हुई उस निर्मन रधान की अपनी किस सा करने लगी । अपने सुने हुने किर पर से स्वर्ण की तवाने बाली बालों की एक तट नर्बन के बाल बराए वण्यम सी रसी थीं [2] हमूद का यामना है कि वहाँ पूर्व अभी मही बहुता वहाँ स्ती को अनुसार होना धार्थि । हिंद गीवतो ते कहती है "वहाँ पुरुत अरवे पर ब्युरका है वर्ध रही जो असार होने में हंशीय वर्ष होना वर्षाध्ये हैं। हुद ोमशो से क्वती है कि यदि तुम्हें मधिने ती तुम्हें उपने प्रस पहुंचने हैं संबोध न करना बार्सि । यह नीमती में पूछा उसने इस पंप की बार्सी की कर्त में भोवर लोकर तो इन्द्र करती है कि, इन आर्थी की किना facerd of are her fraul or are for after ? 1 4 220 विश्व को स्थार करती है कि व हैं तथ जा को और उन्हें ती कोई तथेल वशी कि विश्व को क्यार करती हैं "151 वह बक्क परिवर्गी वाति की क्यी हे राजवात कहता है उसी मंदिर हैं वालन वासी वह धाँगी जी

वयान सहको की है। यह परिक्रमी की माति ही त्यी है। इन्स्टिंग्ड का परिक्रमी द्वन्यावन साथ यगे ६० ३५३

शुरू है विशादा हैं को शब्दे से सब ही दूकत है। सबकासिंट ने कहा हैं।
जिस पीते बहुंगा कि उनके वर्ता की शब्दे में हम नोगों को देकत है।
उन्हें वर्ता हटायों तो पूर्ति को स्टाजों, मेक्सिकों स्टाजों ।।।। वह गड़ी
वासती कि देवी है मन्दिर हैं के शब्द बढ़े वह क्षेमत किन्तु द्वार क्षेत्र हैं
देवीतिंग ने क्ष्मी है कि देवी है मन्दिर में शब्द न बहाया याथ है हैं।
गोगती दुमद मेती स्थी कमी न विनेगी ।। हैं।

अनी महिन कहता है कि प्रशान ही उस कीटी तो बीड पर वो निवादी है उसके पास यह जाना उसमें परिक्रमों के वेर का और तरकों का विष्ण कमा हुआ है उससे हुए रहना 1444 किये सिंह कहता है "विशादा का नहेंच कियों उच्च हो जाभीर हैं यह कमी मही दिवा जायगा 1/54 जब तक हो निवाही हैं हो है वो क्षेत्रा उसी है हाथ में यह गुर्क रहेगा 1

 गोगती

नोमती उम्में हुने तोष्ट्रां की सुनती की । परम्यु किसी विस्ता और प्रकट वकावट ने उसे केवालमा वांद्रणी की तरल समा एका वा 1° दें 1ई वोष्ट्रणी पूंच समयार बना सकती है उसे किसी का असरा मही है । गोमती कस्ती है "बन में स्वयं तसवार बना समती है तब किसी के असरे की और असर नहीं है 1325

I. factor की वर्गकानी - हुन्दावन नाम कार्न हुए 65

a. विशास की विकामी- सम्बद्धन नाम वर्ग g0352

tare fyrbsp

दिवा में अभि तिंह गड़ेरा बरतगढ़ जाटक ने तथा हुआ था ।
अगवी परणी परवारों के राजा भी केटी थी । वे भी उत्तरी भी उद्यार
भी । अटक पढ़ने पर अनेक बार उन्होंने मुताधिक की अपने बहुमुल्य आयुक्तव
दे किये है । वर्ष बार रेता करने के बारणा उनके पात बहुत थाड़े आयुक्तण
व्ये है । मुताबिक के तिमिक भी क्षत बात को बानते है और उन्हों ते वर्ष
वो कमी कभी क्षत बात को विक्ता में यह बावा करते है कि मुताधिक की
परणों के उपकारों का बद्धार केते बुकावा बाव । वरकारो बातो तरकार
कद्यामी वी । यह सम्बद्धारों से काम नेती थी । विकार से आने के बाद
वक व्याप तिंह ने समस्त आद्यामवीं को शार्थत लामे को कहा और कर मैं
वाड़ अधिक म मिकली तो वरवारों बातों में मुताधिक बु को हार्यत और
अन्य कोमी के निवो उन्हा बन लामे के निवो कह किया ।

पुरा के विकार के समय तिहुते में इसकी वर्षिय में द्वीरा मार किसे के । मुसारिक्ष पू में कहा कि पुरा को आप और द्वा पानुष्ट किस एक विकास भोगन का प्रथम्ब करना बहुना तो प्रश्वारों कालों के हृद्य को नामना इस प्रकार हृदिन्दिनीयर होती है। के बहती हैं उसने अपने निमक को कवाई है। असकी सुक्षा बहुत अपने सरह होती वाहिए।

अरबारों बाजों जा उन्त में बरबारों राज्य जा तहारा था । । । उसकी बाबना को 16 उसके पांत को अपनो सेना को अपने वांच्यार है। वह बावती है कि उसके पांत को विकास में तहें। स्थितिकों के बाकों वेशम बुकाने के निन्ते वह अपनी यह विकास राजे को है देशों है जो उन से उस साम होने वह सेना माने का लोग स्थार क्यों को होगों। यह इससे हुने कहते हैं नहनी माने को बारवार विवास की से साम होने को बारवार विवास विवास की से पांत हुने वह उस से अने होने हों है पांत हुने वह उस से अने हों की साम होने हैं पांत

il futter a do sa

^{. 428&}quot; " " 90 30

धरबारी वाली वालती है कि उसके बति का नाम नहां नना रहे और उनको तेना में मुशांक्वत रहे जिसते गाहे समय हैं उसके बात के नाम को वलर न लगे। अतिथियों के बोजन व आवर तरकार तथा तिवालियों के वेतन आधि है तिवालियों के वेतन आधि है तिवे उसने अपने हुई आधुन्धना निर्धा रखे विवे क्षिक्त और अब बोड़ी तो अंतुर्वियों और हुद साधारणा तीने के आधुन्धनों को कोहकर और हुद म वा है 23

इस्तवात में एक उत्सव हुआ वा वरम्तु आहुता व होने के कारव उसमें बीमारी का बहाना करके उस्तव में जाने को मना कर दिया ।अपनी परिवारिका से वरवारी वाली ने कवा" वह उसक में आव अन्य वामी वारी और तेल ताहकारों तथा अपतरों को वह बेटियां एकदती होगी । वेरे यात कोई आक्रका महाँ है । सबकी द्वारत मेरे अपर बहुंगी । मायका वरवारी म बीता तो डोई बात म थी अब मैंने बान और नना नेकर महनों में च्या मूंत विक्रमाञ्ची १ वर्त तमाम दिलवाँ कामाक्रती करेंगी । मेरी अवस्था की आहे तेकर और लोगों का मान बाद-विवाद और मवताय में छत्तीता वाकेगा। मैं अपने काची को कहा तक होरे रहेंगी 1"131 उन्हें तांतरांशक रेल पेल ते अरवन्त तदस्या थी । वरन्तु हिनवा कानापुती कर रही थी कि वरकारी बाबी सरकार है जर में बुढ़े दुनरती द्वाइते है-दनदी गाँव में हुए नहीं । वह तो का के मनत है । 14 वरवारी वाली तरवार की उदारता, वह की agel clean and è ag of al eufen pergar afe gfefenta वर सुबी थी " [5] अनके तियाधियाँ की ध्वील थी " कि हमारे थी पेट मरने के लिये सरकार ने अपने गतने एक एक वरके साह्यकारों की बेट वर खिये हवारे ही वेते लाहुकार है वाल है है है

i. garfea g gas 40 30

^{2.}

^{3. · 34-33}

^{• •}

Service of property of the service of

वारों कर अपने की कारत आयुक्त के विकेच को । वीकारों ने आवा असन और सोने के आयुक्त व्यानकारों को विकास के बारत करा हुआ का अवनक किया को वारत तथा है। व्यानकारों ने के अन्य आयुक्त वरणारों कारत तथा है। व्यानकारों ने के अन्य में साम वर्ष प्रान्त उठा कारते तथा है के अन्य में साम उठा कारते के अपने के साम को साम उठा कि अस में बोर अस पर आयुक्त को ले के सम्मू किया बान समा तो कि अस मान के कि अस में बोर अस पर आयुक्त को ले के साम के साम को की साम के साम को साम के साम को साम के साम को साम के साम को साम को साम के साम को साम को साम को साम के साम को साम को से कि अस साम को साम के साम का साम के साम का साम का साम के साम के साम के साम का साम का साम का साम का साम के साम का साम

एरआरी बानी अपने आदिक्यों से बयाने की प्रभारते की और व्ह इसती है, "अपने आदिक्यों के बयाने के तथा कोई फतर नहीं रखनी पारित्य (के

वर्षण हुन्दरें हो। वर्ष भी विश्वय न हो वही हुन्य है। वह अनुस्विक्तियों एक वर्ष है। वह अनुस्विक्तियों एक वेदन दिवा प्रवर्त है। वह अनुस्विक्तियों एक वेदन दिवा प्रवर्त है जह उपानुस्विक्तियों एक वेदन दिवा प्रवर्त है जह उपानुस्विक्तियों है। वह वर्ष अपने हुन्य प्रवर्त को स्वेचन देश हमा अपने वेदा हुन्य प्रवर्त के अपने दिवा स्वाप अपने वेदा हुन्य प्रवर्त के अपने हुन्य प्रवर्त के अपने हमा अपने विश्व अपने हमा अपने हैं। व्यव के अपने अपने अपने हमा अपने हैं। व्यव के अपने अपने अपने हमा अपन

⁻ Suntan & Boo-10 Section and and soluful ton & Boo-10 Section and and solu-

क्षत हुन्यों को सुन्ता वय प्राच्या लड़की यो । सुन्ता को अपने हुए दिनों में
यो संतीक है। उसका कथन है न बोई दिन मोड़े होते है और न कदटे
अपने मन को द्या पर निर्वर है। वह मन में हुनी है उसे केवल रोटी अपने
को पिता है यहाँ मिल बातों है यह बहुत है। वह सरली से कतती है न
सुन्न नहीं नहने से प्रयोजन है और न स्वये से। मुक्कों तो वैसे रोटो बाने को
मिल बातों है। और मुक्कों करना ही हवा है। है। उसके पिता को
विश्वास है कि वह हो विवार है और बोहों सो हुनों का वो मेरा नेने दन
है, बना नेनों हुन्। रास्ते में हाने वालों दारा हुटे बाने पर को पहचानने
है उपराम्स भी वह मेद नहीं बोलतों। वह हा बातुर है।

वस सम्मी सुन्ता है वेवने वो सन्ती में निने वे उन्हें निर्दो एवंने अपना तो सुन्ता कस्ती है, यह सब उठा ने बाओ और विसकी पहुचियाँ दे आवे हो, उती को यह वो दे आऔ। (३) यह सम्मी है साथ बीड़ा हात परिसास को वर नेती है। उसका बीड़ा चरित्र ही प्रभारा में आया है।

i. garfeq g go 21

^{3. * 90 60}

श्राती की रामी नक्ष्मीबाई [मनु]

वय वयम में नामा लोड़े हे निया और बीट आई तो मन कहती है कि आप लीय हमकी भी पुराना हातिहास सुनाते हैं, उसमें पुर तथा रेशाम के हीरी और कवास की वीरिवर्ष से हुआ करते के 1°218 हातने कववन से बी उनके बीर बावना इनकार है। यह बोर है उहती है " मैं इक्ष्योग्र क्या नहीं हो सकती ।" [2] म्ब की ब्रहि उसकी अवस्था से बहुत अभी निकल बुकी है वी वह चयल वी । [4] मन को विक्यात था कि उसके भाग्य में एक नहीं दल हाथी लिखे है। वह बहुत तुम्बर भी बड़ी इंडाए इंडि और शेमहार । बीड़े की सवारी में पुल्बी के काम पक्तती थी । मराहो, शंक्षत और हिम्दी पदी थी । अक्टिंग में उमकी कवि थी 1868 मनुवाई के विभाग नेन ये और को नवाने वाने वमकीने बान एवर्ण ता रंग सम्पूर्ण देवरे जा अहीक बुण्यर बनाव था । [7] उन्हें तुलसी बह दाल की रामा-वन नहीं दिव समती भी बरम्स तलवार वलाना. मलवन मांचना , भीड़े की सवारी वे उसते जो बहुकर जाते के । 661 मीरोचन्त की बरनी नागीरधीवाई ते मनुवाई कार्तिक बदी 14 से 1891) 11 नवण्यर तक 1836) की काजी में उत्पच्य हुई । मनु अब धार को की भी उसकी माता क्योरयकाई का देवान्य हो गया मन व्यव हतीयी और बहुत देशी बृद्धि की की । कम ब्रायु की होने पर की तह हम हुनरों में जाने की। the pap of the of the property of the party as after the figure किएक में द्वर क्टारी गई थी । [9] क्ष्यित कियाजी द्वरवादि है अधिक और अर्थन श्रीम हत्यादि है पुरातन अख्यानी में म्यू को और/अर्जुन कल्पना को एकतन्यवट और

i. श्रीको को राजी लक्ष्मीकाई पूछ 17

^{7.}

To a

अवस्य मुक्तुवी दे रवी भी । ।। वीधित तीवते ये कि मनुवाई तुन्दर है, रामी बनने योग्य तब युका उसमें है। धवन और उद्धत है। प्रैंड वीर है। किनी और वंद में बायमी ती न बुद हुवी ही तहेगी और न अपने पति है। हुवी बना तहेगी (2) दी उन्नेत ने महाराच से कहा कि "बहुत सुम्दर और हुआ म होत है । उन्नेत स्वा होने परिय समस्य पुरुष है । १३३ वस मनुवाई ने इनार किया तो मनुवाई है वह बहे योग के मिय मुहार्कों के वी अपन दे रहे है । ह्वा ही वास बहुती थी । हुं के उसकी बीड़े की सवारी बसन्द थी । दाली सुन्दर वय उसके वास विवास के समय अर्थ तो मु ने कहा वेशो दाती बोर्ड न ही तहेगी। वेशो तहेनी होवर रहेगी [5] मनु को बाने कवाने का बीक कम बा। उसकी बुडसवारी, अधिवार वलाना, मनवन्त्र, काती प्राचीन नाचार्जी का बवना अधिक वाता बाह्य। मन को वरस्वा की कि " geut of geuth feunte & d fed fenut branden gent, grutte at int शी धार्षि । इब तेव बोहना भी । मार्थन-नाने ते भी क्रियों का स्वास्थ्य सुबरता है। परण्यु अपने की मीडक बना नेता ही ती रूजी का समस्त कांच्य नहीं हे "क्षा मन के ताथ को रहना बाहे उसके सम्बन्ध में उनका अध्यस देखिये" मेरे साय की रहना याहे उसकी बीहे की सवाशी अवही तरह आनी वाहिये । तनवार e-se, ast, set, eere, are musur searle or cutter scot eare about वहेगा । बीची हाथों ने हथियार एक ने प्लामा तीव वाथे ती और वी उदशा ।" हैं 8 िया की हिंदता का कवव पहले है वे वर्त में भी । क्षियों हिंदता का कवव पहले तो किर 198 संसार है देशा कुछ कोई हो हो नहीं सबता को उनकी हुए ने ।

वे नीव में नाता राजने की पक्षपाती थी। उनका व्यनवा कि नहीं पूर्णी में नाता बनाये रवको परन्तु निद्दों ने तम्बन्ध तौड़कर नहीं ।।।। वह बाहती की कि विवास का तम्बन्ध विरम्भाषी हो । यांठ वांधी समय पंडित है कहती है कि गाँउ वेली बाबिये कि बनी हुछ हुटे नहीं 1'121 वह होटे आदिवर्ष की आवार मानती थी । १३ वह अपनी सम्झ महेलियों तथा किने हे भीतर रहने बानी िनयों को सवारी ब्रास्त्र, प्रयोग, जनवन्त्र, क्षती का अध्यास कराती थी । बी हुवे समय में ब्रामिड मुन्धी का धीष्ठा मा परन्तु नियम बुर्वेड मध्यम करती । १६% अतके अतिरिक्त उन्हें सहेतियाँ को अपना भा बनाना । अनकी अवसर पुअवसर यहे प्रवर्ग की सक्षायता करने में बाढ़ि वेर न देने की लीव देना , वर की सकाई, स्वयक्ता हरवादि बनावे रवना काफी काम था 1856 नैनाबर राय की नाईन है बात लीन पर वे बहुत प्रसम्म की । उन्हें अपने राजा पर अपनी व्यक्ति पर अधिकान का । यन को वेदम एक कार बटक रही कि उसी और गाईन है बात हुई होती तो वह रेली करकरी सुनाती कि उनकी अपने कुछ पुरवे बाद आ बाबे 1/6 रानी में महित नावना वी वी । उन्होंने नवराति में भीर वी द्वातिम त्यापित की । नालाबाऊ की बरनी बहिशन में उपनीचे कहा कि कुनों के लाय यहनी, माला को रिकायी और वी नावना वाहे नावे । वे बारोर और आरमा बुद्ध और प्रवत बनाने की पश्चमती थी । उनका कथन है वरण्य हम तब रहातियों का पीछक वह तरीर और उतके भीतर अपन्या है। उनकी कुट करी और प्रका बनाऔ। 17 रामी दवाल की मैनाकर राव के कहीर बातन में वहाँ कहीं ह्या दिवनाई पहली भी, उतमें बनता राजी के

नाना साह्य और राव साहब ही उनके विवेच और तेन वा नरीता था 🚻 उनका अधिमत था कि तम लोगों के आपती उप्रदर्भी में बनता की जनत कर दिया है। उसकी थोड़ा तांत लेने योज्य बन बाने थी। समर्थ रामधात का fast gat ration -arter, walk thatal or any gat as aferf काराति की बंध अञ्चालिन अगर और अंध है। 121 राजा की विस्तास था कि बढ़े वह वर्ष रानी के बेरी की धन अपने गाये वर बढ़ायेने । राजा तास्य मेजर तास्य से कसते है मेजर तास्य समारी रामी क्यी जार है वरम्य स्त्री ऐसे तुला है कि वहें वहें मद बतने पेरी की कुल अपने माथे पर बहायेंगे । [3] रानी सुरुवर थी और अद्वी धुद्धसदार थी । रागी विद्वा बहुत कम होती थी । रानी को विद्यास धर कि जनतर असनी अधित है वह अध्य है हनपति ने जनतर वे बरीते ही क्षाने को फिल्मी हज़ाट को ननवारा था । राजाओं के नरीते वर्डी। जनवर कत वर कि वी लाइन वर्डी किने उत्तवर उपयोग वरमावर्डिये। agar god arag à 1242 vier à geraur et der fastar à four ar परम्य राजी में उसे रक्ष्में की आधा है ही की शामी की दिनिक किया हत प्रकार की ज्यारत की के उपरान्त क्यी कि न्याय करती और अर्थे की विकार तथा कुछ दान की वरते तथ बोचन वरती जीवन के उपरान्त योहर ता विकास । किर तीन की तक न्यरस्य ती रामनाम निवंतर आहे की गीलियाँ nefect of feetal 1 se and I feet à aradia set et il ife न कोई उस समय उनके पास केड सकता था । वे किसी गुड़ विन्तन किसी गुड़ विवार है विवार रखती थी। तीन को वे उपरान्त सन्ध्या तक किर वे ही क्षाचान बतरते शरीर के कीलाद बनाने की क्रियार्थ ।" 158

i. होती हो रामी क्षणीवार हुए ice

³

i de la

रमी जनमिव वी । धरतक की नवर्गर जनरत में नामकबुर कर विवा और जीतत ने इसिरे का अनेको बन्दोबस्त आरव्यर कर दिया ती मुन्दर, बुन्दर और काजी वार्क आयुक्तमा अतारकर वय रामी वे वाल आई ती रामी ने कहा कि अर्था वर्षी उतार बाई और कहा" वे विष्ट तो अवस्था और आधित के हैं। अपने सब अपनाम वसनी और इस प्रकार रक्षी भागी कुछ हुआ की नही है।"।। इतने रानी हे वेवंबारण की शक्ति का पता पता है। यह कर्वजीत थी उनका कथन था कि बनवान कृष्य की आहा की बाद रख्वी कि हमकी केवन की करने का अधिकार है। की के क्या का नहीं। [2] वह स्वराज्य -धारा की अभी बहाने की पर्धवर थी । उनका बन्तान्य देखिये, " मान ली कि में सफा म को वाई तो जो बित स्वराज्य -बारा को और बढ़ा बाउंगी वह अवव रहेगी । उसी उसी महावाच्य की धाद रचनी हमकी देवल वर्न करने का अधिकार है, यह का कबी नहीं । हमड़ी एक बहुत सम्मीच है बनता हमारे ताथ है। यनता तथ 20 है। यनता अगर है। इतकी स्वराज्य के हुन में प्रकार बांबना बार्निय । राजाओं को हीय की ही गिरा दे पर सुबनता केर यही बिरा तकते । अज्ञाबन जावेगा वस इसी बनता के जाने छीवर है स्वराज्य की वताका कल्याकेंगी । हुउह राजी राजनीति में हुक्त थी। एकदम प्र क्रांति म करते वेगान तेने की एजीवृति केन की । यह देती ब्रह्मनार की कि पुल्बा दांतीं को अंवता दवाते के 1145 के बनावटी नहांच्यों के नवती कागव पर बयाती और विवाहती । अपनी तहेतियों वह है ताय जिल्ल जिल्ल पुकार ही अनेत पुर परिश्वितिश्वीर वर वाय-विवास क्रली।"३५३ रागी की धारणा थी

i. हांती ही रामी बहमीबाई go 151

^{2. * 0 152}

y. • go 15

TO 1

कि अरोर की क्षाना कमाओं कि कीलाद हो बाबे, तथी मन हुद्धार पूर्वक मनवान की और वायना 1"818 उनका कारती का बीक बीच विकास ही नवा । रानी का वादव कव प्रवण्ड तेव पुणी था. वरण्तु अण्तर वहुत कीमन उक्षार । १२) उनके वहर जायरणा में कोलादी जाव्यों निवित वे । वे तारवा ते बोनी उनो कुछ विनय्य और है। तब तक व्यव्यव्यक्त स्थानी के ब्रगोन का वारीकी के साथ अध्यवन कर ली। कही किहा प्रकार सेनाओं की ले जाना पहेला कहाँ अस्तानी के साथ बुद्ध किया जा सकता है और अपने अबीयट स्थान वर कित प्रकार राष्ट्र एका करने लहाई करने लहाई के लिये विवास किया वा सकता है । इस दिश्वी पर काकी समय और परिचम वर्ध करने की आवायकता है।"। उहे उन्होंने बाह्यतो विश्वाम की भी स्वायमा कर क्षी। वह नही वाह्यती थी। कि तलवार होती होती बात पर बिवे अपित अवसर आमे पर ही तलवार म्याम ते हा अप कि दिल का किया है तीक हो हो था का कि कार का का का मार्थ है। गरीय है अबहर वर कितान की कदावि होटा न तमहर वार्षे । (5) वे अनावार ally account of girates we are four to as are are far some है 1° 161 रूपर के किया है किया किया किया है 18 का किया है 18 18 था देखें राजी तास्य की भी मीरा के कदन बहुत प्रतंद में १३ई से बहुत उदार जी। उनका निकी वर्ष तो बहुत का वा । यान पुण्य में वे जानती थी । बहुत के धी अपू कि विकास के उसे अपने क्षेत्र के तीन कि कि कि कि उक्क प्रकार अपन न कुछ देशी की भी । १९१

रानी वस ते बुझावारी के लिये बाहर निकान सवी, तब ते वह मदिना वीताक वक्षमें वनी वी -तिक वर लीवे का कुना , अवर लाका अनरका, वैजामा, अंगर के और वंबामे पर क्या हुई वेटी । दोनों बंगलों में पिल्लीने और दोनों और परतनों में तनवारे । कमी बमी बनी तब श्रीववारों की अनावा तेवा वी द्वाय में ताब नेती थी। इत पर धोड़िका बहुत तेब दलाने में कतर नहीं करती थी। कर उनको कवियाबाद्वी चोहे अधिक परान्त ये और लेक्ट रेंग की बात तीर पर । थोड़ी को उनको विस्ताम बहवान थी "शहरानी ने प्रव किया कि "मे केता वेहन तथी वराज्यो , यह हिम्द्राधान को एकराव्य किन वायेगा नहीं तो तक-अरब में अध्यक्षेत्र मेंडब बरेचे 1"121 हर बाम की योजना के पहले बना नेती थी . तब ध्यवत्वा के ताथ उतकी ध्यवहार का क्य देती थी। [3] उपकी देव तात्व. गीता बुराव , व्यानि वाच्य में आत्या और और कारी वाने वर विन्ता थी । उन्होंने कहा कि "में बहुनी। उन गरीबों हे गीतों को एवा के लिये। इन पुरसकों है लिये और वो कुछ अनके बोतर लिया है उसके लिये शक्तियों का रक्त रेशा श्रीन और श्रीना नहीं ही नवा है कि उनहीं सन्ताम सबस्या न कर सके। कोड़े मजोड़ी को तरह वो हो विजीम हो बाब ।"144 फिर जाने कहने लगी " मही हुट ब अगर है। गीता अक्ष है। हम लीग अभिट है। बगवाम की द्या ते शहर के प्रसाय ते, में बतवाक्यों कि अभी बारत में कितयी भी शीख है ह और वृद्धि हैं बार प्रवस्त के कर नई की त्रवा शीना । केडई दूसरा त्रवस्ती हुतसे अध्या बहा हो बावेगा और इस श्रीय का उद्वार करेगा। तपत्या का कृम कवी वाण्डल यही होगा । 151

रामी उदार थी उम्लीन गार्डन के कलने वर लीज बान बच्ची की किने में जायब दिवा । उनका अपन था कि "शशसमारी लक्षाई की वींचुलवी है है उनके बाल बटवी ते नहीं ।उम्हीने देा यन रोडियाँ बनवाकर जीवाँ के वाल पहुंचवाई ।उनका क्यम था कि जील देते धमकर तम अपने और उनके बीच के अन्तर को तथा मिटाए 9 और फिर इन लोगों को इंडा मार वर अभे वाले अनुव्यान को म्बुधित करना है। "हुद्ध रामी ने कामेश्वा को को का हीशी का कार उता कर दिया कि इससे सारी वरुरते पूरी है। बादेशी और कहा कि मकुषी की तरह वहाँ से बाजी। कहीं बुट बार विल्ड्स न करना , अध्य कायदे के ताथ दिल्ली पहुँचे 1833 जिल्ह्यों की नंगा और मुसलमानी की हरान भी सीमन्त्रं है ।यह बाहती थी कि बनता अस्त न हीने वार्षे ।

रानी ने लानर किंड बाब की दमन करने के लिये ब्रेडाकका से कहा जार वब उत्तरे धाव हुआ और ध्यम न वर तका ती रामी स्थमेद करआतामर गई उन्होंने नदी में ब्रुप वर नदी पार की और उते बीचित पकड़ निवा । जीहे की सटाकर उसकी कमर में बाब बाला । सागर सिंह की उसके गिरीत के are seed har heaf or foor i

रानी की वकरावा हुआ वा चितित कवी किती में नहीं देवा । उनका कार्य सत्तव अनेक्शत बारी था । के वे अपने युन के उपकरणा औरशायन काम में लहाती थी के अपने हुए ते अही नियम गई थी , किन्तु उपनी अपने यम और समाय की साथ से वाने का बरसक प्रयान किया । हाति। में और विनेम अवादिक्या बंद है साधारकातवा की स्त्री की की अपेशहत स्वतंक्ता और बारोरव को 151 स्वर्कता नवयोवाई के यह नाम है बहुत तन्वह है।

[।] ब्रोती की राजी नक्ष्मीबाई हुए 239 हुए 241

"मैनल और राष्ट्र के दिन रानी बहालक्ष्मी के मन्दिर बाया करती थी जो नहमी फाटड के बाहर नदमी तकन के उसर है। क्यी बान की में, कड़ी धोड़े पर । क्यी पानकी पर पिक कानकर, क्यी किया पिक के । क्यी लाड़ी पहनकरकारे पूल्य केरा में तुण्यर ताका बाबे हुये। कथी जिल्लून अवेली और वर्गी धुमधाम के शाब । यब बालकी पर बाली कुछ स्त्रिया अनेकारों से लढ़ी, लाल मध्यती बुते पक्ष्मे परतमे हैं पिश्तीम पटवाये पानको वा वायो पक्षे साथ बोहती हुई बाली थी । पालको के अभि तथार फेश्रा इन्हा कहाता हुआ क्षता था । उसके अभे को कुलकार काच में रणावाव, नीवत । योष्ठे यहानी मेवातियों और बुन्केश्वनहोयों का रिसाला । बन्न में प्रायः बाह बन्ती वीहे पर सवार 1,318 वे अब गीय के देश की गती बालती थी "हमारे दिता में उंध गीय वर वेद न बीता ती कितना अटवर बीता । 121 वाजीवाई ने यव gut fo un arena a & fon fafara al trai proctor sent bal &, अपने बोधन और वेब को रका के बीबो अपनी तेन्द्रात और अपनी कमा के क्याने इजाजान कि विषय है हिंदी है ताकानज के केन कर प्रमु की महाराष्ट्र er a never focuseria munit at 1 sept of at a ter foret थी । । । । वे लांकत कराओं की प्रका पीधका थी । । । । राजी ने पठानों का na gore of afastă ci i

i. इति को रामी संस्थिति पुठ301

^{2. • 96306}

^{3. *} gos14

g0314

go315

सबी को वद बबाहर तिंह ने बाहर की बाला श्रमाई ली रामी ने कहा "अप भीनों को धवराना नहीं वाहिये। मान भी कि वेहावाको सेना न आती हो यथा हम लोग हाबियार हालकर छाँलों हे हुँह पर जालिन पोलते 9 अपने पुरवीं का स्थरण करो । स्वराज्य की स्थापना क्षम अपने जीवन काल में ही देव में । सोड़ों हे डरडे वर वेर रक्षी ही हम हम परनहीं पहुंच जाते । एक बी रयान, रक ही मरणा स्वराज्य नहीं फिलाहि एस्मरणा रजबी-हमकी केवन कर्म करने का अधिकार है का पर नहीं । इह उद्देशय और मिरम्तर कर्म हमारा केवन ध्येय है। जीवन कर्तथ्य पालन का नाम है कर्तथ्य पालन करते हुये महना जीवन का ही दूसरा माम है। जो भीम जीवों ते हरते हो, भीत ते हरते हो वे सम्बद्ध रवंबर जाराम के साथ अपने तर वने वार्ष । यो नोम स्वराज्य के निषे प्राय विशेषन करना बाहते हो दे मेरे बात बने रहे । ।। रानी वजी-कुलती तो कबी कुछ यो ही नहीं 1"[2] रामों ने केरनों को अपना निश्चय समाया बाहर मिक्स कर लड़ी भीरों की अहर से मिकालीऔर क्रांसी की एता art 1 131 3 and and ar to " and parting or at to the pouret facted of anore & arah eare or ofe afer nel fee asar 1144 real of genomes affinds an or refunct feat of a feat andur विभी विवरिता ने बनी नहीं हिला वाचा था , वह जाते हुवे पुरंतवालव को bear of the eld of go, 15; gear a state that I

^{4.} व्यक्ति की राजी बह वीवाई हुए 373

^{20 370}

^{🛰 : 🔭} and appear of the 😢 🚧 👵

and the second s

^{. •} ga 391

रामी ने बब मोतीबाई के तिर को अवनी गोध में रह निवा लो रामी में उसने कहा नहीं हु बहुद ही नहीं हु बद्धि है। देखे होरा एक दिन सवाकी मरना है, किन्तु तरकार्य में द्वारण देना, बनवान का द्वान करते करते मरना वह बण्य वर की बदकी कमाई ते प्राप्त होता है।"१।१ वह रामी विस्तील भारकर आत्म बात करने की तैवार हुई ती नाना बीवर ने कहा " आव आत्म धात करने था रही है ।यही मं १ हुट के वो पूरी भीता बिलकी कर तरह बाद है, और वो गोता के जठार हवे अध्याय को अपने वीवन में वर्तती बनी आई है और को प्रत्येक परिशिवांत में स्वकाच्य की स्थापना के वह की वेदी पर संकल्य कर पूजी है, यह आएम बात करेगी। 21 राजी उठी और उन्होंने नाचा बीपट कर के पेर हुये और तबके सम्बंध प्रणा किया कि यदि समस्त [3] क्रीजी का मुहकी अवेले तामना करना पहे तो वी करेंगी । यह राजी ने राव ताक्ष à ser to de goof à sie bà al un mare er stan soula feur परम्य अब अपकी ह्या से यह तलबार बेचित ही गई ह इसमिये इसे बापित को बिये तो रामी से राय तास्य ने कहा उसके पुरुषों ने और आपने स्वराज्य की स्वापना के लिये जो हुए किया है वह विरस्मरणीय है । जापने हाली है क्रीवर्षे का वेका करारा प्रकाशिका विवाद वह अवनिशिव है । क्रीव में हमारी क्षेत्रा और ब्रह्म साम्ब्री की ब्याक्ट ने ब्रामे में आपका ब्रह्म ब्रह्म किला है। अ आव वेता नेमुना तेनावतीं भावद ही शह हो ।"१ क्षरानी ने दल महीने अवी के साथ खाँकी का राज्य किया केता कि अवा उन वर हर्यान ही वर्ष इन्हें राना है अवर वाले बेली पीवा जिस वर जा बाव वे क्यी क्लारी नहीं भी है6ह वह वेती निर्वेद की वेता कीई नहीं वर 171 रानी का स्वयाय का कि वे वर्ता बाती भी उनके बोमिर्द बारोको के साथ विरोधणा करती थी । यह विरोधणा

i. इस्ति] की राजी लक्ष्मीवाई पूर्व 393

ते उनकी युः के लिये मोर्च बनाने है बहु तुविश्वा होता था । उनकी रमनीति में बन किया का विशेष न्यान था । है। है रानी ने बुही ते कहा " नेयराज्य के बदन को नीव एक दो यरवरों ते नहीं हरेगी। "है2ई रानी ने क्रियेडियर रिमय को मात दो । रिमय जो उनके ख्युह को न वेद तका । उतकी लक्ष्मोमाई के मुखाकों है हार कर लोटना यहा । रानी ने आकृष्णा कर सवारों को बाह हटाया । रानों के द रण कोशाल के मारे जीव यन-रम वर्श गये । रानों के तिर यर तलदार का दार यहा और तिर का वह दिस्ता कह यथा और दाई आंचे बाहर निकल यही । रामदण्य ने अपनी वर्दी यर रानी को लिटाया और हांती का हुवें अन्त है। नवा। मुनमुहण्यद ने मन में कहा कि जोह कवी नहीं । दो यरा यहीं । दो वनी नहीं मरेगा । वो यहां को बाब बक्क्षता रहेगा। जीव्यो तेना के अमुदा में नुनमुहण्यद ते प्रीम कि यह किसका मदार है तो उतने उत्तर दिया अवारे वीर का, वो की बहा क्ली था ।

i. wind जो रामी बहमीबाई कुट 443

^{2.} stat at erst neutara ges was

fytens

विवार के लिए था। वर्गा भी में उसके रवस्य का वर्णन वस प्रकार किया है जन्म में केले में कहा हुई एक नवद्यु माला निये केटी। उसके क्याहें वहा रेंग कियों में वाद्यों के बेबर पालिये था। तीने का रकाछ तो था। तथ ठांठ तोलत जाना हुन्येनकाडी। येर के वेवनों से लेकर निर की वाउनी इंबामिनी। तक तब जानुकाण स्थानिक रेंग बरा तांकिना। वक्की वेवरा रागी की जानुति, जांव, नाक से बहुत किया बुलता। रागी से अलकारों में विनती की कि " मताराज मेंस मोरे धर में पुरिवा पुरवे की जीर क्यहा बुनवे की काम तीय जायों है। ये उनमें अब कम कर दाती है। मलकम्म कुरती जीर वामें का का करन तमे। जब तरकार धर कैसे वले १ है। इसकारों से रागी में कहा कि तरकार/का/केसे/ यह ती सुनतारे प्रकार बहुत जटता काम करते हैं। बहुत मी मलबम्म कुरती तीवी। हमाम हुंगी। धीहे की तवारों में तीवी।

[.] होती हो रामीत्वभोवार्थ १० १। १० ११

व्यवारी के वेते ही बालुम हुना कि रानी विदेश नेट ने वाहर निक्ल नई हे उसने पेन की सांत ली। आप तर के कीने में चीड़ी देर पड़ी रती । फिर इनकारी ने अपना संगार किया । वद्यिया ते बहुता क्यहे पश्चिन वीं उती तरह वेते नहमीबाई करती थी। यते है निवे हार न या परन्तु कांव की मुश्यिमें का ह काछ वा उसकी की में जान विद्या योगी में केवन एक धरो रख नी । इनकारी के बीतर बाका और गावदी की कमी वी ।जब एक गोरा ने पूछा कीना इसकारीनेव्यों हेक्यों से बवाब विवा हाँसी को रामी लदमीबाई । इतवारी ने रामी लहमीबाई की बनने के लिये यह तब किया था । उसकी विकास था कि उसकी बाँच पहलाल में बब-बब और हरवा में बब तब जैनरेय उल्लेचे तब तब राजी की अतना नज्य किन याचेना कि वह काफी द्वर मिलन बाबेगी । उसकी शालन सुरत वेसी जी सैन्दर की परण्तु केवन रंग वह मही था । क्रमा वु मे रोज के बास जाकर बता दिया कि वह रानी नहीं है इतकारी कीरिन है। रीज ने स्टूजर्ड की सम्बाधा कि वह म्बी का लोगों को अपने बोच में उलका वह शानी के बान निकलने का समय वानी है निवे यह प्रवक्त बल्लकर आई है ।जनरत रोज ने इतकारी की तैय gel four bon be i sm four us acure surren els four i अनकारी का यह कृत्य स्वतन्त्रता संभाग में अभित योगदान है ।

वृष्यर हाँसी हो रागी नक्ष्मोबाई हो तहेनी हो। राजि में तीसरी
वार स्थान है बाद रागी कह देव हा प्रशास हवान हरतो हो और फिर
व्यान शेवन है हाद तुष्यर, मुन्दर और हाभावाई है साथ मोद्वा सा वार्तान नाय हरती हो। जीव सेना में से वह रागी हा पुर हुआ तो तुष्यर में रहान नाय सिंह हो हो वयह नो धीचे पहर से नेहर सण्द्या तह तुष्यर और स्थी तीपांचनों ने हटतापुर्वह हाथ हिया रात हो हो तुष्यर हो हाम पर रहना था।

क्षणान में सुन्यर ने नीलन्याची सीची वी क्षालिये वह उनका उत्तयर करती भी भ्रान्यर की किर रात में कुन्हायु की हुनुक लीची नर्क । सन्ध्या के उपरान्त सुन्यर औरका काटक के अवर कुन्हायु के वास बहुब कर्ष। कुन्हायु ने किन में कुछ तीय क्षणार्थ सुन्यर उस किन के काम से संतुन्त थी। कुन्हायु जम सुन्यर से कथा कि में बहुत कर नथा हूं सारा रारोर हुन रक्षा है तो सुन्यर उनसे विशास करने को कथा। है और कथा है कि मैं रात वर सायकान रहुंची "। यह किन में भी उसकी समस काम करने को तैयार रखती है। रात को बी क्षण कर कुंची वरसो किन में आप तोपकाना संमान नेना। में सो तुंची रात वा काम किर वक्ष हुंची। कुन्हायु कस वर कथी है कि, सुन्यर दुम बहुत प्रका हो। और अरयन्त सुन्यर 1111 कुन्हायु कसी है कि तुम्बर दुम बहुत प्रका हो। और अरयन्त सुन्यर 1111 कुन्हायु कसी है कि तुमकी देखी की तुम्हारे क्षणीन करते हो न वाने मेरा विश्व कसा हो बाता है। तुम तो मक्षण को रामो क्षणे बीन्य हो। हुन्हाय कसती है रामो तो एक हो। है और एक हो हो सकती है " वस वस सुन्यर के हस्य से समाने का प्रकाव रखता है तो अब कसती है करा है आप सुन्यर के हस्य से समाने का प्रकाव रखता है तो अब कसती है अब वस सुन्यर को हस्य से समाने का प्रकाव रखता है तो अब कसती है अब वस सुन्यर को हस्य से समाने का प्रकाव रखता है तो अब कसती है अब वस सुन्यर को हस्य से समाने का प्रकाव

[े] श्रीको को रामी बहमीबाई पुर ३५९ १० ३५९

वह करती है कि बा अपने स्थीएक की दक्षा करने में लगके थी ।

बह करती है कि बानते हो में इस्तीएक को हाना हुआ सम्बद्धाः करते कृतिकार विद्यार का भीन वाप्तत हुआ

बह करती है कि बानते हो मेरे इस्तीएक को हाना हुआ सम्बद्धाः करते कृति हुआ

सरक्षार क्ष्मा विद्या है। मेरे इस्तीएक को हाना हुआ सम्बद्धाः करते कृति हुआ

सरक्षार क्ष्मा विद्या है। मेरे इस्तीएक को हाना हुआ सम्बद्धाः करते कृति हु

हु-बा हु ने देवन बानद वर बरकर तीय क्लाई उसमें से गीने गड़ी जिस्से तुष्यर में उसते परिचय की और यहा एटकर उंची हुन वरते तीय वनाई । उसके शाबी गीलण्डाय मारे वा छुके वे । उसने झुण्डाचु का स्थापार देख लिया। सुण्डर वी तरिय हुए वाम वर रही थी ।हमह सुन्दर में देश कि प्रावस्त हो/जोप तरि इक्ष/वाम/वर/रक्षी/वी को एक वह हाय वे वेकर हु वे ते गोधे तुरमत उत्तरा । सम्बर ब्राहिमान थी उसे सम्बामि में बरा भी देर नहीं नगी । यह भी तनवार बोधकर अपनी हुवें से नीचे उत्तरी। यहाँ से औरका काटक बरा हर बहुता था। कुन्हानु ने उक्षावर बाटक है ताले में कह हाली । तीन ताले तीह किये । ही लांक्नी की भी तींद्र दिया । तीलरी सांक्न भीन थी । मंगी तनवार निवे grat ar agut art ver der pret, are b arb. g Baf à ge नहीं वादेवा [4] हुन्दर हुन्हायु वर किन वही । उत्तकी तनवार का वार हुन्हानु ने नोहे हो कह यर हेना । सनकारहन्मा हर हुए गई । सनवार हा को हुल्हा सुन्दर की शुद्धी में बचा का उत्ती की ताल कर हुल्हा पर उस्ती क्षण्डा व ने बह का तीवा न अपने/ क्षण विवा । वह उप ते बावे वर्ध पर लगा । बीट की बरबात न करके तुम्बरनेकिर बार किया । क्रम्बान कीटे । वरण्य अभने शुन्दार के वेट हैं हुए अक्षा की । गोर्ड ने बच्छे है प्याटक

I. हाँसी की रामी लहमीबाई g0349

स्वीत दिया । तुन्यर हे हुँत ते हर हर महादेव , निक्ता था कि एक गीरे की गीलों में तोन्यदंगयों तुन्यर की अमर कर दिया । गीलों उतने तिर पर पड़ी थीं । [1] अफ़्तर में कहा यह रानों है । दुन्हायू में उरतर दिया नहीं ताहव महत्व गीक्रानी । अफ़्तर में अपने तेनिकों ते कहा यह र तोन्यर । भी दिल हेव हुँ है र तोन्यतं आगर में अपने तेनिकों है किया हो हो यो । तनवार का लिया ता हुक्हा अस वी उत्तवी मुक्ती में वा। दो गीरे उत्तवे शारोर को वाहर ने गये और परवरों ते दास दिया । यहाँ उनके और मत्ये वां के वी अमें तिया ही यो हो परवर्ष को वाहर ने गये और परवर्ष ते दास दिया । यहाँ उनके और मत्ये वां के वी अमें तिया ही यमें हो से हो से वां के वी

is is with all result members, go 30%

^{2.} व्यक्ति को रायो सक्ष्मीवाई हु**० 38**4

वागी वर्ष है क्या में कार्य महिन्द वरम्यु हाँती की रामी नहमी वार्य संवेषी वर्षा । कार्य वरा होटे कह की और सुगांदत संशोर वार्यों की पृथ्वी है कि कार्यों को अधि कुछ बड़ी और रियम थी । रामी वय तहें मियों से पृथ्वी है कि तेमा का सेमायक वर्षामें वीष्य कीम है तो कार्यावाई कहती है ववाहर विष्ठ वार्यों वार्य के रामान्द मीयाई के वार्य तवाह देने का वार्य किया । कार्योवाई पृथ्वी के ताय वर्षण के तामाम के ताय तवाहन मुखावेशा काम्यों के निये रवामा हुई । तार्या की असी बताया कि वह नहमा वाम्यों है ।

टोरियों के बोबों बीब बाते ही जन्में वर ख़ीबी तीववरणों ने नीले बरताये । ठीत और बाले वी को को कटकर तात्या के ब्रह्मकार्यों का तर्वनाता कर रहे है। दहते ितर कितर हीने लगे। हाशीबाई एक और वह नई। वाजीवाई का दरता अनेव धुहसवारों के बोध कह नवा । यहने विस्तील दली किर तलवारी जियो । जाशीवाई में हर हर महादेव वहा और जिल वही । उत्तवा स्वर कीयल का ता था । अंतरेज धुइतजार सम्ब मी कि बुक्त वेता में स्त्री है, उनकी हम हुआ रामी है। दूसरे ने बहा श्रांती की रामी उसकी चिन्दा पबड़ी। काशीबाई बीएता से बड़ी परम्य काशीबाई की तलवार ने बहमम्युवा असम्बद कर दिया । किने वलाई कि हो सवार तो अन्य समेत कर गये । क्य धायन ही नवे । परन्तु एक तवार की तनवार ते उतका बीकृत मारा नवा ।काजीबाई den net i sa frufa al sad es autef et uren feur i sen a काक्षीयार्क के जिस वह एक तमवार दशी । तीरे की शोधी के कारन तिर सवनवा परम्यु क्रमा कद गवा तो वो कावीबाई विधिनका नही हुई । किर हुनरी तलवार बाजीबाई का अन्त हो यया उस अया उसके हुँह से निकार हर हर महादेव गीरे प्रसम्म की गये 123 उठाकर रोज के बास से गये और कहा" यह सहुत

^{!-} अस्ति को रामी लक्ष्मीवार्थ पुर 59 10 37

नहीं हुइर । औरत है प्रारीर में प्रतिष्य है । ।।। वह वीर और क्षेत्र बन्त वी ।

i. बंबली की रामी कही बहमीबाई पुरुष हैं। 371

arateri

संगाधर राथ ने किलयाँ का अधिनय करने के निये बहुत सुम्बर नायन नाने वाली नियुक्त कर रक्की थी। इनके भीतीवाई बहुत प्रसिद्ध थी। मीतीबाई बुदावका के प्रति अकुट हुई । मौतोबाई सावधानी और लगन है साथ बाटक भाषा में बाम बरती थी । । भी मीतीवाई ने वासवदात का अधिनय किया । रानी की मोती बाई की मुद्धि और अधिनय बना पर वरीता था । [2] यह अरमत अञ्चल बाली औरत थी ।[3] वय बुदावका ने कहा कि "अभी तो वह तर्बना कि में आपका वेदी हो नवा तो मोतीबाई मुलक्शावर वहती है जिल दिन राजी लाख्य स्वराज्य बायम वरके उरलय मनायेगी में है अर्थिशी बार नायुंगी और उस दिन अवन्ती केंद्र में ही बाउंगी । तब तक अपकी और मेरी अन्यत दीनों की उन देवी है बार्की रहेगी वी ब्रांशी की रामी बहुबाती है और बहुबारमी 1848 मौती बाई की पक्का बरीता था कि एक कीमधी की हिन्दू वा पुलकान निवाली किमी नामध में जाकर अपने धर्म ईमान की नहीं विश्वश्लेगा 1351 वह मोतो बाई में तारवा से कहा कि and aftent à uga atont à l'areur à bor ataite à "16 guer तीन्दर्भ में दिल्ला होता है और और में होई हह रूप मौतीवाई मे बुद्धावकर क्षेत्राकी में प्रमेश को पक्तमें का प्रवास किया। में भौतीवार्क और बुक्त केते दिवालो भागती केते हो ताजिवादारी की करती की और उती

	-						
	.E. 20u.	400	Service and Service	-040	THE PARTY NAMED IN	MERCEN IN	A 400 ANN
	AND THE PARTY OF	100	1997 1997 200 1107	AND 66.	THE WAR WEST	22 7	著籍
(a) (a)	E THE	4000 (80	W. M. T. B.	FF 122	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	200 1646	9 7 4
* *	region were to tar two		10 to 10 - 3			(B)	

2.	**		80	194
J.	*			193
An	49		wo.	198

^{5. * \$0 214}

^{6. *} go 216

[§]O 269

उत्ताव के ताथ वे "मुरली मनीवर" के मन्दिर है जिल लगा राजी व्यक्ति के जानि जिल्ली आहों भी द्वरण और नाम भी करती थी उन्हीं विल्ली मुक्ति के जानि हैं वरण्य उनके उस कार्थ पर मुललमान किसी प्रकार का आदेश नहीं कर रहे थे, वर्षों के प्रायः राजी के ताथ रक्षा करती थी 1" है। इ मौतीवार्थ स्वराज्य को नहाई में वह सकती थी । उसने राजी से क्या" सरकार मुकेने और मैरो संगोजी को अन्य मोर्थ किमे बावे और किस देशा बाव कि स्वराज्य को नहाई विल्ला की की की की वावे और किस देशा बाव कि स्वराज्य को नहाई के लिये कीनी की सिमार्थ अनेने क्या क्या कर सकती है।

वन और सं काटन पर ना तोपनामा हुत नीमा पहा तो मौतीनाई में अहा अनुमय किया, कुत नो उस और वामे दीपिय । सुम्दर्भ अने में हैं। हुन्या हु ने साथ पाँच प दोने सो मो हैं। हुन्या हु ने साथ पाँच प दोने सो मो हैं। हुन्या रामी नता है "बाजी मोती । सीरा वननर नोटना । "तेयर काटन नो दाहिनो वनन में नव दी अने अकारों में देश नो सीही बनाई उन पर ते बानी दोनों पह गये । सम दानों ने अपनी तेना ने पन हुन्दे नो सैनेत किया दाना आमे बहा जाने में समयार निये मोती बाई हुए पही । नेपिदलैंट में पिनतीन बनाई नामों गई । मोतीबाई में पन बार में सो उसनी नता नर विद्या । सु हुन्दे नेपिटलैंट में समयार ने सन विद्या की से पन बार में सो उसनी नता नर विद्या । सु हुन्दे नेपिटलैंट में समयार ने साथ किये परम्यू मोती बाई में उसनी नी समयन किया ।"

योगोनाय को विन्धुन्याय है प्रांत के बर । योगोनाय ने रामी है कहा कि मैं विद्वी है विश्वाम वर विकटानी । मैम शास्त्र कोच को योगोनाय वा सन्ता । पुष्पाय विन्द्वायाय को पोट विकासी और अपनी विनायत में प्रव सहरो । कुंको केवर काटक को गोमकाने परकटर बरसको भने और यह योगी

i. stat की रामी बदयोबाई go 281

^{2. • 300}

शुद्धावका को नवी । तेयर काटक का तीयवाना बच्द हुआ। एक अंगरेब दीवार वर वहा । मौतीवाई ने तनवार ते उत्तवा किर कतन कर दिया और बुदाबका की बाधा की टांगकर मोधे उत्तर आई। रामी ने क्या मोलीबाई तुम बोगी का अध्य कार्य केने अपनी आंची देवा है । है। इसनी ने जीतीवार्क ते कहा कि में बुद्धावका के राज की कालाने का प्रकार करती है ।बुद्धावका के राज क शीस में मोतीबाई बरा उन्हनाई । मोतीबाई तीब बर बनी नई । हुछ मीनिवी मौतीबाई ने जात बात ते निका गई वरम्य एक ने कम्बा गीये ते कीड़ किया। इदय उत्तवा वय नवा हुत्हु अवायावाची थी । शीलीवाई का लिए रानी नै मीद में एवं विदा । मीतो बाई की अधि में अधि वर अधि । बीली "इत भी थी में तिर रक्ते हुये मरना किती और है बाग्य में नहीं था, बाई तास्व राजी ने तिर पर शाम केते हुवे कहा, " देश मौती बाई हु आब होरा ही वर्ष । देश मोलीबार्क ने क्याकुन त्यर में कहा में कुछ वी हैं परन्तु हात है। वह रात ही नहीं परिका की रानी में कहा, " नहीं हु राह्य ही नहीं " ह विका है। देव बीरा एक विन सवाकी क्ष्मा है, वरम्य सरकार्व में प्राचा देना अववान वा त्यान वरते अरना, वह बन्न वर वी अरही वर्गाई से प्राप्त होता है।" श्रीतिवाई ने अधिके शीधी । उत्तवर देवरा योजर यह नवर । रानी ने कहा " आरमा अमर है अभिक्र करोर का बाहे वी कुछ ही वही एक प्रकार कीन रक्ता है। राजी की मोदी मोती बाई है कुन ते तर ही गई। मोती बाई वा बीमा अर्थवा देवरा एकका क्रोप्स हुआ । अधि अवस्थी हुई। बीच क्छ । उसरे हुँछ से विकास राजी उचाना वर और वह युक्तिया हुआकुन अन्येत gener aver face aurs adulars et garaca sir de afect è are क्षमा दिवा गया । बहुतरा महत्र के दक्षिणी कीने पर उस भी रिया है

anst fouren eint & ate arat upnt & i

[.] श्रीती की राजी अक्ष्मीबाड 90 505

981 2523

रामी की बांबर की रत्य परी होने के बाद बती ने मीली बाई ले कथा" अलगी राचा तो इति। की अब फिला, बाई वी 1111 बुझी है च्या जितर व का वर्णन वर्ण को में इस प्रकार किया है, " मकान के बाहर विधे धरने की रहम के बाद बुको मौतीबाई के बर आई। बुक्त परिवन के बरान्त में भी । बढ़ी अधि में उमक । नीचे देवने के समय लम्बी करीनियाँ बाज के वांबड़े में हानने नगी । "हुद्दा मीतीबाई के बहा ने बतावा कि , वे अप है-विहरवाने सरदार । बुड़ी ने मोधी बाई ते वहा कि उनको देवकर न बाने मन में कैसी उथम पुरम हो बाबा करती को । उन्होंने देवा क्वाबर । उसी क्वा के बीसर हुए इस प्रकार हेरे कि अपनी देशा लगा भागी जन्दी देखते रहे और भैने ती बीधे और हटा भी भी । फिर महान है बात ते निरंते । में आहट पानर अर्थ के रास्ते में अर गई । उन्होंने बहुत कम देवर , परन्तु में बहुत देर, बाद वार देवता रही । दे वले नदे । स्के बहुत वना। (३) हो तीन रहे नाते समय कुछ समय किया और पर अपने की हवा की । पूछी कहने सभी " में सहम गई । तिर नीवा किये अही रह गई। होते यदि हुइ हो क्रा करना वास्ती हो. तो भोतीबाई भी भी हुई हाथ बताये उत्को बहुत श्रीक्षियारी है ताथ किया ort 1"148

get à aparaté à set le fac fermi erà montre france à ferg- mounter et dess marà et arthur et et tel à d'almater diver i sà set le faction et alsa four et tel à eta à facté àt ara et d'apar des mont est four et d'al-

i. हाति की राजी तक्ष्मीया हु067

बुधी श्रांवमी में मुख्यवर का कार्य करती थी, उसका श्रांवमी में आमा वामा बह नया । उसके श्रुल्य नाम को कमा में और जो मोशकता आ नर्छ । उसमें किसी तियाशी या अवसर में अपने को बाम बरावर जी नशी कीया । वे सम्बद्धी में कि बुधनी श्रुव्यशीन है । बुधी में हर पल्टन में तीम तीम उपसुकत अवसर प्रोग्न हुट निये । उम अवसरों केपन जो मालूक शो नया कि हम लेक नोमों को किसी एक दिन महान कार्य करना है । बुधों श्रुप्तव में उसे श्रांवमी में आमे के निये गमा किया । बुशी को याद आया कि " एक दिन आयेगा यब बुनों को श्रह्मकोर देश को शुवित का सम्मेनन शोगा।" हुआ बस प्रांवमी थी कि अबके देशर निकाली बाती सो अवशा शोता, उसके शारीर से कर्मी धोड़ा का बुन मिनल पहला तो और को अवशा शोता।" हुआ

नोती बाब और बुझों की दिवसकी जानती थी देते ही ताथियादाकी वी करती देते । और उसी उस्ताह के साथ के दुस्ती मनीवर के मन्दिर में विता तम्ब राजी दर्शन के लिये जाती भी इस्त और बान थी करती थी , उन्हों दिवस मुक्ति के बालों में । यसन्तु उनके इस बावें पर मुक्तवान वितो

[े] होंगे को रामी आयोगांड 10 212-21. 10 212-21.

[•]

पुकार का अधिव नहीं कर रहे थे, क्यों कि वे प्राय: रानी के साथ रहा करती भी 17814

राव तास्व ने कहा" उत्तका नाम बूही है । बहुर तुम्बर नाम है । तिवासीयोरी को करती है और इत्यनान की । स्रीती की नाटक्साला के वहिया अधिमा करती भी । वेद्या वायम्बा -वाय । 121 मेही तारया से कलती है कि, " यरण्यु तरवार नास्त्व, मेरी राजी का स्वराज्य सुंताम पत्ने सकत हो और में आवड़ी बच्च संचित्री बनकर रहें । बहुत दिन्तें से इस बात को कहने हे लिये लंडाच पर लंडाचा किये परम्यु आज लंडाव लंडाव रचान कर कह या रही हैं। १३६ अन्त में बुद्ध में राजी ने बुही ने वहा या बुही अपने तीपवाने पर एका तो है इन वेशियों को जान । १६६ अबी प्रवास करके वाते हुवे कह गई" इस बीचन का वर्धीयत अधिनय आपको न दिवाबाया बुली की तीपी ने मक्क द्वादा । अनेक नायक ने इन तीयों का हुए बन्द करना तय किया । तामने तयार बढ़ते बाते के मरते बाते के घरना उन्होंने इत तरक की तीपों को ध्रुप वरने का विश्वयन करतिया था । उनर तमाने तवार बुटी है तीववाने वर वा प्रकेट हुई। " बुक्ष तलवार से विकृत गई। विर गई और मारों गई। मही तमव उसने बाब तब नहीं हो। जिह गई वरम्यु राष्ट्र ही वंगवार बोरने के, बिल बात है अनवी रही वह की बुड़ी की बीच उरकराहट भी उसके देशको पर अनस्य दिल्लाम को नेगल के शा केन गई गांकी

na pare gut gra ura à patot, arget aed à age, dard drauft alte ramar et surna at i

etal si etal asilate (020 304) 3043 5043

TPPF

व्याप विंह ने बब क्यार का हाथ पक्कर कहा वो मांगीमी हुंगा।

मेरे पिता बहुत हुन्य बन्धानंकारों का बण्डार छोड़ क्ये हैं। विलग्नी हुन्छ।

करों , हुंगा जोर देया रहुंगा ।"३।३उम तम्य क्यार क्यती है," में बीह कि विद्या है, द्वर्णों को अपना क्षार दक सकती हूं। "उसका क्थन है कि " मेरे साथ आंवर झालिये। मुक्की अपनी पत्नी की प्रतिक्र द्वालिये।अपनी जीवन सहवरी क्यांड्ये। व्याप द्वालिये। में आपके प्रवर्णों में देसा अंगरवा नशीं व्याप सकती वो व्याप उतार कर कि विचा ।वह अपने नारीस्थ की रखा वालती है। वह क्यांग तिह से क्यांति है," में वी आपकी प्राण्यका से देम कर सकती हैं, परम्यु अपना नारीस्थ क्यांट करके मही। क्यानार में मन्ना की न्याय के आधार वर बदा लिया। क्यानार क्यांति है "म्याय ।विससे राजवेदीक्य योह के नाम पर बद्दा म लगे , वाट लीग अववशा म बेनाति किरें। बह

द्धार सिंह के एकनेवाल के उपराण्य लिलार व्यापार से कलती है कि " हुई को रामम्बन अवहा सम उठा है। उसी में सार है और तम व्याप है " हुई वस लिलार कहारे है अदी बोबी संसार है, तम आता बाता बना रहता है कि में माने समी है और इसण्य है। तुम में बाने कि तिस सिंह है कि माने समी है और इसण्य है। तुम में बाने कि तीय में किए में कुता वा रही हो। [क्वनार कहती है, सुक्रा वो अवहा सम रहा है वह मैं कर रही हैं तुमकों को अवहा समें वह तुम करते, में मेंने वसने तुम के तह में कहती है। तह सिंह मेंने वसने हम सिंह मेंने सिंह में स

source greater ette ent go 25 go 25 go 15 go 15

वह दिवस्ता है। बारव क्या देश है जार नियुक्त है। यह बहिता है, इस विदाह क्षण है। यह बहिता है, इस विदाह क्षण है। यह बहिता है जार विदाह क्षण है। यह बहिता है किया विदाह क्षण है। यह विदाह है क्षण है। इस विदाह क्षण है। यह विदाह है। इस विदाह क्षण है। इस विदाह है। इस विदाह का अपना है। इस विदा

क्यनार सोयती है कि उसके बारव में हुई नहीं है । [4]

व्यवार वर्ष के वार्ष में वानो वानो के विद्यन से नहीं बरती होड़ें व्यवार मानतिंह ने राजदा में " प्यारी क्यनार तुम जाम नो वहनी की वान को तरह विवनी और नोम्न हो, नमता ते कि योगत में मी मुमनो कर ते नामां 6 कि मानतिंह पीका करते हैं तो यह अपनी सुरक्षा हुरी से करने नो उत्तत हैं का विव मानतिंह पीका करते हैं तो यह अपनी सुरक्षा हुरी से करने नो उत्तत हैं का उत्ते सम्यास की वांचा में आहमा है यदि दीका मिनमई तो उसे सुनं हो सुनं है । यह नामता से काम से का में सम्यास की वांचा के निवे वा रही हूँ । यदि मिनमई तो मेरे निवे मरने तक सुनं ही है। यदि मताराज में दीका दी तो जिलों तोचे में वांची वांचा में यदि मताराज में दीका दी तो जिलों तोचे में वांची वांचानी । यदि मताराज में सुन्ता की वांचा में यह हमा के मानतिवृद्धी से कहा है कि यदि मताराज वो वांची अरणा मानति तो आहम हस्या करेगी । यह कहाती है असम्या मेरी है मताराज में साता हम्या करेगी । यह कहाती है असम्या मेरी है मताराज में साता हम्या हमेगी है अर्था में साता हम्या करेगी। वह कहाती है असम्या मेरी है मताराज में साता हम्या को मेरी हम्या का याच नमेगाई हो

वह मानतिंड दारा क्लारकार किये जाने का विश्वेष करती है। उसे
विद्यास है कि उसकी देह और आरमा को कोई नाथ नहीं कर सकेमाहै।
वह मानतिंड पिताय से अपनी आरमा और देह की कहाने के लिये महन्स के
वास जानी है और महन्त से कहती है, उस पिताय से अपनी देह तथा आरमा
को क्याने के लिये आपकी तरणा में आई हूँ तयस्या करेगी और सन्वास सुनी
और जिस प्रकार का बोदन वर्तने की आजा होगी वेती ही स्तूर्णा। विद्या कुन्
को तरणा नहीं मिलती है तो हती हना हानी रवान वर अपना वह करेगी है29
वह नारी होकर तावना करते वीनका अपार्थित कर महारावर्जी से वी केन्छ
का और रेन्दर्व प्राच्या करने को आकांग्री है। वह मन्द्रीनेपुरी से करती है'
है रही तोकर अपने लिये हत लीक और वरलीक में तयस्था और सन्वास की
सावना दारा देता स्थाना बनाउंगी। वेता पुष्कं भी नहीं कम सकते। वह
से बड़ा कुन वी योग द्विष्याचे करता होगा उसकों में जी क्या अपने व्यवस्था

वह मावा ने मुन्ति वास्तों है । हिंदू मानति है उपकों में वह वैशों हुए को काको अन्तों को उद्देशकार को तक्या ने स्वय पुष्य वीमा-व्यास और व्याप्त देन ने सरस्या हा राम दे किया का । वेसे कोनों और वैद्धा का सम्मेशन हो क्या हो । माने वर सम्म का कियुष्ट । क्योग होता है बड़ी हुई कुद्धान सम्मा वर बोर्ड नोट्डों काने कियो नहें दुस के मी को ह बा ने होने ने कही जो जा बामा क्यार को विभागन ने कोई नाता रहने

i. ब्रह्मार बुम्ब्राबन नाम वर्ग go 179

^{2. •} go 180

go 181

WO 187

^{• 90 200}

वानी ब्यागारे वे । धुटने के पात र अवा हुआ जिल्लान उसकी नेरती का नाम क्षेत्रे में कार नहीं लगा एटा या । " है। इंदिगार की सम्ब में प्राचा कि अनादि वहन अपट क्या का में है और वही भी ध्यान बमाने है कर ही किदि सो तकती है। ज्यानार जो अर्थ पर अट्ट क्टा है। १२६वस निक्लाबान है, उसकी बदका के किन्द्र उसकी और कोई मधीर देशकी नहीं सकता । महत्त कहते है क्वनपुरी की हट हा के विकास उसकी और कोई देख भी नहीं सकता। वह कि ठावान है "। अ वह घोण्य है । महना हो उस वर तमेह है। । । मुल परणी में उसे पूर्ण अस्था है महत्त से यह कहती है कुछ परणा इस प्रकार शुला के वो जाय तो बतते बहुकर नेरा लीवाण्य और वो वी ज्या सकता है 151 उसकी मनीवृत्ति होत है जिससे जातमा है सब में बरमारमा का जेरा मनीका के तहायवारों कियो बन्य में मनुष्य के मुक्ति है तके। यह महन्त ते कहती है * महाराज आपने वहा वा, मनीवृश्ति की श्राहरवना वाहिये, आरमा के स्व में बरमारवा वा आंग मनीका की सहायता से जिली न किसी बच्च में मुन्य व की अधित है देता है, बाहनाओं से अनम रहकर की किया जाता है वही सुकी है वर्तमान जन्म की तबस्वा से पूर्व जन्म बाजावन मनीरव कि ही वायना।[6] उसके वरित्र का महत्त्व पर हाना प्रवास वहा कि वह कहने नने 'नारी कितानी महान हो तकती है, जाब मैने बाना 1" [7]

\$e	qu		r		4	a r	N,	ant	ã os	17
2.	*			30						233
3.	*								10	234
40	•								80	234
5.	0								gc.	295
6.	48	•							50	206
400		j.							an	207

वह यह नोति में की वार्षका है। वह कहती है कि अपने पात काकी होते हैं। इह क्ष्मीनी वार्तों की कित बावेगी। किते में होकर हम लीन कितों की खड़ी तंक्या बाली तेना का लंडोंग करके और लामना कर लंडोंगे।।।।।
यहन्त की विज्ञवात है कि क्यूनार केलंबीन और तहवीन से द्यावितिह की सुंब ही हुं कितेशा ।। 21

वस प्रकार कम देनते हैं कि कवनार के वरित्र में कोई ब्रोध गत्नी है।
वह प्रत्नोति में पार्नत है वर्ग परापक है। उत्तम वीम कम है। आरमा और
वरमारमा की कता का आवात उते है। वह स्वातकती है और अपने वरीर
और नाशीरव की एका करने की उत्तम तामकों है। वह प्रस्तर है और वाती
ते वरीय तिब की रामी बनकर सर्वोध्य यह प्राप्त कर तेती है। उत्तमें तक्षव
अपने वरित्र की एका को है। इस प्रकार वह सर्ववृत्ता सम्यम्म और महान नाशी

s. ब्युवार- बुन्द्रायन बाल बर्मा हु० ३०।

a. व्यवरर- कुन्द्रायन नरन वर्ग go 336

en Test

ब्लाबरी क्षीय सिंह की यरनी है। मन्त्रा के इसने पर किन्में बाकी रह नई हैं. हुने वी मार डाली" ब्लावती मानतिह ते बहती है कि में बहती हैं। पुन नी अभी बसी। मीडे की बाद में बेटे रहीने ती तिवासी कुछ और अनर्व वर बालेने । १।। इत प्रकार मन्ना की बवावर अवनी उदारता का यरियय देती है। रानी आप्यती के तम्बन्ध में मन्दोनेपुरी है वहते है कि " वदि मान गई तो वह पुन विवाह कर तेना।" वह बाज्यवादी है और बिद्ध की विकास के लिये जातर है। यह मानसिंह से कहती है, "तुमने हुई की कवी नहीं बुखावा और बनी बुधाओंने। नाग्य में जी कुछ वा ही नवा, अस अपने की विन्ता करनी वाहिये 1221 वह नहीं वाहती कि मानसिंह अभि में उसते किने । विवाह हे समय से ही उसके हत्य में मानसिंह के सिन्ने नवान ही यदा वर । वह मानतिह क्लादती ते लियट नदा ती उसने अपने की वीरे ते आ लियन ते प्रत्याप । यह मानतिष्ठ करावती ते बहुताह कि मेरे हुम्हारे मन मे एक दूतरे की तरब दिवाद कर मिया वरण्यु तमाच और वर्ग के तरमने etar urst è 1234 eareaft gafaare et afen unret è "gest af उधित मानुम बहुता है। वरम्यु अभी बरती वहा कुछ नही हुआ है, पुनैविवास of gur und er art ar all carant grantmir e mille ae gafaare की उधित उस्ताती है और बाद में मानतित के ताब पुनिविकात कर वी नेती है। वह सम्बदारी से बाम नेती है और अप मण्या की भी प्योतने की बता है। व्योषि वह दुविया है। यह वास्ती है कि उत्तकी किती

^{1.} SUNTE 925 67

^{2. *} gst 129

इवार वा कट न हो । विवेदाविकात के वह वहा में है और बारतों है कि में चेता वर में । यह अधुनिक नारी तुवार और विवेदा विद्यात की विवेदा विद्यार कि है । यह कि वोद्यवता है "हमारी बाति के दूध लोगाम में विवेदा विद्यार को रोति है । उनको ब्रांटिया सम्बंधे लोगे है पर है के समारी बाति के हो । विकार विद्यार विद्यार

वह मान सिंह को हर प्रकार से सुनी बनाने में प्रवासित थी [2] कर्मावती का वांचन विक्रित था , मन हिलोड़ पर आंकाकाचे समर्थणा पर [15] मानसिंह को उसका सुन्दर एक और भी आंक्ष्य सनीमा नमा । उसकी बहे देवता के सुन्ध में भी आंक्ष्य सनीमा नमा । उसकी बहे देवता के प्रुप्त में भी आंक्ष्य है । उसका क्ष्म है, नीम बहे देवता को पूजा करते है और छोट की भी 1] भी क्ष्मावती आंच्य में मान है कि स्त्री अपने मन को मारे । क्ष्मावती मन्मा से क्यनार के संबंध में क्ष्मा है, पूजा तो वह सचमुव करती थी, क्ष्मी तो थी, क्ष्मी तक अपने मन को मारती १ क्ष्मावती के एक पूज भी अपना छोता है । वह राजी की भौति जीवन छातीत करती है । क्ष्मी नेशंक ने क्ष्मावती द्वारा विवेदा कराकर प्रचाित कोवता कर परिचय दिया है और क्ष्मावती के वरित्र को आंधिनक सम्माय के अनुव्य विवेद विविध विवाह की है ।

^{1.} BURTY 90 141

^{2. 90 150} 2. 90 150

^{40 157-204}

neat

कार उपण्यात में काल्या की एक प्रमुख यात्र के लय में उपरी
है । उसका यांव बाद विवाद और हकामों के कारण मार विवार गया।
वह क्यावती के यात गिरण्या किसे में वाला आरी एकती है और अनेक
कार्य क्यायों में तहयोग प्रधान करती है जब इस मानतिंह ते प्रधान है कि
मन्ता काराई हुई के मानतिंह उत्सर देता है कि " वोड़ी काराई हुई
अवस्य है परण्यु वह विवेद्यांति श्रीरय वालों है । "हु। इक्यावती के आरवासन देने पर कि सुम्हारा हुए नहीं होया , मन्ता कहती है होर हज्यर तब
धीन निये अह है क्या कार्यों १ खानी बड़ी उमर की कार्यों । मेरा कीन
विवा है । हुई क्यावती ने मानतिक को क्याया । मानतिंह के आते ही
मन्ता का सन्ताय और बढ़ा । बुश्राम मधाने बली । बोरकार करते करते
यहा बहु पर पर व्या वा । करे यो ते बोलों "बुंबर ताहक, मेरे नाला को
ते आओं । सुमें बदन दिया वा कि बोल होंचा म होगा ।

i. SUMPY 80 61

^{2.} SURTY EQ 66

tit banta aret nat

¹²¹ लाववा - वाती

तुरवार्

हुटे किंट उपन्यास में नुरवाई प्रमुख बात है। यह बक्के ताद्मावी ही महिष्क में थे। वोड़े समय बाद वह मुहम्मद्माह के दरवार में बहुँच मई। साद्मा वो को हुरा लगा। उसे फिर नाद्मिकार ईरान ने जाना वाह्मा था। वस्त्री वह निकलकर वाग गई और ईरान मही गई। उसे रवेदेन देम था। विका के मिन के मिन क्या के उसे हिष्टियास होता है। नुरवाई कारसी की गळन गारी थी उसे सराधासा निकलक और रसवान के बद बहुत दिव थे।

प्रवार्ध में प्रत्य के लाग ता जार्श के जिल्लून यान आरुर नवन गार्ड लाजावा के मन में जेंगे नहीं उठ रही भी और उतने कहा जोई हनाम नहीं वो जन कमान के पाल बाकर केठ वो लके हैं। इरवार्ड में गाँगा कि वाजावाह लगानत के लाजने कर बार पुनरा करा जिला जाय 1" [2] लाजावा में नुरवार्ड को उतके गायन और प्रत्य पर प्रतम्म होंकर हार दिया । वस पुरवार्ड में पुछा कि बहुत कोमती होगा यह तो हुनूर 1\$3\$ लाजावा में उन्नात के लाव उत्तर जिला बहुत कोमती होगा यह तो हुनूर 1\$3\$ लाजावा में उन्नात के लाव उत्तर जिला बहुत कोमती तो नहीं है तिर्फ पाँच नाम क्षेत्र को में कु पुरवार्ड लोचने नगी कि पाँच वाजाह लगामत मेरे गांच गाम और तो मर्च पर रोह यो तो वे ज्या में देने हुई पुरवार्ड पुरवार्ड को तो वे ज्या में देने हुई पुरवार्ड पुरवार्ड का अवहरणा उतके हुई काँदी को तरह पुर रहा था । मुहम्मद्धा के विश्वर में मुस्वार्ड थी । लाजावां को उतके क्य लावक्ष्य वा समस्या हो पहला वा कि वो स्पर्वार्ड के स्व को मोहनो उतकी क्य लावक्ष्य वा समस्या हो पहला वा कि वो स्वार्ड के स्व को मोहनो उतकी करवार्ड को पुषकार पुरवार वेती थी । वहाँ का ज्या हो रहा होगा १

विम नाय नवरों को कराकर मैंने अपनी तम्पालत बनाया या वे किस
तम्बे में कित करात के बांधे हु तुट रहे होंचे 9 आंख को यह कोर , बीस की
वह बांक, गर्वन को यह वक नवक , उन्हें हुवे अंगों को यह तुद्ध निवक किन
अंगों का निवाना दन रही होना 9 और वे बेर । मैस्ट्री के रंग को मात
करने वाले उन सुनंपओं को वह सनक को तारंगी के वंद्यम त्या को वो योकापन प्रवान करती थी । सकते के तम पर मौद्यों पाय पर कन सुन का यह
तामुहिक प्रोम 8 मैंते हुन हुन तीते तोते या रही हो । वे किनामन मिन्नवार्षे
और उन पर मौतियों मेंते व्यक्तते हुवे बांवों में होकर दिस रिसकर करने
वालों मुन्जान को उन ओखों पर रोह रोह जावती थी । हरिरों का यह हार
और वे पहुचियां औह "हु श्रृष्ट्रवार्ध के मने के त्यार का वन्नि वर्गा की में उस
प्रकार किया मेंते हुन हुन किना पर्वे सुनते बुवकारते हुवे रयदे वने वाते हैं। .
वेते वर्ष हरने अपने अपने होता ते मेंद्र नितक्त गति ते तोथे, तिरहे, वनकर
राज्या को किनाहिताहट की समेटते हुवे किती निवास वद तरीवर में वहकर
किन रहे हों "हुश्

पुरवार्ष उस वमाने को द्वांचा को सबसे बड़ी कारवन्त को । वह वेसी बाहर से नवर आती की वेसी की बोहर से वो । युवन्यकार का कान देखिये कुछ वेसी बाहर से नवर आठी की वेसी की बोहर से वो हो । कमान को कार से वुन्हारों इस द्वांचा और इस दमाने को दुन्होंसको बड़ी नगावन्त को । 153

भूरवाह अपना केर अरव वर्ष होड़कर नाविरहाड है साथ देशन नहीं बाना वासतों हो। असते प्रतात होता है कि उसने केरानीना थीं, अपने किर है प्रति राम था। वह वह आवाद होना वासती है और एक बादी है

[े] हुटे वर्षेट कुन्यायन नाम वर्णा हुठ वर्ष

क बती है, " में नहीं बाना बाहती। मेंने निक्क्षय कर निवा है कि बान बाहे को ही नंबानी बड़े वर ईरान नहीं बाड़नी है। इं आबाद होने में मदद करोनी 9 बहुत हमाम हुंगी।

तीने व नवारर के लिये उसके हुद्य में कोई विक्रोध मोर नर्श है। मोरन ने पुर बाई में सरावता निका कार्यने में को वह उसे व सीना नवारर देना बारतों है। वह अपनी कार में बाब डालते हुने करती है, मेरे बात सीना नवाररात है। बोहा सा मेरे बाहते। काम आपना 1828

उसना हुत्य हुन्य की बनित से जीत द्वार वेद करनेवा से बहुकर किसी की छावा नहीं मानती । मोहन से यह कहती है "छावा करनेवा की जिसकी छावा के बराबर और कोई छावा नहीं । इंड्रांबह तो करनेवा की हो पूकी है । वह कहती है मैं तो काई करनेवा को हो पूकी हूँ आपकी छावा में हूँ । " वह अपने करनेवा के सामने संगीत वेदा करना बाहती है। उसने मुंह से रबर निका, में अपने करनेवा के सामने हैंना संगीत वेदा करनी कि उसने मुंह से कबा न करवावा छोवा । वो बाहता है कि इसी समय कोई वद नाऊंड़ इंड्रा वह बहुत बाहुनों है में मोहन से कहती है में तो बहुत बाहुनों हूँ तुम कम बोनते हो । इंड्रांबह तो अपने को करनेवा को नोवा सम्बद्धा है , अब तो बहु अबने करनेवा को नेवा है। इन्हांबह तो अपने को करनेवा को नोवा सम्बद्धा है , अब तो बहु अबने करनेवा को नेवा है। कवा, कुन्या, उसका इह भी नाम रच तो, जो तुम्बको अध्वा कमें । इंड्रांबह तो सम से हम के मित आरम समर्थण करती है और वस सोना होरे बढ़ सोना होरे वद सोना को कार में वाले कि किरती हैं। सम

²⁰ st 2 grand of the safe 10 io 12 io 12 io 14 i

कहते के इतको कुउँमी की महीं। में कहती हूँ मुद्रको कहि सा महता है। यह मो और रक्की अपने पात "[1]

नुरवार्थ मानता है कि बनवन में बन्देवा है और मोहन आंबों में बता हुआ बन्देवा है, बन्देवा हर बनह है, बनवन में । और किर आंबों में बते हुए मेरे बन्देवा तुम हो हु2] वह मोहन बहता है कि बन्देवा को गोपी अलगों बन्देवा है हानि बरवे और बहुना मेदा है केर हुवर मेरी वायमी, हु इह हो मुखाई बोल उत्तरों है में तो हो हुवी, वब उस मरब को होड़बर अववाद हुई तनो है। हुवी, अब तो केल मिहटों को ग्रांत को निन्द्रर का टीका वर लगाया है । हु बहु

प्रवाद और मोलन कय महरा नारों में जाते हैं तो याने में जाहू व पिन्तामनि मूलने जानाते हैं तो वल व्या व्याराई और वलादुरों से मोलन को क्या नेता है, प्रवाद के लायते हुये जैन वल्ल नये कैसे दिली त्यान, बानियान क तपत्या के निये वंदान हो नये हों। वल तम गईवता और भी उंदा हो नया। भीरे भीरे कमल मेंसे लागों को उद्या करके निक्त कम्य उद्ये वेने त्यार में बोली, व्या करते हो १ में तुम्हारे लामने नंगी, क्लिनुल नंगी हुई वाती हैं।आहिर वम्हारे भी तो मेरी ही नेता में बाहन होगी। इन्हें व्याती हैं।आहिर वम्हारे भी तो मेरी ही नेता में बाहन होगी। इन्हें व्याती हैं।आहिम के निये नगता है तो वल उत्तने प्रति हत्याता जामित करती है। वल महारिया से बहती है तुम्ही तरीये लोगों ने पुण्य है हुनिया दिली हुई है। हिन्हां व्यापती उसे वहनी की संहा देता है। इतने तुमको करी ठीक तौर से नहीं सम्ब पाया।

[्]ट बर्नेट इण्डाचन सम्भ कार्ग ()

मेरी बहिन बेती नवारी है । । । उते जिल्ली का कोई हर नहीं है ज्यां कि वह तुरमीधर के देग में प्रबन्ध की नई है। वह कहती है वह दुनिया का मुरमीधर नाय है मेरा प्यारा तब दिल्ली दिल्ली मेरा ज्या कर नेगी १ कि को अब कोई हर नहीं । है2 । वह मीज आती वी तो वह हुद गाती थी। अतने तबतुव हुछ वा निया अह है "मीजन को रोगांव हो आया । अतने भी आंबे हुंदी और लगा मेते अतने जी हुछ देवा हो । वह आंबे बीली तो नुरखाई को दिवर दिवास पाया । माने को एवं जिल्ली किरलों को रियट के कारण दिवस तो हही थी । इंग्लों में यह दिव्या करोल कर रही थी । अतने नुरसाई को हतमा हुन्दर, नावण्य दुल्ली और गोरव गय करी नहीं देवा था । उसकों विव्या हुला हतने तवन्दर, नावण्य दुल्ली और गोरव गय करी नहीं देवा था । उसकों विव्या हुला हतने तवन्दर हुल याथा है"। हुआ

मुखाई उस निहर है व्यक्ति उसने मोहन को वासिया । मुरकाई मोहन से क्या है, ब्रूबरातों जा बाद या कोई और जा बाद । उस किस का हर सब हुंक वासिया । मोहन को या सिया । दुसको पा निया हुं-हुं बह हब को नहीं जोड़ना दाहतों थी । उसको श्रेष्टना योग बर्खा पन को यक्ता कर सो दहाँ मन्या है । 158

वसूना के किनारे जब मुरबाई नायने तथी हो हुए है से मोहन उसे हुम्ब के से अवदा कोहन हाथ प्रकृषर हुम्ब है से आवा मुरबाई के नेप हुम्ब के 1 व्यवपार पह में उसने वहां क्या होंग्र केटी अप 1 स्टब्स कम्बेटा में किंग को होएसर यहाँ बना आता है 1 पर बार कोई उसकी उसकी से सुना के बी

i. हरे कारे बुन्दाबन बाज कर्म go 192

^{2. 90 199}

go 203

w. • go 204

बह पींडे पींडे चूंजने नवता है। अब तो बूब देशा । सब देशा । है। है

पूरवाई तथा को स्वोकार करती है। वह मोहन से कहती है कुल नवे कि तम पूरवाई तथा को अप में केवल एक नारों ? और केती नारों ? जिलकों नायने गाने को तुम्बर कमा जेत में अपने को वेच हालने के लिये तिल्लाई गई, विसने अपने कारणे हो बड़ी से बड़ी से बड़ी सीलों सीलने बालों को वेचा, किसने हाथ में हुए होते हुई जो नाजिएलाड़ी यूल्म से अपने को न बढ़ा पांचा। [2] वह लोचती है कि बड़ी कि काम और स्थन को घोड़कर अपने सु मूम और मुसन के न बड़ी। [3]

नुष्वाह को अने वी अवगरवाय है " अस्तो अवशय के तामने कियों को अस्तावारों को नहीं जन सकती । कोई अस्त सनाता है कोई मंदिर को सवाता है, वर अन को सवाये किया काम नहीं जन सकता । " हो वह देगा वो सवाकों देशा है अपर असम कोई मंदि तो । हुन तेवा अमें मन ते और वस्तोंने से तेवार करों । अस सोने से तेवार को हुई तेवा कमों इन को रखा न कर सकेगा। "हुई तब त्यानों है बन ते उसे कोई मोध नहीं । वह सोने व तेवार को वस्तान के साम ते हैं , हुरवाई ने बहाज सोने के उस हुन्हें को हुरे का के साम नहीं । वह सोने व

I. ब्रुक हुटे और बुन्दाबन बाल वर्ण पुठ 222

å. * go 219

^{3. •} go 235

go 236

^{5. ·} go 237

^{80 539}

नुरवार्ड वही चतुर , तंगीत कता में नियुक्त, नृत्यकता में दर्ध , क्य तोण्यां को प्राप्त वेग्या थी जिसे वहने धन को भी वाह थी । परण्तु वाद में दर्शी नृत्यार्ड त्यायों धन का त्याम करने वाली, हृद्ध के कवन में म्प्त और मोहन को नेतिया धन वर्ड । मोहन के अवस्तान में क्रम में क्रम में हृत्य मान करने वाली और उसके क्य सोण्यां को उपासक थन गई । उसमें वेगा प्रेम भी वाद्धा था । यह स्ववेदा को लोड़कर ईरान नहीं बाना वाहती थी वाहे बाम हो वर्षों न बती बावे । मोहन को अवने वातुर्य के कारणाडाहुओं से भी बवा नेति है : वेद्या होते हे हुने भी उसका वाहन बड़ा उपनवन और साल्यक है । हुटे किट उपन्यास को यह प्रमुख बाम है । वेदया से बहुतमीय वाल्यक है । हुटे किट उपन्यास को यह प्रमुख बाम है । वेदया से बहुतमीय वाल्य के व्यव्यास हो यह प्रमुख बाम है । वेदया से बहुतमीय वाल्य के व्यव्यास हो यह प्रमुख बामों है ।

रोगी

हुटे विट में हुलरा प्रमुख बाज रोगी है। यह मोहम विलाम की विज्ञा-विता परणी है। यह एक साखारणा रूजी है। उसकी बातें तीजी होती थें।।
तबा रववाव बहुवीला है। देखिए रोगी का च्याह हुए कुछ महींगे ही हुए
थे, परण्यु उसकी तीजी बातों और ११६ बहुवीने रववाव की आयु व बरतों
की बाम बहुती थी। (उद्देशीमां सहज ही दक्षी वाली मही थी और वितर की
बामती थी। रोगी अबहा मोहम से कहती है "और तुम ब्यूत कायर घर मे
ही मुंहबीरी दलता है। बाहर देते हो बाते ही बेते खिल्ली के सामने पूला। उद्दे मोहम बहुता है अब न रहुंगा इस घर माँ बेटे में। बित घर में तुम सरीजी
लांदिमी हो उस घर युद्ध सरीखा कीई रह वी नहीं सबता ।" [44] रोगी के
बाली महीद सबहें क कारणा मोहम घर छोड़कर दला बाता है और

रोगों के को प्यार करतों है। यर हुत्ताथी का कार्य करती है।

कई/ कन्डे पांचती है। मेरे इम करने की प्रेरणा किये को यह यहार में है

वस कानुमनो आता है तो कि को सालर कर केरी है। वसाने बना किये है

रोगे समती है। यह परधाताय करती है यह मेरी की कारियों के कारणा
वस कोड़कर यो नये के और सहाई में मारे मये। म में देशा समुख उसके साम करती और म हा समताम मुख्यों केमा कर दी,

के किल्हुल का दिवाह, अल्ला की तरह बीवन वसाईमी, मुख्यों क्याओं की

रोनी का क्य कर्का है यह बाहती है कि मरदों से तो कुछ हटक सेना बाहिये । यह कहती है याँ की बहतों बातों में हम नीम भी सुम

i. हुटे कांटे कुन्दावन ताल वर्मा हुए io

नेती हे तुम बर धर्म की बातर्रे की । किर की उन लोगों ने तो कटक नेना वाहिने था । बुक तो वो बोमा उमहे वाल । "है। इउसे ब्यूडी और महनी ते हैम है। यह तीयों में इनके बिना नहीं बाना वाहती " सेने नहीं वाने की में। तीवों में वाने के लिये क्यहे वास्ति, कुछ महना मुश्या । योंडी धन हुनी का १ की हो 121 रोगी तोता ते बुट का मान नाने की भी कहती है। मोहन ने कहा है मोहन बक्का - यह जो कुछ न करावे तो धोड़ा है। अहका धर से निकालकर सुमकी मरवा हालने की तानी होगी इतने [*] 3] रीयी यानी बहुत बबती है । मुरवाई ब्रह्मी पुष्टि करती है भी यानी बहुत करती है। यभियाँ वी बाँति की ।" हाँ दई बारा, दई मारा, मियुता भोडी- विनती करना केवार है, व्यक्ति उतकी मानियों वा अवाना अन्तिनत है। अरोगी वी सम्बर गंगावन की तरह उज्यवन है। रोगी जांकी म्बर के कहती हैं "मैं नैमाजन को तरह उजनों हैं और तौता की । वहाँ तीर्व वाजा को आये हैं और बता" । 5% वह माली न बक्ने के लिये तीयण्य वाने की भी तेवार है वरण्य मोहन को उतका कोई बरोता यही । वह कहता है वह बन्याबन और मधुरा के की कारे में बिसों की जिस वर उठाकर बर ने और तार्गंध का बाचे तो की को बरोता नहीं होंने का 1363

रीमी वा वरित्र ववार्ववादी है उसमें नामी देने वा दोख है परम्तु वात वराववा है। यह नैना वीतरह उज्यवन है। तीता वे साथ रहकर वी

^{1.} हुटे वटि हुन्दावन नाम वर्ग हु0 134

^{2. * 90 135}

i. • go 211

^{. •} go 220, 221

⁹0209

[•] go 221

उनमें नोई वारितिन दोध नहीं है। वह रहि ज़ामीना निनान का नीवन
जनवाँ में व्यवीण करती है। बनावाद और अम्ब्रामों ने प्रति आन्धित
लोने ने वारण वह तीला नो हाडू ना नतत नाम नरने में वन अर्थन नरने
ने निवें प्रोत्तादित करती है तीचों ना अम्मा करने नी जनकिता है।
विकास वारितिवादित में भी निनाईदा ना सामना करते हुने जीवन यायन
करने नी विकास उसने निनात है। हो नौवद सद्वारित रहकर ही जीवन
वायन करना वाजिये वह नी विज्ञा अन्ने जीवन ने जिनती है। अन्त में
पुन: उने अपने वाल नी प्राच्चा हो बालों है। वह अनर ने मानों के बालों
वरणतु अन्तमन ने विक्राह नारों है। विकास वारितिवालों में नी नहते हुने
जीवन वायन करने नी विक्राह नारों है। विकास वारितिवालों में नी नहते हुने

्राप्त्र करें। स्टब्स्ट्रेस

श्वनयमी अवस्थात हो श्वनवनी का आएउव हा नाम निस्सी
था । पुनरे रानी श्वनवनी के साथ मानसिंह हा कियाह 1462 के
स्वत्य हुआ होना । मान मन्दिर और दुनरो महत है हुवन हो हत्यमा
को स्वनवनी है हैरना मिनो होनो । केन्याय नायक होनु नायराहे
मानसिंह श्वनवनी है नाम वर होने हैं । श्वनवनी और हमा धौनों
हे सिरो विश्वास हो ।

हमनवनी हुनर हुन की थी । वह राई गाँव की दारह जिलान करवा थी । आरोरिश का और वरम साँग्यां के निवे प्यान के पहले ही पृत्तिद्व हो गई तो । उत्तेत विश्वय में परम्परा में वहां तक क्सा नमा है कि राजा मानसिंह राई भाँव के वंगत में विश्वार के लेने गये तो देशा कि हुन गयमी ने वंगती मेते है लाँग वक्ट्रकर मोड़ वियो । तुन्धावन नान वर्ण की एक लाइय ने परम विद्यात के साथ बतनाया कि रामा मानसिंह अपने महा में बेठे हुने में नोवे देशा कंगती नेता के लाँग वक्ट्रकर हुनन्यमी मरोड़ रही है और उसनो मोह रही है । ग्वासियर कि में वक्ट्रकर हुनन्यमी मरोड़ रही है और उसनो मोह रही है । ग्वासियर कि में कि मोवर बंगती मेता वहुव गवा और राई गाँव है जो म्वासियर से पश्चिम हिम्म हिम्म में । । जीन है, हुनन्यमी केनी भी भी मोहने , मरोड़ने के निये जा गई । इ गुकरों की एक हुनरी वरम्परा है कि हुनन्यमी ने जम्मे पुत्र को राज्य न विश्वताकर विक्वनाधित्य को राज्य विश्वतावा। वर्ण की की वही मान्य शास्त्र है ।

निक्नी की आयु लश्कय पन्द्रह तोषह वर्ड की की । परम्यु निक्नी वर्षित है और पुर दकाप की लाकी हुक्की और हरेरी । विक्रम विकास करने हैं बहुत हो तियार थी । हुअर की मार जिसाती थी । देखि "निक्नी ने तीर क्यान तैयानकर आतन नमाई । तेरत तथकर क्ष्मय वर्षित तीर एक तर्र के ताय हुआर के एक बाबू की प्रोडकर गर्दन के पार आधा निक्रम गया । हुआर हुइ हुइ करने वहीं चक्कर कीने लगा। अदल आंग पड़ा। निक्नी के क्यान की और पर हुआरा तीर ताव विद्या की एक वर्ष क्यारान्त हुआर तथायत हो गया। वह नेहुआको थी ही नहीं निक्षम नोने देती और मीर की न मारता । विद्या हु हुद तुन्दर और हुइ हुई तथारे की है जैती ही तीर क्यान है व्यक्त की निव्यक है । हुआर नाहर के तथारा की है जैती ही तीर क्यान है व्यक्ति व्यक्ति है । हुआर नाहर तथार की एक ही तीर है यार निकाती है । विक्रम विद्या की सांतक पदले व्यक्ति के कि कि वित्र ही तार निकाती है । विक्रम नाहर तथार की कि कि कि लगाने वाने किती पहल्दान ही ही ।

हरती है कुछ जो हर अरही तरह बो हर गया न कर हु सबसी अरहा है यहन्तु बी दन का कुछ देश हुनकर हो न्यूना वार्ताहर में केन्सी का नाम वारती दिशाओं है किन गया है । यह बारते हुआ को अर्थनी पीछ वर नाट तेनों है । जिल्लों का नाम वार्ता दिशाओं है किन गया है कि

^{। .} हुमन्त्रनी प्र**७ ५ दुण्यावन नात** वर्धा

^{2. 1017}

^{3. 1026}

^{4. 2 6040}

^{5. *} E058

^{6. * #0 60} 7. * #0 60

हमारी विन्ती भारी से बारी हुआ हो अवेशी पीठ पर बाद बाती है। वह अवार विकार नहीं पिनता तो जुंगल में केंद्र देंद्र से पैट गरती है। पट अपनी में वेबन्द्र नहीं तथा पाली तो जंगली मेड़ी के परती से तब देंद्र सेती है, हुए में एक बार उस बाफिर आपर बालिदास की अवन्यना का मेंग पिन केंद्र सेती है, हुए में एक बार उस बाफिर आपर बालिदास की अवन्यना का मेंग पिन करते हैं। उसके मांच का नाम रहाई है। उसके मांच का नाम रहाई है।

पुनारों राजा ते व्हता है" महाराज इत तह तो हा नाम

प्रभवनों है। गाँव के लीग इतको निष्णों कहते हैं। यहाँ है हमारी

वह कप्या विती एक एक तार ते हो हो नाहर जरने , मेंते की तो वाले

सुजर मार निराय हैं। ऐसा निताला समाती है कि आपके तामपत

हैं।

पे वक्षा जायें। गातों भी बहुत जटहा है। हमारी निष्णी। तब

वुनों ते सम्प्रम्म है। राजा मुख्याजर कहते हैं आल्यों जो बन्य है वह

गाँव वहाँ तब दुनों ते सम्प्रम्म हनन्यनी बेती रही हो।

हैं।

हम्बरी हमन्यनी राजा सामसिंह की विद्योग रनेह गावन हो गई।

वह विवय केलने की तैयार है वह पहला विक्रवारों करना व माना

व्याचा तीवेना प्रावती है अवहब्हती है " मैं पहुंगी विक्रवारी तीवेंगी

और भागा- बवाना को हतना अपनाज्यों, हतना अपनाज्यों कि वब

वही आप हुने तो द्यान सम्य हो वालें । हम्मवनो तंगीत तीवेती है

विवना पहला विवनारी और न वाने बदा की व्यों १ राजा उनके

^{1.} हुनन्त्रनी हु० 63 हुन्दावन्तान वर्ग

^{2. 40 165}

^{3. 90165}

कात अधिक नहीं केंद्रते उत्तरे ।" समय पहुने पर यह लड्डना वास्ती है। यह बहती है।"समय पड़ने पर में सहारी ।" उसका कथन है कि सर्तिया की आब और बिता की छोड़कर तीर और तलवार के साथ प्यार करना वा क्षिया। वह बहती है, वहने की सतिवाँ ने आग और विवा की जितना प्यार किया उसके बराबर तीर और तलवार के साथ भी करना वालिये था । अने द्यांको देशों को किने हे निवट फिर देखिये गरा और बाबी म काम।" वह मानतिह नो प्रेरणा देवी है कि उसे वही कार्य करना बालिये जो शिलवाँ के लिये उदित है। वह कहती है भी दिवे देशको शेविय के लिये बात समय को उद्मित है उत्तों के अपने में बुट वा की। रकात को रका की विकास को दूर वर बीजिये हैं उनकी रक्षा का व बन्ध सहंगी । वह किती पूरत के तामने मूल्य नहीं समा पाहती । वह बढ़ारि है "तिवाय आपके और विशो पुत्रव है लगमें न में सुरव करेंगी और न नाकी 1^{. [5]} उत्तरी धारणा है कि ⁸ भैने अक्षाणारत है बढ़ा है कि देश की तथा शास्त्र द्वारा सी वाने वर ही शास्त्र वा पितन हा सकता है। मेरा वही प्रयोजन है और हुए नहीं । कु ने की राय स्थानवनी है इहात देखा और तहनारिता ते बनाये जैसे पूजरी, माल्युवरी, अञ्चल मुकरी और मैमल्युवरी मुगनवणी ने अपने पुत्र राजतिंड और बावर्षित की बानीर का अधिकारी वही बनाया यह उतका अविट cara of a

[:] अवनवनी हु० ३२० वन्दावन वाल द^{्र}

^{2. . . 10 321}

^{3. * 40 323}

^{4. 90 383}

^{5. * 90 309}

^{6. * \$0 439}

ह्मनवनी ने भागतिष्ट है लाव में एक पत्र दिया । मानतिष्ट ने पढ़ा ।" उसमें सिका था राजतिष्ट और बालतिष्ट मददी था बागोर हे अधिवारी नहीं होते ।"

प्रमाणनी बीरनिया माधिका और दिशामका है। यह यावती को नवानियर का राज्य उत्ते पूर्वी के दिन सकता था। यरन्तु उत्ते अपूर्ण द्याम किया कितने प्रतीत क्षांका है कि उत्ते क्षण भाव की मोई बौका नहीं है भी उत्तेन मामलिंह पर अविकार होते हुए भी नेपूर्ण राज्य होड़ दिया। इस प्रकार उत्तमा यहिल उज्लबन और आवर्ष है।

^{±ं}ड 1. हुननवनी ए० ५५७ इन्दावन ताल वर्ना

्राधी कर्मका

बाबी ध्वनवयी वा निस्त्री की लोबी है। ाठी और हुवनवनी दीन्। सब्दार ह ो । उनहीं जाय वयवन वयह सोवह वर्ष ही धो । बाजो हुक्ती और हरेरीडी । वाने को नहीं बुडा तो विकार ते इवर यहर करती हो । कर्म को लिकी है होनों गाँव व गरीब धर की छोकरिया है बाने जी नहीं पुढ़ा ती विकार ते पुजर बतर कर उठी। काई पहिनाने की नहीं । शर महिया पर तिर्फ पूर, जिसते करताते की कुलनाधार धोड़ी ती ही बच सवती है और मैं <u>ज</u>ी नहीं । [2] विकार नहीं विकास तो जेनल देंद्र केंद्र नरती है। यह क्या है वैदनद नहीं भगा पाती तो बंगली पहुँ है परता से तन दक नेती है। उत्तर अदिलीय अलाबारका तोन्दर्व और तारक्य या तथा वह भने की बाँस के और ते बार हालती थी। अरमी केते का बाबी दारा बाँस के तीन से ही भारा जाना , दूर दूर तक बाहे से ही समय है विक्यात के नवा । अवर मानवा जी रावधानी माह देवार जी रावधानी विस्तीह मुक्तात की रावकानी, अक्षमदादाद पहुंची और भी अन्यत्र स्थानी पर। era et pfec gar on chuf gefauf er apfen afgettu, mereren तोच्यां और नायम्य की 1- विष्यांकों के छन्ते की औवा भरती यह व करती है। वह कहती है" एवं बरशी के तिये भी । अभी वाँची का अस्तर नहीं बर्राहरें। " अरबी भी शहत बीर है। राजा ने पनाइयाँ में हे मोरिक्यों की माला कीली और लाबी है की में डाल ही तथा उतेल कहा " हुन की बहुत कीर हो 1" [6]

^{ा -} हमस्यमा पूठ इ तुन्दावम् आस् वर्गा

^{3. ¶063}

⁰¹⁰⁵⁻¹⁸⁶

वाशी को अपनी हुनाओं पर मरीता है और यह नहीं वाशी कि कोई उसे घेटी कहे। उसने गांच के निम्दाबार को हुनाते हुये कहा" कोई मुक्की पांच किता की घेटी कह वाहे वह मेरी निम्न स्मय ही क्यों म हो तो में नहीं तह लहुंगी और न यह तह तहुंगी कि तुमको राजा का दास या रोदिवारा कहे। हम लागों को मनवान में हुवाओं में जब दिया है और काम करने की लगन। है कि हम वाशी मी कहती है कि मैं तब तरह को विषय हेलमें को तैयार हूँ तो लागों मी कहती है में पांचे नहीं रहुंगी। है वह साहती है। राजा कहता है दिया ताहत बाली है हो हो सकता है। वह किती के लगने मुख्य नहीं कर सकती। सुनमवनी कहती है दियाय अध्यक्त और किती पुन्हां के सामने में हम कहती है हस्या कहती है हिसाय अध्यक्त और किती पुन्हां के सामने में हम के सामने में हम कहती। सुनमवनी कहती है हिसाय अध्यक्त और किती पुन्हां के सामने में हम के सामने में हम कहती। सुनमवनी कहती है हिसाय अध्यक्त और किती

आ को के दरिस में लगाम तभी प्रमायनी की विश्वतिकारों है। यह भी वीर है देश में ता है और मुम्मयनी की हर कार्य में सहयोगिनी है। इस प्रकार में मुम्मयमी को स्वाम में सम्मये

^{।.} हुननवनी पुठ 2:0 पु[∓]दायन नाम वर्ग

^{4. &}quot; 60 200

^{3. * 50 273}

^{4* °} go 263

esses

गैरी नहीं मोनी है। जिम्बन वस पूछती है कि इतना नम ने लो उसने पिता उरलर को है। इसना नाम गोरी है, छुनी है। बड़ी बोनी है है। गोरी अपने पहा घराने और कम मुंबह के निये बन में जाया नाया करती को। उसना बेहरा जाना का। वह निन्तारक्ष्य भी देनहीं वर मधन ते निनती और जब बह न होता तो कुन रव जातो को। हुई। गोरी ने कुवन के लोटे में हांडी से नायर हुव डाल दिवा है इस इबन ने पूंछा कि जान पेट काटकर हतना हुव नवों दे दिवा तो वह कहती है "हमारे वाल देने के निये है हो नवा हुव क्यों दे दिवा तो वह कहती है "हमारे वाल देने के निये है हो जवा हु हुन इस वाल है वह और नहीं नहीं है को उसने वाने के वोग्य कम हो वाला हूँ। "हुई गौरी नुवन विक्रम को है के हमने नगती है। देखिय अस्थान कहती है" वर वहां नियति से हम्हारे होने को नात नहीं हियों है। देखिये अस्थान कहती है" वर वहां नियति से हम्हारे होने को वाल नहीं हियों है।

भीको अस किलान के साथ बाजिस गाँव बालों से और मधान को कम्हलन पालों से तो किलान कलता से कि लोट बनो पता से से तो अपना यह गाँव अध्या तो भोको कलता से कि नहीं क्या सोतुनी नहीं । हुन बाओ । वहाँ न कहीं कोई नोक्को बाक्को किस बावेगी। दुन्ह सससे प्रतीत होता से कि वह सावती है। यह विकारिन बनकर हुवन बनकर नहीं बाना बालतो क्यों कि उतने उसका तिरह कार क्या था । गोको सु बहुत हुन्दर से यहाँ तह कि कि निमानों भी अने सोन्दर्श हो हुनवा गोको से हुवब और बहुत हुन्दर क्य देशाओं के साथ करती है।

	30 F	faga	farja	इस लात	quf	10	39
2.						0	140
ž•						80	132
440		•				20	132
5.						80	131
6+						(3)	159
7.	*					40	100
8.						No	103

वय दिमानी पुरुष विक्रम के मारने का बहुवन रचती है तो यह पुरुष की बना क्षेत्र की प्रार्थना करती है वह प्रार्थना है व्यवाय कह रही वी हुनाँग्य ुते ने नेना वर उन्हें बता देना उनके बात तक न बाना ।।।। जब किंगनी के लाग कुवन के विवास का प्रस्ताव स्रोता है तो अवन स्रोवता है कि और एक वर्ष । जीवनता स्पेष्ट सीन्दर्ध और विकिता की मुर्ति । जिसे बीवन संविक्ती धनाने का रायध पूर्वक व्यव दिया था । मेरे हर्वाच्य ने उसे मुक्ते हीन निया । 121 वह बामना करती है कि इन हरवारों के हात ने वे सब वाचे । [3] वह अपना प्रका देवर वी अवन को क्याना बाहती है। " मैं अपना प्राण देखर जी उन्हें केले बचा पाऊजी "[4] वह कपिक्यम से कहती है " मैं ज़बन ते हैम बरती हैं वह बारे था न बारे हैं उतकी रका में अपने तन के बण्ड बण्ड करा हुंगी । मैं उस अवसर पर हर नहीं रह सकती । हुंगी वी सी दौड़ पहुंगी और जनती आय में कुद बहुवी 1"हुडह में विचार करती है "वर्श तरकाल वर्षी महनी । कथापि नहीं । उसकी रक्षा करते करते महैनी फिर बाहे वे की ही रोवें.. में तो मुख्य के साथ देसती बाउमी। और महिला में विधार न हुआ और उन्होंने कुछ बेली बारी करनी बाबी ती कह हुंगी , मेरे प्रार्थों के स्वामी तुम्हारे विक्य यह और वह बाल विकाधा का रहा है 1"141 उसके बीतर तास्त है और वह बाहती है कि वनवान उसे बढाये 1181 नीरी प्राणा रहते राज्युमार वर अधि वहीआने देवा। बाववन से बह बहारी है" ब्रुवन के बातर मण्डव के जात पात है स बहुत से होंगे और हम तुम बोड़े से हो पर इससे प्या । यह तक केट में जाजा रहते उस वर वर्तत रावकुमार वर अधि मही आने हुंगी । [8]

वह क्षेत्रतो को वस एक गाला उसने अपने हान को पहना दो और दूसरी को में हाल तो। वहुँच में अपना प्रांतिक य देवकर पुरुक्ताई में कितनो क्यमती हैं 191 यह बहुत हुँकोत्रिय है 1710ई यह नहीं बाहती कि अपने क्यन से हिने।

वर कोल्प कि ह है। वह ब्लेल्प पानन करने के लिये बनवान से वर्गना हो यायमा करती है। यह बाथ बोडकर प्रार्थमा करती है, है वरमान्ता तुम उक्याने वा भार्य सुवायी। में अपने क्यन से न विश्वे। मुक्के क्षांच्य वालन करने की कारित भी मुद्दे माता पिता का भगा प्रकाम प्रिय बनाओं। है। विशेष अपने को न विकार से वहीं निकार समझती है और न विकार से करती है। वह किंगनी ते कहती है स्वार्कित है नाम है ही रीम नाम नवा । आप हुई नरी नियो नहीं वाचेनी । में किसी से नहीं इस्मी 1"12] महत्त्वपूर्ण समावार सुनमें के निये उसका मन बहुत व्यक्त है। [3] क्षिंक्यन वेद से गौरी के लेम्बन्ध में बहता है कि वह बहुत पड़ी लिखी है, बहुत की वरित्र की है और धुन लगन की है। उसी ने इयन के सम्बन्ध में बंहवंग की अपने कार्नी से सना और बतनावा देखि वर्षिया रोक्य बहार है यह तहनी है वहाँ की बहुत पढ़ी लिखी बहुत जेंग चरित्र की और बड़ी हुम लगन की है। मैंने उसे अपनी बाहिन बना निया है। उसका सारा पुरुष उसी को है। सबसे पहले उसी ने इस वाइबंध की अपने बानी तुना और मुद्दे बतलाया और उसी की क्या का बन है जो मुद्दे यह यह हात में लगा ।" १६१ वह बाब केंद्रे की रक्षा करने में जैन जैन बहवा देगी । कही जीनी और हक्तिए है। अधिका अलग है" एक दिन कह रही भी कि बाय केटे की एका करने हैं अवना अंग अंग कटवा हुंगी । बहुरे नीकी और हुविया है 1-15 वेद बहता है कि अपन से उतका के वा और उसी के साम उसका किया ह होगा ।" अवन का उससे बरतों का क्षेत्र वा । अब उसी के साव धनका किया होना । यह। 161 वह इवन हे बताने में अपने प्राथ तह शीने की तत्पर है। वह स्थित के स्वती है, " वेदा में बास्ती हैं कि स्वाम में मेरे प्राण

	fig. (-afg-	erra da	f go	251
2.		king ligasi sa king bentakan dinakin	ties ook and ook verkeeld	PART GUN ALLE SU	270
3. • **	***			80	271
•				g 0	277
				10	277
				90	278

धने वार्षे तो तम हुए वा वर्ष " | 1 ह सुवन को रक्षा करने के लिये देहको वह जिल प्रकार प्रवास करती और तक्षण होती है 1: गोरों मे प्रवण्ड देन से ताथ हिमानी को हुरि वालों बांह को अपनी वांह में लवेट कर बीर का इटकादिवा । हिमानी धक्कर के कर विर वर्ष । गोरों में इतने देन से ताथ उत्ते अपने बुटने को हुल हो कि हिमानी औको वा वहां । होनी हुरिया होवक के प्रकार में धमक नर्ष - कोई इत दिला में कोई उत्त दिला में । गोरों को हुरी उत्त प्रवास में हुटकर निर वर्ष । वह हिमानी को वोह वर बहु के हो । 142

रोमक गोरी को बम्यवाद देता है, देता बम्य है वह देता जहां तुम्हारी तरीको नारियां बम्य तेतो रही है। उत्तर्भ गोरी के तिर वर हाथ देशा- तुम् को धूबन ते भी अधिक प्यारी हो देता। [3] गोरी अपने धिता के अपा को भी धुवाती है। उत्तर्क धिता में बब दे अयोध्या ते में मिथारण्य बाने को ये रोमक ते अम्म दान्य तिया था। " मुहकर उत्तर्भ अपने अम्बद्धार अम्बद्धा में तोने के बण्ड निकाल और रोमक के वेरों के निकट रह दिवे हाथ बोहकर नतमत्त्रवहीं हो गई। [4]रोमक नेकहा कि भोरी ने भी दिया है वह अयोण्य है। विद्या अस्वत्र विभाग के निक्यता ने नीतरी लाखन्य थी मुख्युलता, बीती के विद्याद की काचा और वर्तमान की निक्यता ने गोरी को अधि हैं हैं। वीरों और मी हुक बीच रही हो। "[5] भोरी और बुवन का विद्याह होम हवन के मेंनों के भीय सम्पन्न हो गया।

I. मुद्दन विक्रम विक्रम विक्रमाधन नाम वर्गा पुरुष 281

^{2. • 958 306}

gc8 307

g= 3 3 14

QUO 315

fearai =======

किंगनों का पिता नीत्रमंत्र वा जिएका नाम तमुद्धी के बार की प्रतिह वा। किंगनी तीवी तस्यों और मुक्षानों की 1112 सुन्तर रेकाओं बानों किंगनी वहाँ के वाम वर वहाँ क्यानक और सुन्य देकने में तम्यों की 1221 किंगानी नीकरों के काम वर केती तथक इतिह रकती की केती की उनके बोचन वर बी131 और सामा मत काओं बोमार वह बाओं । इन्तुवाँ के कारणा रोग देते की बहुत वह रहे हैं। वेट को इतना भर तीने भी रात को वेत की रक्षानी केता कर तकीने 3 उकर एम तीने इतना कर तीने की रात को वेत की रक्षानी केता कर तकीने 3 उकर एम तीने इतना कर वाम हैर तारी पत्तन वर कर बोचट कर खाने हैं। जाम को अवनेट रक्षा करों। इन का दिन किंग किंगा "1141 उसकी वाक्षानों वर सामा की

वस हुवन और रोनक ते तक द है। उसमें काम करने का तह बहुत है।

तुवन और रोनक ते वह है वो तक द । उत्ते हुवन ने कोई लगाये में बाद है न १६६६

वह हुवन के ताथ विवाह करने का अववंग रवती है जितते उत्ते मार तके। "वह

हुद नवनाय की है। बोदान वर का ताब । उसके हुद्धा के किती कोने में हुए ती

कोमता सोती सो । 166 हुद्धन अपनी माता ते कहता है, तोबता हूँ माता

वो केते निवेगी कियानी के ताब । 176 हिम्मानी आयू में बड़ी सोने के कारणा

तब तथ ता वर उठी है। अववंश ने तीवा कियानी तक्ती में नहीं है।

वहीं आयू को सोने के कारणा सी वह हुए तथ तथा ती कर उठी है "166 उत्ती वो हुवन के मारने का बहुवंग रवा , मेंच, दोर्टवाह, नाम और न वाने कीम

कोम उत्त बहुवंग में वह दो गये हैं। मेंच ने कहा कि मोनमांच के परिवाह में रोति

वानी आई है कि वह वहु हुनके बानकेत को बूबा करते है किए विवाह सोता है।

विभागी ने हुद्धन ते बहा कि मेंच हुँद्धकर करियेगा कि कियानी का जीवन तुनी सो,।

1.	104	fasa	grutur.	ara esf	80	31
2.		•			80	
3.					90	140
Eq.		*			60	141
5.					go	203
6.		•			90	214
7.					(Malay)	220
					10000	293

भवन ने बहुत छोटे है जण्ड में देव निया कि हिमानो के बराबर कुत्या क्यायित हो कोई एको हो। हिमानी को हुरो वालदेव के मण्यार में निकल पड़ी। वह होने हो हुरों को हुवन को पीड़ के आर पार केवना बाहती थी। परण्तु नौरी के हुरों कहने ही बिय आई थी। मौरी ने प्रचण्ड देव के साथ हिमानों को हुरों वहने ही बिय आई थी। मौरी ने प्रचण्ड देव के साथ हिमानों को हुरों वहने हो हुन हो कि - हिमानों आँकों वा पड़ी। यह हिमानों को पीठ पर पड़ बैठी। धूवन ने कहा कि कि हिमानों आँकों वा पड़ी। यह हिमानों को पीठ पर पड़ बैठी। धूवन ने कहा कि हिमानों के हाथ पीठ है बाँच नों। हुनों अब भी लिये है। हह पुकार हिमानों के बहुवंश का काहाकोंड़ हो नया। यह हीई बाहु के साथ दिवाह करने को आंकों दो। उहें एनेह करती थी। हुनन से कोई मारे वाने के बारव बदला ेमा बाहती थी।

वह क्षण के क्षण में हमारे तम्बुक आतो है परम्यू उसके नारण हो पोरो का करिय उसर के सामने आधार है। वह हुए निर्धान और कको की बावनों से आस होता है। वरम्यू वह हुका विक्रम उपम्यास में एक हुनुक पान है कब में हमारे तम्बुक आतो है असके पास हम्बर अनुक्रम है और सुम्बर वस्त्रों का सामन है उसका करिय समाव है एक क्षण के हब में हमारे सम्बुक आता है।

afternare a

अधिक्याचार्ष अभी किया तेम वा नेविया की सहायता की
अधिका को कर की अभी को ही भी ही हुए कर तो वाका के की
भाष बोकर वावर की अधिक करवार्ष के यह है नहीं के । उपलोधे अपनी
वाली वाकीर की अब की बच्छा है बहुतिबाद केहारवाचा अपर हुन्हें ने नेकर
विकास है रावेष्ट्रण तक, और पांचका है द्वारका लोकनाय ने नेकर हुने हैं कहा
और वाक्याबहरों तक तेवली मीरिट, महैदारवाचे, वाद ही प्रवासित बनवारे ।
अभ्य तम्य बाते हैं के जीवायावाचे करते हैं कि अब अमे विकास पर विकास केल
वास बरते हैं के जीवायावाचे करते हैं, तेना वह तम हुए बड़ी है विकास
है जहीं के बात बिता है की हुए तेनी हैं का तेरे आर वह तम हुए बड़ी है विकास
है जहीं के बात बिता है की बात का है है हमान वह ते हमान की ले

⁻विविध्याकाचे पुष्यक् ११ . पुरस्कावन साथ वर्षा । अवस्थितकाचाकाचे-पुष्यक्था प्रमाणक साथ वर्षा ।

हवाँ अपेर अन्यापिकाहर यों हे किए उपक्षे और ते अन्य-वान्य था । वर्ती ते उन्हें पोचन और सर्व की रिकार केंद्र तरवा वन्ती करनी अर्थित यो गयी की कि जुलाकों वा व्यवसाय उक्त पर पहुंच भवा था। शेक्टिर अरेर प्रशिक्ष के बनाये वाले राज जारी वर अराह बाजरी व और और व्य है हुन्के माने राज्य कारी वार महिकार है आवार सह को के । तकी है महेरपर की महेर प्रतिकाद कहाँ है बीचियाँ और जारी मही मही है वारण हुई । उन पर अहिल्यामाई वा बहुत स्मेट वा । या वारी मा-सब्दुरी है परात रहते हे महानी हा अबाद हो कहा, तह अन्तीचे उनके किए महान मनदार रिके । रिकार को भी भए की क्यों क्यों क्यों एकी । 11 कह तीए अरेर प्यापीपुण के, अपनेचे सुवाच तीत को क्षेप के कि से वर्षपूजर अलग रियार । ये की जरेर यान में लगेर रहती और ब्राइल्यायाओं में लेगिकी है प्रति क्रेंच है। व क्या बरकर फिन्कुरी को फिलाबी है। और उसके पाल बेठी पटलींट का अपने बीजा आन्य में बाती हैता उन्हों है। है बीप में भी रिवायामा करती है। उन्ह तेको और व्यार होंगे वर भी है अववार वि सन्तिवस स्वाप प्रवा वाड व्यवस्थि करी शोकती है से विल्यूष्टी के विल्यू में कार्य औ

क्षा क्षा स्थापन स

²⁻व्यक्तिकारकार्यः विकास-१ (2-11) विन्यक्ति स्थाप्त वर्षाः ।

³⁻वारिकाचाचाराई प्रचल-115 हुम्बास्य वारत वारी 1

है कि "उन्हें द्वा बड़ी क्रिया बाओ क्यान ही हुईत है पूछ क्या शोज से अधारा परिका तार्वें होता । वह योगी कीवा की वार हो नांच क्षी वारोगी । वे केलवर रिक्रवास है कि " क्यार ने व्यो वास वनक है क्षात क्षेत्र के नहीं को अवता । ^{42 ह} वर्ता की अधिक्षाता के सम्बद्ध में क्षित ते हैं, "अधिल्याधार है रिवती साधा-नाची ही शक्ती न नी वहें पहले वाले में ही यम अमल मुकारता की चोद में केरी छोत्र वह की प्राप्त चीती है लाया-रण रूपान मानिको थी निहन्दे की प्रारी निवनी हुए है कर की हुवैदार मानत रराय में अपने वहींने क्रणीराय का विकास लक्ष्मित किया बाद और बीचन पर करोर वरिरोधारियों से लखे लखे हती हती हो ही हो है। वरकार में जर्म के अरदाय सीचे जाते बरदात के अरह एक फिलाकि तथा बर अर पर विकार वह ि, पुरस्का को संगर मलगरराच की प्रश्ना क्रिका की वी से अस्तियाचार्य d our rest trym grover spar d warrers a [4] de tropograf to dearly projected in the grant and a first of the car was a straight of the " अधिकामार्थ औरी औरी वर रिलाय रहती ही, और विसाय है सम्बन्ध के अभी को करवानित के की पत्री अपना जरते की 1¹⁵¹ अविश्वाचार्व मान्याता और जरबनाय इस्तारिक सी में भी भा अर के विषय गयी । मोजवार ओको पर जा क्षमदोर के अधिकारी में बोर वेचके स्थी के बाक वाम बादने और को पर विकास कर में अवन पहल विकास की जाना की पानी से अधिनकार है A transportant on four safe greating distribution arisin four to 160

ende agre glagre uncerere à cirè actich et age un accur unelle cel qui carre l'aux su argune à cirè à un albreurera à unel une du l'aux en cereils l'aux l'aux laur pers get acci une l'aux

पर प्रावहित जो हुन क्षण हाएक वह । प्रावहित कर गया। यह तो है जार हुए नकी एनेंगे। वह नम अवस्थ में हैदारित वह वाया कर तो है जार हुए नकी एनेंगे। वह नम अवस्थ में हैदारित वह वायाय के सामने जारका पहेला। उन्होंने प्रावह के समूक्त के अनुसार प्रोवह व वायाय आये करते के मानो कर हुन रावहन के हुन को सर्वा क्रिया

को आहे के 1 को जो पहला दिया है जाना रहते के 1 पहला दिया जाता कार कार 1 महत्ते काल को दिया के 30 पोपी है आराप है पहला दिया जाता पुराने काल का दूस्त आहा आहा था 1 सरकारों प्रदासिकारों ने दूसी बहुई का का कहार जाता कहत हर दिया 1 100 अधिकार्या की ने सरकारों बहुता कहता जाता और दिया 1

विवास प्राप्त से के कारण के की कारण व्याप की वर्ष पर विवास और अपने व्याप सन्दर्भ के करते अर को र अके पात दुसल विवासी और अपने वर वाली की वर्ष के से

। नवरिवारकावार्थ पुष्टक- १६% व्रमदान्य याच याचे १

या और अवस्थान हो हात है की बाद हरते राजी है अपनी धारण में कि देह बहुँच्य पालन हे कि है। अधिक्याचाई दुनों के कियो साथ और कियो पुढेंगे। अभावें बोटन वा वन अपने सरकार के जो पुजाया हो, और पालन में वो कहा को अने दारार कही अधिक पुजाया।

The spin of an area from a season with a season with a season of the sea

का प्रवास कर प्रवासक, कारी, तीर, जीवक, स्वास की प्रवास और कोटे सर्वायकों को सम्बन्ध की दानी पारी तीन जवन परित्र सम्बन्ध है।

१-शाशिकाकार्यं प्रकान १६४ प्रमायन गाम वर्षे १ ३-शाशिकाकार्यं प्रकान१८६ प्रमायन गाम वर्षे १।

न किन्द्र

मीपन बरता है कि, "मान कावा निम्द्रती है हैनी है तरवार । मनवार े का में शांध जात कि होती और धहारी की। विकास सर्वानी और विकारी अवस्थित । ^{है । है} यह को ही बोहन है। वो बाद एउट पूटवन में ही या गाउन है है कर भी के। स्थास भी वहीं हुआ है। यह हुन्दर तार्य नी है। रचवाल में सबने योज्य है। उसे हुमाँगती निक्ष है। निल्हुरी ध्याप समाचर प्राप्त के तकार क्रान-क्रेटी की वामाध्या करित या की की कारी कि विका कर देती हैं। क्षेत्रकी यही। ^[2] का पुर्ण उपलबर करती है वह बावती है विकार, रिवरताश्वर हुए भारती है। रिवर सक्तावर भारतीर स्टीवर स्थाप से हुए ती भारत अरेप बोडी देर है किए अवेश शो भगी निर्माणी के शायना भी कि देशीचा ह उस पर ला भी का पर व्यक्ति कहा और प्रवास भाग के पर जान मे दानरे भाग की और यह यह यह और होतार के कियारे कियारे का का सरकता वारता बात से रिल्डुकी शीरता है जो पत्न विते की जॉर पोस्ट्र-बुक्तमा तो बाती थी । वह बीवत को ववत नेवी है। तिन्द्री का बीते है के पण बोर्टी नेपाएण कर वहाने किये ही और उसे वनीवन वर वर्गेडरी में हुए क्रमकुषा तो है भागों पहि । पायी भी तो उते तम पटा या वीते देशी ने भागि की कुछार्थ भारत के लेके का बर्ध परिस्त की से स्वतंत्र परिष्य uer om è 1.61

देना और पूर्व बाँचन है तरच विकास । 🚻

रिल्ह्यूरी ्छती है, की हरूनवारह ताल ही उत्तर में अवरव हो गई भी बाप ने निकार कराना भा उनके आने न वह तरी। जोपन प्रद के नाने ता कर्ष तोता का। उनके नाप कर्ण नहीं । का बाक बका ती भी हुई यांत्र प्रोप का जार अत्या का जार उत्या को से क्री बारी को जाते । यह रियम तमक उठी को अर्थन की महतूवर्ग भारत है लाग्ने अमरी बीच की वर्षि पदाने भी भी। हमा में दिया है के कि हो। हो। इस में कि हम के की उसे को बाती है। कुछ की कम्प कर विकास पहला है। की बीच पर उसस भाग बहुत बोला बाट पापा कि हुनी साथ ते हुटड भागे बहुड दिना है पाप पुर चया यहन्तु बोलो और हुनो को बी स न विभी। उन्हीं दिया वैका व पह सोप भीपत है ताथ से यह गता वात-यात ही कहन है मध्ये है वाय हात वितराहरी से विकास विदेश को । भोचन अने ताको तका भी उनन ताच रिवक । यह रिवह सीचर क्रुबीस्टी या याच्य तुनी और शीली की वरिश्त परिश्व के किए करने तकी । ^{12 b}बाहु की देती की जावा से आ दे की नेती हुन्में क्षीतमें की अधिका त्येंटने तभी । उनके पर्का वर्षी नहीं घोड़ीनी । अधिकार के विकास के

e-criteroparti generate general are car n-an arbumarti gene-las peneral are car

गम्भा क्षेत्र

मन्या वेगम महाहर माध्ये गाने बाली है। मगर उसने एक सरदार के साथ क्षिकात कर लेने के बाद केवा औड़ दिला ।।।। उसका कुरन और रेवर सुन्दर हे, हे थिये बुढ़े उत्तको देवा और बुववाय उत्तका रत वानी है द्वाचा । वेता हुन्य वेता स्थर ती तरबार य क्यी देवा और य क्यी हुना। हुपुर देववर वहत हुत होने ।"[2] ज़िलाब ने अपने बबावा को पुरस्वार की सम्बं वहां " बेता कु बतवाबा का उससे की वही ब्यादा हतीन है हैनम अ उसे विक्या के विसे कोई बोदा नहीं है। यह प्रकार में केई में जांचु जा गर्व तो बोलो हुनुए का रहम मेरे जगर हे और वे वी वेला हो कहते है । हुई जिन्दानी के लिये और बारिको ही क्या 9" देखें जब से असकी गर्न मह गई त्व है दिन हुट कार । [5] उत्तकों होती यहा यही वहा यूकी यह । यह कहती हे हैंसी हो मेरी न वाने वहाँ वहीं वह । जनर हमी बहा ने हताया ही ह्याची भी 1/6/ यम्पा बढाहर हिंह से बहती है अपने भेरे लिये वही हड़ी अपने हैती है। है हुए कर न सही। अपने की मार भी न सही। अपने विश्वी काम में व आ सकी 1717। यन्त्रा चवाहर सिंह से कलती है" में अब एक वल आवते ब्रह्म नहीं रहना वाख्ती हैं। मानुम नहीं किन तरह वियोग है 🙉 करली रहती हैं। अब तक शोवा बता 🤉

2. 90 71

4. * WO 142 '

#0 1M

. • 10 10

t. मायव की ज़िकिस हुए 70 हु=दायन मान कर्म

वुनी सिंह के नाम से मुख्य विश्वारण कर वहमायव की जनत है और उनके प्राप उतने क्याचे है। माधव को जिल्ला - वह स्त्री है परम सुन्दरी पुक्ती आने मेरे प्राण कराये है मेरी दलत है को यह सुनि में अनेना केरी औड़ बार्ड 2111 उसका स्वर गायन, बादन और प्रस्व का एक लाख ही समन्यम है ।[2] वह मानव ही विन्ता वा तेवा में वाकी विन्धारी विता देना बाखती है और उतको मान क्यांदा है तम्बन्ध में तीवना वाखती है | 3| त्वो किंद व्यवस रहना वाहती है। यह वय उन्हों के कारेर हाथों से दवा दी गई तो अपने आप अपने प्राच विश्ववेन करना वासती है, नम्ना ने धाती है रह भीटी ही पुढ़िया पुटक्किंग और अंग्रेट है जीवकर हरना वाची है डाल की और इटबट क्टोरे का पुरा पानी वी वर्ष ।पुढ़िया की बीच पानी की करी है बेटने की नहीं पाई भी को यह गाती है भी प्यारी माध्य वहाँ मी हि बताओं विशेषि 1858 वय जिल्हाच जागर यहता है तो उसी भारती अवेदी और कारती बाबा में किया था आह मनवे मन्ना वेपन प्रयति अवेदासक गण्या वेगम के निते रोहते । माध्य भी उसकी समाधि वर कुन बहुनि आवा यहान्य को हरीले काठ का स्मरण हो जाता था और अंह मिकल पहले है तथा या उसी थे - 6 वो व्यारी माथव वर्त मीडि बताओं विवेधि । उसने कहा वा कि 'आकार है अध्यासन हैं सहायक ब्युगी नामंद की नासे समय शालम बड़ा महनी गुल्का तम्ब्रा सिवे तहने बढ़ी हो केर कलाम पुरुषों से सवा हुआ अधि है रचेट का प्रवास करते में अनुस की महार बारा सम्बर्ट है रवरों को कुकार के बाच मी प्यापी माखन कहाँ।"[7]

यापा बोर हे उसके स्वर में बावूर्य है। किए ने निये विषय है। पूजा कैन धारण बरने का तका है। वह बादू ने बाव्यों में पहले से केवर कर अपने बोयल की संबद्धीय उस्तर्ग करवा उत्तर्भ सम्बद्धी है। वह अवार सुन्दरों है। उत्तरा परित बावि और पराकृत की पूर्वि है।

^{ा.} माख्य या महावेदा हुए ३६५- ३५० इन्दायन नाम वर्मा

^{0 402, 420, 421} 90 464, 530

रामा (तगन्)

अवने आहात का वर्णन केवन ने इत प्रवाद किया है यही स्वर्ण ज्ञात का ता हुत । वही वही प्रजामयो अवि । तका मन्द हुतकराबद उन्पत्त विकरा बनाद । जीने जाने बाल और बाल होट विननो तस्मरित वह तका स्वर्ण आविक हुतकराबद वी । जीन होदा विकरों के प्रवाद में देवी थी और

I. तन्त्र go 26 gन्दायन तान वर्णा

^{2. 80 26}

^{3. * 90 49 *}

विषय को बंकार सक्षा स्वर मेह की दिन दिन में स्पट हुन निया या 1] 1; वस विद्वा को राव है देनी मिंह राजा है वास वामा है तो राजा असी क्षित्रों को दाव को 1 का मह बहु सहने में देवी मिंह कामा है वस के 9 आपके वर कोई वाय बहुना मों म वान जाप वर नवा बीमिनी। देन वर राजा कहा है " मुद्रे अन्ता नवा वय है 9 मेरे देवमा मेरे वास है। वर राजा कहा है " मुद्रे अन्ता नवा वय है 9 मेरे देवमा मेरे वास है। वर बीई क्या कर सक्ता है 9 बहुत होया जमी जायके साथ वाने की कहा देने वासे वासकार 1 1 2 1

राया वदमायों के यारे सोचने नगती है कि अब कितों को दूँह य दिला तहुँगी । याता केतवा को गोदी हैं दास्थ नेती हैं । वस्पतु यम में बोगती है कि " उनकी क्या सोगा २ मुक्ती य वाकर क्या वस अपने प्राणा^{§ 3} र कोंगे 2 तथ क्या करें 2 गाँव वाले य वाने क्या करें।

वन केतानी पोठे है जाता है पूंछता है जीन है तो रामा मन के व्य नेवा मैवा को करती हुई नदी में हुद पड़ी। मनरों है हरने दानो रामा के उस जैकी राम है उस प्रदेद देखवा की मंदन कारा में न हरा पामा विकट सरका के साथ शाब भारती हुई, सान बाधनों हैं किने हुवे प्रकृत की तरह रामा विकालों को जाँक से उससी हुई सहसों के जीट हो गई।

रामा प्राव्यों को बौद्ध समावर प्रवाह है साथ युद्ध करने नगी। वस कोवल दुर्वन देश और वस प्रवाह स्वापक धारा । बीकंग प्रवास , रामीय-बारी हुल्लासा , वह वह अने बाली नसरों की परवास नशी

in new go so grater at a enf

^{2. 90 55}

^{3. *} Q0 73

^{· *} QO 73

i. तबन go 74 gन्द्रावन वाल वर्न

^{2. * 80 74 *}

^{3. * 40 76 *}

^{4. &}quot; 40 77 "

^{6. * 20 79 *}

ा जायको ।=

वाकती तेवार वे करीराव को ती अववार विता वाकती वी बानको का स्क्रीब का प्रकार किया कवा है," बालों की सर बाहि के प्रकार ते यो ती हुई को के बीचे सरक आईती। और क्रेस पीछे सन करा। दी पक के प्रकार में बोधी-बोधी पूर्ण हुई क्रान्ती अधि और एक क्रके निय पूछती पूर्व कर के पारत के देखने के निवर रित्यर पूर्व-वानों पूर्वर में के बारत-वरित की यक रहित है कि सभी और ^{18 के} तेल्यत सहस्र की ओ बायकी निरंग पर व पर अवस्थान होती है। एस एन राजपिक की समाची नहीं है और महरा हुम्बरूक साम का तीर्काम वाती है वह व्यक्ति से वहती है * आपटे साथ योजती हैं, जाजा, चार-है। फिर्न के फिर मधुरा हुन्यायन को-को। भाषा वर हुए दीव बड़ी है। वर्ड हो। बड़ीका बड़ीका वर्डी और को को हो। उनके का-सन्दर्भित है महत्त्व है का वह रहते। ^[2] का राज्यस काला है कि बाध पूर्व प्रकट्टी है किए जावा पवटाए वरने है किए क्षेत्रे स्वीतेश कारण विकार । उसी अपनी विकास सरावार । और विकासी नी य तथा वारोचा । तथ वापनी के पेश प्रशीकत थी उठ और व्य प्रधान के लान बोबी, " हुई हम बारते के ने पवा मतना है, हम मेरे हैदला बीन देशका के ब्रोच हुन्में की देशी जोता नहीं है। हुए वेटल हुनी एक ब्रोच हैं। जनते दरीत भीतत है।

क्ष्मीयाः पुष्पक्षक क्षेत्र कृष्णाक्ष्मीयाः वार्षाः वार्षाः अस्त्रीयाः पुष्पक्षक क्षेत्रकृष्णिक्षयः वार्षाः वार्षाः अस्त्रीयाः पुष्पक्षकाः अस्ति वार्षाः

"किया अध्यक्त की सु वर्ष की जवान सहती ही 1 अले तक अकन्य होंग हुडीय-सन्य थे। यह की हुद्धाव है ही विकास हो मही की। उत्तरा बाप हुक्यान ा काम काम किया करता था। उसके मध्ये वर तुम्लाल में उसका पालन घोषन िया बार अंतरे भरते के बारस प्रकी कर निकार हो गती की। अभी कर प्रार्थने यण्य व वेंके की । और व उल्लेक की कुलाल का वर धोलने की प्रकार की । and my or war or at unders from over up 114 dor notice with है पता में बढ़ी है। यह बेल्बरन से बहती है कि," और वो पुरस्का न नहीं तो ज्या साचि स्रोती। ¹²¹ केन् साम्यवसी और स्तीय प्रशासन है। यह भी है ताच वहती है, " और जार में मेरी पहुँची पानी पोनी, अपला प्राप्ता और जो के बाजरी भी कर होती। बनोरिज बाने केको के बीचे केट मार्च के रिका भी तरे हुए जरना परेकार ¹³ किया समूचने जरने और अने पूर्व है रक्षों है पक में है। इह आ का बात नहीं हरना पाहती। केन कवारी घरने किमानिका noch die no der grue four de vech die le der wede fi fo." वय तक लग्न केर है का है आ कावात न परेनी । अपूरी करेनी, अपना की पतिनी। क्षेत्र, कारान्य का का देहें सकते हैं। * 🎾 का लावती व बनापूर हे यह एक त्यांतिक साम पत्य की अमादी पर सम्बुक वर हुन्दर सकी देश है अपरता है कि साथ सरप के बाच है बाती हुट बाली है और का सुद्धिया वार रिवट वाहता है। और क्षेत्र अभी रिवार के ब्रोजन्य अपनी है। विवाने ब्रोजी आहत थापिक आये के। यह हाफित हुए पहली है, "रामक्य है, राम परण है, क्षाराज दुव्यारे पाय पराते हैं, उनमें होंड हो। हुन चुट क्षा परे। क्षेत्र हे अवेश शोकर किर्म का वर्षन वर्षा की में का प्रवार किया है, "किया हे बोची क्षाप प्रकी पर के क्षाती राज्यवस्थ हे जिस वर की और विष पह और बहुत वर क्रुप्ते हुए उन्हार की और हो कार बा, वालों की पह वह पालें

पर केत अर्थ को । अभि क्षेत्री हुई को । घड़े-बड़े परावों पर केद किएके रिपाट एको की । विदार हुएका पात वा । परान्तु हुए तावा अत अनाम्य विधान का तर्न- वर्ष परिम्हण से छोड़ तथा पहा का का । परान्तु अह तथा उस अनाम्य विधान के दी के विधान का लोगाई परिम्हण से छोड़ तथा गात । परान्तु अह तथा उस के दी के विधान का । के दी के विधान का है । तथा परान हुएक के विधान के तथा अर्थ हुएकों को विधान कर विधान के तथा अर्थ हुएकों को विधान हुए के विधान हुएकों अर्थ हुएकों अर्थ हुएकों के तथा अर्थ हुएकों अर्थ हुएकों के तथा अर्थ हुएकों अर्थ हुएकों का का का का निवान हुएकों अर्थ हुएकों का का का का हुएकों अर्थ हुएकों का का का का का का का हुएकों का का । विधान हुई का का हुई का का हुई का का ले अर्थ हुई का लाग हुई का ले अर्थ हुई का ले अर्थ हुई का ले अर्थ हुई का लाग हुई का लाग हुई का ले अर्थ हुई का लाग हुई का लाग हुई का ले अर्थ हुई का लाग हुई

er pore for a circumpit, recently dispote term be

१ लोगा प्राप्तक १५५ पुरुद्धातम् सर्थाः वार्थः । १ लोगा प्राप्तक १६२ पुरुद्धातम् सर्थः वार्थः ।

सरस्वती होत हो हैन्

प्रेम की मेट उपण्यास की नाधिका के क्या में सरस्वती का वरित्र विकित
क्या है। बीरण नामक उपण्यास का नायक है। बीरण हुना के कारणा
मानमेट जा बामा है और कम्मीद के घड़ाँ एउचे नमता है । वह जण्या-करणा
ते सरस्वती के तीण्वर्ध के वारणा उसते ग्रेम करने नमता है और सरस्वती
भी उसे ग्रेम करने नमती है। वर्मा वी ने सरस्वती के वारीर सीण्वर्ध का
वर्णा का प्रवार किया है। तथा वी ने सरस्वती के वारीर सीण्वर्ध का
वर्णा का प्रवार किया है। तथा विकासता करी के रीम कर्णा सल्या कु
बुनकित रकार्ध उसके सीण्यर्थ को प्रभाग कालीम न्त्रम की जीविष्यामी जाना
के रखी भी । सहची में बुन बुने हुने किसे बुने नेन्त्र से किया किसी सैकीय
के बीरण को और बीरण की योक्यी की जीर विकार उसके खान में याणी
वर्ण कोटा के क्या एक और बड़ी लोकर असे वेदे के बारूजों को काने नगी।।

[.] हेन को मेट - बुण्याचन जान वर्गा ए०५ जारका तेरकाण 1987

ion.

प्रेम था। उत्तेष वहे को के अवशाचे हते है उन वर निम्धा की छाप धाकी भी उच्चवृत उच्चत तलाट पर यतीये की हुदै अमुब्बि मोतियाँ की तरह क्ष्म रही थी वरे हुवै होती की यहा बीनकर सरस्वती ने वीरे पूछा क्या है "है। है अधिवासी के शास्त्रों में तरस्वती के हुवय में श्रीरव के प्राप्त क्रेम का उक्त इस इकार हुआ अकेते में प्राप्त मरके लोटा रखे ावा । बीचन कराने है तिथे जल्दी बल्दी बार बार बार हनाना था। अर्थ बयाकर देवना कहा और यह बद अर्थेने में बासवीत करते हो तब कीने से विषय वर प्रवास सुनना । लोलनी वरते क्यते अवर उवर हुनिय केवना 1525 वन तरम्बती धीएन है वात प्रमुक एकी बहुती ती धीएन मन ही अन में ती बोब लगा " सरत्यती का कन्छ बड़ा मधुर है जैसे नदी हुनवर्शी आम पर वेठवर माद करने बाली और का ही । केल स्वर्ण जै लवाने दाना सुन्दर हुव है। दब हैतारी श्रीमी अपने आत पान दिव्यानी शोधिक देती क्षेत्री । परन्तु आको इसके क्या अवस्थ वर एक पागर पुरुष है। देव लिया । यो की 1"[3] सरस्वती की धीली उकत्य श्रुति वक्षर है । है भी तरस्वारे है कारीर वा तरेणाई देखि " उन्मावनाटह, रवर्ण सहार हत्य देवा, इहारि को स्पार्त करने वाली वर्णान्या विसर्वी की आबा ते होंदू लगाने बाली लोचन प्रमा, तमे हुने लीने की जी नवाने वाले बोरे कारेल, तक प्रयत है रेग केते होट, ओट उपलावर है किनारों पर तहच स्वाचित्र तक्ष्म प्रकृत पुरुषराहट । बुहोत काठ होस्य में यह en en der I da foar , dar alan h nod and a derare M यण्यम धायन की अधिकताओं हो । याची अन विक्रित झाव की अवरह सम् शुरुष्य हो । वेते प्रभाग बालीन नहेर वा विद्युष्टकारण हो ।

[.] क्रिका केट - सन्धावन नाम वर्ग पूर्व । इंटर्क

वेते स्वर्गीय संगोत के सनोगुण्यकारी स्वर्ग ने बोने आवात हैं दूसरी विष्ट्रिका वहीं वर की हो । वेते अनस्त द्वारा पुस्त ने अवह बारा वह निवरी हो । [1]

बह नहीं बाहती कि धीरज शोज तबेरे ही बानी बरे वा हीराँ की तार क्षाफ सुबरा । छीरव की और देखका और फिर दारवाचे की और एक्टकी बावितर उसने कहा " यह तब क्वाँ किया करते ही 2121 वह बीएव की पुरसक सवर देती है। बीएव ने वर्जना ही "प्रमेव नेरी पुरसके क्यारे note avenut be et i de c' garn d'enn' d utuf utu yen माता दक वर्ष हो हुउ। जीरक में पर साक्षी सरवारी की केट की और उसके अन्य हैं और वर महीदा कि हुई स्वास्टी है विका का फूर की वेद सरम्बदी की बड़ते औड़े की पीड़ा कीमा वेरी में हुई पिर ज्वर ही मध्य । शोरव में ते क्षा में क्षा है वीरों ने की और यह थी किन है समाप्त वर भी । यहाँ समने के जाएगा उसे भी बहुत तेन नार हो गया । वरण्य उविधारी जी किले मरी बीरजाने से उसका स्वारम विनयु नवा और वह मध्योर अब है शोधार पड़ कार । सरवाती कोवाती का भी । हुद्ध की बात को भीतह की क्यिये रहती ।यह धीरव में हैम करती की। बीर्य वेहीमी की बामत है वह बहाता रहा हुम बोमती का हो । कार्य हुका भी बात क्यों भीतर फियारी एडती होड़ मेरे विष पर हाथ केर वर क्या विशेष कालारि को कि क्षीताल में पुन्ते हैन करती हैं पुन्तारों हैं और शबा रहेता 146 कीरव बारा हो वर्ष लाही मी वय क्योब केविया उद्भाव की काजी देता है भी सरकारी कहती हैंग्री की की कर वासी पक अपर के नेर्य है 151 सरस्यती के बीवन हाथ और ताड़ी महीन करनीय ने

de de de - granda ana ana go sur se

दिन्हें हुन्हें नरके सरस्वती के शिरहामें से मिनान ती । वेबन एक हुन्हां कारस्वती के बाब की मुद्धां में रह गया। यह बीरव के प्राण बतेन उन्ने की बाने में कि सरस्वती की कामना होती है कि उसे एक बार देवं ने । वह उन्विवारों से कहती है, वरा देवं हूं केवत एक बार । फिर ने आना। में कन्नों हूं वीड सम्मान नीगी । यह उम्मोद सरस्वती से साड़ी दीनकर काड़ देवा है और एक दुव्हा उसके खान में तोल रह गया तो कहती है । साड़ी छीम भी किसनेट किसकी हिन्मत है हु मेरी दीच मेरे वास है । देवा 1 है है वेब के बात देने पर पिर पुल्ती है वह आ वसे ट्राविवारी यह सरस्वती से बात पाम के जिसे कहती है तो सरस्वती सोनी देवी यह यह साड़ी उन्होंने दी वह । इसी निवा है बायती ही ह और हुव्ही खेलावारी की नक्ष दोनों सावती से साड़ी साड़ी सावती है का सा हुक्त केनावार वेब ने प्राण्यां की वार्त से साड़ी सावती हो सा हुक्त केनावार वेब ने प्राण्यां की वार्त से साड़ी सावती हो साड़ी की वार्त से साड़ी की वार्त से साड़ी सावती हो साड़ी की वार्त से साड़ी होता से साड़ी की वार्त से साड़ी की वार्त से साड़ी की वार्त से साड़ी से साड़

सरस्थार पास को बेटी है और उसके जिस को अपना हैने हैं। तिथा में क्या प्रश्वास को जुन में हुई बाज ।
सरस्थार में क्या यह हो को का हा अपना को नवा अब हो केवल उसका
किया है। वीषण में अपना जिस उसकी जुना पर एक विवास और प्रमा
नेती है उसकी और देवने तथा । सरस्थार उसके मानक पर साथ में में मंति
के असा परवास सरस्थार उसके अपने मेंने का बार असारकर वीरण के मेंने
में हान परवास सरस्थार उसके अपने मेंने का बार असारकर वीरण के मोने
में हान परवास सरस्थार उसके अपने मेंने का बार असारकर वीरण के मोने

en gare needled areal do st given 's ade areas 's side areas 's side area' of a side of side of side of an do side of an dorrest of an do side of an dorrest of agreeding to be do side of an of an do side of an dorrest agreeding to be due of an of and an of a

t. In at the grange are out go tot

हरह पती इ.स.च्या

वेम को वेट उपान्यांत में तरस्थारी का धारित कहा तुन्दर वन पहा। वह क्षेत्र के लिये अपने वीवन का उत्तान कर देता है । सरस्वती क्षान सुदि है और स्वाधिनां नियों है। उनियारी तरस्वती है तस्थान्धं में कहती है उनेने वै वानी वरके लोटा एवं आचा । वीचन क्लाने के लिवे जल्दी जल्दी बार बार कुगाना । अर्थ व्यापर देवना । वनका औरवह वय अदेने में बातयीत करते क्षेत्र सब कीने में विषक कर प्रवचाय सनना। बोलनी करते करते इक्षर उत्तर इति है केवना । 🔃 वीश्व तीवता है "सरस्वती वा क्षण्ड बहुएनपुर है । भेते नदी पुलवर्ता आम वर वे कर बाद करने वाली औ किम ही । किम स्वर्ण को नवाने वाना हुई है। वह हैसती होनीत अपने आस पास दिख्यता सी विकेर देशी लोगी । परन्तु मुख्यो हाली क्या । उधान वा एक प्रगर पूर्वि 28 उत्तकी बीमी प्रति महर है । वर्षा की मैं तरस्वती का कामि प्रत प्रकार किया है" उदय लगाट स्वर्ग सद्भा क्षा केराव प्रकृति की स्वर्ग करने वाली वरी-नियाँ किल्लीकी आधा से लोड़ सवाने बाली तरेवन प्रवा, तमें हुवे सीने की भी नवाने वाले गोरे व्योत, प्रवास हे रंग की होठ और ह पलनवीं है जिसारी वर सहय, स्वाधाविक तुर्य, प्रकृत सुरक्राहर तुष्टील काठ । येते नण्यक -शानन की अधिक हाजी हो । मानो पर्ट विकालत हुएम की उद्यव हुन जिले हो। वेते प्रभावकानीय कांध का चिर प्रकार हो। वेते स्वर्गाय संगीत है वयोष्ट्रण कारी रवरों ने गीन आकार में क्षारी विद्या कही कर दी है। भी अनन्त प्रभाग पुरुष है अवेग्ड बंग्या यह निकार हो । अवह वीय्य के हुका है बासारे है ।आहर काना ऐसा है विके भी प्रका पंचिता है वीधी बीच प्रकार नाजा वंगक वर्ष औं वह तीरचं के हुदा में वेती है । हम्मीद वब बसवी साड़ी की हुक्डे हुन्दे करते सरस्वती है सिरवाने से निकान नेती है । तो एक हुन्द्वा सरस्वती है हा की कर पर देश शहरायन वाल वर्णा

हान है हुइनों है रह नाता है जब उधिनाशी तरस्वती से द्वा बीने है ियों कहती है जो तरस्वती उत्तरें कहती है कि देनों यह ताड़ी उप्टोंने दी भी । आहें जब विका है नामती हो । तरस्वती ने मुद्दी नोलकर दीनों हानों से ताड़ी का एक धोटा ता क्या हुआ दुक्ता केनावा । वेद ने पड़ा । उत्तरें धंतीला क्यों हो हो राष्ट्र केन्द्रेग को बेट [1] वह साही ने उत्तर दुवहें को हाथ में किये हुने बुंद्धा है" अपने वह 1"

का प्रकार का उपण्यास में सरस्वती का ह्या धीरव है प्रति क्रेम ते और प्रति है ।असकी बीको अक्षण महुद है ।

i. क्षेत्र को केंद्र प्रश्न नेवर- 105 ब्रम्कावन काल वर्णा

उच्चित्रश

उत्वारों के बरणका है बीरज में मन है कहा " यह रजी कैंगती वहत क्यां के कालने काले तोच्छी हैं जर बीरता विका नहें हैं। बादण्य में उपनायम है, और का द्वापन के अर्था आवर्डण वुस नहीं है।" [1] सरस्वती उत्वारों के सम्बन्ध हैं बहती है" पत्ती कि कुममें पर वदाय बेगा, क्या की बतने पर अस्तुनी कर देना , यह बाने पर वो कुछ पूर्वत बीय केंगे को बाना, किया वाहे वे बेत में बते वाहे म बहे ।"[2] उदिवारों कहां महबद औरत है। यह बालता हैं तुनदार है।[3] होन को बेट हैं सरस्वती है बतिरिका उदिवारों कुमों प्रमुख पात है।

t. In at de ger do 16 gन्दावन बान वर्ग

^{2. °} कृष्ठ तेंठ उठ कुन्धावन बास बर्जा

^{3. •} हार्च संत का कुम्बायन बाब वर्गा

(GF)

टामाँ की रहन है तालना में निवाले हैं।, "रहन आही। कहीतिकी की। भाई दिलायती आ लो का पारेग्स था, इह पर के रतन ने अधना पलनाला न छोडा यह उथना नाम भी अनुस्थाया । बुठ लखी ती, परन्तु हुयोत । अधि वही वही वेहरा गील, नाव तीवी, और कुछ छोटी । वेर रत्न का था है बहस है, येरी बहिन रतन कुमरी है। हम लोग उलगे क रतन बहबर बुलाया करते हैं। रिल्म्डी पदी है। बोडी औबी में वानती है। ¹²े एला योग बहुत बाबा की बबा तेती है। 134 रतन दतातु है, और अपने बार्ड के विवाह की बायना बरती है। वह कहती है, "वही वेदाने वही हाय बोहरी हैं। इठ पर वर्षे पर पर परतर पिता ने स्ता-वरा होता वा । को हुना का रखें। " ^{10 के} का पुक्का करता है कि बाद की तुम्लारे या भेरे नाम ने व्यक्तियाँ। वरीवना वाहते है तो रतन वहती है," भेरे नाम ने । में वजीवारी ज्या बार् । ••• आप अबर एडे, हुई वजीवारी जा ज्या हरना है। " वह वयो पैते और बाध्याय है अन्ते को नही वानती। वरन्तु उस सकते है किए होने सकत हुए होने है बात है है है। यह अपने मौरव हीं रक्षा की प्रभागती है। यह कहती है, " हो केटन अपने मारण की रक्षा का अधिकार है। एकी उपारा को है । वही हमारा कर है। 🕕 सीवन उने देशी जानता है। वह बहता है, " रतन है देशी है। हम सोज स्कूब्य है। देती जा अवसान पुरते न देशा सारेगा । से भिगालन नाला है। 10 र बन प्रधार एम देखते हैं कि राज देवी प्रदारित की अच्छी जाते हैं ।

^{।-}क्रुटो क् पुरुठ-१ हुन्दाचन लाग वर्मा ।

²⁻इंग्लो क् प्रवत-५ हन्दावन सात दर्भा ।

³⁻कुण्डाकी यह पुरुष्ठ-9 हर्न्साचन लाल दार्ग ।

⁴⁻कुण्डारी यह प्रवाह-42 प्रन्यायन वाल वाल ।

s-guari क प्रक-103, इन्यावन तात द्यां ।

⁶⁻इंग्डारी सह पुष्ठ-142 सन्दर्भनगण यस 1

१-इम्डो क् पुष्ठ-१९२ इन्दावन ताल वर्षा ।

⁸⁻शुण्याती यह प्रवत-193 हुन्दायन साम वर्मा ।

प्रवास करता है कि , मेरी जो तानी पुना है तमानी हो गती है। कहीं उनके दिवार का ठीक नहीं पहला। उनकी महें हरी कि है बीमार है। गर्य। 1" 2 द्वा के बचन और ने जे के उम्बन्ध में दर्श की वर्षन करते है, पुता जा प्रथम्न बाह्य, डेक्टम् और उम विक्रेयतः लहीते के विविध्य भारत है आडर्बंड उरतेबः और मोडड वा धारण कर उरहे आंशों के लामने आने लगे जोर उनकी अनेयत अनिविधात प्यान को बदाने लोग!" ¹²ं हुना का आणे का दे जिले "प्रवास और छाचा है। धारीज रेखाये कियत ज्योति ही किरणी से प्रना है ीते के को और की पीतक प्रधान कर रही की । आह अरकर पुना कही को करी । उस निर्मन अध्यार यस तमार है भी तर की अधिने में आपन थान ता हुइने समी। • 13 4 मान भिंह उन पर देनी की की मनारी जानते है। • प्रना भीतर प्रति भागी। ताम भिंड में फिट्टी के तेन के दीपक के पटे को धारती हुए हत में इंडा - रेटरा इंडा करवा एन साम अर्थ इंडी म्यान की बर सन रही की । आर वेती रिलेक्ट खन दान की । इनक देनी की की नतारी तं रही दी ।" ¹⁴ अधित को देवी भावता है का करता है, "तुम्हारी सुप्राच देली फिल बम्बान के पाल हो, उते वनी कहा हो नहीं कहता, वरन्तु ऐला न ों कि यें में पठताओं , हुब अच्छी प्रशुतित की बारी है।

^{।-}तुण्डली यह, पुण्डल- 150 हुन्दादन ताल दर्श ।

²⁻हुण इसी कहा, गुरुष- १५५ शु-सारम साम समा

³⁻सुण्डमी व्य. प्रवत- १६२ इन्दालन साल ार्ज ।

५ व्हण्डारी इस्, पुस्तु- १६५ हुन्सावन जात इसरे ।

⁵⁻कृतको एए, पुटल-१०। हन्दाच्य ताल वर्षा ।

alar

मेद लोगर है यहत कम काम मेहा ह उसके पिता है भी यहत कम orn har h for of the mine femorar h ill ofor h arend में व उसके भारोपिक महत्व के सम्बन्ध में बर्ग की प्रवास के सहसी 16, 17 साल की है । बर का काम तहब ही हवाल लेगी। हान्दर है और उटहै कुल की है। बात बाएड है तो हम लीम की जीम केंद्र सक्यती है।उसकी लम्बी बहीनी देही अर्थ के बीचे का किल और प्रकारणान अर्थि समारे ध्य में और हमारे हुई के हुश्म में अधिवासायर देशी। उसकी कासी पुसालिए। दान्यद में रहत सम्बेद्धी से करी हुई है । जनवर रहरोर बेला दरेरा है । वय को अद्योग तरह होने प्रसम्ब हो बारोने 1º [2] सहस्य सोयन समा वादि भेरे की वे तान काला विवास म लो पावा तो आही महका जा त्या लोगा शाकी किल्ली बोली बाते है । जिल्ली इंतमुब और सरल है। कितनी नाववती है ।यदि को वे ताव उत्तवान मन्द्र व हुआ के को करना है न हो यह पुल न शाकुम किन कोटी है कि दिया नावेगा। - हिंग हैं होशा के अवसा व बती होशा नहीं बहु की वर्ष ही और देते हो भी as ara à est raraf et es ar arant à str sent à ferett तिते को सम्बन्धन ने तमी हवान एक त बनावे हें।" वह तान सन्ना की वधवाली है । यह हरवाब से कहती है जा यहाँ ववहरी हैं कोई वैशा वहीं वितारे अपन्य भी और वैसे की और य देखकर अपनी पत की और देते।

^{1.} क्यों न क्यों go 65 वृत्यायन वान वर्ग

^{2. * 10 68}

^{3. * 80 73}

नीमा सहयारित है वस येट वस नीना को अने बन्धे से विमरा नेता है की यह ममनीत त्यर है निवेस करती है और कहती है मुक्कों बहुत हर तम रहा है। ये लोग की मैं देख तैने तो मार हो हानेगा-¹⁵⁸ यह मेट से द्वर प्रत्में को कहती है और बातबीत करने के लिये गया करती है। यह मेट बहुता है कि हम दोनों एक द्वारों को नोड़ी देश के लिये सुकी अन्यों का नीना हिन्मत के ताम तांत बीचकर कहती है में दूबारों हूँ और मेरा विकास कोने वाना है अम्ब बान्यते है। ¹⁶⁴ यह अपने विता का सम्मान करती है और कहती है, मेरे किये वालों न पारने का सवास नहीं है। द्वारा विताह सम्बंध का प्रत्में उसी की जाड़ा का पानन

i. ast a sait go so gressa are and

^{2. 10 85}

^{3. *} Wo 99

^{4. * 50 105}

^{80 104}

^{6. &}quot; 90 106

कहंगों है। इं बद मेट करता है कि मम्बान ने तबी की हुआ दिया है तो वह करती है" वह भोर मोर किरने के लिये या घटकने के लिये नहीं दिया गया है। है है वह विद्याता के लिये नेना वी की तीनम्ब बाती है। वह बात बहाना भी नहीं बाहती । वब देवह मेट की हुदल डालने का न्हिंचय करता है तो वह करती है कि" तरह तैतार में काम नहीं वह तकता है है या मेट उतते हैं है वह बोलता है तो किट का नवाब देती है। वह मेट के तम्बन्ध में करती है" मेट की जीन बेलनाम है। ग्रांशी वह यक करने की उत्तवी शास्त्र है। इंड बंड बोल रहा था। है मेट मुर्वित वाल कर है के रही थी। वब देवह करता है कि मेट मुर्वित वाल कर रहा था। में की कराय वरमा न वाने ज्या हो बार । लीला बात कर करता है " मेटके है ग्रांस दे देती और ने मेती। वोई शासा व शासा न शासा । "है में

द्ध द्वार तीला तस्त्रीतः नारी है । यह शास्त्री है और जिले द्वार के प्रोतकः है नहीं दक्क जाती । यह दुक्तिनी सन्द्र द्वारण वर्ष करने दानों नारों है जोर काम जासार्ग बरिन है ।

^{।.} इसी न इसी पुछ 107 दुन्धायन नाम वर्ग

^{2. * 90 107}

^{3. * @0110}

^{. *} TO 112

(-0)

हु-ती बहुत अरें हा नाती है। यह हरच मी करती है। हुन्ती ने नावे हुवे नाच को द्वररावा । उसी ताल में वे ली वाने वली वद नवरका। वहीं हाव अव ' बादर मई हीनी हा वहीं प्रवासि । उसने एक ताबापन भी भा । बड़ी महर देह बता और उसी तरह दिली, कमन है परली पर वैते कान नहरा जाय उत्ती प्रकार उत्तके उत्तरे हुवे जेन नहरावे 1818 उत्तका इत्य अनीवा या यरम्त याचा ताल ई नहीं या । क्रम्ती का तरे वर्ष अधिक जाकांक है उसके उस्तेयना है और देखा । 121वह औरवी के साथ द्वाप करती है। बुन्ती अवन्य है, बुन्ती रहत्य्यी है। उसकी दिह की किरजन उरोबों पर ते बाकर जीवा और शुक्रका पर महराजी थी और फिर उरीची वर इंड भाव रम्बर तमा वाती थी । 3 वह अवन वा आदर करती है ।" हुन्ती बाबारका नहीं है । वह अनुधारका है ।अनका बीवन भी अक्षाबारण है । १४३ वह अपने वाता विवा का अवगण्य नहीं करती। उसका कथन है कि "मान भी में अधून को या किलो को बाहने नमें ती उन ा मार्च अन्य मेरा अन्य , परम्य यस तक वे अपने अशीर की और मैं अपने प्राप्ति को पाँका क्याचे एते तथ तक किली के यन हे किली को स्था वास्ता ।"1513ते विकास है कि वो स्त्रियाँ अपनी एका क्रती है उनका कोई कुछ वर्डी वर सबता । उसमैं हिम्मत है। वह धानेदार का सामना करती है, सुनीची देशों है । अभी/विभाग/हे वह प्रविकाद करती है,

i. अवन वेदर कोई पुर, क्रमायन नान वर्मा

^{2. 1057}

^{3. *} go 105 *

^{90 120}

करते है। यो रित्रयाँ अपनी रक्षा का दम रकती है उनका कोई हुल नहीं कर सक्ता । उस दिन पानेदार तर्मवा नगावे केला वा और उसके जास पास सिवाली वे । येने लिम्बत करके बंबी हुई रिल्मवाँ को बोल दिया और वानेदार के सामने वहां हो गई। उसको बुनोली हो केने पक्षा तो लिम्मत हो तो परन्तु वह बुँव कर रह गया। "हु।

हुन्ती के ह्या में त्यान है और अजन के ह्या में उसके लिये आदर या हुक किय रहा हो परन्तु वह आँचन पतार कर बीढ माँगती है कि यह निश्चा की पायर हुआ नहीं होना काई कि निश्चा हुन्ती है बहुत उदही है 1823 वह दोच्या तमांव की परवाह नहीं करती , उतका क्या है कि प्रविक्षणांव हतना गन्दा है कि उसकी दुर्गों में भी दुर्गन्त आती है तो हमको उसकी वरण भी परवाह नहीं 1° [3] यह समझीती है "हुन्ती अनम्य है, हुन्ती रहत्यमंत्री है वहरताई धर के बाम भी देखनान हक्यें करती है किर वह तोचती है कि हभी के निये उसका कर ही राज्य और रचवात है । वह निश्चीत है । अन्त में वह अपना जीवन बन्दुक मार वर समाच्या वर देशी है ।

इस प्रकार कर सकते है कि हुन्ती शासती , स्वतन्त्र समाय से विद्योग करने वाली नारों के अस्तित्व पर विद्यास करने वाली नारों है । वह बन्दुक की बोली अपने तिर के मार सेती है और एक कान्त्र पर विद्या है क्षेत्र वेटा वेटा कोई... अपने साथ कांच बाता है और वेदा एक विन्द्री हुई सकीर बन्ती

^{1.} अपन वेशा कोई go 230 g=दावननाम धर्मा

^{. • 50235}

^{3. °} go250

779 sp

रुवा तन्त्रोधी है। यह इव नहीं वास्ती, को कुछ नहीं वास्ति। हैं तो सेती ही क्रदर्श ।।।। वह नगड़े रावा है ताप खार नहीं करना वास्ती वाहे वह रावा नहीं, राजा का साप ही करों न हो 1125 वह रवाधियानियों है, विया क्यांचे तीया जी परधार्टी है पात तह वहीं जाया धासती । अ वह कुटा स्ववेव केला दासती है । वह बहती है तमने केंडा तो याँव वर हो दिलवाँ युवनी धुनेनी कि साथ पर वाली बर वाली है होते हुए साहब बुद्धा होने लगे है । 141 जान तक द्वाकी निन मीर्गों ने जिए उठावे देश है वे कार उठावे देशे हो में क्यी अपना हुए नही दिलनाउगी। हा वह मनमें लीवने तथी कि वहाँ मैंने हाब ते उत्तकी हार मिना कि उत्तके मन मैं वेरे लिये वयह बराबर बटली बाज्यी । विक्रमी प्रसम्म होगी वह राजा वी दिलना कुत हो जायमा पेरे अगर। 16% शीना की शीना राजा लाख में और बुठ इनाग की अबर से यह बरिल की बायना है और प्रीत है। उसकी क्रांस्का है कि हुँए है कही बेली बात यह विशाली बिहुन बहुयी वी वा बिली मी देवता का वरा वी देरावन हो वाव ।"[7]उते बीरव है कि हम गरीय है ही जा हुआ, वेर्ध और अधियान में जिली ते कम नहीं । यह निरुप्य उस्ती है कि वादि हरना बहा कर की पर भी यदि यह सम्भान के सायनशी सुनाती तो कदापि वही बाउनी । 161 का शोधती है कि देवता बीमों को अंगीर्ट विकाम से मही मही की विकाम से इसम्ब होते है और बहरक अमासम कीत

[।] सोगा – पुटलंट ५० सुन्दायन साम वर्गा २० ४।

^{5 0 94} 5 94

^{6. 10 10} 7. 10 102

यन वासी उसनी देह के सम्बन्ध में कहती है कि "सरवार की देह के सवा है, कुम्दन निजयत हो रहा है। देह के उरेपन से यहनों की सीचा किन रही है, न कि नहन्तें से अंनी की 11" वस महाबर नमें पेरी धनती है तब ननता है की कुनाब के कुन विकास की बारे ही 121

क्या तीथी है बल्दी तंत्र्य वाली है बान वाली है और रीड वाली है। यह मार्थि मधेयाँ को थिया करने के पत में है । शोजगार करने के पत हैं है। यह कहती है "मेरी बात भागी। गवेची गवेची को विद्धा कर दी। वेलों पर विधिया जानकर केली करों । यो कुछ मेरे पाल है, उसमें से हुछ लेकर की ब्रे रोजनार करो । भिक्रमेवन हे काम नहीं जोगा। वश्वसको वि: व-वात है कि बाम अरमे ते नाक मही बदली । "१५६ उतका कथन है कि मेहनल सवार्थ और बना की उपायना से ही जीवन की महता बहुद्वन किनता है।" तुम अगर जिल्ली विद्या के बनाने के काम पर समने से महरा जुना डीने की मबद्भारी वरो हो हमड़ी बीयन ही कदर मालुम हो, और तभी यह नान यहे कि सबद्धी का तक्षण ज्यादा आराम देशा है । इत्या क्यों की सेव । अरहे देवी विकास हव िसता है 14ह बान औरका है एहने की जीवन नहीं भागकी " अरम औरका की रहन योजन नहीं है। बहुत बेन वाले कुरुप और हुआ लेतार में कहब और हुत हो उस कम से क्योद सकते है तसने की सबहुरी वरी वर्श मंदिर का रहा हो यह कुर्ज कीतेव ते अटही रहेगी गड़ी ती एक दिन सुचि होता ।और सब घोषट हो नाचना प्रचात हन की नरीय के 61 उत्तरी की हुए सो बाधेने इस काम द उठान हो यर वाबे । उसका सिद्धान्य है-

i. शीना go 40 g=दावन साम वर्गा

^{2. 136}

u go 140

^{4. *} go 160

िं मिन्यत तरवार्ड, और क्या को उपात्या से हो तरवे योवय का क्यूप्यय निकार है 1° 11° काम है विश्वयत में क्या वाह्या और क्या वाह्या हो वैता काम न हो कितते तरव दिन बाव क्यार है बहला वने 1° 121 वह किता में हालत है मैहनत व्यक्षरों करने से नहीं मानने की 1 क्या को अञ्चलि वैतिये हुन्यर, तृतीय वीशों बाहे उन्हों हुई वी 1 होव को वार गर पूर्विया बालों क्याई वर ते देखने तक हुने को हुं सेवा को वार गर पूर्विया बालों क्याई वर ते देखने तक हुने को हुं सेवा वोशों, हुने हुने की तकेवी ते तने हुवे, पूर्वों के नोचे मोरी हुनेत विवार्त वर हुने के क्ये कोटे वहे क्याई 1° 151° कमल का बेता वेदरा गोहरा है। रानी ते अधिक सुन्यर है, बितानों बदीलों अने हैं बहुनों को सेवा अधिक सुन्यर है, बितानों बदीलों अने हैं बहुनों के नोचे हैं का वहां है वहां साथ अधिक है तो वे ही व्यवस्था मेरी रखवानों करेने 1° 151 महाराव उत्ते बहुत प्यार करते हैं 1 वह राजा ते कहती है "आप क्या सम्बत्ती है कि स्पृत्र का तरह अपनी क्यान वेदते कितों को हो 1 है। उत्तर विद्यास है कि स्पृत्र का तरह अपनी क्यान वेदते कितों को हो। और मेरी वैतियों को विद्यास ते ही वित्र ते ही हो ही वित्र ते ही वित्र ते ही वित्र ते ही वित्र ते ही ही वित्र ते ही वित्

s. तोगा go 176 हम्दावन ताल वर्ग

^{2. * 60 177}

^{3. * \$0} ie2 *

^{4. * 90 107}

^{5. 10 201}

^{6. * 90 221}

^{2. *} go 227

atar

अभ्या तीना के उपर अपने आपको न्योशावर करने को तैयार था । आपके के आप लगा का देवनद्व में उत्तकों सी शाया और स्थितितान में रखना तीना को वहुत अध्या नगा। उत्तम बद्धव्यम का उत्तका हाट वाँट था और ध्रमण्यार था। सीमा का बात उत्तकों देख के तम्बन्ध में कहता है कि "बहुंगा कि होरे --योतिवर्ज के बने व्यक्तों से तुम्लारों देख कित उठेगी । "हूं।। तीना चीनों के बनोड़े किताली है । तोना का याद्ध हुव्य बाग उठता है। यह पीनत से उध्नवर नहके के वाल आ बातों है। नहके को उठाकर बीमत में तिला तेती है और बीतर उत्तके पात बेठ बातों है। उत्तके ग्रंह से निवने हुने रचत को अपने बच्छे से पालतों है। म्यूरिम कहती है कि रामी हो तो बेलों हो। मरीब नहके को दुन कीतरह उठाकर मीद में रख निवन । "हूं 25 वह उदार है।

i. तीवा go १३ gन्यायम ताम धर्मा

^{2. 90 94}

* 3417

वर्ष की ने अपना को अगरकेल का नाम दिया है। तह अफीम का लायें करती है। और अफीम के अगरक रख कर कर की वीतवाको एक जान ने द्वारे वान पर ने बाती है। तेल्ल की दारका है कि अगरकेल मुश्कल ने मुस्कारी है। अका हो बाओं से कोई केत कुछ नहीं जर तकती, अका होने के किए पूजा और ईक्वा का रहाण, लोग में कमी, ईवार में विकास कहत बहुत बारों है। अंग का वा गरिज दोक्वा के आप होने के विकास की विकास कहते हैं। विवास की किसा मही देख केता वह लेगी रख है और अभिनय करने में निमुख है। यह प्रविद्ध नेगीत तर वाली है और भारत में दूम कुम कर कमा का रल बरताती बचाती रखती है। वह प्रविद्ध नेगीत कर वाली है और भारत में दूम कुम कर कमा का रल बरताती बचाती रखती है। यह किसा हो है के वाप किसे हुए में अपने एक अनम देन के कमाय में के । होठ लिया रक ते दूने न होने पर से मरी हुई लाती में । वाली बहुतूल्य, रेखती, वेण्डा मां पर बदायर रंगी के तथी हुई। छोटे छपकोदार ताल विज्ञान वाली कोली पर हैं दिने बाती हो। चाती का वाली कोली पर हैं दिने बाती हो। चाती हुई होटे छपकोदार ताल विज्ञान वाली कोली पर हैं दिने बाती हुई। छोटे छपकोदार ताल विज्ञान वाली कोली पर हैं दिने बाती हुई। छोटे छपकोदार ताल विज्ञान वाली कोली पर हैं दिने बाती हुई। छाटे छपकोदार ताल विज्ञान वाली कोली पर हैं दिने बाती हुई। छोटे छपकोदार ताल विज्ञान वाली कोली पर हैं दिने होते हुई। छोटे छपकोदार ताल विज्ञान वाली कोली पर हैं दिने होते हुई। छोटे छपकोदार ताल विज्ञान वाली कोली पर हैं दिने होते हुई। छोटे छपकोदार ताल विज्ञान वाली कोली हुई। छोटे छपकोदार ताल विज्ञान वाली कोली हुई। छोटे छपकोदार ताल विज्ञान वाली कोली हुई। छोटे छपकोदार होते विज्ञान हुई।

देशराय ंतते हुए अपर वी ओर देखवर अपना ते कहता है जब तो मेर अपरवेश। 144 अपना कहती है, दूबने भी मेरा लगा उपनाम रहा । करों तो वह पहतों पर छाई हुई केंग ,न पित्रहों बड़,न कु और कहाँ में बरतों में कहीं हुई की 1 154 अरके हुई में मब्दुरी और मरोबों के प्रति तहुद्धा की है। इह पादती है कि मरोबों को मेर भर बाने को महर में मब्दुरी किए बादे । यह देखराय ने बहती है, ये विचार का बेगती बादियों में महरे नहते रहते हैं। यह प्रदेश में मब्दुरी में विचार का बेगती बादियों में मरोवरी में मरोवरी में महरे नहते रहते हैं। यह महरा में मब्दुरी नोकरों, बा अलात कि बादे में किया में महरे मब्दुरी किए बादे और बहर में मब्दुरी नोकरों, बा अलात कि बादे में किया ने विचार करते हैं। यह अपने वा नवरे और तेनात के जीरामों ने विचार ने विचार के बारामों में मुख्य नोकरों को मरोवर तेनात के जीरामों ने विचार के बारामों में मुख्य ने बाद के बीच की स्वार्थ में मुख्य की बहला है, देही भी अला। बीच त्या के लो हो। कुछ को बात का बीच की लाग का बीच की स्वार्थ की स्वार्थ की स्वार्थ में किया की नहीं कुछ का ना का बीच की स्वार्थ की स्वर्थ की स्वार्थ की स्वार्थ की स्वार्थ की स्वार्थ की स्वर्थ की स्वर्थ की स्वर्थ की स्वार्थ की स्वर्थ की स्वार्थ की स्वर्थ की स्वर्थ

न होती। रेडियो ह्वो। किर अहामी। 👫 वह क्वत हा बोहगीस गरी। है देवराज वहता है, दलन बाबु, एवं गीत त्यांगा उन्ता देवी हा । वंता गीत नहीं जिल्ले सुरुवारी अवन है व्योष्ण लोकतिस बनता का गीता 🛂 बाब वह अभिका करती है तो उनका है। बहुत महतीला और भीला होता है। है। महत पनर्न है। परन्त केट तारे मात्र को अपनाचे हर है। भे तह नवार है जीवित को पांच नो क्यों देती है। वह बहती है, के पांच नी को हुँकी, वांचुर्वन की जीमित के लिए को मानियों की यह में कहा कर दिने वाले। ^{35 के} देशराज जी म्बा की बता है है। जीवना काती है, " बतरों है हम लोग पने और बतरे ही हमारा ्षणारा पुरिस्टबारण गोव्हा है।° 163 देवाराख उते अवस्थेण कटला हुआ कल्ला है "शब्दी में लाप्ये अर्थ में मेरी अमरलता। ¹⁷े मेलना बहली है, "मुद्दे लेकील पुरुषण ते ही फ्रिय है। वाँ ने विकास वार अरेर बड़े कड़े उत्साद है ते विकास दिल्लाई। कुत और वालेब में के दूर पाना । हुई तथी बहुत अच्छा तमता है और बच दुनरों को रत में किया देती हैं सो बजा अपन्य किताता है। 🎉 विधानराय की धारण है कि वह अपनी विकार की मन्त्रुप्य कर जावती है। तेनीत है हूं पिता पिता वर। 19 परन्त देवराव वा मानगा है कि छावा वारितत्व उत्तेत मी महत्व है जो किले जानी अनी परिमाधा है मीलर नहीं अरता 100 अंक्या को विरोधना अध्यान करने पहले है। उनका कथा है 'ऐते ऐने अध्यान करने पहले हैं कि जायलगाउ, वंकी विलंगी क्यी और, वंकी जीवन, करना पड़ता है। उन्हानी , वर्ग केवल , वर्ग इन उपनरा , वर्ग उन अरनरा की अविका से उनस्ना वाद्या है। है हुद अपने अभिनाय पर कह कर्य कंदरा जाती हूँ, " फिल किना हर होती, की हवी देवी किए देश कि हम बाती हैं कि देते की तो मुख रिकाराती हैं कि अपनी जी देते हिस्सा ने रोग धाली हैं, एवं बार की जारी करी थी, उसी धाल में दल लेट मान रिकार लाई की । 1113

जानी कि कारता है कि वह किनी देववा की पूजी है। यो किनी तर पर रिक्ष बाने पर मी देवचा है, पर है जान की है जैन की जा मानना है कि "तमाय के इस को तरह तरह ही अभरवेते उने वा रही । इस अपने नये बीजन के लिए हा उपरहेता पर मारे बाउन बना वहाँ पाती है। अगरकेर तो बोचन है जाने प्रसार का बाइन बनाती है। दें कह जातेनी है, कहती है, की पूप िया है कि अपनीयन फिल्म की क्या और विभिन्न समारोही जारा काल की ेटा करती र्'नी। ³⁵ं एट का पर अपीक कर नेती है। किने एट उनावा नावा चारती है। यह यहर है उसने एक दिन मैंनेबर हो अपनी और विधिने वरण । ार कहती है, भैने गोपा ही नहीं वर्ष मन्ताही वी स्वीनिनी का नतीला है. मेंबर में अपनाये रहना पहरी या, ब्योरिज प्रीका अस्तरी है जाने वाने की हुएना उसमें सहय दिना सकती वी की बहुत परदी भाष विचा कि छेनेवर हिर आर क्रमा गुण्य नहीं है फिल्मा होरे साधान की स्थाप फिला करने पर। " [4] याधराव की धारणा है कि घटन्यों कुछ नहीं तकती। यह करता है कि बहे-बहे रिक्षा है। तक पुरु बारे हैं जैन्या तो पड़ा की है। तह नहीं दिये। उनकी अपनी ते काम नहीं दिख्या। ⁴⁵ं डेल्सा के माजन की म्युरिता के नाथ स्टब्स्टक और लोच व लवड़ की भी प्रतिकन्द्रता ती हो रही थी। अंक्रा को लग है डाने के अब है दल दिवस तहती है। 6 वह बाचराय ही छाती पर एव म्देती पतार देती है। वह न परेशान होती है न हिम्मत हारती है। उन्हें देशराय को पन में विका" परेशानी की जोई बात नहीं महिन्छत हत हारना अपना काम किर प्राक्रिय। कि। में उनकी कतर जो में लगी रहती हूं रात मे के जाताप हो विकास वे पासे है। अपवर्ष वही अपवेट । 11 देशराव का कालिया करता है वरबद पर छाई क्रायंका को उती करता किमानीयमा वरहे अनव वरवा हो. लरक है। इह अपने को तो वह बाट करी है, दिनी दिन गारे देश को बाट वालेकी। त्य वहीं क्षुद्र करण सोगी। ^[6] इत प्रवाद तेका ने देती अवस्थेत और सुदे इस्ती की माताप्त अस्ये की हेरणा थीं। है।

प्रीक्षण बहुत बहुद और सेन्द्रार है, वर्षा की प्रीक्षण के सम्बन्ध में की यह और इक्त में कहते हैं उन होंदी ती मानवा में हुकि की ऐती पुरारक और बात वर्ष की इतकी चिद्धालाला तकी जे अपनी क्यो । व्याप्त के कर के क्षापक और व्याप्त का सकती को अपने बाप के रिवर कुर्जी वह कत्व यहस्यान से,वाडी संभागर है। * 154 रिकार प्राप्त करने में उत्तर अन uga ours un gluor è ardere à gluor à leure di voi soré. कवरिक वस बीधार पर्ये लगा वा तो प्राध्या ने कवा वरका विकार और रिया और पार्व मोर्च की नहीं की नहीं की । में की मीरिय में क्षेत्रार्थना जरती हुई पीयन विवयं अति। यह या उत्तवा तुर-तुमादी धनने था तेवत्य व्योगि तुर-तुन्दरी-देश्याती का बीका स्वतंत्र रहता था। और औ बहुत अधर तकाप of therewere are the ground is confusion in comment and all these & over an infair in with with the in glass and the are धरेटे होते के एक्के और कियारी व्यवदार जारतरी की क्यूकी उन्हों सुर्थ। काराओरों पर नक्षी ने बाली और की मैं। आनुवार । वाजेसा सक्षी भोती पुरुषों के बहुत की वे तक,वरण्यु लांच पीचे भोती पूर्व और ताले जार ने नोचे तक तरवार पाट के तेवी वा पुर पोधे निकी हुआ क्रा पाला है तेवीजी हुआ। जीरा रेग फेटरा ग्रेस क्षेत्री की और बरा सम्बा,नाव तीची अवसर पोधा पेवत पर रोपी की वडी पुन्दकी व्याचीधार पोटी वापनी करी आहे। अपने प्रियो लाकी यह भी तर वही मारि अध्य उलगी हुन जीर की करवनी और वहेती का सकरता और देखता एवं पका । उसे नवा केते विकारी क्षेत्र कारी क्षेत्र अस्ता के तकत क्षत्री तक-वृत्र 1° ^{13 1} प्रविद्ध में तर तन्त्रको चा अधिका भागका अभि क्षा प्रशासिक प्रशास करिया प्रशास करिया अवकी करा से बहुत रेखून है । 🚧

वृष्य के तारा के विजीव वास्त्रावाण उतार वर भी बहुत हुन्यर गणती थी।

यह हुर हुन्यरों तो। मेरिट के देवांगा से नामन्य रक्ते वाले ,देव हुन्ति

यो भी अधित। ¹¹⁵ अध्य उत्तरे वेले को साथी गरित और मुरिट के गला

यह हुन्यरों हो हैं। हैं में के देवा । ¹²⁵ वह अध्य की से वह वहती है कि में तो

हुन्यारों हो हैं। हैं में के देवा बोधके हुए वहता है मेरे बता महिला महिला के विजे करा।

कि अध्यके हुन्य बोधन हुन्दर हुन्यती और वोचों के अध्यो अध्युव समन्त्रत्य

यो देखता हुन्य हो कम महिला हुन्दर हुन्यती और वोचों के अध्यो अध्युव समन्त्रत्य

यो देखता हुन्य हो कम महिला हुन्दर हुन्यती और वोचों के अध्यो अध्युव समन्त्रत्य

यो देखता हुन्य हो कम महिला हुन्दर हुन्यती और वोचों के अध्यो अध्युव समन्त्रत्य

यह देश उत्पाद उत्पर अपने हो। उत्पे विज्ञा महिला से महिला से महिला समा के प्रति सम्बन्ध

सम्बन्ध बहुन्या वाचों से। उत्पे विज्ञा महिला सेमा और सभी के हुन्ये

प्रकार के परिश्व के देखारती करते की बारवा है अपनी जार है जारे काले की अवकाश है। तेन पर्य है। त्यांत व्यक्ति व्यक्ति के प्रति काला जा पर्य है। बारवा की प्रकार के प्रकार के प्रकारकोष के उससे प्रविकारिता है। अपनुष्य पर्यो की काला प्रकार का व्यक्ति प्रकार करता है। काला और प्रकार परिवारों के ताल का मी प्रकार करते हैं।

section are and guese as person are and section are as a section are a section a

रिल्म की के बारे भारते में ३ पन की अग्रह भीता के लगमण दुलदार सायल्यक अठारत वर्ष था। रिलाजी अलो स्त्री वर्ष था। आयु की नी। रेण तर्वतार अधि यकी अपनी बाक ती की वेती कारियों की प्राप्त बड़ी की की विशेष रिकारी स्वर्धनायनी अरेप परिवर्णी है। यह वहती है, वह उह महोते कीमती हूँ। उनाप पीयती हैं, रोटी कमारी हैं, बेक में काती, अदे बीच वासी हैं। और का मारती हो। 121 रिकाकी अप कारिकीर के। याम काला अपी सहागर के करवार के कि कार्य का बाबा है दो से किसी क्रान्त उस्ती है," इस मील निवारी ब्रोड़े ही है। ^{33 के} एक स्वारी के पाल का बाक न वारकती हुई की करन जाती है। दिलाकी की हुनी मोदी रंगीन खोकनी और अन्यो बरियुता की नाम दिला पत्नी भी । उसके कहा ही उठ पता था अंत क समाप्ती महीकी सामारी है। क^{िंक}े यह केंद्र है वहाँ सोचहरों से पीछ सुनाने वाने को हैतार है है सारकी निका जो देते । तेव वया निवासी में व्याप है निव से हाती जाने निवा में व्याप व्याप हैं कर बहुती बार देखा । जीवी के बार निक्के विद्या विवास करना। जा जैते को तक वर 1 वह कुछ योदन योगी है। उत्तरी तक है अनेतर की पारना हार करा जारे जारेर केंग्रे सीके कार में बनेबी ,जान का बाचे कुछ है। नरज के strip, are are were are gred in 1º 18 1 3 it was now word at women in वर्ष विक्रम के विकास में प्रचार वाले के विकास कर के बार आपने के विकास or and has degineed the erock from the force on or काती है, के अपन का कार्य हुत्ती, है। को अवहीं र ¹⁴¹ किसी सराहर है। क्ष अवस्था को भागिका देती है, रिलावी में उसे मानियाँ थी, साठी सानी, अपेर कारताचा पिरतीयक की कारती की से कारेपड़ी पटना हुँगी।

ध्यमण को वाकी जा वासी है और का व्यकी हुटी से रिल्की े मन्यन्य में व्यवस से, रिकारी को मासन बरनी से उनवर ज्यवसर करी भूतेगा। ³¹ िरमकी बहुत निवाद है, "यह रिकाकी बहुत निवाद और तेती है हम वहाँ वर वार्यकृत लगायन वरके रिव्यु सीयर में इब दूली को चलाचे के रिवर क्षेत्रि । ये ती मी साथ परेगें। ¹⁹³ का वरिकारी पर दुस्ताकी साथ वर पुरु और विद्यू के लाग जा: धारती है। यह अक्षापा भी दिए में दिया यह है में प्राप्त करने लागी को पन्न भेते हैं तो रिकाकी अपी है पन को पहचान केती है जब रिकाकी हुआई जाती हें औं यह आते ही वहती है, "महाराधाधियान में हमत बाम वो वही धामती वर-त वहायानकी हैं। यह तकहनानी है, काला पर की वरावर राउ हो वाचे। परने व कोटी सवाचे बार । अब हुकशकी कुने । बाबर बना रेपारवर वा की od and had at a 13 i war d och the or gar, "our mad, कार पोदा। रिलाकी वाली है , भारताय की उन नाम्बद्ध है जाप का प्रत प्याप्तार असे हे किए पूर्ण की बाता था, कि है जा गते। के के क्रांति के कि के किए मार्टी नेवर आई थी, क्रवी बड़ी क्षेत्र पार्टी और व क्राव्य रिक्स्बेड वाचा। एक भी वादी केवी कि बाध भवा। उन्हें।बाबाइक की वशायांच की वे tro it our foor a six surers of or gree orbors foor ora-bit erur à dicer cer, "y que di delt à carett i des ur guestre fairer i 35 l पर पंत्रिक में करा कि बीक्शायाय हवाती से बीवरों से वो की मही जाने किया वाक र है जोकी बारत के की फैरिकीविट में नहीं पहुंच वर्ग ने हिन र व्यक्ति हरवर कर कोती, "रीकावार में त्याप करने ने हुवान हुवान सभी हुछ को वाले हैं मैरिटर प्रतेश ते की को क्षेत्र के क्षाप्रवाद की वी अहर की वार्ति के बैदावन को करान है। रिकाकी सवापुर वारवती, असंबंधित , जायन से यह और केवन नारी है।

-१ व्यक्तिय से १-

राजी जा बाग कावायकी वात कावायकी गाँदे एंग की प्रोह हुन्दरी की । अरहा के व्यास्त्री ते जेली में हुछ मिरीकांका अर गयी की व्यास्त्रह उस बड़ी के उपयोक्त के कारण और उसकी संबंध के कारज विकास सम्बद्धाय सरे पती भी 8 अधि वाही-वाही अस सम्पर्धका की सबस क्षेत्र काणी और अध्यक्त el viene i efranceur è va il sa mon del illu valuf i de ces fait शीक्षण की प्रवासिक होते हैं है वह करित करता है। करित के जिल में की हा हीने वर निव को बाक्षे है निक संबाद है। वह दश्वर ने वहनी है, " असके निव की मी ला कह वर्ग है। दिश्यक्ष के प्रके दिशा वर एए व शवनी भी व वर्गी है। परिवे नितर दान्य देंगी। यह दावर हैं 1⁴²⁴ सहारशायी बडी प्रमान के,बडी द्यायान 1,34 महाराजी जो धारिकारे पर प्रथम विकास है। समाधिती पान प्रथम में विकेष त्य ते सम मही है। रहनी की धाराना है कि "सेनीत जार की बीवन ने महर य ना की है। ^{के दे} सराप्राची की की की बात बकार की है। विकास नाए है उसी क समारत बीका विवास बतुषिक पटा है, भविषय में की प्रधान के घरपर ते जर का लाजिक वह केवर धारीवर । वहकेवर जीवा और का प्रवार केवदानी वर्त में बोरिक्त हो वापे पर हवारे दोवन वो बरित किमेरे और प्रश्र बैकर of survices of 5 l

असने पानी की कवता प्रियत्व स्थै अक्षण्यक का वरिषय प्रियत विश

स्पूरी सरिद्धा परिषे के रिकार में हैं है वह जाती है, " से तो सहस सहस में ते विकास से कार हैं हैं हैं का स्पूर् सहस परिषे से कार पूजा से अविक सहस प्राती है। अवेद वह आए से पद पहुँच कार प्राती । उन्हें अपने करित से हुई अपन्या है और कार है कि पार्टी को यह सब प्रात्म कार है। के कारी है, " की पार्ट की में को पद वह से अने से का तम प्राप्त है। के कारों है, " की पार्ट की में हैं, हुई और हुछ सार दें से मा तम प्राप्त है। के महत्त है। आप सार हुती से , हुई और हुछ

and the state of t

-। कुमार्थिक :-

upolitica a lateratura ar for upolitica upolitica upolitica upolitica de la securita del securita del securita de la securita del sec

द्या देश क्षेत्र है। सभी और हे काली है, है और अभी अभी सहारक्ष है आहे हो कि कुलार लगाना में पहला है। सहस्र कहा पायती की कि इस समारोश में अपनी देशने साथी देशका में होती से बहुत अधार नगता। उन्होंने कुलार के पाय हो बहुत क्षार्थ से कुलारो बीचन अपने की क पर प्यानिकार को पाय से किस अप उन्हों से कुलारो बीचन और की का प्राप्त में

in alphanista in a feet 120

a. mineritare per 159

^{3.} Albarika (155-160

हरुकुर्वन व्यक्त प्रकार इन्हेन्द्रका सामग्रीका

egrovi sirvi car

•: 157

रेंबरी वही चाहती कि उंच्य चोरी कीती कुछ वरे। का वह कहता है कि बोरी उड़ेती यत की नहीं दरना से अवसी पुरिसाद बरती है। कि . " और यह व वा कहते हो।" । यह नहीं चाहती कि अब अगाय करे जाहित जाये कर्ज है अर्थ होते । यह बहती है कि, " क्या दिया तो भी व माने किला दिश हो गत है।" ^{32 व} यह नहीं जहती कि उंग्य बारत कार्य बारे। वह बहती के क्षेत्र का क्ष्मे को कितके तहारे को ह वाजोगा ³³े वह पहर जोर वाजील है। वह पहली हे पानी तह पीत देगी, और बीतों है बार-्नाप वापटका स्वीनश, बाहे तीना, अवर्ष वात्मा, लंबर-कारत में बोरे हे को जोड़ होगी, और हे का पुढ़े बार बरते हैंहै तो हुए ही त्वराधी। भी हु पुत्री का वे पाम बड़े बाल की बांच करती है। वह त्यावतव्यनी है महादि न प्रशाहर जो जाना जेतरवर नाहती है। वह विकास करती है कि बन्हें पर कार ही जाएगा न करनी कर्न ाहेंगी, यहें बहें लोग जा है है। बाव वा बाब और अर ने बाव हुन्हें यहाँ जाय विवासी महरिय बहेगी हो- एउ वर के तो कहर हनारेगी। [5] वह एवं पर्का से सेवी है और सड़ें को पति ने कवानी है। उन्हें बारकान शाय है। यह पुत्र को पीटने ने कवाती है। यह पति ने करती है, " हों। तमा प्रकार दो किर यो की है आहे करना ¹⁶¹ वह प्रकार उपद्रव जो दवाती है वह मनाप में जातव रखती है। और उसी धेर्म है यह बहती है। यग्नाम जा मन जरी, उन्हीं हुया ते एवं दिन वहर लोटेगा। 171 वट तती तापु लगे है। वह परित पणता है यह परित बर्तन गाँवते हैं तो पत्नी है। मेरे लाय पेर हुए बोड़े को है जो हुए यह उस्में तो हो सन्द करते यह तहीं

m/Que

्य वारते हैं। वय व्यक्त उत्तराती वार्यों में बता तो है से पूछ व्यक्त निकास के हैं। वार वह बत वारते हैं। वह वार्य मार्थ ताय, अर बद्ध वा वर्ष बीरे-बीरे हवारी हैं। वह वार्य मार्थ हैं। वह बीतर-बीतर तक अर बर वह बती हैं। वह तारिका कार्य हैं बहारी हैं, बड़ी बीटी, बरोर है होंग होते ही बहते बेला है। वस्ता बहरी बर्ज वार्यों और बीटी, बरोर है होंग होते ही बहते बेला हो बात

का प्रवाद का वह तहते हैं कि वेजरों का पहिल्ल अववादा कोर आकों है वह बारियों को अह कारियों प्रवाद के अहते के बाद कीर का बीचा, परित्नों के का कर बारतीय बारों के आवादा का बाद करने, और पुन्ने के का कर को परित्न के सामने से बादना पानती है। उसने बीचा से बारियों को काव्या करने बादन बीचन प्राप्त करने की क्रिया किनती है, उसने अने बीचन को उसने कर दूनरे को बादने की क्रिया किनती है। अह क्रम उसने को अववाद बीचन क्रम है। वह बादने और बादने के अहम उसने का स्वाद बादने को बादने

^{|- 3788 943-} **|47**

[्]रम्यावन सारा वर्षा

²⁻ आहत प्रवर्त- 140 हुन्दादम् साल दर्जा ।

वहाराची क्रुविती

हर्गावती वासन्वर के जान्तम नरेशा ब्रीतिसंह की एक मात्र संतान थी , न कोई पुत्र था और न कोई पुत्री थी । अववस्ताया में विका है कि क्षांविती के तीर और बन्द्रक का निवाना अपूर वा और केर की क्षिकार को भी बतनी विकट लीकीय भी कि तीर का बता बतते लीपहणी परिमा औडवर किवार के क्लि पन देती थी। 18 11 हर्गांदती ने और जीव तान वयह वयह बुद्धाये कंकाये । यदिक्षी का विवर्ध यहा में, वर्धा क प्रसिद्ध रवाच नेष्ठाधाट वर और वर्ष स्थानी वर वरवदवा। हन्हें आव वी कर्ष विकथान है 1*121 वह बनत की सुन्दरता ततीनेवन और तास्त की केवीह अपीकी दृष्टि की।। अञ्चलकार की बड़ी बड़ी अधि लीकी ली अबहुंदी मानी कुर्यों की बंबड़ी के बिली सबने की स्टील एकी ही ।"[44]" हुस्सनी ही उसने बहुत प्याप पाया था। अपनी बक्क माला है देशान्त है बाद उस पर बी रितिक का स्पेस और भी अधिक हो गया था। उसे पुरीस्वर्तकता grees of a most fact a forget go afte moute general word is of उसकी बराजरीबहुत कोड़े कोच कर सबसे थे । हुताज़ुबुद्धि भी ही, आयुकी सवका अक्षरह कर्व । 'इंडा वय उसके पिता की अवनी काति के लोजापदाय पर ध्याम रक्षी की बास करते है तो यह कहती है 'यह सब लो चाँ की है विवार की अली प्रतीस क्षेत्रा है कि वार्तियोगित हैं कीई विश्वास मही एउसी का का कार्यांत है केन करने नगती है और उसकी पन निमंती है उस विशा हर्वकृष आपके ही हाक है है क्या को आपका पीवन तहवरी करने का सर्ववान्य प्राप्त को सकेवा व पदि य हुआ तो में आयोजन हुमारी रहेवी।

[।] प्रशेषम् ५० ५ ॥ वहारायो ह्योपनी

^{3.} वहाराची क्षांबती पुठ्ड क्रम्बावन गुरू वर्णा

¹⁰¹

आन बान की बाधा बीच है रोड़े उदकावेगी। है उसकी विल्लुन चिन्ता नही करती । तम दोनी कंतिय है । । वह बीड़े की तवारी वानती है और लोन्दर्ध की सबीव प्रशिवा थी। यह क्षपति ने द्वपतिती को उस पानीदार बीड़े पर सवारी करते देश मुद्राता बाँधे शास्त्र सुताज्यत सीन्दर्य की तजीव प्रतिमा हुनविती की तब वह आप्रचार्व और तराहना मैं हुक्ने उतारमे लगे-यह मेरी है मेरी बीवन संचिनी ह । बन्य मेरा बान्य वह उटडा बहवबेब करती थी साहत की गुर्ति भी 1223 फिकार की भोकीय भी और राजकाय में बी बहुए थी 1 वह क्यांत जार से ब्हती है जिल्हा तो बनी वेतुंनी ही, अपकी तैवा तहायता राजवाय ते करनी है।" | अवह व्यवहरी और तैगीत की वीकीय थी । रामवेशी से कसती है " हुन कि वार्त और तंनीत वार्त का पता लगाना " वय विवास के निवे कायांत हुर्गावती की क्रारें से तवारी है तो वस पुरुषर उनके वेर पक्छ नेती है और वहती है " आप मेरे पति है। हिन्दू नारो का यह कांच्य है । १ क्षेत्रह रोजकाच हैं महाराज की तहायता करने का अधिन क्षिय अरही है 155 वह बाहती है कि सामाव कुछावे बाव किसी कितानी की कट न उठाना पढ़े और राज्य को आय बढ़ वाये ।वह बहती है लानाय बुक्याचे बंधवाचे वार्ते तो कितानों को कट वही उवाना पहेचा और राज्य की आव बढ़ वाबेची। उसर विक्रीती हैं उन्हेत्रों में संबा वस पर ध्यान दिया। वर्त है राजाओं है लगातार को वाँच इनवाये नहरे ब्रुव्याई और विनानों है धरी में तीना बरताचा ।३६३

i. यहाराची हर्गावती पुठ 18 वन्दावन साम वर्ग

i ng ayan jakayan ji kacamatan di Afrika Carib da Salah Salah

See the second s

no 152

s. • σο 15α

वनवित वन करते है कि किलोति हैं एक करावत है कि वण्डेलों के वात करत वनशे थी । लींहे की पारत वनशे हुनाई नहीं कि तोना वन नवा तमें हुनांवती किंवित कुन्नश कर करती है" अनक नवन परिक्रम और कता वोन वह वी उनकी पारत पनशी ।।।। इनार तिंह आदि तोचने तने कि "वह तो निकट नशी है। राज्य के तारे काम की राई रस्ता तंनामकर करना है। "।३३ वह किलानों की सामत निरंक्ता परवना पास्ती है किलो उनकी सल्वाता का हुन्नल हो सके। सन्मति से करती है की हो वावन हुना नहां की पाना कर दें। वेद्वातार तीर्व वर ननान पूजन किया जाय, नांव मांव वनकर किलानों की सामत की निरंक वरव की वावे और उनकी सल्वाता का हुन्नले किया वाव।"।३३ अवारतिंह के कान तक हुन्नले के तन्मल हैं अववाद अवे वरना अवा अने मही वहने विवा। अवा निरंक वरते हैं अववाद अवे वरना हुन्नले के बोर सचनवानों से पूर्ण वे बन्ने ताने हुई और वेद्वात हुना हुई है और सचनवानों से पूर्ण वे बन्ने ताने हुई और वेद्वात हुना हुई है और सचनवानों से पूर्ण वे बन्ने ताने हुई और वेद्वात है— हुना हुई हो न मई, वरत हु हो न नई वहांवत होन हो है है और वेद्वात है का वहांवत होन हो है है हुन्न

courts are golden and chara are on introof a new landings.
Then of a serial area is sured at ager and it as our cred are our ager and it as our cred are our ager and it as our cred area.
The other area is pure it ages of sured a led grant area.
If golden an age to have found on all out and are grant age.
The ager are agent area toward on all out area are age.

महाराची हुर्गवही हुए 160 कुण्डावय वाल वर्ग

^{2. * 40 160}

^{* 50 163}

अरम के वल पुरुष कार्य है क्यारे पुरुष रुवर्ग हैं नाच उठ लोगे 1°8 18को वल अपना वर्षकक्षतो है की तीरवा तीवा है, अवही तरह तीवा है । वत कारणा हर यही तथा । इस कियारे बातक वो क्यामा अपना वर्ष था. धर्मानवे क्रम पद्मी पानी में सानिक भी क्रम नहीं हुआ। तेरसी बहती गई। वस विवासी क्षेत्रका की क्षा है वव यथा क्षका क्षा अवस्था आयन्य वन h at 121 as until b to are as asserted to about a foorest की बेटी को किलानी पया लानि हुई है । करियाद हुनाने बालों में एक वे कहा" उस बीड हो वरे ही बाब बताबे है लिये ही महारानी साथ बहती बार में हुद बही भी एक हम बिमी किये का है निरंत न्यरंत लीगी। ह्मियारे वे वर्षा के बोध कहा , " वे बाजाई बन्देलों के मरेस्बह्मियारे है काम में थी । मार्च सुबरवाचे-बनवाचे नवे , वनश्वित के कार्च किये की तेना का दिएका सम्बद्धि क्विपालीर प्रवासकी रहने सभी।"। अञ्चले वर्ता की यह तम किया बायगा। जागात ने अवनायार में हर्गावती की गौरिनवी बाव में नेकर पान्दी बान्दी कहा" इस क्षेत्रन अंगीनकों में बढ़ की नार्तिक और क्लोरसा । अंबी में उबा को किल्मी की महिलता होती पर किरे क्यत की पुष्टल हेरला ।" | बावब क्ष्मत ने कीर्ति तिंत की मारे वाने की बात क्राविकों को बताई तो उसने क्षिया किया कि में अपने विवार की बाइनी बेटी हैं . बोदन पर्यन्त इहता ने तान जान करेंगी क्रीका पानन वर्तनी । वा राजी वर बहुनी है किया की । अवनीत की पड़ी पच्चीस-

i. महाराची क्षाविती हुoiss बुन्दावम नान वर्गा

^{22 * 10109}

³⁴ T

s. * go 205-20

हवार में स्वर्ण मुहार्ने विली की कोड़ीबात की बिर गई की । राजी ने कारति ते कहा" में हुमते यह प्रार्थना वह रही वी और करती हैं कि वब आय के इर्म दिन से बसकर बहुती को बस अवर्ग की स्थान रहे हो तो वह वेली उस साम्रवार को लीटा थी 1818 क्ष्मारिकार ने वर बहुती की पुषा को समाप्त कर विमा और हैय महाराणी हुर्गावती की की विमा। वनता में तुरम्त बात वैनी । हर्गावती की और बदा का प्रवास उपह पड़ाः दीवाय अवार क्षिंह में हो हमा धीड़े अपे और वंबाने हैं क्यो हो वाने की बात कही । क्ष्मांत ने कहा क्षाना वृद्धि, बन्धित वृद्धित नहारानी तारव भी यही बाहती है जवाने की कोई बढ़ी के नहीं पहारेगी व्यवहरू क्ष्म कर दिवार वाले का एक इव एक्स वायगरा 21 वन्द्रतिष्ठ महारागी हुनीबाई ते बीला, बाबी रामी वी अपने उस वर बहुली की जिस प्राचा की बन्द करवावा है उससे बन बन का बन बन रहा है अलोती बरत रही है। सबस्य जान का दिन बहुत हाज है।"[3] पच्चीत हवार रूपवाँ है अवर्ष की पैक्षी के सम्बन्ध क्रुपीवर्ती करती है "उसे नहीं एक्का वा सबसा डोडी पिटवाई वायनी बितडी होगी हुमाबि वरडे ने बावना। ही उतने रक्षे वर वर्षे अविवास वर्षे । १५१

and the property of the second control of the second of th

i. महाराची क्षाविती go 212 बुन्दावन नाम वर्ग

^{2. *} go 213

t: : 80 314

विया में वर्षों कर्षों विश्वन नहीं वहंगी । साथी की सवरती के समय हरव नहीं डाहुंगी , दरबार मैसूंड कीनकर बेहुगी, वब मन वाहेगा सब बुक्वीं का वेटा बारका क्षेत्री । ११।।

"अने हैं तो क्षम वालाओं को तुवाई का काम शुरू को हो गया , , वर्ग-बतो में अपनी बामा हैं वर्ज वर्ज ताल कैंक्समें का वर्ज दिया था वर्जा वर्जा में जिल्ला किल्ला कार्य कर्जाओं को केंद्रेड हैं काम बलाने का अधीयन कर दिया । नेहा बाद और अन्य स्थानों पर मन्दिर के निर्माण कार्य का भी प्राथम्ब को ग्या । वस अब्दों कार्यों के साथ को उन्होंने हैना के सुकार, बहाब और सुनेक्सिस करने को को बोचना कार्याण्यत को "121

अवनार में दुर्गावारी को करणाम केना कि आय अपना तकेन वाधी हमारे पात केन हैं। आय महन एक औरत हैं। आपका काम राज हरना महीं हैं। महन में मोन नहें। मन बाके को विधार केन निवानों। राज के तन्त्रों के वारवार न रखें। "[अ] दुर्गावारों में सहतें साके काने कहा हमीं अवनर के वा कितों के वी राज्य पर बनी कीई बहाई महीं थीं। वह वर जो वह हमारे केन को रोचने की बनको देवा है हम अपने वर्ष और अपने देता को रहा हैं अपना तब हुए स्वांका कर की, परन्तु मेंने हुन्ह के तहनीं यह बाम के दोन मोड जो किए नहीं नवाबेगा। "[4]

हुए विशास को भारताओं को उस मैं बोतावर उस करा रहे हैं सामुजी ने को से अब धनाने को नगा विका और सामजी ने कार्यों से पूर्वी धनावा औं धुर्वाक्षण ने सामुजी से क्षा कि आप खुजा ज्यार वर दूसने बात को धुर्वाक्षण करने सभी हैं सोरका के बारे हैं आपको पूरी समीक हैं

^{।.} महारानी क्राविती हुठ 220 बुन्दावन बात करा

^{2. *} go 231

^{, •} go 243

परम्यु उत्तवा साथन यस नर्श है । विदेशियों के आकृतनी है अवकाल पाते बी मीडवाने में अब्दे केलों की अवत बहुएजमी, राज्य की और ते मैनवा कर इन धीन दरिक्षी की हुंगी किए याची का छन में बीतना अने आप बन्द हो वायगा। 📳 हाते प्रतीत होता है कि वह शीमाता ही समर्थेड और किरानी को हुआएक भी । हुमीवती नीच है होते नीच नहीं बनना पास्ती भी 1/2) तथम विकास प्राधिती के भीचे, और अनिशत विन्तन पर पा ।(अ) क्ष्मीवती की जब यह अप्यास हुआ कि उसके साथ सहारुओं का भागने का यन है तो वह उस्तिथित हो वह बीवी अथ स्वामी से तिनिक सहायता के अपने पात जाने का वही नार्य है हम उस किया में बाम कहे हुवे तो अने वाले लोट बाचेने और सन्धेने कि हम विना पुढ के ही हाए मवे । विनकी बाना की वे की बावे । वे तो पत्नी वे सहबी । अब एन वेंडों को करवा में अधिक सम्ब एक पता पहें रह तको । मेरे कि तो तरणा क्रुट केंद्र की के कियान और हुध नहीं है। या तो नीतुनी या यहंगी 1141 वह औपस्थी रेक्ट में बहुती है तरवना करने है लिये हुद्वता है ताब तेवार रही । तमान बाब ते कांडनाडवाँ का तामना करी । निवाई देशों हे म लोडे को निवार्क) तब तक क्रमरों तुम्बारों निकार निवार्क को वैश्वी है तह तह होएवं वर है रही और वह स्थिति वन की हवीड़े की हो बाद तब लगाओं डोकी और बड़ी 115%

रानी हुर्मधारे ने प्रकट युद्ध किया । तभी घोषी पर विनय हुई भी । हुर्मधारे ने उस दिन भी युद्ध किया पा उसने तथनी प्रजीप भीनत कर दिया । "[6] जब वह हारने सभी तो उसने उनेप सिंह से क्या कि

10 304

[.] महाराची हुमोबती पुठ 263 ब्रन्थायन बाग वर्गा 20 268

nesersk principalist s

" अपनी कटारे ते हुई हरणा समाध्या वर को । में हुई वार रही हैं परण्यु अपनी के को वेरी के ल्वर्ड में बढ़ी आमे हुंगी । मारेरा । हु। अवार मिंह में आमी ल्वामिनी का बात नहीं वाला । नमु में हुनौकती के पेर हुई और कटार के बी।" ग्रंण्डोंने हुरणा अपने वह साव ते वाला में बीक नी कटार वाली से विषक समाधि वा के किन को केवती हुई पार को मुद्र और वह हुनौकेश समाज को कह तकी । जिर बड़ी। हुई हुनौकती स्वामिन्यमी केट अहारक, कितान हुवेहरक, केनानवार और बीरोमना

ь महाराजी हर्जवती हु० ३०६ हम्बाबन वाल वर्ग

^{2.} यहाराची हर्गावती ६० ३०७ व[®]द्रावत ताल वर्गा

अवस्थी बाई इंश्यम्ब हो राजीई

उमराव सिंह ने किप्टी कवित्रमर से व्या कि वह पर्दी नहीं करती । कितरमी को यमता की मदद है लिये तैयार रहती है ।उनके शाब में रिवासत का प्रथम्ब सीच दिया बाब ती सब कट हर सी बावेगे। कों के किन्यत नहीं रहेगी । "[1] उनकी आयु छवजीत तरलाईत के लगवन बीपी देह हरेरी पुट्ट रेंग गीरी अबि बढ़ी बड़ी । बहि छनी और लन्धी बिबी हुई, । भाव शीवी बेटरा गील । हुण्यर ती वी ही बेटरे वर शाबित आई हुई थी। [2] रामी वा ववन वा कि " एव ही वन्हर्ने ते हुए नहीं शीमा । मैं बनता वो तैयार क्यमी और विधार हक्के बहुंगी ।"। अबह बहुर थी तीय हुछ य सम्ब बेंद्रे इत कारणा पुढ़िया देवी मर्थ ।" बाजन पर मिन्ना था केन की रक्षा अपने के रिक्षे या तो अनर क्तों या प्रदृष्टिक पांतनकर अर में बन्द हो बाजी। तुन्हें की क्षेत्रन हो तीयन्थ है जो वस जानव बासकी पता बेरी जो दे ।"[4] रामीजनमती धाई ने अर्गान्य को योवना कनाई । राज्यकार रानी अवस्ती बाई की बड़ी सराक्ष्मा करते हे " अने क्षेत्र हैं गहारामा हुर्गावती को वरम्बरा अवर है । राजी अवन्धीवाई पर उपनी अवीत का साच देनकर में प्रवा वहीं स्थावाहूँ । अवन्तीबाई अवन्ती देवी है ।"[5] उन्हें अहिन सास्त है और उन्हें विश्वत है कि महला का पुरा के उनका लाय देगा । वे काती है, जनारे वास सीव एक ही है वरन्तु के क्री है और अहिम सास्त की ही आपने वहाँ की केरी पाल्य हरिकार उठाये हमें हुवना की की बुवर क्षेत्रियों । में उत्तर कंड्री वैद्यान में का प्रदूषी (क) पूर्व विश्वास है कि

erman et eret, e-cre- are eret go

मण्डला का पुरा केन स्थारा साथ देशा ।वह अवना समय बनता के हित वार्ष में नवाती को और अपने वात की तेवा सुकार की वरती की रामी अवस्ती बाई को कहा वैन वा है अपने राज्य के नांव नांव नई । योजना केवल प्रमुख तीनी की बतलाई । तालारका जनता है हित कार्य पर वयी रही और किलामी को तैयार करती रही 1818 अपने वात की तेवा सुक्रवा में की दलर मही समाती थी। अवहर हे प्रतम करने पर अर्थ किन ने कहा 'क्रमी वह तो महम औरत है। यदा गही हरती । विकार केलती है और सर्वारणा वयता ते बहुत हेलेंक रवेती है वह बात कर बुध बुदका बेदा करती है, अगर उसते कर कीई नहीं है 1125रामगढ़ की रामी बहुत संवेह बहुर और वशाहर हे "१३१ रामी अवस्तीवाई दीन डीम कितानों को सरावता करती वी । वह ऐसे अनेक कितानों का विशा क्षत्रक के अवदा प्रध्न हमें नगी भी । अपने इस बेली से उनके देश होड अमय पर बुद्धवाने का अपन्य भी अद्या कर दिया करानी पारिने हो । [4] रिकान तरबार है अधिवारों है इस्ते है वहां हवारी रानी नी हमारो अवर्ध के निवे अपना मुक्तरन करते हुवे सतना तरकार करती है । [5]

हरनो का तक्ष्मवाधार तर इसके हैं विद्या से गा की विद्या है जा की व्या की के स्था के गर को 1/65 रानी अवस्थाधार की व्या के गर को 1/65 रानी अवस्थाधार की विद्या के बात के लिए अना कि विद्या की व्या कि विद्या की व्या की विद्या की व्या की विद्या की व्या की विद्या की व्या की व्

अवनीवार्ड को उत्तर को कारता वो कारता वा के किए वा तिन्ति के वहाँ को उत्तर विद्या है वहाँ उन्होंने किया है बात प्रश्नान के किये कहा अने प्रशासिक स्थित है कहा "अने वोड़े कहा और को हुए में के बातों क्षा किया का पता नवाक अने तोष अनो किया है को बहुए में के वाल अने को का साथ के क्षा का साथ के क्षा किया है कहा है में के बता के वाल बीक को साथ है को के बता किया है कहा के वह को कहा है को के बता के वाल को को है का किया है को बात की का विद्या के वाल अने का वाल को का साथ अने का वाल अने को का साथ अने का वाल को का साथ अने का साथ का का साथ अने का साथ की का साथ अने का साथ का का साथ का का साथ का साथ का का साथ का का साथ का का साथ का साथ का का साथ का का साथ का साथ

[।] रावनहुकी राची - वृन्दावन तात वर्ण पुरु 102

^{2, * &}quot; go tos

s. • go 104

^{•. • 50 122}

हालमे में वही विकास पहेंगी। 111 रामी के पास वह जारा सम्बंधा का लेका केवा तो रामी म कहा" लड़ते यर तले ही बाऊँ परम्ह परदेशियों के बार से ह बहुंगी मही 1722 उनका देवें अधिम वह 1 वीड़े ते कितान और ताबारण ती कुद ताम्ही जाव में, किए वी विवास केव और केता वर्षि । और हैती परिश्विति में बच वर्ती है भी बिली संशोधता की आचा पत्नी थी। यह दुर्गावली की अचल थी और तीन तो वर्ध पूर्व की अतिहास प्रतिह न हारानी हुनिवती के अर्थित का भारत करने वाली ।"[3]राजी ने बती तसवार की न्याय ते निकास कर उपराव सिंह को है विवा । स्थान है निकाल लो न मानुस कथ अयक बहु बाच ।"१६६ अवस्ती बार्व का युव वराज्ञम देवने वीण्य वा। उन्होंने उमरावासिंह है सनवार मांगी और रानी ने तुरमा प्रवार वेट में बोकती 1"151 वार्तिवटम ने कहा कि है क्या कहना आपकी स्वीदी वा 1963 यस बार्डियटन में उससे पूछा कि से सब किसान विकार वहताने वर आपने काय की 2 तो वह की स्पन्त स्वर में बोबी कितानी की क्षित्राय मेरे और फिली में की नहीं बरकाया केंक्काया। वे जिल्ला रेज्यर है बनता और क्षेत्र वही ।[7] राजी अवस्तीवार्ड की समाधि नहीं क्ष्म पाई वरात वाताकरणा की उनकी बीरता की छाप 3f28 8 1181

1.	TER	ो सना-	GFOICE STA	417 (0	124
2.				T 0	129
3.				T O	
44.				10	121
5.					132
6.	•	54 8 W W	ang pangan kaling di 🌉 ankar kalina. Pangan kaling mangan sa Albania	10	122
7.	*		•	10	124
8.	with.		•	80	135-136

oi di g

को को जु का मुहण्याक्षाह पर कांचू कर पाया। बाद्धाह के मन हैं
को को तथार रहा करती थी। बोकी ने बहायमाह को द्धाया दीये व्यक्तिएक
धानी को को के के धा कि रोगन टोना को तम्पारत मिली को की बू
उसे पक्ड़वाने, वेद्यक्त करने और मनदा द्वालने तक के तावन रकती थी।
उसका अधियत या कि वेर कोई बात नहीं हैं। एयद्वा तीथे लोगों को विनका
असर भी कम हो हमें द्वा वक्त कोई बड़ी वक्तरत भी नहीं है। और किर अपना
कुथ विनाह नहीं सकते, उनकी बढ़वी भी अपने धर में हैं। "।।। क्रम्ब द्वीन को
को बोचू बहुत तहारा देती रही। यह के बोचे ते को बोचू बोनी अवसा हमा में
मुनहनारों को हवा मिल गई। अहकी मुनतेदों के लिये जहायनाह ने हनाम में
मायके बात अपनी निव की पनड़ी कीरन मेवो "। 21 हुम्हार को तमा दी
वाती वरम्यु बहुतामी को वबह से हुय है को बीचू को भी दसका मम है।

वह राजनीति में यह है और अपनी श्रीह और कोंग्न से कहे के राजनीतिकों को वो अपने से ह्याचित कर नेती है ध्वह चतुर है कहती है" हो तो वजीर के वहाँ को धनर देना कि वह मरावों के धिनाफ निनाय की मदद है निने कित सरदार को नेव रहे हैं ।और धिनों किया लियों के ताय वह तकत ताउनसे वर वेती है। वह करने द्वीन को जान वक्कर निकास देनी कहती है हुआ करवात काम द्वीन कहता या नेती औरत तकत ताउनस पर नेती है अभी वही नहीं है वर किसी धैवन बेतेनी और तब उस नवें कमस द्वीन के जान वक्कर निकास हैंगे काम वक्कर निकास हैंगे काम वक्कर निकास हैंगे। "हुंबं वह हाना नहीं वीती वी कि हवास ही वो वेते हुंबं को नीवत अर नई वो वह हाना नहीं वीती वी कि हवास ही वो वेते हुंवं को नीवत अर नई वो वह हाना नहीं विकासने देशों व्यक्ति हुंवं वह होने की विकास ही वो नीवत अर नई वो वा वह होने विकासने देशों व्यक्ति हुंवं वह होने की नीवत अर नई वी वा हत नहीं विकासने देशों व्यक्ति हुंवं वह होने की नीवत अर नई वी । इसकिये वह बोर है।

E039.

i. लोकी आप go 38 इन्द्रावन लास वर्गा

²³

4 T 0 70

इ शिवाम हो गी सम्बन सोनहस्तरह की बी। गौरा रंग हुन्दर बड़ी अविदेश में महा महत्रे साथ महत्वार्थांका धूनी जिल्ली। 📳 प्राचनमञायमका की बहुको का बात था। इरक्षमा है बालिय का उक्ष्म वा कि इस रिक्ती से कुराब का दिल हुट वायगा । मुनाब राजनम हे कक्षता है तुम कारती की वहार हो, दिन की महत्र और वार्ष की क्ली 1/2/ वास्त्रम का दिवाह रोवाह शीवर है ताथ हो क्या । रोताबुद्धीया की नदीन परणी शायनम केला है साव क्षीको केलने इष्ट्रव कर्म की बरणी जाती है। उन्तापुर हैं जुनाव का जाना राज्यम को जना नहीं तथा। यह शुक्रक्त और उनहें साथी को याहर महीं वाने देना वाहती।" मेर प्रमाधन और काल भी शीमा उनवा वाना" [3] देव वर्ग और उसकी पत्नी की तथा करती है। देव वर्ग और गोगती के सुरतिस त्याम वर वाने वर ताथमा अकेशी रह वाने वर रात में अनेक बार होती है। शासनम मुनाब को के आने वर चिनितत हुई ी और मारे जाने पर ध्यक्ति हुई भी 18 राज्य का अगाव की कहा पर जाने का अंग वर्ग वी में अगुकार किया है "अवरव की अब वर बच्चाक्ष्मिय पहुंची उसके पर कांच रहे है। धारकर वैसे केट की और कुछ बहुत्वे। फिर स्थिर ही गई।ईदवर से उसने मुनाब की आरकार की अमानित है लिये द्वार्थमा की और ती पश्ची। मुकी बेहरे पर वालाध्या अर्थ वोडे और मन हो मन कहा जुनान जुनान। भूते माफ कर देना (क)

ь बीवी अन्य go 2- g=्द्राबन वाल वर्मा

^{2. 20 9}

^{30 109}

⁰¹²⁹

वीकाती (प्रस्तानक)

तीमधारी मैंनल की परित्र है वह अने पति की पुत्रारित है कहती है हैं अपने योष्टर की पुजारिय हैं। अपनी हवा नटान नी विनारियी। सरैयवती अपनी साम की तेवा करती है और उपचार करती है "सरैयवती ने कुलराची भी प्रयक्त और पत्त्व ते कल है कारे हैं वर विवा अवधानी ते areure de face de avare fouri-ili de artho è an as fon प्राथितिका न वर में तब तब अने पति वे पात नहीं आती । सोमदती ह्या d are adore aced urag draken h was tourn selt fir it na कलता है कि 'क्ष्म की काली बड़ी बाबा 1-14 वह बारियादी में किरवात नहीं करते। यह बहती है जाति वाने को फिल्ट होते है मीजी इन पर कभी बेता बढ़ हुटे तो बान बड़े । 15 बह अपने वात का सम्मान करती है और उसके मते हैं क्यमाना दानती है। देख के दुवेशा करते ही ताक कर माना का तरह हानी कि कुछ को है बीठे इसने तथी और अधिकार हाती वर। 16 वह क्यती है मेरे ती भाग्य का उद्धा हुआ है । 17 वरम्यू प्राथित वह के अप किर कम बीमों में जा किनेंगे और में किर वहीं तरश की वयमका को में हार्युगी । - 18 वह मंत्रण के पुरुशाय वर विकास करते है। वह कहती है और वास्तव में पूछत है यह अभी देवने की बाकी है। है बी अपना बाह्य एप वहर से वहर पुत्रा से बहुनर।" (१) नवन विहारी अपने म निवार में मैनक को वर्ताय वही जरने देशा । नव वह मुर्तिकी उल्टा वर देशा हे ती क्षेत्रवादी कवती है कि उसने देता प्राचित्रक करवाचा वाहिये

i. प्रत्यानत go si g=दावन तान वर्गा

^{2- 40 91}

^{3. * 90 96 *}

^{4. 90 04}

^{5. *} go 100

^{9: - 80 199-145}

वरेन वर तके " उस दिन हम लोगों को दानि नहीं वरने देशा था और स्वयं देशा राखती जाम किया । उससे तो देशा प्रायशिवत वर वाना वाहिये जिसे वस हः बम्मों में भी न वर तहे । 188

वह दक्षि पराप्तवा वार्तिक अने करिया विवर्ति के पहु और आहण्यार वारे पेण्डित के प्रायक्तिक करवाने वार्ता है। वह आवार्त नारों के रूप में हमारे रुक्षुक आतो है।

i. प्रत्यानव कृष्ठ ish ब्रन्टावन बाल वर्ना

कुररानी प्रत्यानत

कुशरानी मैनन की माँ है। वह इस बात वी स्वीकार करने की राजी नहीं है कि वैका इतावान ही तकता है। वह कहती है जान तेरा ब्राम्हर में तेरी ब्राम्हर किर है दुवनमान के ही सकता है । 11 पुनरानी को विक्रवास है कि देखतान से जो एक को पुरव विकर्ता है वही पुण्य और हैं को भी किला है। वह नका विहारों है कहती है आपकी अनुमति से देवदानि का जो पुणव हम तोची की प्राप्त क्षेत्रा : 12 | उतका ह अने है कि वेरी संभा का वस सबको पहिल हरता है वेरी ही देशता है दानि में तब परित्र होते हैं "पर-त अप और देवता तो परित परवन है शंगा जी है बानी रक्ष श्वान करते ही अपने बावों से उसत हो जाता है परन्तु वंगा जी के यह बाय हता जी नहीं है। विशेष पुलरानी किव्यक्ति को सदा ही शुक्रदायक मामली है तथा अन्यान है व्यक्ति को सब व्याजी में अरहा जानती है। यह बहती है की तो देवकानि तदा ही हुकदावह है तो भी प्राथिषत के तम्बन्ध में उसके पाविष्ठकारी प्रधाय पर एठ करने ते मुख्की अमा न लगा होया परन्तु तल्ला अनवान का स्मरणा सब व्याची मे बटल होता है। " विशे यह अपने क्षेत्र से अप यह मेनल हे द्वारा द्वारप करने की अध्वा नहीं सम्बन्धी । नक्ष विद्यारी से किसी प्रवार के बेर पुकान की की अवश मही सम्बती है ।वह करती है वामी व या तेरे कि ठाहर वी को सिंहरतम से उठावर वही केंव देने।मेरे हुत से वच्य नेवर भी हरण

^{1.} इत्याचन go es g=दावन नाम q=f

^{2. °} go 125 °

^{3. *} WO 125 *

^{4. *} go 132 *

कुनरानी बोनी बहनका विहासी है साथ हैर बुकाना कहनावना था कार्र दिन्द्र समाय है पेर्टी को रोक्ना सम्बद्ध वाचवा 1º (1)

वर्ष श्रम में हुम्म ने हुए नहीं कहा यह कुमरानी भी उद्धा वर्षा । यह कहारी है और भी बहुत को यह है जिलों का हरम अपर उत्पाद पहला है और जिलों का दिवा रहता है। हुम्में भरी तथा है हुए नहीं कहा हो उद्धार हो किया । 12 वह स्थानमानकादी भी उद्धार नहीं सम्बद्धी असे हुए इसन्त्र होते है हुए अप्रस्था यह बहुती है, युन्हें जो अस्त्रा हो करों पर स्थानमान सामोती -12 बाद हर हो हुन्हें जो अस्त्रा हो करों पर स्थानमान सामोती -12 बाद हर हो

वह धार्यक प्रकृतिया ही सारित्यक नारी है। अपने पुन ते उसे बहुत क्रेम है। वह सद्धिवारों की अरबीय नारी है। धार्यक आड-नवरों से वह स्वतंत्र क्वें परे हैं।

is gratua go 134 gratur ata auf

^{2. &}quot; WO 155 "

^{3. &}quot; go 155 '

fater

क्रिका उद्ध्य क्रिका उपन्याल की प्रमुख नारी यात है अवधा यदि वह उहे कि वह एक बात नारी बात है तो अत्प्रक्ति नहीं होगी। पुन्ध बात जी कम ही हे परन्तु उद्या तकिय बात है जो नाटक में प्रमुखे हुमिका निकास है। किरमे का कायम का माम किन्यों है। किरमा बड़ी मूर्न बड़ाकर हैंह कार्य का बहर की और देवती है जब सहजारिया की वीचना हेतू गाँव में आया है। करवटर किरण ते बहता है, बहुत अरहा तुम्हारे विता की साम्रोत किस वायेगा और कृषि क्यिमे बाबी अन्ही तरह ही व नी ती तरकार से तुम्हें रह वन्द्रव हमान में दिलवाने वा प्रयास क्या है। विश्व स्थितमा सावती है और बन्द्रक भारती है परन्तु बहुवाती है। उद्या ने वई बार किरणा की बहाबता बन्दुक सक बरने और निकामा साबने हैं की । किरणा बहुर है वह बाजू से प्रस्ताव र असी है कि इसके लिये क्या एक गौदाम बनामा पहेगा आर्थिक अपने यहाँ कहीं कों बचह जन्म को अवही हासत में एवे रहने है लिये नहीं है 1521 किएका वहती है " की अपने गाँव हैं परकालर वन्धावत जर और होटा तर विविध्तालय भी बनाना है । १३। वह बीव और नाच दिलवा है बीच ही करने की पक्षपाती है, कहती है हम तरेम अपने गीत और नाच अपने ही बीच में क्षेगी । कियाड बन्द करते आंचन में 13 45 किरणा अपने किवाह बन्द करते बोहा ता वा पीकर अपर की बुकी क्षत पर आह नेकर डाबुओं का प्रकालका करने है किये तैयार हो मई 1"[5] वह बण्डुक हान में तेती है ।इन्सवेन्टर उसके तान में वस्कुक देवकर क्टता है "अव्हा बेटी सुनने हाम रहेक का है नाम निवाधा है । बन्धुक्वनाना

^{1. 3}m fores 90 44

^{2. 90 80}

^{3. 10 84} 4. 10 81

तीने निया है न १ वह उसती है " येरा कांच्य वो है 1511 वह तासती है। वन्नवेद्धर उसने तास्य को द्यामा नहीं वास्ता वा 1521 वस हुर है कांच है यक वर है बारे में करा तो किरका है तम्बन्ध में क्या किन्नी वेसे वन्नवादी हैन कि वादे में करा तो किरका है तम्बन्ध में क्या किन्नी वेस वादेगी (प्यार द्वार को पनी अपनी क्रनीती सन्तान है। [3] किरका ने हाहुआँ को मार निरावा, बांचे का काम क्या नाटक भी देशा और लोकपीत भी नाया (उस्स करता है वह बड़ी है उधर महते को पूर्व विश्वों है हाड़ुआँ को मार भगवा था और वो बांच है काम में किता है वादे रही है में विश्वों को मार भगवा था और वो बांच है काम में किता है वादे रही है में विश्वों अपने मायक करता है वही है में विश्वों अपने मायक में बांच में बहुत तो बातों कामाई है [55] और विश्वोंने अपने मायक में बांच कि काम में किन्नों को मायक हुततो है कि "में सब लोकपीत भी बातों होगी? तो मयन उत्तार देती है " माती है 157] विश्वां वत्यादि का काम भी हेता था जिसमें जिल्ला दोनों को बहुत लवता वा और उन्हों विश्वार करना था।

वस प्रकार किरणा और है सह कारिया के वार्थ में पूर्ण सहयोग देशी है। यह अपने अपर नियंत्रणा करती है। क्लारा बादु किरणा की बन्द्रक का शिकार होता है

^{1. 3}CH FORT 8 92

^{» *} go121

> " 80 141

^{6. &}quot; TO 141

^{7. &}quot; 80 141

प्राप्त अध्याच

स्वातन्त्रय एवं प्रातिकालिता को दृष्टित से वर्मा जी के प्रमुख नारी पात्री वात्रा अन्य उपन्यासकारी के नारी पात्री से तुलना त्रक अध्ययन

प्रमाहर ताल कता और हेन हरू

प्रेम प्रमुद्ध कवाता विस्त के सुमाद है। आधुनिक पुन वीत्म वर्त युग केला की विस्तेष उनके हैं ता विस्त हैं किलते हैं। उन्होंने आकारोज़ उन्होंने हुए प्राप्त के क्या, निमंत्र और वीत्म, तमस्मार व ने के पुन्त कोर पा उठ, वाचान है पुन्तकों का पुष्पार, और की दिली क्या आदेद अनेक विस्ता पर तह विचार पुरुष किले । ज्याना हिस्स को होनी विचार पुरुष व्यानी और उनकात है तिहासिक साम पर की उन्होंने विचार पुरुष विस्ता है । विभी क्या ता विस्ता का वहाँ तक तमस्मा है से तुम पुनर्तक है। उन्होंने तेवा साम, व्यवस्थान, केम का स्वति, व्यवस्थान के स्वति प्राप्त का वर्षाया गोदान और केमान हम स्वत्य अस्मात विके । उनी अस्मात का वर्तनाम बीतन की का सामा है। इसी मारवाल के साम सामाह और उनकी पानी और पानी की सामों है। इसी मारवाल के साम सामाह और उनकी पानी

 ा किया हुआ है। उनका क्रम को । जीक सबन है। सामा क्रम है वनकी कहर को राजी देशीएका की किसान-केब्रुगये अ्तर है। यह अहारित अने क और अन्तर है उनका देशी कार कार बन्द केसा है और राजी की अनुकार नामना की अभिन है का बास्त है

त्र वर्षे क्षेत्र है जा नार्षक और मुताब होना बोल्ब वर्षा में राष्ट्रीय के किया है है है इसके बीवर ने अनुत्र का प्रदेश विकेश , महस्त्र का अवस्था और बीच विकास , काल का अवस्थानत, स्वीवर ने कान की अने दिस्ता अगर्द नाम्यों के और बीवर का कालों के ना , महत्त्र और किनानों की दीना है जा नार्षिक और बीवर का नाम के ना , महत्त्र और किनानों की

वर्षां में अनुने कार्यका, निके, साम्यों का आहार और वेत्रावरण वर्षां का अधिकार कार्यां के विकास कार्यां का कार्यां का अधिकार कार्यां का कार्यां कार्य

निवास प्रोटका पूर्वत है। क्षेत्री निवासी को उन्होंने को उन्हों के अनुसार है। को की अवस्थान का सामक है। क्षेत्री की उन्होंने को उन्होंने का उन्होंने के अवस्थान के अने के अवस्था को अवस्था को अवस्था को अवस्था अने उन्होंने के को को की अवस्था को अवस्था को अने के अवस्था को अवस्था को अवस्था को अवस्था को अवस्था को अवस्था की अवस्था को अवस्था को अवस्था की अवस्था

^{।-}वरिवास प्राटन- ३६१ प्रेमवन्द्र १

प्रकार को क्षेत्रका के क्षेत्रका के क्षेत्रका को क्षेत्रका को के क्षेत्रका को क्षेत्रका के क्षेत्रका के क्षेत्र क्षेत्रका को क्षेत्रका को क्षेत्रका किलाब का बीवन परिण्या है , विभागा है । क्षेत्रका को क्षेत्रका को क्षेत्रका किलाब का बीवन परिण्या है , विभागा है । क्षेत्रका को क्षेत्रका को क्षेत्रकार को क्षेत्रका क्षेत्रक वा क्षेत्रक के क्षेत्रका का क्षेत्रका क्षेत्रका का क्षेत्रका के क्षेत्रका के क्षेत्रका के क्षेत्रका के क्षेत्रका के क्षेत्रका का क्षेत्रका का क्षेत्रका के क्षेत्रका क्षेत्रका के क्षेत्रका

प्रेम व्यक्त तर्वेद तरमाचिक और राजनी तिक प्रमृति के ताथ की । अवने इतियों में आर्थ समय की तुवार बाज्या, मांधीयुव की राष्ट्रीयक तकामुह है समस्तारों कुन की वर्ष केला कर वस्तारी कर स य देवने को विकास है। उन्होंने आन्द्रांस की क्यावक भ्रीय का रिस करर मारी किया । उसमा क्रिके वर्त क्रिकेट के महत्तान मही है। उन्हें तमी के तहा नुसुरित है। उनके उपनयात केवत क्या करू हो। नहीं है अधित उनती नामीक उपादेवता है । उन्हीं उपन्यत है आदर्शक वधार्वताद प्रतिविध्यत हुआ है। उनके उपन्यात यरित्र हुमान है। फिक्के महनाओं और पाने की ियाति अन्तरेन्त्राचित है। हे अपने बाजी को अगर दिलाते हैं । और अपनी और ने उन्हों और लॉट बरते हैं। दे रिकारे हे तरहि हम्बर वायद हमते वहीं जेवा लोका है, वह अवसे महत्वाल को वचाका है। ... का क्योरव जो कि जरने हे किए सक्रत है कि उनने चरित्र कोची दिल हो, वो प्रमोधनी हे अपने जिए में शहारी, वारिक उपनी परास्त हरें यो बालवाओं हे पेये हैं य की वारिक उन्तव दाम्य हरे, को किती विकती नेनापारित की वाँचि शहरी ा तहार वरके विद्यवसाद करते हुए विश्ली । ऐते ही परिश्ली वा उनारे उनर लाने अधिक प्रकार प्रशास केंद्र में किन्ती है किन केरे लिए केरी लेगी के सरिव बाजारे का सिम्म आवायक वही सावा । उनके केव्ट उपन्यासी के बहुत्तक प्रध्यानी यह विकास में के लिए जो है। वे काले है, "या काना पाहिए कि भाषी अपन्यास बीचन परित्र सीचा, बारे किसी बड़े आदमी हा या ठीडे आध्यी था। उत्तर छुटाई-महार्थं था वेसवा उन विकार्धनी ते किया चार्यमा ि कि पर उसे किया पार्व है। हों, वह वरित्र हा है में ने विवा आवेगा कि उपन्यास मासुम ती। 121 तक्षातक संमातुम स्त्री आधर्म पर प्राप्तम किया

⁻वाधिय वा आक्रेय विक्र - ३० हेम वन्द्र अनाविस वा आक्रेय विक्र - ३० हेम वन्द्र

या । उन्होंने मुख्य से िध्य-निक्षा की दी विकासिय सर्वर मान्य रजी ते निरपेक परिवर्ष और अन्य विजयालों ते वरे, बंदन और मोच के घकर ते हुर आधुरिक और प्राष्ट्रतिक त्य मैं देखा है । योदान में प्रोप्तेल केतता प्रेम पन्द्र के अरदार्व के सूर्व क्य है। वे करते है, " मैं पूछ्रीत ह्वारी हूँ, और मुख्य भी उसके प्राकृतिक स्य में देखना चाहता है, जो प्रतम्य हो कर है।ता है,हाकी जीवर बीचा है और क्रीय में लोवर भार जावता है।... वीतन मेरे किए आनन्द मय होता है तरत गतन्द वर्ज हुत्ता, ईवार् और बन्ध है किए शोई त्यान नहीं ... बहाँ जीवन है बहुह है देस है .वहीं केंगर है। और बीज को उसी कराना ही उपालना है। और खेल हैं। [1] प्रेम एन्द्र ने गाँधी है तिहत स्ती हो पूर्वत लीवार नहीं दिया । उन्हें म्हा यदा कर सहय व जानी है अधिक दिसादीय है। हा, राम छन्द्र दिहारी वा अवन है," मोर्ज के प्राइतिक मोन्दर्य में विद्युत करने है जनान, ईव विद्युत केरमान, निराधा दे-व, बाद्वाचार और जाकेती सा प्रधान कारण है। छन्हें मुंद करके प्रेम, तहवाम, तेवा और तबता के आधार पर चीनी हो। तहने बनायका तकता है। के बन्द्र का वह विश्ववात देत तक बना रहा। से तेवार को आपर का विराट व्य मानते हैं, तैयार ते बटबर एवान्य तावना ही बात उनके निष पर पुरार की पता कहा सित की । वे बीटन है अधीन अध्याताच और ब्लोर परिका है दारा उन्मति वा यथ प्रमाल करना वाहते में । उन्हें भनुष्य च्या, प्रामिनाय से महन तहानुमुचि और अपूर्ण मानदा था । इती किर अपने हुरे गरीय-समीर तमी के पान उपनी तहासुरीत पा लों है । • ^[2] उन्हें एक महान्य क्याचार है तथी पुत्र विकास के । ज-राव यन्द्र दिशारी विश्वते है," बादित यस केश्याय, किन्द्र प्रतिस्था तयस्या, विशाप व्यक्तिए. तेप्रं, रिल्मी की विकार, विकास -विकास, मधुली कर प्राप, महायक और वर्षहार की का बार, प्राप्तीयता और राष्ट्रीयता, दिन्दी और हुई आहि चितने भी प्रश्न उनके लामने है, तभी के तन्दर्व में उन्होंने उदार और प्रमाणकीय ियार व्यवत विने है, उपना व्यासनादी द्वरिन्टनेम पिरेंतर मिलील एटा है।

¹⁻जेदाच पुष्ठ- 201 ग्रेश चन्द्र 1 2-किन्दी वा व्यव-ताति व पु0-292 वा-राम चन्द्र रिकारी 1

हिंगिक अनेह वह सपूर्व प्राणी पर है अपन के प्रणीतामधी विद्यारकों से भी आने हैं। उनकी हम सहनता अपनिकाल अपनिकाल का का केट एसायक सहामुद्धीत, प्रणीतामित द्वीवतामेष और आपन अनो विशास की परस आदि विद्योगकों के कारण है सहैत आप रहेंगे। • केंग्से

^{।-}विनदी यदय ताविक्य-वृद्ध-२१५ झा समयन्त्र विवासी ।

प्रेम वन्द्र के तेवा तक्क उपन्यात में तुमन विचा होती है वरन्तु वहां बाद में तेवाचम कराती है। रेम्ह्रीम की उन्द्र, तोकिया वाहुनी अध्योगक मिळकम्बलन ने बुड़ों है। वे के के व्याधीनता म्बलन में तल्योग करती है। पुल्प के स्वाधिन र के उल्लोकार करती है। यहन की वालवा आयुक्त पुंधी है। एव्य पृथ्ति में क्षाविर हन बाला है। वह उल्ला तूबार करती है। वह क्लाकरता बावर अने बांच को तुबारने का प्रमान करती है। क्षाविम में तुब्दा और नकीना मबहु अन्तोगन में तल्योग करती है। और उल्ला नेतृत्व करती है। बोद्धान की घोषा होरों की कालारती है और वह बोधन का किरोब करती है। बायती में तुबारलादी प्रकृतित ने तम्बलन है। वह प्रवार के बन्द्र के अम्लानों की बारियों त्यारलादी है, त्याबीनता तम्लन्सी व्यक्तिमा की अनुतर है। बबारत हमी की के उपन्यानों की नाहियाँ तमेव है। है वहनात के तम्बलन है।

-: त्यार्ग की और वजातर प्रमाद :-

वय केल्ट प्रसाद के हुए कीच उपन्यास विके है, उन्नव और विस्कृत पुरे क्या क्रियाकी अपूरण । एकी बार में से वारिक्तकपूर विकारित वारिस्वकार वक्षा, स्टेरियो स्टी, बर्मपुत स्थित, व्यक्तियो भागा, विशे सी विशेषा सम्भागों सामने साती है। वंबाय है समय हो सनीटु प्रस्त दारिवंदर जार योची नेरिकला पर महरा ध्याय हुता है। आही सामाधिक प्रशासन है भी तर कितना भवानव सोक्रमापन है को क्रमाद ने प्रकार कर दिया है। प्रनाद वे आपने प्रधान निर्मा स प्रधान साधना के प्रतिसूर्व क्या तथा प्रवाद की है। सती वानी जा विकास सम्बद्धा हो रेकाजी से किया है। सारा जा वारव नारी पील को विकास और उपकास स प्रतिक है। भारतीय बारी विकास है अव्याप है, यह परिस्ताल होती है किन्तु अमें और वा मी दवा जरती है। वा वहती है," तेवा» प्रधान वानते होने कि तुव्हारी क्षेत्र प्रवित्र है। उने की राज्य है भी, होने डोडार का बीटन है किसी है भी कुंच नहीं किया । और व ले में क्युंकि। हुई। यह तुम्हारी क्रेस-रेक्स रिली, की की की कर वही मान करती और म की के लिए अवसी परिवास केंग्र तरकी है, " इतनी उच्छ भावनाओं ही स्क्रेसल एको वाची यह नारी किल्ही असलाय है, उनवासाना कोई व्यक्तिस्य की । वह विभावा में एड प्रकारट है। आप वर पुरुष क्षमा अपवित्र और अपेर जार्यी हो का है के वह नारी को वहन है का ते नहीं हैता तकता । वारा का का प्राप्त एक हुमोती है," विस्तवाई, "में एका की बार में एक सरिव करना पासकी हैं, से रिक्ती के बाल हाली जिस कार्य लेश तव्यक्ति को क्षेत्रे से स्वीत

वारिक वका साँचे वर की नारी सारित ता सका अरेर माला ते सीन है। रिकारित वरित केंग्रा है। सांदर्भन है वरण्यु उत्तर मानुका अवस्थित है। यह करती है, वाओ वरण्यु उत्तर तिस की तब युत को दिला है उसे तुन्दी ने पुल्ते बीन तिया अने देवर बाजरे, साओ, सारवा करते, युत दिन महारक्त कर बाजरेने, तुना से पुल्तों के सा अर्थ के बोर पुल्तों को की नामान करत कर के उन्ते प्रांत देते हैं। यह में हुँ, ज्यो प्रार्थित तेशा यह साम्य प्रार्थ, मेरे बोर सुक्त बटोपा है, उने ही हेगी गोद है केन्द्रे बाजो। प्रक्रायक है, त्यानी है, जहार है, निरोधे है। उन पर जियान वहीं किया था तकता। जिया के ज्यों काका है नाका की विश्वात कापून्य की त्यावान्यता हेती वा सर्वे ती है।

विकास के क्या हुआ बरिया करें हैं। बरिया के प्राप्त करें से प्राप्त इति करने नाम के प्राप्त करने दिनों को उपनित्स करने से प्राप्त ही इति करने के नाम बर्गा कर क्या है जान करना है। है। विकास करने करने किया है। प्राप्त करना है। ब्राप्त करना करने साम करना करने के करने करने करने करने करने किया है हैं। ब्राप्त के प्राप्त ने विकास करने के करने करना

विक्री यह यह अनुवेदारों है जरों का अन्तरिक दक्षेत्र सराती है। यहाँ प्राचीन स्रोक्ते तेरवार काते है,वहाँ आर्थित साम के विक्र र अन्तिविद्वांत की कवाला ध्वकृती है। और यह किलाविता वीतर ही बीतर रेप चाली है। दिस्सी प्रकृति की सकत्व पांच में सान तेने पूर्व किल्ला मान्यका का विक्रमानिया वस्ती है। उसरे बांद हुने मान्यका है प्रती ह है। पात्रपाल को भारतीय लोग्ड्रोक बीचन जा वेदाय की दिलाते है "य कर हुआ है। प्रसाद ने केंगा को भारतीय ते कारों की और भोडतर भारतीय आदार्ति की और अपने अदूर आत्या पूक्त की है। रिस्तारे से विकार जीवन , अवेव क्षेत्र, वेक्याय हे एत कार्य मध्य स्थार सरकारी कांवर रिया की पिर्देशका अरदि अवैक प्रातिभिक्ष तक गाउने का चित्र किया है। प्रताद उधारवादी द्वाविटकोण वैकर वाको आते है। राजवाय और घाटवा हे आदवाँ -परिजी में तरस्याजी वर तमाधाय है। द्योपी हे प्रवास से नीत लोही है अत्यत्वाम क्रुप क्या । व्यो मैठ वर प्रयत्य होता है। व्यो खेव की बरस्तावर आ जाती है। जात-श्री सकती प्रणा हुन में रंघ वाले हैं। जात-श्री समी अपना लाना पुना पुनती है। महात्र उसने पंत वर ता है वरिः समारी अपूर्ण अधायाधिता हो बील्य-युद्ध में बना देती है तो लिक्समार्थ हा आला हो। सोध्य । प्रताय मी पुशुरित प्राप्तरीका सम्ल चिन्ते में सारी है। उन्होंने तम त्याओ पर स्पष्ट दियाणिया हो है। महिन्नावित परितार हो प्राचीन पर्यासाओं आय आरहेका है। प्रमाद प्राप्त दूसार हो आद्याकात पर क्षा हैते हुए ब्रह्म हैं। को सकता है कि बादों का दूसार होना साहित्य । हुई पहें-किंधे सम्बद्ध और स्वार्थ मोनों को नामरिक्स के प्रमोक्षत को छोड़कर केन के बादों में किंद्र होना जाता । क्रांत तक बोलन है जो नामरिक्स के तहां है किंद्र को हो है। स्वार्थ के स्वार्थ स्वार्थ का प्रसार करना साहित्य।

विवे हैं । । केला पुलील सोला है कि उन्होंने वसे हुम का निर्धाण सरना याता थों। करन्तु वर्षाची ने भारत है अतिस ही मौसर माना से अपने अपन्याओं से विवेश्व किया है ।

वार राम पन् विभागी प्रसम के तमान्त्र से विश्वते हैं, नारसीय
विश्वित मंत्र जोर सांग के द्वा सरवों की सामिक ज्याक्षण द्वार असीत से कति
आती हुई मन्त्रीय केला की असार्त्त क्षण्यात्व को सीक्षत करके उत्तर
आधिक द्वा के सन्दर्भ से विश्ववेद्ध मान्य परित्र के विशेष द्वार कर परित्र
वर्ष का असार्थ आधीषक परित्र के सोक्षत के सोक्षता का विद्यान के असीतों
से नामिक को प्रकार सोन्दर्भ की मोत्र ज्याना के असीतों
से नामिक को के प्रकार सोन्दर्भ की मोत्र ज्याना को सामित्र को आते हैं
के जामिक को के प्रकार सोन्दर्भ की मोत्र ज्यान मोद्र की प्रकार नामित्र
के ज्यानस्त्र में समस्य कुछ नाम के स्थान मोद्र सीव्यव और सीर्थ क्षण हम सोन्दर्भ
के व्यानस्त्र में समस्य की विद्यान में स्थान को साम्य के असी अंग का साम्य में कर्म
प्रमान से साम्य मोद्र साम्याम के सुन्न और सामित्र का साम्य के असी में साम्य के असी मान्य के असी में साम्य के असी मान्य के साम्य के असी मान्य की मान्य के असी मान्य की मान्य क

^{।-}विन्धी वा व्यव तावि व्यनुष्ठ ३२५ डा० राववन्त्र विवारी ।

- १ वादम काम बता और कामल :-

समान की तारिका गोबोब्देवय रक्ता मानते है। अवनी प्राप्ट से "ज्योजना जाएगी, जॉर विचारों हो समापूर्व जीनव्यक्ति वर विचारार्थ कारवाओं की अंद करापूर्व देन के एकच दिलाना हो। लाकिया है। है। यक्षान ज्या-का है तिल वासे तिलामन को नहीं वासते। उनके अनुनार क्षा भाग के विश्व वहीं ताविश्य औं तकता है के विचारमून्य हो, यदि बीचन तैयाँ है और क्या बीक्न की बाज्या की अधिकारित है से क्या तैयाँ की जीवर है हुए किए मही पर तस्ती। "124 अपना विकास है कि आप ता हि ल जार को बर्जनकारम काता का वर्जन करता वार्तिका अंताकारम को जापात पोदित और स्रोपित है। उनने प्रकारकार महिल्लार का को है। कामान प्रचलिताद है सम्बंध और उन्नारकेंब्रे । जातान प्राचीन मान्यस्थाई पूर्व क्रीस्त्री है विक्रोपी है और नो उन्हों है अहम करीन विवारवास है आईट है। यह वतीन विवासमस्य मा जीवामी मीतन एकेटी। उन्होंने साम्य जामरेड में, पूंजी वाद परिवेदाद, और कारकाद हे तेर्थ की बीच की परिवेद्धतिनी, जारत्या, और **पारणाती में** लगान्य ना है है हुने जा प्रवास दिया है, दादा जानेत की केन न्यान की, विकोश दावों की अनुवा किन्सुवाचनन स्वीक प्रशासन है। ^{की} केर जा क्रेस वरीक जो प्ररेणा देता है और कार्य हुई क्वेरित की रखा की फेटर भी करता है। इसीका उनकी विकास की वर्ष है । उन्दार क्षण्या ही प्राप रवा के किए उन्हें साथ है धर से बाती है किन्तु राधा उने शरप यही हैती । क्षा अवस्थात में तेक में काश्रीमध्य पार्टी क्या अली मीरित को उसके और तारा बुधे कि देवी वाशी है। डाठ खन्मा अवनी यो स राव के आवरण को सदा रह पूर्वं विकार जरता है और प्रमुख आन्योका का ताकी जरता है। यह क्षीक विक्रीतन सामाधिक वेलगा का कोला है । विकास में वेलियाकिक वासावयम्

¹⁻ere-ere il ere e-ara-ara il ara उ-पाधा वामरेड की अभिन -(165×6 1611/11 1

⁻crer cicles

हे करा हर अवस्य में बटावर केन बावे तो प्रतीत लोगा कि प्रणीतनील द्वीच्हरीय हे आधार पर पारी चीत्व ही आर्थहता हा विक्रोलय ताव्ह लिक्षा होता है। साथम-बहुरम ने धर्मन्य सहापेत्रिक केन्सर्य को पोणी तरत्वती लाखा दिया अने तमा हे लेकिन क्रमारी केन्द्री-पून प्रकृति सी प्याप क्टबी है। विक्रीपृष्ठीन को वह प्राच्या की वर वार्त। व्यवस्था वह कुछ स्वान जरते। है। असन भागता ने जाराजर दुन गोरन सुपा है हुए वर आ सहस्ता वाप्रवास करती है। बहुदा की सावनतीती ए सहसा उसे बच्च हैती है। विकास है प्राप्त कर को है। किन्सु उन्हें पुरक्षातिन के उन्हें सु भी बाती है । विस्का केंद्रण प्रभा की जाता में जेंद्र काला जात है किवाहत होती है। और कहा की उपालना है तीन होन्द कीतन वाचन हरने तमी। बहुतम की राजनतेने वरितनत अपनी उस्तराधिवारियों की बांच में बहुत बहुवती है। और अंक्षाबा एरिजी अपनी किया किया को बीकित बाज आवर्त और उस्तान से पर उन्हों है। विकास साथा लोड बाजी है। और श्रीरकार को अभी स्थाप पर अधिविका लका जन्मी है। इतिवास को स्थित हैन हैन का है कि जना केवा हे जातम पर वेड वर्गावय को प्रकार पित मही पर सकते।" विकास जीवालय की बेदी है उक्कर प्राप्ताय कार के माहर यो आता में आवर बेह बादी है। The grade come of four factor of the of Allina or fraing or विन्तर हुन प्रवाप वरण पायते हैं। विकास यह बहतर कि की पार्टी वर उने विकारित बारी हारिया है उन्हें पूर पर देशी है। विकास आर्थ तर में एवं उसती है " आजा हो आर्थ, 'स वेक्र की द्वारित है। यह बाफी कीव्य की सार्वक्रम है। यह लायान्य यान्तीरिय इतुष्ट्रीत है जादान प्रदान है तह पर स्कूट्य हीतहवारिनी धनवर अपनी सार्थव्या प्राप्त वर ताती है। विस्था प्राप्त की आर प्रति है। इन्हें प्रापान की क्या जस्म वर है। बाहान जा जीवा उपन्यास वर्ग्डी पानरेड हे । पहर्ती कालोड कर कामायक पद्धा सहस्य भारतरिया समाई ह ऐकी व समियक वाला उच्छान प्रेरीपनित है। वार्षिक गोला पिला स्वाप स्वाप अस्ववापुरियक सा की सदान्या के। भाजरिया भीता को आहुक्द करने के द्वारम में उसके उसके और वाकुष्ट को पाला है। व्यक्ति है बोची-पीता की व्यवस्थि वहें उसे अपवस्थित करते है। वन वस उपण्यास का प्रवासक क्षेत्रीयत है। वेश्वर में व्यक्ति अपेर कानूरिकट का की नीरिवर्कों और कार्काहरिकों का कुछार कार विहोधन किया है। अपना तह- न्ति वायुष्यव्या प्रो प्रयाप रिवार है। सामग्रीत और संयोध का नार्तिय का उपन्यात में ह्वार है। किन्दु कावर सोमांग तेपीयक और न्यस्य है। बारी पर अवक्षित हुन्य के प्रश्रीत का प्रश्रीत का स्वांतिक मर्गिकारिक अध्याद से तकता है। बारी कार्यक से प्राप्त अपने अवक्षेत्र की पूर्वित कार्यक समाहत है।

प्रकृत्य के वर्ष वामान ज पावर्ष जन्मात है। पर ज्यन्यात में प्रथम कानुम तोवा और कालेंग का है। उन्हें ताथ तेनुका मारिया और जन्मेंड हुआ जन्म हुन है। लेज जन्मी विकास बनाहिन कुनती है। महराम की बारकीय केमर है प्रश्न होने है है कि एह द्वार्थन कार्रिट हे ताथ पान्ती है। प्रतित के बाद करब वर अपनी जीवादा जा विकार होती है। चानेह पुन्न होन्तरे प्रति हकई छोन्ट को अने किय तरांना लाइक की जोकों है। स्थान विकार देखा है। सोवार और लाहीरेंड परिव परिवा हे का है एक ताद रहने काले है। यह दास ब्यानित लोगा दो प्रोणी बाते हो बद्धानी है। एका वर सर्व प्रमुचाना है। सर्ववा नाव्य वा दूतर अर्फार घरका औ केलर घरमाई पाण व्यत्ता है। जागरेत कुमा की मानाई हे बार्टी आधित है जान जरता है। असेरवा में बानते है किया परेन्ट उत्परि धाला है ज्यान उत्तरे धवाई जा जाती है। सोधा पैका अधिकी थन चारी है। और पहाला नाचे त विकास सेवी है। या अवन्यात है लावाता का आधार उत्तव काला का ही है। या व वाक्तिक हो गये है। गरीम पर्वाधिको हे जोग्न बीचन प्रार्केको हे सामुच्छि बीचन-प्राप्त हे प्रीपत आचार, भू,मरिवार की टीम दाम तथा का बीवन, में पर बीवन अपिर विभोगा सम्बन्ध सावित्रका प्रधार्थ पूर्व उपवर्कत हो। वेका में प्रमुख्य के रिवरियम तथारें की तथा क्षांची प्रत्युक्त की है ।

व्यवस्था कारता उपन्यात है अधिक है। यह पर पेरिकारीय कार्या है। प्रतिवास का तरह रहना है। है कि स्क्रांट अवीच क्षीम का आकृष्य तरह है। और भीचन क्षा है बाद अधीचन क्षा म करने के प्रतिवार करना है। उपन्यात का अधीन व्यक्तिया अधिका का प्रतिवादित क्षा में प्राप्त

व्यवस्थ वर तावण अपन्यस्य हुंद्धा तव है। यह वसा और देश तथा देश ज परिवर्त को अपनी है हुता हुता है। और सुनी 1942 से सेवर 1952 के का वा बारव अपने काला में साजार को बता है। क्या की पुरी वयोग्युरी और आही बोध्य करा के साथ करते है। क्योग्युरी प्रका तेजी में पन्तरत जरते प्रतिकारी करना कारता है। उसने जीव कारत जीव विकास है। तम् 1942 के आण्डोका है क्षण सेवह है। और के बहस है। वह कार के ते केव करवादेश कार चौकियां। विवासमार में विवास करते है। जान हे पर हे नोम पूरी की आधिन होनता है करन तमाह नमा अमरिकार कर होते है। सारा की कहानी अधिक काम और विकासपूर्ण है। वारा वागरेत इता में भ्यार करते है । उनका विवास सीवराव नामह पर वायर हुन्छ ने सो याता है। हुनायत से रोयर उनके दुनीत सर क्षमांका है। हिंगा-तव का तक क्षमांक्षादी है। यह उद्योग का हरिक्टनेप ते द्रेरित शोजर विवार कथा है। उपन्यात की घट तता हुए या जै के व्यक्तिका in an fana nana, dan basi, ar an-arian d ar dam d जलगी नहीं है। फिल्मी 1942 के हैजर 1952 की दल है जनमा पूर्व लेग्योजन में है । वहत्वराण प्रमुद्ध रिवारकी का काम है," विकास में पूर्व सेवाय का अध्य वर्गीय बीवन, और के वय सवाय वर आपरित्र गठन, राष्ट्रीरिक्टी के दाय-तेव साइवादाधिक स्वार्थी के जारण प्राचाः विन्युत्री सुस्तामानी, के बीच बदली हुई कार्य, तेम वर विवादम साम्बदायिक देवे, तुर क्योद, पवसाय, मार्को व्यक्तिको वा विकासिक सोमा, उनकी विकी किया और वेकी, वर्षित वा सालन, व्यवेनस प्राप्ति के बारत कर अरक्षाविक की कर, विशेषक केली में बचाने वासी प्राप्ति उच्चा वर्ष की अवस्थिएला ,मध्यवर्ष की प्रमान, निकारण की निरामा ,धनला की वार्याव्यक्षा, वह तम पूर "क्वेंक-तद " में तर वर हो पता है। विस्ती में

कारों के किया का प्रत्य के कारण कर उपन्यक्ति हैं जाता कारण की हैं। हैं क्षेत्रक को बारण कर व्यक्ति के ब्रह्मित के व्यक्तित के क्ष्मित हैं। क्ष्मित को क्ष्मित के किये के व्यक्ति कर व्यक्ति के ब्रह्मित के व्यक्तित के क्ष्मित हैं। को क्ष्मित के किये के ब्रह्मित कर उपन्यक्ति के ब्रह्मित कारण की क्षमित के क्ष्मित के क्ष्मित के क्ष्मित कर की

^{।-}विल्की वर बहुव सावित्व हुव्य-५३३ साथ वन्द्र विवासी ।

+। इन्द्राप्त गाम वर्ता और अने !-

अकेन के प्रतिक्ष जनस्वात "केवर एक बीकारी" प्रका साम, "केवर प्रक वीक्षी विक्षेत्र माण्यक्षी हे तीव अंद अने अवे अवे अव्योग है। प्राप्ती व्याप परिक्रियों के जस्म अप अन्तर्भी देशकों है। ब्रोडिक परिक्रार और ता कृतिक वरिष्यं पेक्स आपहे व्यक्तिक तेव्यव हे प्रमुख उपादात्व है। अपने कर है, " द्वांपक में बहुत हुई बक्ता कावता है, हुई उज्जान-कार भी अपर बीचन के प्रति देशर बाच आक्रोब का नहीं है। बीचन एक विकास कर विद्यारित है और महत्त्वविद्य तम्बन्ध और की विद्यालका है। विद्यालका है प्रति उपन्य द्वविद्यांभ विकास या प्रवासम्बद्ध से सेवत सरवामनेवा हा है। ते बाते हैं, "जाष्ट्रिया प्रम वर वर्ष्य की तन्त्रीकारक बीवनन्दर्भव रिवरी का पारिका है अध्याप पर आधारिकों से बड़ी हो तकता । यह वर्ध केनी की वर्ष प्रश्तिकारों के अवस्था अरेट वर्ष विचारकों के ब्रोच की अवस्थानियों क्ष काल्या प्रकार है। ^{कि} प्रीय सम्बन्धान्त्र स्थान के प्रकार ल्यापित ज्लार पायस है। योजनी से त्यते यहा हुन्य लाते सर हा है । वे रवतेव्या के प्रथम अपनिष्य भागते है। ब्राह्म व्यक्ति स्वक्रिया प्रोगी में ते पान को घाएम जरवार को तमें अवैध कारोजाबर को सरका जरवार धारी है। अध्यक्त अभिन्न है कि * तंजुकि के किन्तर के किए सामितिक जानीनवा अधिकार्य है । आका संबंधे की, विकास प्रकार है सरियोकों , प्रयोग करने, प्रा वरके विकार पानि वीक व्योग्नवर बदवी, श्रोच वर्गे, आस्त्रात संगि, अपने केन वी प्रशाप्त या विश्वीचा वस्त्रे, महसाई या अवर्त हैने, योगने, और म योगने की ज्याचीन्तर के किया जा लुक्तिक कियात नहीं से दे⁴े अर्थ के क अवस्थित अपि भाषितिय में महेनते । वह महीना है है है किया करियादी औ एक तीवार सब महाका देते हैं। उते पूर्व चीवन दर्शन पती मापते । आपकी

^{-07 00 00 - 000 107 507} -07 00 00 - 000-00 307 5-07 00 00 - 000-00 307

हुनिया में बरियन सर्वाप के नियार्यन के लगतिन, अर्थास्त्रार्थन और प्रपादित की तेन वहीं जीवन वह स्त्रूप है। 11 जीव की ब्रोप्ट जहार और प्रापक है । वे प्रोक्षाविक,स्माविकाविक ,दाविक, पर्व समावक तक दूल्यों के पुरित रिवणायु है। जार तभी को पुलस पुरुष में महीकार करते है है महाकेद की स्वतिव्या के जावन है। उनकी अन है कि, " सच्छी करा अनी भी अमेरिक मही औं सबसी। प्रस्तेष ब्रह स्वार केस्टर में अभिवार्य का के एक वैरिता अस्ट्रिय विक्रित है।" ^[2] क्या थे। जान का एक प्रतार या रिका है अर्थन तथा की अवस्थित है वर्त कर ताकता है। अन्यर अर्थन पान्ती दिन वर उपजर्भ या साध्य है । प्रायत जा छोटत जायताल्या जा रिव्हान्य प्रोप रकार ा ब्रीलुरिंक वा विद्यान्य क्योंचेत्रानिक विन्तम की सरकार्य उपन-रिकार है और असे कार रचार तो हुत देखार की आकार होती है। लच्यी क्या अनेकि नहीं जोती। तच्ये ज्याबार के तत्त्रुव नेकि अनेकि का बन्द ही नहीं रहता । वे ज्युरायक प्रमुखे हुन्म के नान दिन को भी अवभील नहीं व्यापते । क्या काच का यह प्रकार है अर्थात लगा की उपलब्धी की एक सामना है। क्यान्यता क्या वा सम्बन्ध गुन्दए के जीवा चाला है । तरव ते वही ,हर महाच कार्जित तर्म तर्माच्यत होती है। वाच्या एव माध्यम ही अभिव्यक्ति है। प्राप्तिक अभिव्य में अविषय में कि प्रवास्ति में ली-पाविक पांचापेण "इत्यारलका"या अवयोपतक हो ता है उपी उनुवार उनुवार लो पाटिल वह जीवार है, पर अनुसूचि विद्यासारिए कामचा के सटारे उत सका भी क्षा कलान जर सेती है। यो भा तक मैं क्षातार के लाग परिंत गरी हुता है । अपन्य मत है कि "क्यान्य अविकार्य का ते अपनी परिश्वितीकार ज परिवारक होता है । वह अवने अरल परत सवाच पहे तेन्द्री वर पन है। अतः क्षारकार अधिकार्य था ते बाकि शास्त्र है उपका कथा है कि , "यह बाकि अर्थ थी अपेर है मा पीछे थी अपेर4 प्रवश्चि है या प्रतिवर्गत है या अवयोगित है है क्षावर निर्माप सार्थिक के बना के बीचर से नहीं जोता, बीचर ने केवन क्षानी

¹⁻अपकाने वस पुष्ठ- 199 अवेग 1

²⁻शा साने वस पुष्तक- 23 अधेय 1

³⁻सारको पद्म प्रयत- 206 अपेय ।

ी कुँच आरों से कि का महिल से, असोच महिल है। विभाग नहीं कहि नहीं कर सामेद में कहिल कर है। अहैय ने प्रमुखिताय का प्रतिकाद करने के प्रमुख के प्रमुख

अवेग भा त्यामत एवं अधिवाय आ का देनियुत और औं प्रमुख है । त्या नारित्य प्रिताची जनावार के वर है हुआ है। केल्ट एक बीजनी है केवर की द्वापट करते हुए अनेन की प्राप्तित करी प्राप्ति करेर अर्थकादी क्ष्मी जारन की क्षमोत्रीय के सक्ष्मान्या पर वेन्द्रित रही है। तेवर असे जात वर्ष का प्रतीय प्राप्त है। यह सवाय की स्रोक्षी निकारी वाले वाली मान्यतालों ने बाले ज्योपत हो पुरसर मान्यतालों हो पुरस्का समा पायत है। यही के दीय बादवायत हा पूछा वार्त का रहिमानी की बोप वरने वाला एवं बेवानिक है। रेबा एवं तन्त्रान्त और विकित वारी है जो अपने पाल से अवन हो नहीं है। चौचा पह अपने रेखाओं सहती है चिने तेगी व ने केन है। जाने दालिय बायत है बायर तेगील वा अध्यय रिवार है । यह एक अध्वारिकार का बीवन व्यक्तिक करती है। प्रश्नाहर यन्त्रमाधः रेका और गौरा दोनों ते परिचित है तथा सौनी वा प्रमोतानी मी है। रेक्षा और भौरा धोनों ही कुछ ही और अपूर्वित है। रेक्षा और तुमन पण दुमरे के निका जा जाके हैं। केला भी सक्षे की निकास में जा वारती है। यसम्बु अवद की गरिया की एक्षा के निवर अवने क्रेंब की हरकार कर देती है। रेक्स क्रवर किलान कर तेती है। फ़ूल्म अरिंग रेक्स एन दूतरे की अन करते है। इस रूनी में कथालून को नेकर वर्ध सी पुष्की का अपन्यात from it a our it in differen marino primari è gonere gui di क्षावाचा है। जानीकों बा कन है कि महीते हीच जा मुल्य बेबर ही है। नहीं से लीक क्या क्या की वरी देश सरावती है। असेक लागेल विवास है, "बारी से शीक लाताक के बीधन का रिवान नहीं है । एक तैय के बीधन का है, बार न ता बारका थन नहीं है एक वर्ष के ज्या जिल है। और वह धर्म की तैववा की हुकिट

[।] रिवर्षेष्ठ प्रवत्न १६ अदेव ।

ते अपना हो है। वेदिन नहीं में हिन्स है, उसका तथा दिन है। वेदिन कि वा का कि वह से वेदिन के हिन्द के अपना के का कि वह से कि वा का समय नहीं उसका कि वहीं के हिन्द के हिन्द के हिन्द का कि वह से वह से वह से कि वह से वह से कि वह से कि वह से वह से कि वह से वह से कि वह से वह

१- आ क्रमेगद पुः ७- १३ अग्रेय । २- अग्रुरे साधारकार पुष्ठ- २६ मेरियम्द्र केन । ३-सम्बे अग्रे अग्रमारी आस्त्रम पुष्ठ- अग्रेय ।

पर पते का धावार था और दी तरे है वर्षन शिवने हे प्याप्ता का बाधार था पित्र है दी वो है हो का क्या प्याप्तत है । पहुंच्य मुख्य है बहुए में बहुए की वरित्र स्वतंत्रत हो अपनी को छर तके तो जाने बहुए है बहुए है का किया है।

अवैष में किया जियानात को अन्तराबद्धीय धरावन वर प्रतिकास किया के। अवैष में अपने केल्ट को सोम्बारकार के, क्या क्रिक्टिंग ने प्रेटिंग क्यो कर किया है। उन्होंने किन पर में को समाजुर्जन को है के कर किल्किट को ने प्राणी है।

-t genera and confusive forces t-

proved function "thereon" is prior in everter in good and, thereby in the foreign in artifactor graft and the first and the firs

arrer à gamelarer et au au gard est à la logat
ders et l'est peut et alle est auch, que faut qu'i se l'este
resport de galle colon à acusé à auss à esteur et au gard et des acusers, arch et l'emps, l'esteur et game et l'emps estèmaté
au de grove par de arch et laceur et game et l'emps estèmaté
par de gall l'esteur et profession glaceur et game à l'emps estèmaté
dices d'éloches, austème et gamente et au gament et au gament
et en con action et a conservé de gament et au gament et au gament
et en con action de l'emps et gament et au gament d'entre et au gament et
part au profession et alle l'emps en le gament d'entre et au gament et
part au gament et aven à

प्रतिक्षाहर, प्रतिकार, उपि विलोधा सविद्या के अधिकार उपि प्राप्त तथी उपव्यक्षि को स्थान हुई थे। तथी उपव्यक्ष परिष्य प्रसार है। ने स्थान से प्रतिकार विश्वेशकों को स्थान हुई थे। तथी उपव्यक्ष परिष्य प्रसार है। ने स्थान से प्रतिकार के विद्योगि के अपने क्षा के स्थान से क्षा को स्थान के स्थान से अपने प्रतिकार के विद्योगि के अपने क्षा के से स्थान से के से स्थान के स्थान से अपने प्रतिकार के विद्योगि के स्थान है। के से स्थान से स्थान के स्थान से स्थान के स्थान के स्थान के स्थान के स्थान को अपने प्रवृत्त हुने है। को स्थान प्रसास स्थानक विद्यान के स्थान से साम से अपने प्रतिकार के विद्यान के स्थान है। से स्थान प्रतिकार की को स्थान स्थान के स्थान के स्थान से साम से अपने प्रतिकार की विद्यान के स्थान के साम स्थान स्थान की स्थान स्थान की स्थान स्थान की स्थान स्थान की स्थान के सम्ब व्यवस्थातिक बरावत यर आपक्ष को गते हैं। ^{हैं के}बहुती करार, हुम्मीकाट ऑप वित्तनेहर सर्वाच्या को वेकड प्रयोगकीय ताविका का बहुता आपके हैं।

[।] नीतन्त्री तथा आधिका प्रयत्न 88 केवा प्रथाय पाणीत । २० विचाप और विक्रोवन प्रयत्नाको अठ केव्य । १०-विच्यो वर्ष व्यव आधिका प्रयतन्त्र १६ अवस्था वन्त्र विकारी ।

्रम्यासन् साल कर्मा और प्रवासी परम् कार्

अने देवे के राज्ये में कुमता हुआ उपना अने उनने अपने महाव को उत्तर महाव को नी सोच में बाचे कहाँ ने महाव ने अनवादी में भी कमी हुए। तहत और विकास ने नित्र अपने को साथ महा वाले । ने अपने अने के दुवित हुनने केन्युकार नकेंद्र रहे कि कारण सेकों नी को अने अने अने अने म

कारती परण तथा है। जन्य कृतियों से उल्लेखनीय है जनस्तिलेट, यो वार्ष और राख और विकासी है। जन्म कुटि का गता, वालव्यस्ता, नियोगिया आदि। ** इन्दाबन गाप दर्भा और देवेन्द्र कार :**

केनेन्द्र की महस्ता उपन्यासी है हुई है। परक, हुनीता रजाका क क्ष्याची , विवर्त, क्षणा, व्यतीत, समवर्ष, तथा प्रशिवनोध, अपने परित उपन्यात है। उनके धर्म, म्मोरिकाच, अध्यास और मार्थिकता से साधेसार के लाग सम्मुख्य करने का केव है। उनमें बात तन्त्र और स्तीन्त्र के बावते से सकतर वेका पर तकता है। उपका अध्यक्त है कि ब्लुक्त कर सारा विकास तक के ताकास की केव्या जा परिचास है। उनके अनुसार समुख्य की क्षत समस्य केव्या है वरिचास राज्य भी अनुभूति महतार विविध्य लोकर ताको आधा है वही साहित्व है। व्यक्ति और समाय के बीच ताकन्यात्व और तकतारता ज्याचित वस्ते की केटरा वे ही प्रमुख्य की केला का संस्थार किया है। और तस्य को निर्धारिक किया है। उनवर कम है , महाका की महाका के ताथ तथाय को तथाय के ताथ साबद के और विकास के लाय और इस तरह जाने अने ताथ और यह हुन्दर वायन्यात्यता. purfers and of base forcers is call anterer states certs आ पति है। यही म्युव्य वारित की तमारत केली स विविध की पुत्र है तावारत म्बुद्धय देविक को प्रक्र अवयोगी अस्पतान तारमुक आब है। यह शांक और अहा क व्य में उसी एक सका केव्हा का प्रतिकार है। का प्रशिक्षा में मनुष्य चारित ने नाना भौतिमी अनुभीतवी वा योग दिवा है। 11 व्यक्ति और स्नाम है की म सामा-म्बर्ग और तमन्त्रपता न्यापित अस्में ही केव्या में ही क्षुक्य ही वेतमा वा तिरुवार रिवार है। और तस्य को निवारित विवारी। तस्य की वारचा वासीविव केवानिक और ताकि किव तथी की बोती है। केन्द्र के अनुतार ताकिक का मच्य अनुसूरित वर विवय तीवर तो सुरी तोचर है। स्थापन तरस्थिय वर मच्य जीवन पूर्व और प्राप्त है। यह सकी राज्या है वसकि जीने प्रेम और विकास हो। अर्थवार विशिष्क थे। तथा, विश्व और हम्पर की उपालना में अर्थवार की माध्यक है। कीम्यू का कथा है * मार्थिक की जादिर का नेत्यार बीमक है जो प्रया

I-लगोह का जो क्षेत्र और प्रेस पुष्ठ - 20 जेन्द्र t

ते हुम्पा था मेन पावती और पथ्या में निव्या रक्षती है । त्युद्ध था पिन पुष्टि से भरता है यह ना विकास करा, त्रियत वरवा स्थल औरता। ं ।

विषय में प्रतिष्ठ उपन्यासी के कारण हुई है, उपना प्राप्त अपन्यास पर्य में पर्य में इन पार प्राप्त है, नगराम, उद्धारे, गरिया, असे किहार में बढ़े पार में पर किया प्राप्त में यह पर्य ने किया अस्पत के बात आपा बड़ी करते में बात में के बीच असरण का हुए तेगी देश से बा में गरिया किया में बीच है। विश्व में ने किसार के बिह्म किया में बात में बाता है। बहुते का अस्य पार्ट में बहुत कर का किया किया में बाता में बाता है। बहुते का

"तृती ला" कैनेन्द्र का द्वारण उपन्यात है। सानी तीन तीपृष्ठ पात है।
तुती ला और वी कामल प्रिल्मी ते हैं। सीर्यानम्म, ती कामल ला दिन है।
सीर्यानम्म तृती ला को प्रतृती पा नेवा पाछला है। तृती ला निवरक्ष्य को
वाली हैं। सीर्यानम्म विकास सो वाला है। स्थानमान कैनेन्द्र का बीतरा
उपन्यात हैं। सो प्रतृत्तम्म विकास से वाला है। स्थानमान कैनेन्द्र का बीतरा
उपन्यात हैं। सो प्रत्यात काम्यात काम्यानी है स्वकानी का पिछा स साम्यानी
ते सो जा ला है। वे ताल ताल के प्रयन्तों की रचना करने कन्यानी आंचा
का काम्या वासने हैं। काव्यानी भी ता ते प्रति ते प्रता करने कन्यानी
उन्हें अपनी हैं। साठ स्थानमा है स्वक्षा के प्रति तस्य के से वाला करनानी
उन्हें अपनी हैं। साठ स्थानमार है स्वक्षा है प्रति तस्य के से वाला करनानी
उन्हें अपनी हैं। साठ स्थानमार है स्वक्षा है प्रति तस्य के से वाला करनानी
उन्हें अपनी हैं। सहसार है स्वक्षा है प्रति तस्य के से वाला होते हैं । के
जो प्रती हैं परिदर्श हैं। तुक्षा है प्रति तस्य हैं। स्वत्य हो से वाला है। हुक्षा पर समझा प्रदान हैं। साठी है, उनका विकास है। को सावला है।
हिस्सी तलान्य होती है। सरीक्ष प्रति होना है। सरीम हुक्षा को साविक्ष हैता है कि सह साला को अपने हैं। में सीचवार कहा है, सन्वता सतना प्रत्य

¹⁻लागीत का का क्षेत्र और क्षेत्र गुव्हक- 193 विकास ग्रुवार 1

सण्ड नेनिषयत है। नान खुद्धा को छोड़न्र चना जा ता है।

हरणा दन भंग भर देता है। श्रीकान्त हरीश के आगृह पर पुनित के

हनाने पर उत्ती परहनाने के निमित्त भोषित पाँच हजार दनाम ने नेता "

है। खुद्धा कोपति के इस जार्य ते ठेम नगती है, वह अपनी माँ के पास रहने

नगती है। और अंत में ध्रमास्त छोकर अस्पतान पहुंच जाती है विवर्त जैनेन्द्र

ा छका उपन्यात है। विवर्त के बाद च्यतीत प्रकाशित हुआ। चन्दी अनिता
दारा दी गयी ितीभी सहायता को कि स्वीकार नहीं करती। व्यतीत के

बाद जयदर्धन प्रजाशित हुआ। इसमें जैनेन्द्र की कना अस्प की प्रतिष्ठा करने

में तार्थक है। जयदर्धन में जयातून दो स्तरों पर तंचानित हुईहै। व्यक्तिगत
और राजनैतिक। दोनों हुओं के केन्द्र में इनाहै। इना आचार्य की कन्या है।

उत्तरा पानन त्यामी चिदानंद के आश्रममें हुआ है। यही जयवर्द्धन से उसका

परिचय हुआ है। इना जयर्वद्धन से अनुराग करती है। जैनेन्द्र का नवीनतम

उपन्यास "मुक्तिवाय" है जैनेन्द्र की इत कृति में उनके चिन्तन और तृजन के

नये अग्राम है।

वैनेन्द्र जीवन की बाह्य वास्तविकता को महत्व नहीं देते। उनके पात्रों में आनितरिक तंपर्थ मिलता है। डा. रामण्न्द्र तिवारी ने इनके उपन्यातों के लम्बन्ध में भी लिखा है उसते इनके उपनातों के नारी पात्रों के सम्बन्ध में भी प्रत्य पड़ता है। परख में उट्टो, सुनीता से तुनीता, त्यागणश्च में मुणाल, कल्याणी हे कल्याणी, मुखदा में तुखदा विवंत में भुवन मोहिनी, व्यतीत में अनिता का जंधर्थ पति और प्रेमी के बीच तम्मन्जत्य दूदने और पाने का ही संबर्ध है। वह विवंत है। अविता इत अर्थ में है कि ये नारियां अपने को ही पीडित गरती है। अवने को गलाकर अर्पित करके सामन्जत्य पाती है। यह आ तम पीड़न व दर्भन एए और उनोवैद्यानिक से जुड जाता है। दूतरी और गांधीवाद से। आ लगा है पाने पान माण्या का दमन है। यह मनुष्य में अनेक प्रकार की आ लगा पिता वाभाविक प्रदार्थ को जनमें द्व देता है। वैजेन्द्र इस काम कुन्ठा जनित अरवाभाविकता पर रहत्यम्यता का आवश्य द्वा देते हैं। विवंति आतंकवाद को गांधीवाद में परिणित करते हैं। उनके का नित्ता नेता गांधीवाद से प्रसादित व गांधीवाद में परिणित करते हैं। उनके का नित्ता नेता गांधीवाद से प्रसादित विवारी का गदय ताहित्य प्रकार कर रामवेद्र तिवारी ।

है। महिलाब को हो बरा बहिलांच प्रवास का विश्वास का है हो बहते हैं। बेंग्य क्षा का कार्य में प्रवास का कार्य के स्वयं का स्वयं का स्वयं का स्वयं का स्वयं का स्वयं का स मह बोगायों कार्य के प्रवास का कार्य महिला का स्वयं का स

विनेत्र के तर्ष विन्त्र नाम के बाद निवन्त के वि विन्त्र के कि विन्त्र के विन

विका है जबनातों है बाद प्रायानारों पाने है नाह पर है। हही जबनात में बरक प्रतिता में तिया हमार में कहा जो आ का का जा मानकर विकार में तुक्ता नारों पान है। विनेद्ध दूसर में कहा जो आ का का जा मानकर विकित किया है। आ हम है कुछ लोगिक बाद होते हैं। हम हमद, मान प्रायान्त और मान हान जा वर्ने जो है जान नहीं है। हमों का मान का निवाह करती है। करतों वैनेद्ध कुमर की औदन्यानिक नारों विकार हमा जापूका मा है। विनेद्ध हुमार में करते हैं का में नारों लगाता आवेतिक, हमों के प्रतिन्दित किया है। विनेद्ध की द्वार के नारों हमों की कान है। मानक हम प्रायानिक का मान ते रहता है। समय बटने पर यह कहे को स्वाम कर सकती है। तोसारिक हुनों को हक बेले हैं। ताब सक्त करने की इन्ता फाती है। सोसारिक हुनों को हक बेले हैं।

हमी है। जा इस समान्य विक्रिय नारी है। उत्तर बात बाहारत और उत्तरे मा और इसी वर जो दिन है। बात बाहन क्षेत्री स्वत्या और हुन्दर है। तरी वा बरमायामन मारतीय नारी है जा है पर को हो अन्तर लॉका प्राप्ती है उनके किस वरम्बरामन बाहि को वा प्राप्त करना जीवन है।

मिता के माध्यम से केन्द्र हमार नारों के ना बानाओं के आधुनिक को धा मा प्रवास करना पास्त्रों है। उनकी मान्यता के कि नारों का तक तम्पूर्ण नहीं जानों वा तकती है करों के दार ता जार पर है केंद्र मान्यता होगी। अन्य जार केंद्र केंद्र मान्यता होगी। अन्य जार केंद्र केंद्र मान्यता होगी। अन्य जार केंद्र केंद्र वह नामर पर जारेगा। विभिन्न होगा आने व्यक्तिक का प्रवास करना नारों के मान्य वा नाम्यता हो प्रवास करना है। विभिन्न होने के प्रवास करना करना है। विभिन्न होने करना वा नाम करना करना है। विभिन्न होने करना वा नामर करना है। विभिन्न होने करना वा नामर करना है। वा नाम

तक व्यक्तिकात का है पार्टी की त्यक्तिका है पत्ताकों है। वर्ता प्रमाण को वर्ता का है विक्रित किया का है। प्रमाण का विद्वति मामाधिक वर्ताकों को लोकों है कि पार-पार वरोतीका का है पूजा को ता है।

हमान को कहानी हा तक है बारतीय नारों के प्रक्रित को वहनती है इमान को उपन्य तकर के सम्बद्धिक संस्थारों के बादते हुई चारते के का है चित्र के किया है। इसके हम पर्यापायत महिलादी संस्थारों के प्रक्रित को अधिक पाने का इसके बारते हैं। यह बीवन सभी के प्रकार के प्रमावित स्वतिक्ष की आवश्चार दस्ती है।

पूजा का स्थापनी किया है। यह तकात है आक्रास्त्र है ताब रहना पारती है। उनके साथित स्थाप है कि उतका करते परिवारों का ताबन प्रास्त्र पारते । इस किया है के करवा अमें किए सरती है जो तर्ने इस तकाव हो।

भा जन्माचन साथ दार्ग और अपेन्यूना । आहे, : •

विषय के विषय

अग्रं की में अभी अपन्यातों से निष्णालीय बील्य की वर्षाय रिवरित जा जेला रिवार है। की का प्रवार वाकोगी रिकार है, * अबन की के उपन्यानी है स्थाप हो प्रश्नारत केवा विकास किया वर पड़ी पहुँची है, पर पर उन्हें उपाप्तात तमी बहुवर्षीय त्याच हो गीतियोध से प्रश्निक द्वार है में भी विनेत्र करते है उनके उपन्याओं से उकत तथाय के पेते की पक्षे आसे हैं, विवास विविद्यालय उपनेत रीनता और रान्धे निवाद की राजा वर्ता रही हुई है। इस राजाओं के बदने वर राजारे मन में देती पाल्याओं, उत्यन्त नहीं होती, वेती हैव पन्द्र है ज्यान्याओं हो पटल होती है। नरवस्य उत्सालपूर्व होर विकासेन्स्सा^{म 11} विकास दीवारे और में राज का धी अक्यातों में यत्रपंताद जा प्राप उठता है। के के हुमारे बाख्येकी निवसी दीकारे को कार्य वासी साम्बर्ध है। कि साम निक को राख को प्रकृतिकाकी भागते हैं, राधेन्द्र यहत्व वा व्यर्भ है उनकी प्रपृत्ति यविकारी है। और वर्ष प्रमुख्यादी । ^[2] अक की ने नासीर के विकास बीध्य पर अमेड डोटे डांटे लन्दमाँ के मारूका है मध्यानीय लगाय के प्रके-स्पाट धुके, न्कुल , मुद्री मुकार, की घाट, अर्थर दान दान कर कि कि विकास के कि के विकास of b dorfor dive, ando are combro means gonal destail, naver of arm?, grand, freeward, accircul, great, press, sire ियूरिकार को पायालक व्यापुरसूत करते हैं। उपका करन है कि ," मैं अर्गिरकारक

१-नवा माधिएम यो प्रथम प्रथम १६० मेर प्रमारे माध्योगी । १-सम्बर्गसमार अग्न - प्रयम् १६६

अवन्य भी ने बाल अही में निवार बाध में से निकार में आगे । अवन ने निवार नो पाय में पन सामन क्ष्मान क्ष्मान क्ष्मान क्ष्मान स्वार स्वार स्वार ने संबर में संबर में स्वार में संबर में संवर में संवर में संवर में संवर में स्वार में संवर में स्वार में अवन में अवन मान में अवन मान में स्वार में स्वर में स्वर

^{।+}उपन्यासवारं अग्रंच हुण्छ+ १९ उपेन्द्रवाण आण । १-उपन्यासवारं आण हुज्य+ ६३ उपेन्द्रवाण आण ।

and the second of a second color of the second

[।] जीवनद्वी तर्राक्षिका एव अर्थुनिक परिवृद्ध्य पुष्टक- 92 अवेग ।

्रम्याचन वात वर्ष और ध्यतेष्ठतर

वर्षेत्रपर के उपन्यान है । यह सक्क तस्त्याच्य गरिता, 2-आवर्षका, 3-ती तरा अस्ति, 4-वार्ग अधि, 5-आवाभी अति है, 4-रेगियान, 3-वोटे हुए पुणाविस, 8-वटी सार, 9-तह में क्षेपर हुआ अस्त्री, स्था 10-शुक्त स्टोपटर-कार्ग

व्यविषय के अवन्या तो में पुत्रकों की आंक्षा कारी करिए में ता ताईन आधित पुत्रविष्टुर्थ किया है । बारी पानों से विविद्याता है। वे यात्र अवन्यातावार की बीची कल्पना नहीं अधिकु तथाय का क्यार्थ विकास के। वे मालिया विविध्य कारें ,तालया औं आक्षावारों आधि का पुरिवोणीयका करती है ।

नारों पत्नी होने हे जरून कि इस अधिक आहा, कि दिस्त का बोधकों प्राप्त को अहना ने प्राप्त है। का कार्य के बारों पर प्राप्त करेंद्रों से से इस प्राप्त करेंद्रों से से इस प्राप्त करेंद्रों से कि अप प्राप्त करेंद्र है। को क्रिके आपकों असे से के प्राप्त करेंद्र है। को क्रिके आपकों असे से के प्राप्त करेंद्र है। को क्रिके आपकों के साथों प्रदेश के प्राप्त करेंद्र है। को क्रिके आपकों के साथों प्रदेश है। को क्रिके आपकों के साथों प्रदेश है। को क्रिके आपकों के साथों प्रदेश है। को क्रिके के अधिक करेंद्र के साथों है। क्रिके के अधिक करेंद्र के साथों है।

प्राचेत्राचर के उपान्याची के निर्माणिक सम्बाधिक सम्माधि केने जो रिकासी है। 1-वर्षिकाल्या करा स्वाकी बीचन ही समया, 2-वर्षा पृथा, 3-दोष की समस्या 4-वनकेना होई 5-साम्प्रदाधिक्या 6-स्वीका नग अग्रन के प्राचन नारी -बीचन की समस्या 1

वानेक्षण हेती आहतीय वहम्परा हे वीचा रहे है है चिनते नाही तमाच वो कल फिलता है। क्षोको उहालाँ, लेडवी सम दुर्ग पान्यसाओं का उन्नतेने विद्योध विद्या है। क्षांत-धीपतर माम की वही धादी व तेले, वाच्योगका की तथा नामी आधी की पायसी जावि केते वा है वो माहसीय सम्पता व तेल्लीस की तथा तथा वहामराओं हे अनुव्य वार्य करते हैं। The states acres or near since its and good or factor

The states acres or near since its and good or factor

The states acres or near since its and good or factor

The states acres in the states acres acres acres arise and acres

The states acres its acres acres acres acres acres acres acres

The states acres acres in the states acres acres acres acres acres

The states acres acres acres in the states acres acres acres acres acres

The states acres acres acres in the states acres acres acres acres acres

The states acres acres acres in the states acres acres acres acres acres

The states acres acres acres in the states acres acres acres acres acres

The states acres acres acres in the states acres acres

सम्तम अध्याय १उपसेंहार १

नारी पात्रों एवं प्रगत्मिनानता की दृष्टि से वर्मा जो की हिन्दी साहित्य की देन

नारों पाने पर प्रमास्त्रीयता है। होस्ट ने दर्मा की

द्यार्थ के प्रकेष उपन्यात का जानार लेखे व लोडे व्हना होती है। े रोजांब कुंच है। प्रायः तमी स्थल्यानी है का निवास देखने को फिलती है। देरितारित अन्यात प्रेमीन अवने बहुत रहुत है। उन्हें वरतायन हे विर्णाण की अध्यक्त काल्ड है। का-वयुगीन केरिकारिक वारसवर्ग को नवीव करनेत जाप अन्यत्य है। वेरिहातिक उदस्यानी में घोणोतिक वाच वर्त वेरिहातिक तामानी की जनवार दोनों पर प्रथा दवान देते है। नाचित्राओं के त्य कारण नेपाटन में से अधिक लोग तेते हैं। उनकी नारियक ने मोच्यां लोकाता, मुहकता के जान बाज बावत, बारिक,और स्वाम की प्रति है। करिया की कर्जास्त में हे अपने प्रमान की को कारण को किया है एकती है। अवने अपन्या भी है लेक्ट रत और कैवर रत वा नाय-चन्य है। इन दोनों वा तवाना-तर पुतास कन को आकर्षक बना देला है। प्रकृति के कोचन कोएक पूर्व बर्गकर रहे है जार ही दिवालों, बाजी और क्षांभाजी का विल्ला में अपने तुम्बर विकार है। ार्थ की मनिवसमाओं के देवी है। उनके अनेक प्रक्रा वा व क्या-कांस है। किया रिवरी क्षेत्रया और उद्देशय है आप बना की मार्थक्या स्टीकार नहीं हरेते। हुन्देत्यम व की मुख्य प्रकृति हे आपको द्वेरका रिक्री है । मुन्देत्यम व है जीवन को अर्थ के विक आपने पुर्णकेलाई ही सब्दों का तमा स्थानकों का प्रयोग िया है। पुग्देनकण्ड के धन बीचन, प्रतिसात, प्रयोग तथा पाचा जा तथा प्रतिनिधिक वर्षे के वर्ष आपवी पुन्केश्वर वाज्यप्यासवार वस वस्ते है। उनकी माचा क्रमा प्रदेश मान्य और परिवर्गार्थन और वर्गनी मनी और आ उनमें नेयम, तरमसा और विका क्षासा समा जैनकरन की पुरुषित विकासी है। अनेक या में के नवरिवतस्य ते स्थारी वैतना वर्षीयत स्रोती है। जायार्व राग सम्ब शुभ्य ने छन अपने किन्दी माधिका के श्रीतहरत में तथा थी के श्रीतका की महिष्य का प्रवार जी वार ही है , "रेरिक्टारिक उपन्यान के केंद्र है केन इन्दालय बान वर्ग विवादी है को है। उन्होंने पारतीय इतिहाल के सध्यक्त

हे प्रारम्भ में हुन्केल्पन की रिवरित नेवर का हुम्जर में और विराहत की बद्धीकी हो कड़े हुन्यर अपन्यात किन्ने हैं । विस्तादर की बद्धीकता की कर्यना तो असीत प्रक्रीय है। 📭 स्टर्गीय क्षेत्र केंद्रवाची ने मह व्याप की पाणविश्वीय केवल प्रापको हिन्दीके वागल्य एताल की उपरोध हो हो । रहाराची कारीवाई और "प्रमानी" अर्ज्यानी में उनही क्षा का जान विकास विकास है। जाको के बारिक स्थानिक स्थानिक स्थानिक हुए अवास तुरिन्द के आधार वर हुई बरिकात तरेन की ज़रिन्दें की है । विकास सोच की पुरिष्ट के तीम इतिकास के पूर्व को ज़ास करने के लास ही उसी जरसज्यम् -विमाय क जीका है। एक की की सामे करी विसेत्ता क्ष है कि वे बरिवान तोच की हुक्ति है किए किन कान क्षण कर कर क्या करते हैं। उसके समापन सून •हुना उपादानों का कार्या मानने राजने हैं। eq. sucq. uet, c'err, ut, esc. gén, gaires, after mos ques व्या का व्याप्ता हमा व्ह्याओं से बोलन्त बना देश है। व्ह्याओं है पा । उपयो है, और वे अपना स्वतिसम्बद्धाना क्याने कहार बनावार है म्हान उद्देश्य की निर्माह में अक्रम कोते हैं। बनाकार का उद्देश्य उन पारी ा चीवन महाय यनकर तारमे प्राप्त है। एक परना काम और म्यान के औरियस्त ते व्यक्तियत है। दार्ज की का क्यापट प्रविधासन पारी-वार्ज के अलोक ते ्यापट निसम्बर की मन रहता है। उनके आखी पुत्रमन्त्राम उस आसीक की हुने की केव्या करते हुए, निरम्बर गरिवारित दक्षिते है। मुगवराती है सामानित आपीयन क्रमक्त्री के व्यक्तिकार भी सर्व की वासना एकते हुए इतेला और माज्या जे सन्तुभित करता है। "विवयदा की वद्योगी से कुंदर निंह विवयदा की पद्मिक्ती के देवरूव ते अधिकृत अपने को उसके वर देवा है। कहाराजी नवधी बार्ड नारीक्षणित और केव वा विवय अलोक विकीर्क करती हुई पूरे वान क्रम्य को प्रदीपन करती है। वर्ग की वे अतीस के कट वर पूछ विकार हुन्दियाँ की है। वे इन हुन्दियाँ के लिए निवर आपर रहेके।

^{।-}विन्दी सावित्र वा दिवारत पुष्ठ-536 राज पन्द्र सुवत ।

The state of the s

and the deposite of the contract and the product of the contract of the contra

विक्तिकार विकास कार्य कार्य कार्य कार्य के क्षेत्र कार्य कार्य के क्षेत्र कार्य कार

तम प्रमाण रिकाणिकातमात है यह सोचा हा है से हाई भी ते हुँदा रेड अपने आप तह भी तिला है अपने पत बरावा है लोगों से हाई भी नेहरा-* अन्तोंने दरिकारत को करा है सोचारे हैं बहुने का प्रमाण रिकार है। है : एसों में ने असीन और हतेंगान है सामने रिकारने हैं किए असीन है प्रमाणकार

[।] शाहित्याचार्य पुष्ट - 113 हुन्याचन वाल धर्म । २-शमनी वराणी पुष्ट -209 हुन्याचन वाल धर्म ।

रामीय सर्वेश या अध्यक्ष है कि. "उनके वारी वार्ज में प्रव अपना च्यो कुल को पत्ती, ताप में अवस्था स्वाधिकान की एवं बरवा के। वे बोती हे पूर्वतः हे ता । और प्रस्तु वा यत्व की करती है। पूर्व रेवकीवता है ताय । उसने द्वारान्य निवारित पर अधि तो पर की जाती है, जैय-देश रोप में की पड़ड उड़ता है। * वर्ज की अने वेदिलानिक उपन्याती है तील होती हो रागी, कुल्लानी, महारानी हुर्लावती, अविल्याचार्व और राजह की राजी केरी मोधनामकी पोर्शनमाने हुनते है। महाराजी हुनांवती में वह राजी वा प्रमानकीय क्षेत्रक पुरद होता है का राजा उनकी बराहना वरते वहीं अपने । राजाविकाओं के दूसरा है वर्षों के के बाजा ना बारी efter di give à nive feder nive oftengé èt postisfi di धावी ने अभी होती निन्दों से बाद है स्वातिक से स्वातानी हुए-वक्ती क्ष्ती, ते बाम काचा तीवा था।

• आने फालर एवं उसे की जोक तुरम और मुख्या है निहार विकासी है। परवर हुने की रहा है ताल उसे ही यह नहीं बात हुएती है और वर्षी यह अगूल बर्गपती है कि लायाचार हुई हो नीरित जनगढर रात है और में छोटी-छोटी हुवीहवा वाचे और बहु है ब्रिकिट वर हवर-उपर में उपायत वाचा चील है। * वाडी वा चीर इसा जा तुवाद से मनाव है उसा देश है। "तम या बानों । अधेरे में क्रम्म की हुलीयमें पर की हम्मा किया था गणन है 9 फिने की बीहारों है कोई है बार जना अधार रहता है। 121 गाजी यह नहीं हुनती और यह विक्रांवर ही दम वेती हैं। कि उनवी प्रतिस विवनी व्यापनारिक और क्षाप की रही । यह लवे शाव में हुई करते हुए हाका है हावी बीरवींस हो प्राप्त होती है। इत्या ही नहीं, का सीडते लोको की झामन के एक नेपिक के दूरते वह बहती है। ³¹ नेवट की बड़ी है

^{। -}तुम्बायम् साग वर्षाः पुष्य-३६ २-तुम्बायम् साग वर्षाः पुष्य-५०

traffic actor : vide neur i उ-इन्साच्य साथ वर्जा प्रदर-५० पानीय वर्धना ।

प्रशिक्त को प्रति के कि उस मार्क्यों के मार्क्य के महत्वमा के प्रति के प्रति के कि प्रति के कि प्रति के कि प्रति के कि प्रति के मार्क्यों के मिर्क्य के प्रति के कि प्रति के मार्क्य के प्रति के

१-तृब्दाक्य वाल वर्ण पुष्ठ-४१ शादीय तकीया १ २-तृब्दाक्य साथ वर्ण पुष्ठ-५२-५३ शादीय तकीया १

सहायक ग्रन्थ सूची

- 100 per -gri :-

really of the material				*
				*
	**	•	**	
	**	***	**	
	**		***	
	被继		海響	
	**			
	- 数量	**	在 #	
	**		**	
	***		**	
	**		**	
	**	***	**	
	**		**	
	***		**	
	**	**		
	44		4.0	
	**		49-40	
	**		**	
19-सामक की सानी	**	•	**	
			44	
21-501000	**		***	
	**		***	
	***	***	**	
24-वरी य वधी	***		**	
25-वोती अप				
26-गरिवर दिश्व	***		40-85	
27-बार्स यह है	参参			
i- को वर्गव				à
2- Greates seffest			4.4	1997 :
3 •4(Cut '93)	**		6.9	
4-warder or ors	0.00	••	••	
s-lead or wors			44	

es l' 10-stra tracto grecion ant curios form

। अन्योद्धाः । in-indicated actions 13-रिन्दी वर चना साहित्य N-GET STEEL *** । स्थार जाना स्वार 18-काने अने अन्ती अधरन 19-विन्धी व्या ताविष 20 नेजवार और विकास 21-वाधिका वर वेग और देग 22 न्या तार्थिय यो प्रय 24-ी नदी ताविका एवं आधुनिय or the second 25-रिन्ही नारिय हा हरिसान 26-बात चात है चात 21-उपन्यासवार विवेन्द्र के वाजी स भगोबेला भिन्न अध्यक्ष 50-30 but their and १९-इन्दाबन ताम वर्ष 30-ला वि एवं के यवा बनाव

व्याप्त । स्थापन व्याप वर्ष storuite vere au 7 55 Central 9-6 वय प्रजाबा बाख रूपन क्यानी वेस greatest from the केला बलाब वाच्छेत नन्द हुगारे धायांची See and Mill

राधीय संयोग S. Cha The

to facto. Clark.